बी० अस पारख श्रि पारख-निवास श्रि वेटरीनरी के किल हैंड, वीकानेर (11 !०)

### वे बोल.

" ज्ञानिक्रयाभ्यां मोक्ष " ए मोक्षमार्ग हुं दृष्टिविंदु छे तथापि घणा जैनो तेना खरा रहस्यने निह जाणतां एक तरफ वधु वलणतो वीजा तरफ न्युन एटलंज निह पण अपेक्षा समजवाना ज्ञाननी खामीए घणी वखत डावो हाथ जमणाने द्वावे छे तेवी स्थिति जोवाय छे. आनुं कारण पूर्वाचार्योए द्रव्य गुण पर्याय आदीनुं जे सक्षमज्ञान मकास्युं छे ते ज्ञानने समय अनुसारनां मनुष्यो समजी शके तेवी उत्तम शैलीथी सरळ भाषामां ग्रंथो तैयार करी जनसमाज आगळ जोइता ममाणमां रज्ज निह थवानुं छे.

अमारं चोकस मानवुं छे के जैनधर्मनां सिद्धांतो प्रमाण अने युक्तिओथी एवां तो पवळ अने ज्याययुक्त छे के जेम जेम ते तत्वो वधु फेलावो पामशे तेम तेम प्राचिन इष्टि वधु खीली नीकळशे, अने जैनधर्मनुं क्षेत्र बहोळं थशे.

आ माटे मात्र जैनोज नहि पण सर्वे लोकोना वोधार्थे जैनध-र्मनां पुस्तको रचाववाथी अने सारी रींते वंचाववाथी अन्य लोको पण जैनतत्वनो लाभ मेळवशे केमके जैनधर्म मात्र जैनो गाटेज नथी. गमे ते ज्ञाति हाय पण तेनां सिद्धांतो अनुसार वर्चन राखनार जैन होइ शके छे. आवी भाव उपकारनी दृष्टि ध्यानमां राखी, का-ळने अनुसरी, तथामकारनो पयत्न करी परमपूज्य गुरुवर्य श्रीमद् बुद्धिसांगरजीए आवा तत्वमय ग्रंथो रच्या छे जे पैकीनो आ "परमात्मदर्शन" ग्रंथ छे.

आ ग्रंथ अमे उपर जणाव्युं तेवा प्रकारनी खामीने दुर कर-नार छे, एम कहीए तो अतिस्योक्ति नहि कहेवाय.

आ ग्रंथमां वीजा अनेक विषयो साथे ज्ञान अने क्रिया वंनेनी यथास्थित सावीती करी वतावा छ केमके वंनेना संमेलन विना आत्मकल्याण दुर छे. पटद्रव्य, पटकारक, पंचसमवाय, नय निषेपा वीगेरेथी द्रव्य,क्षेत्र,काळ, भावने, अनुसरीने आ ग्रंथ लखायो छे, जे अभ्यासीओने माटे आशिर्वादरंग छे. बलके आत्माभीमुल लड़ जनार छे. आखो ग्रंथ वांचनार पोतेज कबूल करशे के गुरुवर्य श्रीमद् बुद्धिसागरजीए आ प्रकारना प्रयासे करी जैनसमाज उपर महान उपकार कीधोछे. तेओना आ रीते जैनकोम उपरंज उपकार थाय छे, एम निह पण तेओना ग्रंथोनी छेखन, अने कान्य बैली, एवी तो मेम उपजावनारी छे के सर्वे दर्शनवाळाओ तेओश्री रचीत ग्रंथो होंसथी वांचे छे एम अनुभव कही आपे छे. एट इंच निह पण तेओश्रीनां भजनपदो तो तेओश्री ज्यां ज्यां विचर्या छे, त्यां त्यां कोइपण रीतना तफावत विना हमेशना माटे गवातांज रहे छे. आथी अन्य दर्शनीओ पण जैनधर्मने जाणता अने भीति करता थया छे. आ श्रं जनसमाज उपर जेवो तेवो उपकार छे ?

तेआश्री तरफना अंकुशना आधिने तेओश्री विषे हमारे जणा-वबुं जोइए छे ते जणावी शकता नथी, पण समाज तो कबूळ कर-ती जोवाय छे के, भेदाभेद अने मारामारीनी कोइपण चर्चामां क उत्तरतां पोते अने अन्य जीवा पोताना आत्मानुं कल्याण कइ रीते करी शके तेज मार्ग तरफ तेओश्रीनुं मयाण छे अने ते दिवसे दिन् वसे चढतुं अने वधतुं जाय छे

तें ओश्रीना ग्रंथो संबंधी वधु विवेचनमां नथी उतरी शकता कीरण तेओश्रीनुं मानवुं एम छे के दुनियां दर्पणरुपे वस्तुने वस्तुरुपे केम निह जोइ शके ? (वेशक ग्रणानुं रागनी दृष्टि तेमां ग्रुख्य भाग भजवे छे.) तेथी अमो तेवा मकारनी तजत्रीजमां न उतरतां तेओ-श्रीनी कृतिना ग्रंथो जेम पने तेम समाज आगळ सारा स्वरुपमां (ओछी किंमते) रज्ज करवा एज कर्त्तव्य समजी आगळ वधीए छीए अने ग्रुक्त कृपाथी मंदळ पोताना नामे ? वर्षमां ? १ पुस्तको वहार पाडी शक्युं छे.

आ रीते मंडळ आगळ वधवामां जे फतेह पाम्युं छे तेमां गुरुश्री उपरांत मंडळने पुस्तको मगट करवाने द्रव्यनीमदद करनारा गृहस्थोनोपण हिस्सोछे.जे अमो जणाववा चुकी जवुं योग्यधारतानथी. अगाऊना ग्रंथोना सहायकोना नामो तेते ग्रंथो साथे संदितः थयेल है. जेओ उपरांत मजकर "परमात्मदर्शन " ग्रंथनै मगढ करवामां नीवे मुजब सहाय मळी छे.

- १५०) शेठ मोतीजी जेताजी पुनावालानी विधवा वाइ नाजुवाइ
  - ७५) शेठ मोहनजाल ताराचंद. विजापुरवाळा.
  - ५०) शेठ रायचंदभाइ खचंद. साणंदवाळा.
  - <o>) शेठ वाडीलाल मगनलाल. अमदावाद.
  - ५१) शेठ अमृतलाल वेशवलाल वाटी सद्गत भाइ अमृत-लालना स्मणार्थे तेमनी मातुश्री चंचळ ब्हेने अमदावाद.
  - ५०) वाइ हरकोरव्हेन श्री अमदावाद.
  - ३१) वकील मोहनलाल हेमचंद तेओना ची. भाइ सवाह ना पुण्यार्थे श्रीपादराः
  - २५) शेढ हाथीभाइ मुलचंद. श्री माणुसाः
  - ३०) शेढ माधवलाल अमथालाल. श्री माणसा.
  - ३१) शेठ मोहनलाल करमचंद अमदावाद.

आवी रीते सहाय करनाराओनो तथा वीजा मददगार ग्रह-स्थोनो मंडळ आभार माने छे. अने तेओने पोताना द्रव्यनो आ रीते सदुपयोग करवा माटे धन्यवाद आपे छे.

मंडळनो उद्देश उपर जणाव्युं तेम जनसमाजमां तेओश्री रचित पुस्तको वधु वंचाय ते माटे सस्ती किंमते पगट करवानो छे, ते वजावे जाय छे. ते समाज पण जोड़ शकी छे के वीजी कोइपण संस्थाओ करतां मंडळ पुस्तकोनी घणीज ओछी किंमत राखे छे, ते पण वीजां पुस्तको मगट थवाने उपयोगार्थे तेमज थोडीपण किंमत आपी पुस्तक खरीदतां ते उपर वहु भाव रहे छे ते अर्थे. मंडळ आशा राखे छे के गुरुवर्य पुस्तको तैयार करता रहे छे

तेज प्रकारे पगट कराववाने सहायको वधता जर्श.

छेवटमां ध्यान खेंचवाने रुजा लइए छीए के मंडळ मारफते आ रीते पुस्तक मगट कराववाने जरुर विचारशो.

मुंबाइ चंपागली वीर संवत २४३६ श्री अध्यात्मज्ञानं प्रसारक मंडळ. पोस सदी १०. गुरु

### परमात्मदर्शनग्रंथः प्रस्तावनाः

जगत्मां पत्येक मनुष्यो धर्मनुं आराधन करे छे. पत्येक मनुष्यो धर्मना माटे इच्छा राखे छे. प्रत्येक मनुष्योने अनंत सुख प्राप्त करवानी तीत्र जिज्ञामा वर्ते छे. जन्म, जरा, मरणना दु:ख-मांथी वचाव थांय ते माटे मत्येक मनुष्यो बुद्धचनुसार जपायो शोधे छे. अमर थवुं ते माटे अनेक मकारनी शोधो करे छे. आवी अमूल्य शोध करवानी कोने जिज्ञासो न है होय ? अलवत सर्वने होय छे. आबी शोध माटे ज्ञानदृष्टिनी जरुर छ अने ते पण सर्वज्ञ दृष्टि होवी जोइए. आवी सर्वज्ञ दृष्टिवाळा-तीर्थकरो प्रथम थइ गया छे. आ क्षेत्रमां चरम तीर्थकर त्रिशलातनय श्री महावीरस्वामी २४३६ वर्ष उपर थइ गया छे. तेम्ले - केवलज्ञानथी सर्व पदार्थी जाण्या तथा देख्या मनुष्यो नित्य सुख माप्त करे तथा जन्म जरा अने मृत्युना दुः तमांथी छूटे ते माटे तेओश्रीए आत्मज्ञान वताव्युं छे. सर्व प्रकारना जीव अने अजीव पदार्थीनुं स्वरूप वताव्युं छे. ज्ञानद्दीन अने चारित्ररुप मोक्ष मार्ग वताव्यो छे नात जातनो भेद राख्या विना आत्मतत्त्वनी शक्तियो खीलववाना उपायो वता-च्या छे. साधु धर्म अने गृहस्थ धर्म एम वे मकारना धर्म वताच्या छे. अमर थवाने माटे आत्मधर्मनुं यथार्थ स्वरुप वतान्युं छे. सम-वसरणमां वेसी देशना देइ चतुर्विंध संघनी स्थापना करी छे तेमना गणधरोए द्वादश्रांगीनी रचना करी, पश्चात् स्थितरोए उपांगनी रचना करी. तेमनी पाटे जे जे आचार्यी थया. गीतार्थी थया. तेओए पकरणो ग्रंथो आदिंनी रचना करी. मलेक आचार्योनो मुख्य उदेश जमानाने अनुसरी गमे ते भाषामां सहेलाइथी मनुष्यो ह, च्च मार्ग समजी शके तेवा प्रथा अने तेवा मकारनो उपदेश आ-

पवानी हतो, ते रीतिने अध्सरी उमास्वाति ब्राच्यक, सिद्धसेत दिवाकरसूरि, हरिभद्रस्रि, श्री हेमचंद्र आचार्य श्री अभयदेवसूरि, यशोविजय उपाध्याय,आदि धर्मधुरंधर आचार्योए. अनेक मनुष्योना उपकारार्थे संस्कृत भाषामां तथा माग्नधी प्राकृतादि भाषामां जपदेश दीधों छे तथा तेवा ग्रंथो वृताव्या छे. पूर्वीक आचार्यीना ग्रंथो सत्रोनी पेटे माननीय पूजनीय गुणाय छे। श्री हेमचंद्र पश्चात लोकोनी स्थिति विद्या संबंधी घटना लागी. लोको मागधी अने संस्कृतमां पण अल्प समजवा लाग्या. त्यारे आचार्यीए जमानाने अनुसरी चालती गुर्नर भाषा आदिमां रासो वंगरे बनाववा लाग्या सं १३२७ नी सालमां सात क्षेत्रनो रास बन्यो छे. आ सात क्षेत्रनो गुर्नर भाषानो रास छपावी सिद्ध कर्यु छे के जैनोमांथी गुर्जर भाषा ग्रुख्यताए प्रकाशी छे आ रास भजन संग्रह चोथा भागमां छपाव्यो छे. ते पहेलां पण गुर्नर भाषामां जैनाचार्योष् काव्य लख्यां होय एम संभव थाय छे अने ते माटे शोध चालेछे. प्रयम तो गुर्जर भाषामां पय तरीके रचना करी उपदेश आप्यो पश्चात् गुद्यमां पण ग्रंथ बनावी उपदेश देवा मारंभ कर्यो. श्रीवीरे मरूपेलां तत्त्वोनो संस्कृत, माकृत, मागधी, गुजराती, हिंदुस्थानी वृगेरे अनेक भाषामां हाल अवतार थएलो अनुभवाय छे. श्री चीरमभु मुक्तिमां गया तो पण गंगाना मवाहनी पेठे तेमनी पाछळ तेमनो उपदेशेलो तस्वमार्ग पुरुष परंपरा अखंड वहेवा लाग्यो. हाल पण ते प्रमाणे जोवामां आवे छे.

संस्कृत भाषामां तथा मागधी भाषामां हाल ग्रंथो वनाववामां आवे तो पायः दश हजारमां पांच माणस पण भाग्येज समजी शके. संस्कृत तथा मागधीमां वनावेला ग्रंथोने पण गुर्जर भाषामां समः जाववामां आवे त्यारेज लोकोना समजवामां आवे त्यारे ग्रुजर भाषामां ग्रंथो बनाववामां आवे तो घणा लोको समजी शके एम

करेंचुं निर्विवाद छे. गुजरातमां रहेनार पुरुषो तथा स्त्रीओ भरें संस्कृतनो अभ्यास करे. इंग्लीश भाषानो अभ्यास करे तोषण २४ कलाको पैकी सर्व कलाकोमां गुर्जर भाषामां वोलीनेज सर्वने पोतानुं कार्य करवुं पढेंछे. मातृभाषामां जे उपदेश आपवामां आवेछे ते सहेजे समजाय छे. आम कहेवाथी कंइ संस्कृत अने मागधी भाषानी इलकाइ देखाडवामां आवती नथी. कहेवानुं तात्पर्यार्थ ए छे के गुजरातीओने मार्ट गुर्जर भाषामां लेख लखी समजाववामां आवे तो विशेष उपकार थाय. आ न्यायने अनुसरी गुर्जर भाषामां लेख छएयोछ.

आत्मतत्त्व संबंधी मान्यता दरेक दर्शनवाळाओनी भिन्न भिन्न छे. आर्थभूमिमां जैन, वेद अने बौद्ध आ त्रणनां पुस्तको विशेष जोवामां आवेछे. मुसलमान अने खीस्ति लोकोतो ज्यारे आ देशमां आव्या त्यारे तेमना धर्मना पन्थोनां पुस्तको लेइ आव्या. दरेक दर्शनवाळा ई धर, कर्म अने आत्मादि तत्त्वो संबंधी भिन्न भिन्न मत जणावेछे. अने ते माटे पोतपोतानी युक्तियो जणावेछे.

पह्दर्शनमांथी कयुं तत्त्व खरुछे. ते युक्ति अने प्रमाणथी स-मनी शकायछे. श्री वीरमभुए आत्म तत्त्व एवं सरस वताव्युंछे के ते माध्यस्थ अने ज्ञान दृष्टिवाळाने रुच्या विना रहे नहि.देवगुरु अने धर्म तत्त्वनुं स्वरूप सर्वज्ञ दृष्टिथी वताव्युंछे. आ ग्रंथमां श्रीविरमभुए कहेळुं आत्मतत्त्व सूत्रानुसारे छख्युं छे. जिनागमोनुं दोहन करी देवगुरु धर्म तत्त्वादिनुं यथार्थ वर्णन करवामां आव्युंछे.

प्रथम आद्यमां सद्गुरुनुं मंगलाचरण कर्युले. पश्चात् गुरुनी केवी शक्तिले ते जणाववा प्रदेशी राजा अने केशी कुमारनो संवाद देखाडी आत्मानी अस्तिता सिद्ध करीले. पश्चात् ज्ञान अने क्रियानो संवाद प्रसंगानुसारे जणान्योले. पश्चात् योग्य अयोग्य श्रोतानां लक्षण जणान्यांले. पश्चात् ६८ मा पानाथी पड्द्रन्यनुं स्वरूप सम्मजान्युंले. पश्चात् आत्मधर्म महत्ता दर्शावीले. पश्चात् आत्म

धर्मनी महत्ता माटे क्षमा निष्कपटपणुं आदि सद्गुणोनी जरुरीयात बताबीछे पश्चात् पत्र १३३ माथी आत्मानी शोध कोंड्र विरला करेछे ने संबंधी एक बादशाह अने फकीरनी वार्ता आपी बागनुं हष्टांत जणाव्युंछे. पश्चात् पत्र १४६ माथी मतिश्चत आदि पंचका-ननुं स्वरूप दर्शाव्युंछे.

पश्चात् साधुनी आत्मध्यानादि क्रिया दर्शावीछे. पश्चात् आत्म स्वरूप दर्शाव्युंछे. पश्चात् अनुक्रमे पत्र १९० माथी भव्यातमाए ्दश प्रश्न संवंधी विचार करवो जोइए. तेनां नाम जणावी अनुक्रमे वर्णन कर्युंछे. ते प्रश्लोना सातमा प्रश्नना विषयमांज पत्र १७५ माथी कर्मराजा अने धर्मराजानुं युद्ध वर्णन कर्युंछे. ते स्थिर वित्तथी वांचवानी जरुरछे. पत्र २०३ थी आठमा प्रश्ननो विषय शरु याय छे तेनुं पूर्णपेमे मनन करवुं जोइए. पत्र ३१५ माथी नवमा मुक्षनो विषय शरे थायछे. पत्र ३३१ माथी आत्मा, कर्मनो तथा भोक्ता केवी रीतेछे तेनुं वर्णन कर्युंछे. पश्चात् सिद्धस्वरूप दर्शाव्युंछे. पश्चात् पत्र ३५७ थी ईश्वर जगत कत्ती नथी. तेम संवंधी तुं व्याख्यान कर्युक्ते. पश्चात् षट्स्थानकनी सिद्धि करी वतावीके. आत्मसिद्धि करवामां अनेक जिनागमोना अनुसारे युक्तियो दर्शाविके. ते यु-क्तियोने जो मुखे करवामां आवे तो जैन धर्म तत्त्वोनी पूर्ण श्रद्धा थाय. आत्मा कर्मनो नाश करी अनंत सुख प्राप्त करी अमर थाय छे तेज मुख्य मुद्दो ध्यानमां राखी तेना उपायो दर्शाव्याछे तेथी मत्येक मनुष्योत्तुं आ ग्रंथ वांचतां कल्याण थाय एमां कांइ संदेह नथी. परमात्मदर्शन ग्रंथ वांचनार अवश्य ज्ञान दर्शन चारित्र पामी मुक्तिमार्ग पामेछे. जे भव्य जीवो होय तहेने आ प्रन्थमां छखेलां तत्त्वानी श्रद्धा थायछे.

आ प्रन्थना मत्येक पानाना मुखपर मुख्य हेडींग छे तेथी वांचनारने मत्येक विषयनी सरलता यशे. आ प्रन्थमां छेला दुहा तथा चोपाइयोनो अर्थ लख्यो नथी. पण कोइ भक्त पंडित पुरुष अवशेष दुंश तथा चोपाइयों उपर अर्थ पुरशे तो धर्मलं भ माप्त करशे. समयना अभावे अवशेष दुहा आदि उपर विवेचन थयुं नथी. ते दुंहाओ वगेरे सद्गुरुना पासे जे वांचशे ते विशेषतः अर्थ माप्त करी शंकशे. जंडवादियोंनी सामे रक्षण तरीके आ ग्रन्थ उपयोगी थशे. आ ग्रन्थने माध्यस्य दृष्टिथी वांचशे. ते सद्गुण रागधी तेमो यथार्थ तस्त्व रहस्य मेळवी शंकशे.

आ ग्रंथ सूळ तरीके-श्री लोदरा गाममां आरंभ्यो हतो त्यांथी मेसाण जई त्यां सं. १९६० मुं चोमास्र कर्धी. त्यां अशाह सुदी ५ ना रोज आ ग्रंथ पूर्ण कर्यो. पश्चात तेज चोमासामां विवेचन जेटलुं लखायुं छे तेटलुं अत्र दाखल कर्धी छेः वाकीना दुहामुं विवे-चन, कोई भक्त शिष्य पूर्ण करशे.

आ ग्रन्थमां जे कंइ जिनाज्ञा विरुद्ध लखायुँ होय ते संबंधी मिथ्यादुष्कृत हो. सज्जन दृष्टिथी जे कोई आ ग्रन्थ वांचेशे तहेने अस्थित लाभ माप्त थशे. ज्ञानिने आश्रवनां कारण ते संवरहरे परिश्णमेछे जेम प्राप्त अज्ञानिने संवरनां कारण ते आश्रवहरे परिणमेछे तेम योग्य जीवने आ ग्रन्थ सम्यग्रेणे परिणमेशे. अने अयोग्य कुपात्र मत्सरी दुर्गुणग्राहीने आ ग्रन्थनुं वांचन, विपरीतपणे परिणमेशे. तेमां तेनी दृष्टि तेज मुख्य कारणछे.

मत्येक भव्यजीवो आ ग्रन्थ वांची अध्यातमस्वरूपमां रमणता करी परमातम स्वरूप प्राप्त करोः परमार्थ पति सर्वनी रुचि थाओः परमानंदने सर्व जीवो पाप्त करोः सर्व जीवो मंगलमालापाप्त करोः एजश्रभाष्तीः ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

### मुकाम-अमदावाद-झवेरीवाडो. संवत १९६६ कार्तक वदी ८

लि, मृति, चुद्धिसागर,

आंवली पोलनो उपाश्रय.

# ॥ अथ परमात्मदर्शन ॥

# पंचराती पारभ्यते.

### श्री संखेश्वरपार्श्वनाथाय नमः

मंगलम्.

गुरु स्तुति, दुहा.

सुरतरु जंगम तीर्थरूप, सद्गुरु साचा देव; त्रिकरण योगे तेहनी, जावे कीजे सेवः १

श्री सद्गुरुनी स्तुति कराय छे. अनादि काळथी जीव अझान (अविया) थी वहिए वस्तुमां आत्मपणाथी बुद्धि धारण करी अनंतशः दुःखराशि भोक्ता थयो अने वहिरात्मभावे परवस्तुने पोन्तानी मानी स्वस्वरुप भूल्यो एवा मूढ आ जीवने शुद्ध स्वरूप ओळखावनार श्री गुरुमहाराज सत्य देवरूपे छे. मिथ्यात्व अने सम्पक्त स्वरूप समजावी शुद्ध मोक्षमार्ग योजक श्रीग्रुरुना समान वीजा देव नथी. ग्रुक्ति रूप फळ देवामां श्रीग्रुरु कल्पद्वक्ष छे. अन्य कल्पद्वक्षो पौद्गिलिक ग्रुखदाता छे. अने ग्रुब्ह्प कल्पद्वक्ष तो अनंत आत्मिक शाक्षत ग्रुख समर्पे छे. जो के जपादान कारणरूप ग्रुरु महाराज नथी तो पण जपादान कारणनी श्रुद्धिकारक तथा सहायभूत निमित्त कारणरूप श्रीग्रुरुराज छे, ए कल्पद्वक्षनी माप्ति महा पुण्योदये थाय छे. ग्रुरु जंगम तीर्थ छे, अन्यत्र के ज्यां श्री तीर्थकरादिनां कल्याणक थयां छे, ते तीर्थ स्थावर तरीके कहेवाय

छे, ते तीर्थोनी यात्रा सेवा भक्ति करवाथी सम्यक्त्व निर्मल थाय छे. किंतुं ते स्थावर तीर्थनी श्रद्धा ओळलाणकारक पृथ्वीतळ गम-नकर्ता श्री सद्गुरु प्रत्येक्ष महाउपकारी छे. येनाळंबनेनजीबो। भवांभोधिंतरतीति तीर्थः जेना आलंबने जीव संसार समुद्रने तरे छे ते तीर्थछे, श्री गुरु महाराजना आलंबने जीव संसार समुद्र तरे छे, माटे गुरु तेज तीर्थ छे, गुरुरूप तीर्थनी सेवाभक्ति झटिति मत्यक्ष फलदा छे. श्री गुरुनी वाणीरूप गंगामां जे स्नान करे छे ते पोते उपार्जनकृत करमपोने गमावे छे. चक्कनी विद्यमानताए पण अन्य पदार्थोना निरीक्षणमां सूर्य चंद्र दीपक्रनी जहर पडे छे. तेम भव्यात्माओने पोतानुं आत्मिक शुद्धस्त्रहत अवज्ञोकनार्थे ग्रह सूर्य सनान छे तेथी तेनी जहर पड़े छे, विशेष ए छे के, सूर्य अंतरनो प्रकाश-करी शकतो नथी.अने गुरु महाराज अंतरना प्रकाशकारक छे. माटे आ सूर्य करतां पण विलक्षण अलौकिक गुरुह्प सूर्य छे, पूर्वोक्त सद्गुरुनी त्रिकरणयोगे अत्यंत भावे सेवा करवी, "सेवा कीजीए ए कहेवाथी एम स्वब्धुं के जेने मुक्ति पदनी इच्छा होय तेने सद्गुरुनो वहुमानथी विनय करवो. कारण के धर्मन्तं मूळ वि-नय छे. अने विनय विना धर्मनी पाप्ति धती नयी, अने धर्मनी भारि गुरु विना थाय नहीं माटेश्रद्धा भक्ति वहुमान पूर्वक गुरुरा-जनो विनय करवो.

मुरतरुनी जपमाथी समजबुं के-गुरु अनंत आत्मधर्मना दानी छे.

आत्मधर्मनुं दान ते भाव अभयदान छे. पंचधादान छे. १ अभयदान, २ सुपात्रदान, ३ अनुकंपादान, ४ डिचतदान, ५ की-चिदान, ए पांचमां महाउपकारक अभयदान सुख्य छे, द्विधा अभयदानं द्रव्यतो भावतश्च. अभयदान व मकारे छे. १ द्रव्य अभयदान. २ भाव अभयदान. एकेंद्रियादिधी ते पंचेन्द्रिय पर्यंत जी-

वोना प्राणोनुं रक्षण करबुं तेमनो कोइ घात करतुं होय तो बचाववा तेने द्रव्य अभयदान कहे छे, दरेक जीवने जीववुं निय लागे छे. कोइने मरण शर्ण थवुं निय लागतुं नथी. कहुं छे के. मरण समो नाध्य भयं: मरण समान कोइ भय नथी, माटे प्राणीओने कोइ मारतुं होय तो अनेकरीत्या तेमनुं रक्षण करबुं. जीवनी दयाथी जीव तीर्थंकरनामकर्म उपार्जन करे छे, नरस्त्रगीदि सुखसंपत्तिनो भोक्ता थाय छे. एक राजानी अणमानीती स्त्रीए चोरने फांसीनी शिक्षा थती अटकात्री अने अन्य राणीओए छक्ष रुपैया खुरची तेने मिष्टाच जमाड्यां, किंतु चोरे अणमानीती स्त्रीनो अत्यंत् उप् कार मान्यो. अने तेणीए छोड़ाव्यो त्यारे सुखी थयो, श्री शा-न्तिनाथना जीवें पूर्व भवमां एक पारेवानो जीव वचाव्यो तेथी अत्यंत पुण्य उपार्जन कर्यु, तेम भन्यत्माओए प्रत्येक जीवोनी दया करवी, कोइ जीवनी हिंसा करवी नहीं, मिध्यात्वे पाप बुद्धिरूप पिशाचिकाना प्रेर्या केटलाक जीवो मत्स्य अज पशुरंखीनां मांस भक्षण करे छे, मांस वेचे छे, मांस भक्षकनी अनुमोदना करे छे ते जीवरे घोरकर्म ग्रही अति दारुण दुःखालय अधोगतिभाक् थाय छे अने आ भवमां पण कमीद्ये दु: खनी झाळमां फसाय छे, माटे मन वचन कायाए करी जीवनी हिंसा वर्जवी.

२ भारअभयदान-भन्य जीवात्माओं ने तेना शुद्ध गुणोतुं दान आपवुं तेने भार अभयदान कहे छे तद्द्विविधं=भार अभय-दान वे मकारे छे. १. स्त्रभार अभयदान २. परजीवधर्म अभय-दान. पोतानो आत्मा असंख्यातमदेशी छे अने ते मद्शो अरूपी छे, कोइ काळे पग उत्पन्न थया नयी माटे अज छे, वर्तमान, भूत अने भाविष्यत् कालमां मद्दशो जेवा छे तेवा ने तेवा रहे छे, माटे शाश्वता छे, ए असंख्यात आत्माना मदेशो वाळ्या वळता मथी, गाळ्या गळता नथी, एक प्रदेशे आत्मा कहेवाय नहीं, वे प्रदेशे आत्मा कहेवाय नहीं, असंख्यात प्रदेशमयी आत्मा कहेवाय छे, जहरूप पुद्गळथकी आत्मानुं स्वरूप न्याकंछे, अनंतज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत चारित्र, अनंत वीर्य, इत्यादि आत्माना अनंत गुणो छे, आत्माना एकेक प्रदेशमां अनंत धर्म रह्या छे, आत्मामां अनंत ध्रुख अस्तिभावे रह्युंछे.

किंतु अनादि कालथी जीव पोतानास्वरुपनाअज्ञानथी परव-स्तुमां अहंभाव धारण करी, मिथ्यात्व, अविरति, कषाय अने योगथी पुट्गळ स्कंधोने अष्टकर्मनी वर्गणा तरीके परिणमावी वि-चित्र शरीरोने धारण करे छे, जीवनी अनादिकाल मूळ वसति निगोद छे, निगोदना जीव वे प्रकारे छे. १ सूक्ष्मिनगोद २ वादर-निगोद. अनंत जीवो वने एक शरीर होय छे अने चतुर्दश रज्वा-रमक (चउदराज) लोकोने काजलनी कुंपलीनी पेरे व्यापीने रह्या छे, तेने सूक्ष्म निगोदीया जीव कहे छे.

ए सूक्ष्म निगोदीया जीवने मिथ्यात्व, अविराति, कषाय, अने योग रह्या छे. सदाकाल ते दुःखना भोक्ता छे. त्रण प्रकारनां जे अज्ञान छे, तेमांथी एक पण अज्ञान टळ्युं नथी, तेनामां समजवानी कंइ पण शक्ति नथी. ए सूक्ष्म निगोदना जीवोमां केटलाक भव्य जीवो अने केटलाक अभव्यजीवो छे. साधारण वनस्पतिना जी-वोने वादर निगोदीया जीव जाणता, द्विप्रकार निगादमां अनंतशः जन्म मृत्युना चक्रतेगे जीव भम्यो, त्यांथी भवितव्यतायोगे पृथि-वी, जल, ज्वलन, वायु, प्रत्येक वनस्पतिनां श्वरीरो धारण करी भवस्त्रमण कर्यु, पण आत्मस्वरूपनो अववोध थयो नहीं. दान ए श्वी वस्तु छे तेटलुं पण जाणवामां आव्युं नहीं अने ते कर्युं नहीं. प्रश्न-जल सरोवरमां भर्यु होय छे त्यारे हजारो पशु पंखी मनुष्यादि तेमांथी जलपान करे छे, त्यारे जले पोतानुं दान वीजा-ना अर्थे शुं कर्युं ना कहेवाय ?

**उत्तर**∽अन्य जीवो जलपान करे छे ते पोतानी सत्ताथी करे छे, जल्लपान अन्य जीवो करे तेमां जलना जीवो राजी नथी, जलपान करवाथी जलना जीवोनो नाश थाय छे तेमां पोते राजी नथी, माटे ते दान कहेवाय नहीं. द्वीन्द्रियथी ते चतुरिन्द्रिय पर्यत जीवो अभयदान पोते करी शकता नथी. पंचेंद्रियना चार प्रकार छे. १ देवता २ मनुष्य. ३ तिर्धेच. अने ४ नारकी. भुवनपति, व्यंतर, ज्योतिष्क अने वैपानिक ए चार मकारना देवो द्रव्य तथा भाव अभयदान करी शके छे. सम्यक्तवधारकदेवो समिकतनी अ-पेक्षाए भाव अभयदान करी शके छे, कारणके समिकित पानेला देवताओ पोताना आत्मानुं स्वरूप समने छे, पोताना आत्माने पोताना समाकित ग्रणमुं दान आपे छे तथा अन्यदेवो तथा मनु-ष्योने धर्मनी श्रद्धा करावे छे, माटे वीजाने भाव अभयदान अर्पे छे. सर्व जातना देवताओनो मिथ्यात्व गुणस्थानकथी ते समिकत गुणस्थानकनी अंदरमां समावेश थाय छे. वहु देवताओ धर्मस्रहो-ने धर्ममां स्थिर करे छे, पण देवताओना करतां मनुष्यो अभयदा-नमां विशेष छे, कारणके मनुष्यने वउद ( चतुर्दश ) गुण स्थानक छे, जे दान पामवाथी आत्माने कोइनो भय रहे नहीं एवं भाव-अभयदान संपूर्ण मनुष्य पामेछे, अज्ञानी जीवने सत्यासत्यनी समजण पडती नथी तेने सट्गुरु त्रिजगद् दुःख दावानल मेघ समान धर्म देशनाथी आत्मस्वरूप समजावे छे, जह वस्तुनुं स्वरूप समजावे छे, देवगुरु धर्मनुं स्वरूप समजावे छे, नवतत्त्वनुं विशेष-रीत्या स्वरूप समजावे छे, अने अज्ञानी जीवने समजावे छे के-

अरे पुर्गलञेंठना भिक्षक तारी भूख पुर्गलपेंठथी कदी भागवा-नी नथी, तुं परवस्तुनुं ग्रहण करी सुखी थवानी नथी. पोताना घरमां अनंत धन छतां केम परगृहे भीक्षा मागे छे. तारुं घर ओ-ळख, तारो अखुट खजानो ताराथी दूर नथी, पर पुटगल चुंथतां तने छज्जा शुं नथी आवती ? तारी ऋदि तारी अन्तर भरी छे. अने तेना अज्ञाने तुं दरिद्री ययो छतो अनंत दुःखने पामे छे, माटे तं तारा आत्माने तारी ऋद्धिनुं दान आप, परमां केम फांफां मारे छे ? हे पामर प्राणी ! तें असत् वस्तुने सत् तरीके जाणी, अने सत् वस्तुने असत् तरीके जाणी तेथी आंत थयो माटे हवे काया मायाथी तुं भिन्न छे. तारुं कोइ नथी कोइनो तुं नथी, तुं सर्वथी न्यारो छे एम अवबोध, ज्यां कोइनो संचार नथी एवो तुं आत्मा छे जो तुं तारा स्वरूपे रमे तो तृष्णा, काम, क्रोध, मोह स्वतः नाश पामे. मलीन जलमां जेम चंद्रतुं प्रतिविंव वरावर पहतुं नथी तेम तारुं मनरूप जल ज्यां सुधी विकल्प अने संकल्प वहें मलीन छे तावत तेमां आत्मरूपी चंद्रनुं मतिविव वरावर पडी शकतुं नथी, तं अज्ञाने पोताने भिक्षुक माने छे, पण हे आत्मा तुं तो त्रिभ्रवन-पति छो. हे पामर पाणी! तारामां त्रण रत्न छे ते प्राप्त कर अने जो ते आत्माने मळ्यां तो तुं सर्वोत्कृष्ट वने. जोने सिद्ध परमा-त्माओ, तेमने समये समये अनंत सुख छे ताहश अनंत सुख तारामां छे तेनुं दान दुं तारा आत्माने आप के जेथी कोइनो भय रहे नहीं. एम सद्गुरु महारान पामर माणीने उपदेशदारा भाव अभयदान अर्पे छे. ए दान पास्यायी कोइवार जन्म जरा मरण प्राप्त यतु नथी. शुद्ध सचिदानंदनी लहेरीयो आत्मामां प्रगट छे. ए भावदान पामेला जीवो अनंत सुखने पाभ्या, पामेले, अने पाः मशे. अहो ! सद्गुरुना समान जगत्मां मोटा कोइ दाने वरी नथी.

जेणे मिथ्यात्वनो नाश करी सम्यत्तवतुं दान आप्युं. एवा सट्गुरुनो कदापि काल उपकार वालवा कोइ समर्थ नथी, धर्मनी श्रद्धा करावनार धर्मगुरुए अनंत जन्म मरणनां दुःख टाल्यां, तेमनो उपकार क्षण पण वीसराय तेम नथी.

श्री प्रदेशी राजाने प्रतिवोधक केशी गणधर सदश सद्गुरु जाणवा. प्रदेशी राजा विलक्षल नास्तिक इतो तेनुं द्वांत कथेले.

श्वेतांविका नाम्नी नगरीमां प्रदेशीराजा राज्य करतो हतो ते नगरीना मृगवन नामना उद्यानमां केशीकुमार साधु परिवारे परि-वर्या, समवसर्या, धार्मिक नागरिक जनो भगवान्ते वंदनार्थे आ-ववा लाग्या, गुरुए देशना आरंभी, ते अवसरे कांवोज देशथी अश्वो आव्या छे तेनी परीक्षाने माटे चित्र सारथीए राजाने वि-नव्यो, चित्रे रथ जोड्यो, लांवा वखत सुधी अश्वो दोडाव्या. अश्वो याक्या त्यारे सगयस्वक चित्रे राजाने विनव्युं के स्वामिन् अश्वोने विश्रांति माटे दृक्षनी छायामां वेसाडवा जोइए एम कही राजा सह चित्रसारिथ मृगवनमां आव्यो, त्यां आचार्य देशना देता हता त्यां जेम आचार्यनी शव्दध्वान संभळाय तेम आसन्न मुकाम कर्यो. प्रदेशी राजाए भव्य जनोने उपदेश देता एवा केशी गणधरने दीठा.

राजाए मनमां चिंतव्युं के अरे आ मूढ शुं बोलतो हशे, अने अग्रस्थित एवा मूढ मनुष्यो शुं सांभलता हशे अहो खरेखर वक्ता अने श्रोताओ जड छे, एम मनमां विचारी राजाए चित्रसारथी मति कशुं-

मदेशी-अरे सारथी! आ जगत्थी विचित्र वेपधारक कोण इशे? अने ते शुं वके छे? चित्र—हे महाराज श्री पार्श्वनाथ नामना त्रेवीशमा तीर्थंकरना पन्त्र्र्गात शिष्यो छे अने ते देहथी जीव पृथक् कहे छे. प्रदेशी—हे चित्र! ते केवा प्रकारनी युक्तिओथी शरीरथी भित्र जीवनी अस्तिता कथे छे ?

चित्र-हे नरपते ! एनी मने माछम नथी तेमनी पासे गमन करी अवण करीए तो माछम पडे.

राजाए कहुं "चालो त्यारे तेमनी पासे, एम कही आचार्य पासे जइ स्थाणुनी पेटे विनयरहीत नास्तिक शिरोमणि बेटो.

मदेशी-तमो कइ कइ युक्तिओथी शरीरथी भिन्न आत्मा मानो छो? केशी गणधर-हे राजन ! ए प्रमाणे प्रश्न पुछवाने इच्छा राखे छे तो केम विनयनो भंग करे छे ?

मदेशी-शुं में असमंजस कर्धे ?

केशीस्ति-दूरस्थ एवा तें अमोने देखी मनमां एवं चिंतव्युं के आ मूढो मूर्खाओनी आगळ शुं असत्य वकेछे तें मनमां विकल्प कर्यो ते सत्य के असत्य ए प्रमाणे स्तिनुं वचन सांभळी राजा चमत्कार पाम्यो.

मदेशी-पराभिमायने तमोए शाथी जाण्यो ?

स्री-पांच ज्ञानमांथी मारा विषे चार ज्ञान के. तत्र प्रथमं
मितज्ञानं इंद्रियप्रणोदनोद्भूतं,। द्वितीयं श्रुतज्ञानं
तच्च श्रवणगृहीत पदवाक्येरथीवबोधरूपं। तृतीयं
अवधिज्ञानं तचेन्द्रियकज्ञानव्यतिरिक्तमात्मनेव प्रत्यक्षकृतं रूपि द्रव्यगोचरं। चतुर्थमनःपर्यायज्ञानं
तच्च मनुष्यलोकवर्तिनां संज्ञिजीवानां ये मनः

पर्यायान् विचित्रमनोऽवस्थाः ताश्चात्मनैव प्रत्य-श्लीकृत्य ततोर्थापत्यातिश्चितित्ज्ञानं । एतानि च-त्वारि ज्ञानािन मम संति तेन परंमनोविकित्यतं अहंजानािम । यत्तु पंचमं केवलज्ञानं तत्र सर्वा-ण्येतािन चत्त्वारि ज्ञानािन लीयंते सूर्यप्रकाशद-न्यताराप्रकाशवत् तच्च ज्ञानं मम नािस्त ।। मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, अने मनः पर्यायज्ञान ए चार मने वर्ते छे. तेथी मनः पर्यवज्ञाने अन्य मनोना अभिमायने हुं जाणुं छुं.

प्रदेशी-पोताना मनमां विचार करवा लाग्यो के अहो आ पहा-पुरुष छे, ज्ञानी छे, तेमनी साथे संभाषण लाभार्थे छे एम चिती वेसवानी इच्छावाळा राजाए स्रिरेने कहुं, हे स्वामिन् तमारी आज्ञा होय तो हुं वेसुं. स्रिए कहुं, तमारी पृथ्वी छे जेम सुख थाय तेम कर्डुं.

राजा वेसी वोल्पो-देह अने जीवनुं भिन्नत्व तमो कथो छो ते घटतुं नथी। आत्माने सुख दुःखनी अवस्थाना भेदो माटे पुण्य पापनी कल्पना करवी अने पश्चात् पुण्य पाप भोगार्थ मित पर्लोक गत्यागितनी कल्पना करवी ते मत्यक्ष ममाणयी विक् कद छे. कारण के-मारो पितामह अत्यंत पापी हतो, तेनो मारा छपर अत्यंत स्नेह हतो, जो ते कहेवा ममाणे न-रक्षमां गयो होय तो तेणे अत्र आवी केम पापनो निषेध कथी नहीं ? कारण के त्यां अत्यंत दुःख मारे भोगवनं पडे माटे, हे पुत्र तुं पाप मा कर हुं तो पापार्जनथी दुःखी थयो छुं एवो

जवाप नरकमांथी आवी मारा पिताए केम कहो नही शमाटे एवा व्यतिकरना अभावे हुं एम स्त्रीकारुं छुं के जीव देहनुं अक्य छे, कोइनुं पण परलोकगमन नथी.

फेशी गणधर-हे राजन ! जो कोइ पुरुष तारी राणीने भोगवे अने ते तें जाण्युं तो तुं तेने कोइक दंड आपे वा नहीं ?

मदेशी-तेने हुं घणी विडंबनाओ करी मारुं.

केशी०-ते पुरुष जो एम कहे के मने क्षणवार मूको तो हुं मारा कुटुंवने शिक्षा आपी आवुं के हुं अकृत्य करवाथी अत्यंत दुःखी थयो छुं माटे तमारे कोइए अकृत्य करवुं नहीं तो तुं तेनु वचन अंगीकार करे ?

प०-कदी तेनुं वचन मानी छोडुं नहीं.

केशी ॰ न्त्यारे ए प्रमाजे तमारा पितामह पण नरकमांथी आवी शके नहीं, ए प्रथम प्रश्लोत्तर.

मदेशी-मारा पितामह कदापि आवी शके नहीं तथी मारी मितज्ञा असत्य ठरती नथी; मारी पितामही तमारा शाशननी अनुरागिणी हती ने धर्म कर्ममां सदा आसक्त हती तो ते तमारी युक्तिए देवलोकमां गई तेनो मारा उपर अत्यंत स्नेहहतो तो तेणीए अत्रे आवीने केम मितवोध कर्यो नहीं! अरे पौत्र तुं धर्म आचर, हुं धर्म मसादथी स्वर्गमां गई छुं, अने तारा पितामहे तो पापना संचयथी नरक गित पामी एम तेणीए केम कह्युं नहीं, तेने तो अहीं आवतां कोई अटकावी शकतुं नथीं, तो तेना व्यतिकरना अभावे मारी मितज्ञा सत्यज छे. देहथी जीव भिन्न नथीं. एताहशी मितज्ञा मम सत्था.

केशीगणधर-ज्यारे तें स्नान करी सुगंधिद्रव्यतुं शरीरे विलेपन

कर्यु होय अने अलंकार वस्नोधी शरीर अलंकर्यु होय ते वस्तेत चंडाल आवीने कहे के स्वामिन मारा विष्टाना घरमां क्षणवार आवी वेसो. एम कहे त्यारे तेनुं वचन तुं स्वीकारे के नहीं ? प्रदेशी—त्यां जवुं तो द्र रह्यं पण तेनो संवंध पण हुं करुं नहीं ? केशी—देवताओ निर्मल पवित्र विक्रियशरीर धारण करी अत्यंत-सुख भोगवे छे, मनुष्यो सात धातुधी निष्पत्र औदारिक श-रीरने धारण करनारा छे, मनुष्य लोकनो गंध पंचशत योजन उर्ध्व उल्ले छे, मरक्यादि अभावे चतुःशत योजन दुर्गध प्रसरे छे. यतः

चत्तारिपंच जोयण सयाइं! गंधोय मणुय लोयस्स ॥ उहं वचइ जेणं । नहु देवा तेण आवंति ॥ १ ॥ संकंति दिव्वपेमा । विसय पसत्ता समत्तकत्तव्वा ॥ अणहीण मणुअकजा। नरभवमसुइं न इंति सुरा॥१॥

इत्यादि विचारी जोतां तारी पितामहीतुं आवागमन असंभ-वित छे, मनुष्यभव संबंधी मोहना अभावे अने दुंगीधस्थान-पणाथी तेतुं आवागमन थतुं नथी.

प्रदेशी-मारी पितामही जं अनागम हेत तमोए बुद्धिथी सिद्ध कर्युं किंतु में जीव देहनी अन्यता घणी युक्तिथी साधी छे. माटे मारो पक्ष सत्य छे, में एक जीवता चोरने निःछिद्र कोठीमां घाळी उपर ढांकणुं दीधुं. पुनर् मृत्तिकादि द्रव्योथी छिपी. केटलाक दिन पश्चात् ते उघाडी मृत चोर देख्यो, किंतु तेना जीवने निस्सरवानो निर्गमन मार्ग कोइए देख्यो नहीं, त्यारे में जाण्युं आनी चैतन्य शक्ति आ देहमां लय पामी अने जो विलय ना पामी होय तो जीव अन्यत्र जात, तो तेनो नीक-ळवानो मार्ग पण थएलो जणात, तेना जीवने नीकळवाना मार्गना अभावे मारी प्रतिज्ञा सत्य छे.

केशी-हे राजन कश्चित दुंदुभिवादक भूमीगृह (भीयरा) मां प्रवेशे अने पश्चात् भीयरानुं मुख वंध करे, जरा पण छिद्र रहेवा है नहीं, त्यां दुंदुभि वगाडे तो तेनो शब्द वाहिरना छोको सांभळ के नहीं ?

पदेशी-वाहिरना लोकोथी शब्द संभलाय.

केशी-ए दुंदुभिना शब्दने निस्सरवानो क्यांय मार्ग जणाय छे ? मदेशी-कोइ स्थाने जणातो नथी.

केशी-श्रोत्रथी ग्रहण थाय एवां शब्द पुर्गलोने निःसरवानों मार्ग जणातो नथी तो आकाशनी इव अरुपी आत्मानुं निर्गन मनद्वारे कथेरीत्यां पामी शकाय? गमे त्यां थई आत्मा अरुपी माटे नीकळी शके छे. ते स्थूळदृष्टिथी अवलोकाय नहीं. इति तृतीय प्रश्लोत्तर.

प्रदेशी-हे भगवन्! आपनी बुद्धिनी युक्तिथी ए वात साधी पण निश्चयसाध्य थती नथी. चोरना कलेवरमां कृमीयो उत्पन्न थया ते जीवो अछिद्रवाळी कुंभीना कया द्वार्थी प्रवेश्या ? चोरने कंइ छिद्र नहोतां तेथी प्रतिज्ञा करुं छुं के विकारवाळुं चोरनुं शरीर तदूपताने पाम्युं माटे मारी प्रतिज्ञा सत्यज्ञ छे.

फेशी-हे राजन् भूशंविन्हतप्तायोगोलकमां विन्ह प्रवेश छे के नही? प्रदेशी-अयोगोलकमां विन्ह प्रवेश छे.

केशी-त्यां छिद्रना अभावे अयोगोलकमां वन्हि प्रवेशनी उपलब्धि छे तद्वत् जीव पण द्वार विना पेसतो छतो। केम अश्रद्धेयक याय ? किंतु द्वार विना पण अरूरी आत्मानो मवेश थाय छे एम सद्दर्बु जोइए. (इति चतुर्थ प्रश्लोत्तरं).

- पदेशी-हे भगवन् तमारी युक्ति, प्रमाणे तो समलक्षणयुक्त सर्व जीवो छे ते घटतुं नथी लक्षणनी साम्यताए सर्वमां सरखुं बल होवुं जोइए ? ते प्रत्यक्ष प्रमाण विरुद्ध छे जे कारण माटे बालके छोडेलो बाण नजीक पडे छे, अने तरुणे छोडेलो बाण दूर पडे छे. ए सर्व जीव देहनी ऐक्यताए घटे छे, लघु शरीरे लघुवल, मोटा शरीरे वल पण महत् माटे सर्व जीवो-मां लक्षण साम्यताए समवलत्व अयुक्त छे माटे मारी प्रतिज्ञा सत्या समजवी.
- केशी कोइ वलवान तरूण पुरुष मत्यंचा चढावी वाण फेंके ते ज्यां सुधी भूमि उल्लंघे. ते ज धनुष्य चढावी वालक वाण फेंके ते युवान पुरुषे फेंकेला वाणे जेटली भूमि उल्लंघन करी छे तेटली भूमि आ उल्लंघन करे के नहीं ?
- मदेशी-ते वाण आसन्न भूमीमां पडे पण पूर्वोक्त, पुरुषे फेंके छं वाण तेना नेटली भूमी अवगाही शके नही ?

केशी-भला तेमां शो हेतु ?

परेशी-साधन वैकल्य तेमां हेतु छे.

- केशी-बालनुं शरीर निर्वल साधन छे धातुओना अपुष्टपणांथी, पृष्ट शरीर सवल साधन छे ते माटे सर्व जीवोमां लक्षणनी साम्यता अंगीकार कर. (इति पंचम प्रश्लोत्तरं).
- भदेशी-तमोए जीवोमां समलक्षणपणुं कहुं ते अस्त छे, कारण के युवान अने वालकनी शक्तिनी (पराक्रम) भिन्नता छे. वालकनी शक्ति अल्प छे, युवाननी विशेष छे. जो जीव एक

सरलो होय तो पराक्रम पण एक सरखुं होवुं जोइए, परा किममां भिन्नता छे माटे समलक्षणयुक्त जीवो कहेवाय नहीं अने ते विरोध प्राप्त थतां शरीरथी जीव भिन्न सिद्ध थतो नथी.

केशीकुमार-एक पुष्ट अने मोडुं पंखी होय ते जटला भारतुं उद्वहन करे तेटलो भार दुवल नाना पंखीथी उपडातो नथी. त्यां शरीर शक्तिरूप साधननो अभाव हेतु छे. मोटा पंखीमां शरीरशक्ति विशेष, नाना पंखीमां शरीरशक्ति अल्प तेथी तेना जेटलो भार उपाडी शकातो नथी. किंतु जीवो तो सर्व समलक्षणवंत छे, माटे समलक्षण जीवोतुं छे एम हे राजन तुं जाण.

प्रदेशी-हे भगवन में जीवता चोरने तुलामां जोख्यो, पश्चात् गळे पाश्यी मारी नाख्यो, मरेलाने पश्चात् तुलामां आरोही जो-ख्यो तो पण प्रथम जेटला भारनो हतो तेटलोज रह्यो, टंक प्रमाण पण हीन थयो नहीं, तेथी में विचार्यु के जो देहथी जीव भिन्न होय तो जीवनो अपगम थतां मृतक चोर श्रारीर करी हीन थवुं जोइए पणथयुं नहीं, तेथी सिद्ध टर्यु के-जीव देहनी ऐक्यता छे.

केशी-चामडानी धमणमां वायु पुरीने जोखवी, अने पश्चात् वायु काढी नांखी जोखवी, वायु पुरीने जोखेळी धमण करतां वायु काढी नांखी जोखेळी धमणमां वारु भारनी न्यूनता थाय छे ?

मदेशी-हे भगवन् ना भाग्यां कंइ न्यूनता थती नथी.

केशी-जो त्यां भार वधतो नथी तेम घटतो नथी तो अमूर्त आ॰ त्मानो देहमां शो भार होय ? के जेथी जीव नीकळ्या पश्चात् चोरतुं शरीर भारमां घटे ? वायुरूपी छे, शरीरी छे, आत्मा अरूपी, अशरीरी छे, अन्यत्र गतियां गमनकर्ता आत्मा सूक्ष्म शरीरी जाणवो. (इति षष्ठं प्रश्लोत्तरं).

मदेशी-एक चोरने में ककड़े ककड़ा करीने जोयो, त्वचादि सप्त धातुओतुं निरीक्षण कर्युं मल मूत्र पण अवलोक्युं पण क्यांय जीव देखायो नहीं, माटे जीव देहनी ऐक्यता सिद्ध टरी.

केशी-हे राजन वनोपजीवि जनवत् तुं मूढ छे.

मदेशी-कोण ते बनोपजीवि. दृष्टान्त.

केशी-जे काष्ट छेदन विक्रयथी स्वआजीविका निर्वहे छे,ते वनो-पजीवि पुरुषो कुहाडी करवतादि उपकरणो लेइ तथा पका-ववानां अन्न लेइ वनमां गया, त्यां तेओए एक पुरुषने कह्यं के अमो काष्टार्थे आगळ जइश्रं, तुं आ सुक्तं अरणिनुं काष्ठ अने आकडानुं काष्ठ वेगांथी अग्नि उत्पन्न करी रसोइ पका-वजे, एम कही ते वनमां गया, पेलो पुरुष केटलोक वखत निद्राधीन थइ पश्चात् अरणीना काष्ट्रना खंडोखंड करी अग्नि जोयो पण देखायो नहीं, तेम आकडाना लाकडाना खंडो-खंड करी जोयुं पण अग्नि दीठो नहीं, तेथी विलखों थयो, चरम प्रहरे ते पुरुषो आव्या, अने आने फहेवा लाग्या के-रसोइ तइयार थइ छे ? त्यारे मूढ पुरुषे कर्ष्युं के अपि विना शी रीते रसोइ करूं ? त्यारे तेओए कहुं आ अरणि अने आकडाना लाकडामां अने अग्नि छे तेम कहुं हतुं. तेनु केम? त्यारे तेने कहुं के-बन्ने जातिना काष्ट्रना खंडोखंड करी जोयुं पण अप्रि दीठो नहीं, त्यारे तेओए जाण्युं के, आ महा मूर्ख छे, पश्चात् तेओए अरणिकना काष्ट्रने नीचे मूकी, उपर स्कुं छाणुं मूकी आकडाना काष्ट्रथी मथन करी अग्नि उत्पन्न करी ते वड़े रसोइ पकाची सर्वेष खाधुं, पश्चात् सर्वे पोताने घेर गया, आ दृष्टांतनी पेठे हे राजन्! तुं पण मूर्ख छे.

मदेशी-तभी निषुण, बहुविद् छो तो सभा समक्ष तुं भूर्व छे एम केम मने कहुं ? ए केहेवुं तमने अनुचित छे.

केशी-मनुष्य छोकमां हे राजन् केटली सभाओ छे?

प्रदेशी-राजसभा, गाथापति सभा, ब्राह्मण सभा, अने चोथी रूपिसभा जाणवी.

केशी-ते सभाओमां अपराध करे तेने दंड शो आपवो ?

मदेशी-राजसभा, गाथापति सभा, अने ब्राह्मण सभामां अप-राध करनारने अनुक्रमे मोटी लघु शिक्षा करवामां आवे छे अने ऋषिसभामां अपराध करनारने वाणीवडे तर्जना कराय छे.

केशी-हे राजन्! तुं जाणतो छतो मने केम उपालंभ आपे छे कारण के तुं कुगुक्तिवडे वारंवार मारी प्रतिज्ञा सत्य छे एम कही वक्रपणुं धारण करे छे. माटे तुं अपराधी अमारो करेलो दंड गुक्त छे (इति सप्तम प्रश्लोत्तरं).

" द्रक्षनी शाखाओं कंपना लागी ते देखीने सूरि कहे छै. केशी-आ दृक्षनां पांदडां डाळीओं कोण हलानतुं हशे ? प्रदेशी-वायु हलाने छे, त्यां शो संदेह छे ? केशी-हे राजन् तुं वायु देखे छे ?

मदेशी-ना किंतु वायु स्पर्श वडे मत्यक्ष देखाय छे पँण चक्षुथी देखातो नथी.

कशी-वासु जैम त्वाय मत्यक्ष छे, तेम ज्ञान गुणवान् जीवं मानस मत्यक्ष छे, एम निश्चय जाणः

- मदेशी-कुंथुओमां अने हस्तिमां शी रीते समपरिणामी जीव होय? शी रीते ते साचुं मानवुं, छघु स्थानमां छघुं वस्तुनुं अव-स्थान युक्त छे, मोटी वस्तुनुं मोटा स्थानमां अवस्थान युक्त छे
- केशी-हे आयुष्मन्-पदीप प्रभानो दृष्टांत अत्र जण, दीपक मोटी शाळामां मूक्यो छतां तेंटली सर्व शाळाने तेनो प्रकाश व्यापीने रहे छे, तेम-कुंभमां मूक्यो छतां ते कुंभनो ज उद्योत करेंछे, तेम आत्मा जेवडा शरीरने अवगाही रह्यो होय छे तेटला शरीरनेज चेतना गुणवडे द्योतन करे छे त्यां जरा पण शंसय नथी. इति.
- मदेशी-हे भगवन् आपे अनादि कालथी लागेली एवीं मिथ्या-टेव मारी आज टाळी आपना सद्ज्ञानरूप सूर्यथी मिथ्यात्व अंधकार दूर टळ्युं. हे भगवन् मारो उद्धार करनार आप छो, इत्यादि स्तुति करी ब्रा ग्रही पोताना घेर गंयो. वीजा दिवसे अत्यंत आइंवर सहीत भाव अभयदानरूप समिकत दाता ग्ररूने वंदन कर्यु, विशेष अधिकार रायपसेगी सूत्रमां छे. श्री महाबीर प्रभुए श्रेणिकराजाने भाव अभयदान अर्धु, श्री नेमिनाथमभुए श्री कृष्णमहाराजने भाव अभयदान अप्धु, तेना जेवो अन्य कोइ जगत्मां उपकार नथी, माडे सद्गुरू भाव कल्पद्यक्ष द्वष्टांतने सार्थक छे, सुरनरनी उपमायी दान-गुग सर्वमां श्रेष्ट छे, अने तेथी धर्मीत्पत्ति छे, एम जगाव्युं, गुरूश्रीका जंगम तीर्धनी माति दुर्जन छे, ग्रामानुप्राम वि-चांता सर्गुरूनी माप्ति दुर्रुग छे, स्थावर तीर्थ पण भूत ्तीर्थिकरादिनुं स्मरण करावे छे, स्थावर तीर्थ उपर जेवी भाव मिक श्रद्धा होय छे ताहशी श्रद्धा भाव भक्ति जो सद्गुरू

उपर थाय तो आत्मा शिव्र परमात्मपद पामे, भाव तीर्थ पोतानो आत्मा समजवों, अनंत गुग तेमां भर्या छे, जो तेनी 🏸 यात्रा कोइ मुमुञ्ज धारे तो अवश्य मुक्ति पद पामे. आत्मारूप मञ्जना दर्शनार्थम् जतां प्रथम चतुर्दश पगवीयांरूव चौद गुण स्थानक उद्घंवतां क्षपक श्रेणिरूप दोरी झाळी आगळ चढतां वारमा गुणठाणे चारघातीयां कर्मना संक्षपथी जात्माना अ-संख्यातमदेशरूप महेलमां जवाय छे, अने तेमां विराजित परमात्मानां साक्षात् कैवल्यचक्षुयी दर्शन थाय छे, पश्चात आत्मा परमात्मनभूना दर्शन करे छे, त्यारे अजीकिक स्वरू-पवाळो वने छे, अने त्यांने त्यां रहे छे. पश्चात अघातिक कर्म क्षपणथी परमात्मस्वरूप वनी स्वयमेव पकाशे छे. यावत् भावतीर्थनी यात्रा थइ नथी तावत् सांसारिक भ्रमणप्रयंचमूलभूतरागद्वेषनी ग्रंथि छेदानी नथी माटे तेनी प्राप्तिनां हेतु स्थावस्तीर्थ अने जंगमतीर्थ छे. जंगमती-र्थनी सेत्रा भक्ति श्रद्धा, नमन, स्तुत्यादिद्वारा भावतीर्थ दर्शन थाय छे, यथा पोतानो आकार जेवो होय तेवो आदर्शमां जीवायी भारे छे तथा जंगमतीर्थ स्वरूपगुरूमहाराजना आलंबनथी याहक् आत्मानुं स्वरूप होय ताहक देखाय छे. आत्मानो प्रकाश सूर्य तथा चंद्रथी थतो नथी, किंतु स्वीय आत्मानो प्रकाश सर्गुरुद्वारा थाय छे, परपुर्ग उसंगी आ-त्मा परभावी थइ भवभ्रमणामां भूलयो, मोह मायामां झ्ल्यो, आत्मानी अनंत ऋदि हुल्यो, पण गुल्नी यात्रा करतां पो-तानुं स्वरूप समजायुं, माटे गुरु समान अन्य तीर्थ स्वात्म निर्मळकारक नथी, गुरु तेज पर्म जंगमतीर्थ छे, गुरुनी सेवा तेज गंगा नदी जाणवी, गुरुनी कुपाइछि तेज मारी

शुभ गति छे, ए प्रमाणे गुरु महाराज तीर्थरूप जाणवा, तीर्थ ने प्रकारनां छे. १ लौकिक तीर्थ, २ लोकांत्तर तीर्थ. वळी लोकोत्तर तीर्थ द्विधा छे, वली तीर्थ वे भेदे छे, स्वतीर्थ अने परतीर्थ, वली तीर्थ वे प्रकारनुं छे, द्रव्यतीर्थ अने भावतीर्थ. वळी शुद्ध अने अशुद्ध, ए वे प्रकारे तीर्थ छे. स्थावरतीर्थ करतां पण सट्गुरू विषे अधिक श्रद्धा भक्तिमाव जागशे, त्यारे नकी समजवुं, के आत्मातुं कल्याण थशे, धर्म-प्रद धर्मगुरुनी स्तुति पोताना आत्माने निर्मेल करे छे, गुरुनो राग, भवश्रमण त्याग करावे छे, गुरुने तीर्थनी उपमा आ-पवानो हेतु ए छे के गुरुराज संसार समुद्रमांथी भव्य जीवने तारे छे, एवा धर्म गुरुराजनुं शरण मन वचन अने कायावड थाओ, गुरुराजने सत्य देवनी उपमा आपवामां आवे छे, गुरु रूप देव तो पुण्य अने पापकृत्य स्वरुपने अववोधे छे, अने भन्यात्माओ उपर गुरु देव सदा काल कृपादृष्टि फेंके छे, अज्ञानरुप अंथकार कोइनाथी न।श पामे नहीं तेवा मिध्यात्व अंधिकारनो नाश गुरुमहाराज उपदेशद्वारा करे छे, गुरु तेज देव छे, श्री गौतम स्वामीना मनमां विद्यानी अहंकार हतो अने आत्मा छे के नहीं तेनी शंका हती, तेमनुं पग श्री महा-वीर गुरुए शंका टाळी चारित्र अर्पी हित कंधी, देवताओं पण पंचमहात्रत धारी ध्याननिष्ठ महाम्रुनि गुरुने नपस्कार करी स्तवे छे, माटे गुरु तेज सापेक्षनः देव जाणवा, आत्मा-नी सिद्धि गुरुथी थाय छे सर्व शान्वन मुखरूप मांगच्यनद गुरुराज छे, माटे आद्यमां स्तुतिरूप गुरुतुं मंगल कर्षुं, आत्मा पोताने स्वयमेव जाणे छे ते दर्शावे छे.

" दुहा. "

## तेने तेहिज ओळले, अवर म ज्ञाता कोय, ज्ञाता तेहिज आतमा, नित्यपणे जग जोय. २

भावार्थ-आत्मा पोते पोताने ओळले छे, आत्मा विना अन्य कोइ आत्मानो ज्ञाता नथी, सर्व पदार्थ ज्ञानवडे जे ज्ञाता छे, ते आत्मा जाणवो, आत्मानुं स्वरूप अन्यथा थतुं नथी, एज अद्भूत आश्चर्य छे. जगत् अवस्थितसर्व पदार्थी ज्ञानथी जणाय छे, अने स्वकीय शुद्ध स्वरूप पण ज्ञानथी जगाय छे, स्व परने ज्ञानमां विषयभूत करनार तेज आत्मा छे, आत्माथी भिन्न जड वस्तु-मां ज्ञान ग्रुग नथी, ज्ञान ग्रुण शक्ति अलौकिक छे, निगोदीया जीवोने पण आत्माना आड रुचक मदेश निर्मेळा छे, ज्ञान त्यां चेतन अने चेतन त्यां ज्ञान सदा रह्यं छे, निमित्तना योगे आत्मा पोताने स्यमेत्र अनायासे ज्ञानयी निहाळे छे, कोइ सिंहतुं वच्हुं नानुं धावणुं कोइ भरवाड पकडी लाव्यो. पेछं सिंहनुं वच्चुं वक-राना टोळा भे गुंरमशा फरवा लाग्युं, अने मनमां समजे छे के हुं पण वकरांना जेबुं छुं, मारी जाति अने वकरांनी जाति जुदी नथी, एप समजर्रं हतुं, प्रतिदिन ते सिंहवाल मोहुं थवा लाग्युं, एक दिवस वकरां सहित वाडामां ते वच्छुं वेठुं हतुं त्यारे एक सिंह आव्यो, पेछं सिंहनुं वच्चं मनमां त्रिचारवा लाग्धं के-अहो आ सामुं प्राणी देखाय छे ते विचित्र छे, तेनुं शरीर अने मारुं शरीर मळतुं आवे छे हुं जे टोळामां रहुं छुं तेना शरीरनां लक्षण अने मारा शरीरनां लक्षण भिन्न भिन्न छे, आ सामुं जे पाणी देखाय छे तेना सरखो हुं छुं, एम ज्ञान थनां एकदम वाडामांथी वहार नीकळी गयो अने सिंह समुदायमां भळ्यो, तेम आत्मा पोतानुं

स्वरूप स्वयमेव आलंबन योगे पामी परमात्मस्वरूपमय वने छे कहुं छे के—

अज कुल गति केसरी लहेरे, निज पद सिंह निहाळ; तिम प्रभुभक्तें भवि लहेरे, आतमशक्ति संभाळ अजित.

परमात्म स्वरूप ओळाखी तेनुं ध्यान करतां पोतानो आत्मा पण परमात्म रूप भासे छे, परमात्मा अने मारामां भेदभाव नथी, मलीन सुवर्ण समान संसारी भव्यात्माओनी स्थीति छे, अने शुद्ध कंचन समान सिद्धात्मानी दशा छे, मलीनतानो अपगम ध्यान-योगे थतां परमात्मरूप वनी त्रिश्चवन पदार्थ ग्रुग पर्याय ज्ञाता बने छे, ज्ञातुत्वशक्ति आत्मामां रही छे, जडमां ज्ञातुत्वशक्ति नथी,जड पदार्थ ज्ञेय छे, जेटला ज्ञेय पदार्थ तेट छं ज्ञान समन हुं, ज्ञेय पहार्थ अनंत छे, तेथी ज्ञान पण अनंत कहेवाय छे, अने ते प्रपाणे अनु-भवमां आवे छे, ज्ञातृशक्तिनो आधार चेतन (आत्मा ) छे, आ-त्मानो करी नाश थतो नथी, माटे नित्य छे, यथि अविद्याना योगे अनेक शरीरो धारण करे छे तो पग पोताना स्वरूपने त्य-जतो नथी, अज्ञानी जीव एम जो कहेवा लागे के आत्मा नथी पण तेना वचनथीज सिद्ध थाय छे के आत्नानी अस्तिता छे तो ते जीव नास्ति एप कहे छे, अवियानो नाश थतां अवश्य यथान-ध्य सहेजे आत्मात्त्व भासे छे, आत्मा अनंत सुखनो धर्मा छे, सुख दुःखनी चेष्टा आत्मानी मेरणाए थाय छे, इष्टानिष्ट ज्ञाता आत्मा छे, जो ए आत्मतत्त्व सम्यक् रीत्या ओळलाय अने तेतुं शान थाय तो स्वानी पेटे सर्व जगत् देखाय, आत्वामां जे चित्तरति राखी चिंतवन करे छे ते पुरुषो आत्माने सहेने ओळखे छे अने अखंड मुख भोक्ता वने छे.

<sup>(4</sup> दुहा. "

# समाय तुं तारा विषे, तारु ताहरी पासः मारु मारु क्यां करे, धरतो परनी आश. ३

हे आत्मा हुं तारा स्वरूपमां समाय छे, तारी गति सर्वना करतां न्यारी अने अनंत आनंद आपनारी छे, तुं कोइ अन्य पदा-र्थमां रहेतो नथी, प्रकाशथी तमः समूह यथा सर्वथा न्यारं छे, तेम अनंत शक्तिधारक चेतनथी सांसारिक स्वरूप सर्वथा न्यार छे. अवळी परिणतियोगे परवस्तुने पोनानी मानी मनताना पासमां पडे छ पण सहजानंदी आत्मा विवेकथी तुं विचार के-स्वमामां-भासेछं जगत् जेम मिथ्या छे, तेम वाह्यवस्तु पण तारी नथी, चेतन तारी ऋदि ताराथी जरा मात्र भिन्न नथी, जेव मृगथी कस्तुरी भिन्न नथी तेनी दुंटीमांज रहेली छे, तेम आत्मानी ऋदि पोता-नामां भरी छे; परवात्मवद आत्मामां छे, आचार्यवणुं पण आत्मा-मां छे, तेम उपाध्याय, साधुपणुं पण आत्मामां छे, ज्ञान, दर्जन, चारित्र अने तप वीर्य आदि गुगो पण आत्मामां रहा छे, अनंत सुख पण आत्मामां छे, तो वहिरात्मभावे हे चेतन परनी आग्ना-थी मृढ वनी मारु मारु एम शुं चिंतवे छे ? परवस्तु तारी कदी थवानी नथी. एम निश्रय जाण, तारी ऋदि ताराथी न्यारी नथी, ख़ोने सो पावे. आ कहेवत आत्मामां योजवी, अनादि कालथी चेतन मिथ्यात्वयोगे स्वस्वरूपना अनुपयोगे परवस्तुने पोतानी मानी जन्म जरा मरण उपाधि पामी, किंतु इवे निर्णयपूर्वक जा-णवामां आव्युं के-परवस्तु अचेतन जड विशिष्ट छे, हुं एना नथी, ए मारु नथी, हुं मारा स्वरूपे समायो छुं, हुं जे जे वस्तुओ चक्षु-थी देखुं छुं, घ्राणे सुंधुं छुं, जिन्हाए स्वादुं छुं, ते ते वस्तुओमां

हुं नथी माराथी सर्व पदार्थ जणाय छे, तो पण ते पदार्थीमां हुं नथी. सर्व पदार्थी पकाश्य छे, अने हुं पकाशक छुं, मारी जे वस्तु नथी तेनी ममता हुं केम राखुं ? पुद्गलनी एँठ आ जीवे विहरा-त्मभावे वा खुधावेदनीना उदये भक्षण करी पण ते पुद्गल अंते मारुं नथी, एम निश्चय करी स्वस्त्रभावे स्थिर रहेवुं एवं हिताकांक्षा.

" दुहा. "

### देखी आत्मस्वरूपने, जाण्यो पुद्गल खेल; न्यारो तेथी आतमा, चिदानंद ग्रणरेल ॥ ४ ॥

भावार्थ-परोपक्तिमान् श्री सट्युरुद्वारा ध्याननी एकाव्रताए आत्मस्वरूप भार्स्युं त्यारे आ सांसारिक व्रपंच सर्वे पुद्गल खेल जाण्यो, ते खेलथी आत्मा न्यारो छे अहो थुं आश्रर्थ, सर्व सां-सारिक पदार्थी नाशवंत छे. अने आत्मा अविनाशी छे, आनंद, अने ज्ञाननो धारक आत्मा छे, आत्मस्वरूप वतावे छे.

#### पद्.

चेते तो चेतावुं तनेरे, पामर प्राणी-ए राग. आतम रूप देखुं आजेरे सकल सुख, अचल अखंड योगी, अभोगी अञ्चोगी भोगी; स्वभावे ते नहीं रे।गीरे-सकल सु० आत॰ देहमांहीं वसनारो, देहातीत मन धारो; रूप रंग थकी न्यारो रे-सकल. २् आत० जाणे सुख दुःख सहु, चेतन छे जग वहु; व्यापी घट घट वहुरे–सक**ळ**० Ę आत० नाम टाम जेने नहीं, नहीं जाति भाति कही; पोतानामां च्यापो रही रे~सकल० अति०

निरंजन निराकार, ज्ञानदृष्टि आरपार;

बुद्धिसागर सुखकार रे-सक्छ०

आतं० ५

परिपूर्ण सुखरूप आत्मानुं स्वरूप-निर्विशार अखंड छे, आत्मतत्त्वमापक जीवोने कोइनी स्पृहा रहेती नथी. कोइ निदा करे वा स्तुति करे तोपण हर्ष शोक रहित आत्मज्ञानी विचरे छे, राग द्रेपनी परिणाति मंद पडे छे, समये समये आत्मिक सुख संतित वृद्धि पामे छे, तृष्णानुं मूळ छेदाय छे, परस्वभाव महित्त स्वयमेव विरमे छे, अने आत्मस्वभावमहित्द्वारा निहित्त सुखोद्भव थाय छे, देहमां वसतां देहातीत अवस्थानो भोगी आत्मा वने छे, काक-विष्टा सम पौद्गालिक विषय सुख लागे छे, परनिदातो आत्मज्ञानीने गमती नथीं, आत्मस्वरूपना ध्यानी पुरुपने जे सुख थाय छे ते अवाच्य छे, आनंदनो समुद्रज जाणे होयनी एवो अध्यात्म ज्ञानीनो आत्मा वने छे, आत्मज्ञानीनी दशा माप्त थया विना आत्मिक सुखनो अनुभव पमातो नथी, आत्मा परम पूज्य छे अन्तरात्मयोगी थइ परमात्मपदमय ध्यानथी थता अनहद सुख भोगी आत्मा स्वयमेव स्वस्वरूपी धइ रहे छे.

" दुहा. "

ध्यानथी दृष्टि फेंकुं ज्यां, त्यां सहु स्वरूपे स्थिरः श्रुत्व मित्र स्वप्तु भयुं, गइ अनादिकु पीर ॥५॥

भावार्थ-मन, वचन, कायानी एकाग्र आतम स्वरूपे थतां जगत् विचित्र देखायुं, मथम ध्याननी पूर्वे सर्व जगत् हास्तिना क-णैनी पेठे चंचल उन्मत्त लागतुं हतुं, ते हवे ध्याननी एकाग्रताए स्वस्वरूपे स्थिर थतां सर्व जगत् पोताना स्वरूपे स्थिर देखायुं, मारं मन चंचल तो सर्व वस्तु चंचल अने गारं मन स्थिर तो सर्व वस्तु स्थिर एम देखायुं तेथी सार छीधो के-मन जो आत्मामां रमे तो मोक्ष अने मनः परभावमां रमे तो भवश्रमणता, एनो निश्रय थयो, आत्मज्ञान विशेष थतां स्थिरता सर्वत्र भासे छे, कक्षुं छे के-

### भासे आतम ज्ञान धुरि, जग उन्मत्त समानः आगे दृढ अभ्याससे, पत्थर तृण अनुमान ॥५॥

सारमां सार ग्राह्म, आराध्य आत्मा छे, ध्यानथी आत्मामां रमतां शत्रु मित्र स्वमनी पेटे भासे छे, अर्थात् शत्रु मित्र आत्म झानीनो कोइ नथी. अनादि कालनी लागेली कुटेव तो नाशी गइ अने श्रुद्ध चेतना मगट थइ, मिध्यात्वपणुं टल्युं, आत्मानुं श्रुद्ध स्व-रूप मगट थतां सहजानंद मगटे छे, आत्मज्ञानीओ एवी दशामां रमे छे, तेमने पुनः पुनः नमस्कार थाओ.

<sup>46</sup> दुहा. <sup>>></sup>

## अहं बुद्धि परमां धरी, परमांही बंधाउं; अहं बुद्धि जो आत्ममां, तो हुं क्यां रंगाउं.॥६॥

परवस्तुमां अहंपणानी बुद्धि धारण करी कर्मरूप परवस्तुमां बंधाउं छुं, पण जो आत्मामां अहंपणानी बुद्धि थह एटछे आत्मा पोते हुंछुं अन्यमां हुं नथी, आवी बुद्धि थतां हुं आत्मा कोइथी वयांय रंगातो नथी. अर्थात् कर्में करी छेपातो नथी, जे महात्माओ आत्मामांज हात्त राखे छे ते आत्मानी ऋद्धि पामे छे, परमां चित्तहत्ति राखवाथी अमुक दुष्ट अमुक छंपट अमुक वेरी इत्मादि बुद्धि थाय छे पण पोताना आत्मानी सत्तानु चितवन कर्याथी पोतानुं स्वरूप पाप्त थाय छे.

" दुहा<sub>•</sub> "

काल अनादि परिणभ्यो, आतम जडने संगः अशुद्ध परिणामे करी, करतो नाटारंगः ॥७॥ पोताना अज्ञानथी, पाम्यो दुःख अनंतः स्वपदज्ञानाप्ति ग्रही, थयो सिद्ध भगवंत, ॥८॥

भावार्थ-अनादि काल्यी जीव कर्माष्टक ग्रही औदारिकादि श्रारे ग्रही जह संगे दुग्ध पयोवत् परिणम्यो छतो अने ते कर्मना योगे पोताना आत्माना थयेला अशुद्ध परिणामे करी चतुर्गति रूप सं-सारमां जन्म जरा मरणनां दुःख ग्रही नाटारंग करतो फर्या करे छे, आत्मानो शुद्ध परिणाम थतां भव मपंचनी बाजी नाश पामे छे, पोताना एटले आत्माना अज्ञानथी जीव अनंत दुःख पाम्यो। श्रारेने आत्मा मानी वहिरात्मभावे रमतो फरतो पोतानुं स्वरूप भूल्यो, दुःखनो समुह पोताना अज्ञानथीज माप्त थाय छे. पण सद्गुरु समागमे आत्मस्वरूप जाण्युं तेमां रमणता करी कर्मनो नाश कर्यो. अने मोक्ष स्थाननी माप्ति करी सिद्ध भगवंत थयो ए सर्व आत्मज्ञाननुं फल छे.

" दुहा "

जेनाथी निज आतमा, समजायो सुलकंदः त्रिकरण योगे भावथी, नमुं गुरू क्रमदंद्य.॥९॥

सुखकंद अनंतगुणिविशिष्ट आत्मस्वरूप जे गुरुना वोधयी समजायुं ते सद्गुरु महाराजना चरण कमछद्वयने भावयी मन व-चन अने कायाए करी नमस्कार करुछं, आत्माने ओळखावनार् गुरु छे, गुरु पण आत्मा छे अने भोता पण आत्मा छे, किंतु गुरुनो आत्मा ज्ञानवंत छे अने सेवक श्रोताजननो आत्मा निर्मे नथी तेने जणावनार गुरु छे, उपदेशक धर्मतीर्थ छे, माटे गुरुनेज मोहं तीर्थ जाणवं, मुदर्शना चिरित्रमां चारण मुनिए चंद्रगुत्तराजाने महाफळ जाणी उपदेश आप्यो छे, सद्गुरु समान त्रिभुवनमां मोहं कोई तीर्थ नथी. सद्गुरु मोहं तीर्थ छे एम मनमां श्रद्धा धतां सम्यक्त्वनी प्राप्ति यशे, इदयमां गुरुनी मृत्ति स्थापन करी तेनुं एकाग्रवित्तथी भक्ति पूजन ध्यान करवाथी आत्माने अछोकित शांति यशे, अने दररोज एम ध्यान धरवाथी पोताने साक्षात् सद्गुरु जाणे होयनी एम साक्षात् भासे यशे, अने गुरु माहात्म्यथी अनुभव ज्ञाननो प्रवाह वहन यशे, अने दुर्गुणोनो अवश्य नाश थतां मन त्रसन्न थशे, अने आत्मा सद्गु-णधाम यशे.

### " दुहा. "

सद्युरु वण भव दुःखनो, परिहारक निह कोय ॥ ते सद्युरु नित्य वंदीए, जन्म सफलता होय ॥१०॥

भावार्थ-भव दुःख अंतकारक सद्गुरु विना अन्य कोइ नथी,
ते सद्गुरुने मतिदिन वंदन करवाथी जन्मनी सार्थकता छे, घोर
कर्म करनारा दुष्टननो पण गुरुना उपदेशथी गुरुता पामी शारीरिक मानसिक दुःख संक्षय करी पंचपीगतिने पाम्या छे, पामे
छे, अने पामशे-

" दुहा. "

साधन साध्यापेक्षथी, जे पाळे आचार; राग रोष मद जीतता, सफलो तस अवतार॥११॥

# रागादिक त्यागी शमे, करशे आतम ध्यान; सम्यग् ज्ञान किया थकी, थाशे ते भगवान्॥१२॥

भावार्थ-ने भव्यात्माओं पंच महात्रतादिनो आचार साधन साध्यनी सापेक्ष बुद्धिथी पाळे छे, अने राग रोपने जीने छे, तेनो आचार सफळ छे, अने ते दुनियामां जनम्यों सफळ छे, क्रोध, मान, माया, छोभ, निंदादिनो जय करी श्रमभावे जे मुमुखुओ आत्मध्यानं करशे, अने सम्यग्ज्ञान अने सम्यग्क्रियानु अवलंबन करशे ते पोते भगवान् थशे, कर्मपळना नाशथी आत्मा ते सिद्धारमा थइ शके छे, किंतु अभव्यजीव मुक्तिपद पामी शकता नथी, कारणके अभव्यजीवोमां मुक्ति पामवा-नो स्त्रभाव नथी. अभव्य जीवोतुं उपादानकारण शुद्ध थइ शकतुं नथी, भव्यजीवोत्तं उपादानकारण शुद्धसामग्री योगे थइ शके छे, संसारमां परिश्रमण करवानुं मुख्यकारणराग अने द्वेषमा-वकर्ष छे, नोक्रपायसहचारि भावकर्ममां छे, क्रोध, मान, माया, अने छोभनो राग द्वेषमां अंतर्भाव छे, सिख थता जीवोने राग द्वेष अनादि सान्त भांगे छे, अभव्यभीवने रागद्वेष अनादि अ-नंत भांगे छे, रागअने द्वेषनो क्षय संवर्षी सर्वेषा थाय छे, बहिरात्मभावे राग द्वेषनो क्षय थतो नथी, ज्यारे अंतरात्मपणुं प्राप्त थाय छे, त्यारे राग द्वेषनो क्षय थइ शके छे. कहां छे के-

राग देव के त्याग विन, मुक्तिको पद नांहि;

कोटि कोटि जप तप करे, सवे अकारज थाय॥१॥

रागद्वेषना क्षय विना मुक्तिपद माप्त यतुं नथी, राग द्वेपना त्याग विना कोटि कोटि जा तप करे तो पण छेले यतुं नथी, मथम आत्मस्तरूप गुरुसमक्ष जाणवामां अभि, जडतुं यथातथ्य

(38)

स्वरूप जाणवामां आवे पश्चात् जढ अने आत्मानी भिन्नता माछप पडतां विवेक पगटे, विवेकथी आत्मतत्त्वआदेथ छह्यमां ग्रहे, अने अजीवतस्य हेय जाणे पश्चात् आत्मा विचारे के-मारामां अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत क्षाधिक चारित्र, अनंत वीर्ध छे, हुं स्वतंत्र छं, किंतु अनादिकाळथी राग द्वेषना योगे परतंत्र छं, राग द्वेष ए मार्छ आत्मस्वरूप नथी, एम विचारनां सर्वत्र सर्व प्राणी उपर तथा वस्तुओ उपर समभाव प्रगटे, दुनीयानी सर्व वस्तुने शमभाव निरखे, राग द्वेषनो क्षय शमभावे आत्मध्याने प्रवर्ततां थाय अने सम्यग्ज्ञान अने क्रियाथी मुक्तिगद मळे माटे जे मुनिवरी रागादिकनी त्याग करी वाधुनी पेठे अपतिवद्धताए विचरी स्वआत्मिहितमां छीन रहेशे, ते क्षणिक आयुष्यनी सफळतां करे छे. " दुहा. "

को किरिया जड बोलता, तरशुं अम संसार; कर्मनाश किरिया थकी, सफलो अम आचार ॥१३॥ बहिर् क्रियामां राचता, अंतर्तस्व न भानः भूल्या भवमां भटकता, कियाजडी अज्ञान ॥१४॥

भावार्थ-कोइक कियाहचित्रीयो एप माने छेके-अपो क्रिया करवाथी संसार समुद्र तरीशुं, अमो जे ऋिपाकांडनो आचार आदरीये छीए ते कर्प नाश करशे, माटे किया सफल छे, जे जे किया छे ते सफ्छ छे, यथा दोहर, भन्न गिक्रिया, ते प्रमाणे पिंड-छेहण (मनिछेखन) आदि कियाओ पण कर्म नाश कर नाथी सफल छे, ए प्राणे साध्य आत्पतत्वना अजाणपणे अंतर्किपा जे ध्यानादिकनुं स्वरूप नहीं जाणवायी क्रिपाजड पुरुषो भवमां

4

भटनया, भटके छे, अने भटकशे, अने परमात्मपद केम पामी शके, साध्य सापेक्षताए क्रिया सफछ छे, एम एकांते वाशक्रियाथी जटात्माओ इष्टफळ जे मोक्ष ते पामी शकता नथी.

" दुइा• "

कोइ ज्ञानने मानता, ज्ञान सत्य जग सार; विना ज्ञान क्यां मुक्तिफल, ज्ञाने भवजल पार॥१५॥ एकांते एम जे श्रहे, करे कदाश्रह चित्त; आत्मतत्त्व पाम्या विना, होय न तत्त्व प्रतीत॥१६॥

केटलाक भन्यात्माओ ज्ञानने मिक्तिपद माने छे, आत्मतत्त्वना ज्ञान विना मुक्ति नथी, ज्ञानथी संसार समुद्र तरी शकायछे, आत्मतत्त्वना बोध विना जे भन्यो एकांते हृदयमां हट कदाग्रह धारण करी स्वेच्छाए प्रवर्ते छे, ते परमात्मपद पामी शकता नथी, आत्मतत्त्व पाम्या विना मोक्षनी प्राप्ति थती नथी.

" दुहा "

युवत्यंग निरख्या थकी, विषय तृपि निह थायः; भोजनज्ञान थया थकी, भूख न भागे भाय ॥१७॥

भावार्थ-युवितना अंगनुं निरीक्षण करवाथी विषयिपुरुषोने विषयनी तृति थती नथी, नेमन वरकी, द्रापाक, भिष्टांक भोज-ननुं जाणपणुं मात्र थवाथी, उदरपूर्ति थती नथी, माटे तेनी किया कराय तो इष्ट फडनी सिद्धि थाय छे, माटे कियानी मुख्यताए फड सिद्धि छे.

ज्ञानवादी है कियावादी ! तमी कियाने फलदायक कहोली ते युक्त नथी, किया करवाथी संसारनी दृद्धि थाय छे, रांपवुं, युद्ध करवुं, ए आदि किया छे तो तेथी मुक्ति नथी, किंतु कर्मवंत्र छे, माटे किया संसारद्योद्धेतुभूत छे, माटे ज्ञान तेज सार छे, कर्मक्षय झानथी थाय छे.

कियावादी—किया थकीज मोक्ष छे, किया वे प्रकारनी छे, १ कर्मिकया. २ धर्मिकया, जे कियाथी संसारमां परिश्रमण करवुं पढे अने आश्रवनुं ग्रहण थाय ते कर्मिकया जाणवी, तेनो तो त्याग करवो योग्य छे. पण जेनाथी जन्म जरा मृत्युनां दुःख नाश पामे एवी धर्म कियाओ कही छे, ते क-रवी जोइए, कारण के तेनाथी कर्मनो नाश थाय छे, किंतु झान थकी थतो नथी माटे क्रिका तेज मोक्ष मार्ग छे.

क्वानवादी—धर्मने माटे क्रियानी जरुर नथी, आत्मानी मुक्ति तो ज्ञानथी थाय छे, श्ररीरनी किया, वचननी किया शुं मोक्ष आपी शके १ ना नहीं. पननी किया विकल्परूप मोक्ष आपी शक्ती नथी, किंतु आत्मानुं ज्ञान थवाथी मुक्ति माप्ति छे, ज्यां ज्यां किया त्यां कर्मनो वंघ समजवो, कारण के किया जह छे तो तथी उत्पन्न थनार फळ पण कर्म जहछे, तो मुक्ति क्यांथी मळे १ माटे ज्ञानथी मुक्तिनी सिद्धता छे.

क्रियावादी—क्रियान जह कही किंतु क्रियाथी जहनी नाश थाय छे, कारण के मजातियथकी सजातियनो नाश थायछे, इंटनी नाश मोगरथी थायछे, तेम कर्मछे ते जहछे तो तेनो नाश क्रियाथी थायछे माटे क्रियाथी नाश थवी तेज मोक्ष जाणबुं, ज्ञानथी कर्मनो नाश शी रीते थाय १ माटे कर्म ना शिका क्रिया जाणवी, मानसिक, वाचिक, कायिक क्रिया करवाथी कर्म नाश थायछे, माटे ते करवी जोइए अने क्रिया ज मोक्ष फळदाछे. ज्ञानवादी—तमीए जह थकी जहनो नाज थयो एम कहुं, ते युक्त नथी तमारा मत प्रमाणे तो एमज सिद्ध थायछे के पाप कर-विंथी पण कर्म नाज थाय, कारण के पाप पण जह छे अने कर्म पण जह छे माटे पापथी कर्मनो नाज थाय तो पश्चात् दया, सत्य, तप करवानी जी जरुर होवी जोइए १ अने जो एम होय तो पापी जीवोनी जीघ्र मुक्ति थवी जोइए अने धर्मी अने पापी एवो भेद भाव पण असत्य थाय किंतु ज्ञास्त्रमां वीतराग भगवंते तो एम कहुं छे के पाप छत्यथी कदापि मुक्ति मळती नथी, माटे ज्ञानने सत्य मानो. अने तेनाथी मुक्ति थायछे.

क्रियावादी—हे ज्ञानवादी ! तुं मारुं कथन समजी जनयो नहीं,
प्रतिपक्षी जडथकी प्रतिपक्षी जडनो नाज्ञ थायछे, कर्मनुं प्रतिपक्षी पाप नथी माटे पापथी कर्मनो नाज्ञ थतो नथी, पुण्य
अने पाप ए वे परस्पर प्रतिपक्षीछे माटे पुण्यथी पापनो नाज्ञ
थायछे. पुण्यनी क्रिया दुःखनाज्ञक छे माटे धर्मनी क्रिया
अवदय करवी जोइए.

ज्ञानवादी-पुण्यनी कियाथी कंइ कमेनो नाश थतो नथी, कारण के पुण्य पण कमेस्वरूपछे, तो पुण्यथी कमेनी दृद्धि थाय पण कमेनो नाश तो थतो नथी, माटे ज्ञानथीन सुक्ति थायछे एम मानवुं जोइए.

क्रियावादी भला ठीक पुण्यथकी कर्मनो नाश न थाय तोपण शातावेदनीयकर्म वंधाय अने तेथी उत्तम कूलमां जन्म थाय धन, पुत्रादि ऋदि माप्त थाय तेथी सुख मले ते पण कियानुं फल छे, अने तेथी अनुक्रमे कर्मनो नाश थाय माटे कियाकां-दनी साफल्यताले.

क्रानवादी-पुण्यथी शातावेदनीयकर्म बंधायछे अने तेनो भोग

भोगववा अवतार धारण करतां जन्म जरा मरणनां दुःख प्राप्त थायछे, अवे अवतार धारण करतां पश्चात् ते भवमां वळी नवां कर्म वंधाय पण कर्म वंधनो पार आवे नहीं, ज्ञानथी कर्मनो नाश्चथायछे माटे तेनो स्वीकार करनो योग्यछे.

क्रियावादी-अमो क्रियाथी कर्मनो नाश मानीय छीए ते सयुक्त छे, उत्तम अवतार आव्या विना धर्मनां कार्य यह शकतां नथी, पिंडलेहण, मितक्रमण, मश्चपूजा, इत्यादि क्रियाओ पापनो नाश करे छे, अने नवीन कर्म मितवंधकद्वारा आत्मा नि• मैळ थतां शुक्तिनी माप्ति थायछे माटे क्रिया सफलछे.

इानवादी-धर्मनी क्रिया उत्तम कुळजन्म धनसंपत्ति आपनारीछे, पण तेथी कर्मनी दृद्धिछे. पडिलेहण, मतिक्रमण, मभुपूजा, पण कर्मनो नाश करी शकती नथी, जरा सक्ष्मदृष्टियी वि• चारो के-ज्ञान विना क्रिया करवाथी थें फल यह शके ? ज्ञानामिः सर्वकर्माणि, भस्मसात् छुरुतेऽज्ञेन ज्ञान अग्रि सर्व कर्म वर्लीने मस्मीभूत करे छे, माढे हठ कदाग्रह त्यागी, ज्ञान मुक्तिमद मानवुं ते योग्यछे.

क्रियावादी-क्रिया विना ज्ञाननी उत्पत्ति यती नथी, ज्ञाननो अभ्यास ज्ञानने उत्पन्न करेछे, प्रथमथी कंइ ज्ञान होतुं नथी। विद्याभ्यास करतां करतां ज्ञाननो प्रकाश थायछे, सारमां समजवातुं के ज्ञानाभ्यासरूप क्रियाथी ज्ञान उत्पन्न थायछे तो क्रियाथी कर्मनो नाश थाय एमां कंइ शंका नथी, माटे क्रि-याथी कर्मनाश मानवो योग्यछे.

इंगिनवादी-ज्ञान विना सर्वत्र अंघारं, जें कर्मनो नाश करवानोछे ते कर्मनुं स्वरूप जाण्या विना कर्मनो नाश शी रीते थाय ? चैत्रने मेत्र नामना पुरुषे कर्नुं के, तारो चक्रवेग नामनो शत्रु छे ते तने मारवा धारेछे, हवे जो चैत्रने चक्रवेग ओळखतो होय तो चैत्रनो घात करे, अन्यथा तेनो नाश करी शके नहीं. तेम हष्टांतथी समजवानुं के-कर्मनो नाश करवो ते कर्मनुं ज्ञान थया विनावनतो नथी माटे ज्ञानथी कर्मनो नाश मानवो जोइए.

क्रियावादी—फक्त वस्तुनु ज्ञान थवा मात्रथी फलनी सिद्धि थती नथी, एक माणसने भोजन करवानुं ज्ञान थयुं पण भोजननो सुखमां प्रक्षेप करे चावे त्यारे तेनी उदरपूर्ति थाय अने क्षुधा मटे, माटे क्रियाज फलमद छे. ज्ञान तो जाणवा मात्रछे, जेम कोइ तारु (तरनार) जळमां तरवानुं जाणेछे किंतु जलमां प्रवेश करी हाथ पग हलावे नहीं तो बुडी जाय तेम कर्मनुं ज्ञान थतां कर्म नाशकारक क्रिया नहीं कराय तो कर्मनो नाश थतो नथी, परंतु क्रियाकरणथी कर्म नाश थायछे.

इ।नवादी-तमारुं कथन ठीकछे, किंतु ज्ञान विना वस्तुनुं यथा-तथ्य स्वरूप जाणी शकातुं नथी, तो पश्चात् ते आदरी श-कातुं नथी, मोदक वनाववानुं जाणे अने ते भक्षण कर्यांथी अमुक फायदो थायछे ते जाणी शकाय तो त्यार वाद करी शकाय, जे वस्तुनुं ज्ञान नयी ते वस्तुनी क्रिया शी रीते करी शकाय ?—हष्टांत तरीके जाणो के—कोइ मनुष्यने वीजा मनु-ष्ये कह्युं के शास्त्रमां आकाशगामिनी विद्या कहीछे, तेनुं ज्ञान थाय तो आकाशमां उडी शकाय, त्यारे पेछा मनुष्ये शास्त्रनी शोध करी आकाशगामिनी विद्या जाणी, त्यार वाद क्रिया करी आकाशमां गमन करवा छाग्यो. अत्र समजवानुं के आ-काशगामिनी विद्यानुं ज्ञान थतां तेनी क्रिया थइ शके, माटे शाननी मुख्यताछे, ज्ञान विना कोइ क्रिया थइ शकती नथी क्रियावादी—हे ज्ञानवादी! तमा मूळ हेतुथी विरुद्ध उतरोछो, तमारे विचारवुं के—ज्यां ज्यां क्रियाछे त्यां अवश्य क्षान रखं होयछे, ज्यां साकर त्यां साकरनो रस, ज्यां केरी त्यां तेनो रस अवश्य होयछे, तेम ज्यां क्रिया होयछे त्यां अवश्य क्षा-ननी अस्तिताछे, माटे ज्ञाने जाणतां क्रिया करती वखत पण गौणभावे ज्ञान होयछे, मुख्यरूपे क्रियाछे, अने क्रियायी कर्मनो नाश थायछे माटे क्रिया तेज कर्मनाशकछे.

्ज्ञानवादी—हे क्रियावादी तारुं वचन अयुक्तछे, ज्यां क्रिया होय त्यां ज्ञान होय एवी ज्याप्ति नथीं, फोनोग्राफ वाजींत्रमां क्रिया वोल्ल्वानीले, पण ज्ञान नथीं, आगगाडी (अप्तिरथ) मां गमननी क्रियाले पण ज्ञान नथीं, माटे तारुं कथन अस-त्यले, वली जेना माटे तुं क्रिया करवानुं कहें ले आत्मा तो अंते सिद्धपणुं पामी अक्रिय थायले, अने सिद्धमां क्रिया नथीं, अक्रियले, आत्माना घरनी क्रिया नथीं, तो ते क्रिया निष्फलले, सिद्धमां ज्ञानले, अने ते तो आत्मानो गुणले माटे ज्ञानथी मुक्तिले एम जाण.

कियावादी-क्रिया आत्मा करेछे, माटे आत्मानीछे, शरीर कंइ क्रिया करतुं नथी माटे क्रिया प्रमाणीभूता कर्मक्षये जाणवी.

ज्ञानवादी—आत्मा कंइ फक्त एकलो क्रियाने करतो नथी, शरीर-धारी आत्मा क्रिया करेले, अने ज्यारे शरीरनो त्याग करी सिद्धपद पामेले त्यारे क्रियापणुं टलेले, आत्मा संसारमां कर्मयोगे सुख दु:ख योगे त्रण प्रकारनी क्रिया करी शक्तेले, व्यवहार नये क्रियानो कर्त्ता आत्माले, निश्चयनयथी जोतां क्रियाकारक आत्मा नथी माटे आत्मानी क्रिया कही शकाय नहीं.

कियावादी-अग्नि लाकहाने वाली भस्मीभूत करी स्वयमेव शान्त

(ओळवाइ) जायछे, तेम क्रिया पण कर्मने बाळी पोतानी मेळे नाश पामेछे, माटे क्रियाथी मुक्तिछे.

बानवादी है मियंतम, जरा विचारशो तो मालुम पड़शे के कि याथी मुक्ति छ एवं शाथी जाण्युं. उत्तरमां कहेवं पड़शे के ज्ञानथी, ज्ञान न होय तो क्रियान जाणी शकाय नहीं, तो अंग्रे शी रीते करी शकाय ? तमोए कहुं के क्रियाथी मुक्ति छे आ वचन मलाप मात्र हे, देखो. मसन्न चंद्र राजिं ज्यारे स्थाना सामी दृष्टि राखी ध्यान करता हता त्यारे ते कोइ क्रिया करता नहोता, अने ब्रान ध्यानथी केवलज्ञान पाम्या, विचारों के त्यां कई क्रिया करता हता, कंइ नहीं, भरतराज्ञाए आरीसा (आदर्श) अवनमां भावना भावनां भावनां केवलज्ञान उत्पन्न कर्युं, महदेवा माताए हिन उपर भावनां भावनां केवलज्ञान उत्पन्न कर्युं त्यां कंइ क्रिया करी नथी, फक्त ज्ञानवंडे कर्म खपावी केवलज्ञान पाम्या जीवो देखायछे, मादे ज्ञानछे तेज सत्य छे.

कियावादी—हे ज्ञानवादी तमोए प्रसम्न वंद्र राजि वं हिटान का-ननी सिद्धिन अर्थे आप्युं, ते ज्ञानने सिद्ध नहीं करतां कि-याने सिद्ध करे छे, प्रथम समज्ञ ये के ध्यान छे ते किया रूप छे, ध्यानना चार प्रकार छे, आर्त ध्यान, रौद्रध्यान, धर्मध्यान, श्रुक्कध्यान, ए चारमांथी प्रथमनां वे ध्यान दुर्गति अर्थे छे, काउस्सग्गमां प्रसम्भवंद्र ऋषिए प्रथम दुध्यीन ध्यातां नरक गति उपानन करी पश्चात् पश्चात्ताप पामी धर्मध्यानादि ध्यावतां कर्म खपावी केव छज्ञान पाम्या ते सुं कारण धर्मध्यान अने श्रुक्कध्यान रूप किया छे, वार भावनाओ पण धर्मध्यानमां आवी, मुक्देवी माता अने भरतराजाए धर्मध्यानादि ध्यातां केवलज्ञान पाम्युं, माटे ते पण क्रियाथीज, केवलज्ञान, मुक्ति आदि पाम्यांछे. श्री विजयलक्ष्मीसुरीजीए पण कांबुंछे के ध्यानक्रिया मनमां आणीजे, धर्म शुक्त ध्यायीजेरे; इत्यादि, माटे क्रिया कर्म क्षय करीछे.

ज्ञानवादी-हे क्रियामां राचनार, इजी तुं पोतानो मत छोडतो नथी, मारा वचन उपर लक्ष आप, ज्ञान विना ध्यान थड शकतं नथी जेनामां ज्ञान छे ते ध्यान करी शके छे, जुओ भरतराजा. जेनामां ज्ञाननो सर्वथा अभावछे त्यां ध्याननो अभावछे, जुओ, घट जड़छे तेमां ज्ञान नथी, जो, ध्याननुं ज्ञान न होय तो ध्यान शी रीते शके ? प्रथम ज्ञान अने पश्चात क्रिया, वळी समजबुं के ज्ञान विना जरा पण क्रिया थइ शकती नधी, एक दिवसना जन्मेला वालकने पण स्तन पान प्रवित्तमां संस्कार बुद्धि कारण छे, मुख दुःखने पण जगावनार ज्ञानके, ज्ञान रुपरानानी क्रिया दासीके, माटे ज्ञानना हुकम प्रमाणे किया थइ शकेछे, ज्ञानरूप रानाना करतां क्रिया दासी मोटी कहेवाय नहीं. ज्ञान देखतुंछे, अने क्रिया आंधळी छे, ज्ञान विना चारित्र नयी, ज्ञान विना वै-राग्य थतो नथी, ज्ञान विना देव गुरु धर्मने ओळखी शकाता नथी, अरे विचारो तो खरा, ज्ञानथीन आत्मा पण ओळ-खाय छे, पण क्रिया ओळखी शकती नथी. ज्ञानथी वीजाना मननी वात जाणी शकाय छे, कोंइ अंध पुरुष वनमां फरतो फरे किंतु अंधपणाथी-खाडामां चालतां पण पढी जाय, तेना सामो वाघ आवे तो कइ दिशा तरफ ज हुं ते देखी शके नहीं, अने जो देखतो होत तो दुःखयी वचे माटे ज्ञान ते देखता पुरुप समान छे अने क्रिया आंधळा पुरुष समान छे. कहुं छे के-

ज्ञानी श्वासोश्वासमे, करे कर्मनो खेहः पूर्वकोड वर्षा लगे, अज्ञाने करे तेहः

देश आराधक किया कही, सर्व आराधक ज्ञान.

इत्यादि विचारी जोतां ज्ञानथी कर्म नाज्ञ पामे छे, वळी स-मिकत पण ज्ञानथी उत्पन्न थाय छे, माटे ज्ञानना समान कोइ नथी. ज्ञान वे प्रकारे छे, १ व्यवहार ज्ञान, २ निश्रय ज्ञान. गणीत. च्याकरण,ज्योतिष्य, वैदक, नाटक सायन्स आदिनुं ज्ञान व्यवहार ज्ञा-नछे, एनाथी आत्मानुं हित एकांते यह शकतुं नथी. पह्दव्य तेना द्रव्य गुण पर्याय सात नय, भप्तभंगी, स्याद्वादरीत्या आत्मानं स्वरूप उपयोग जाणवुं ते निश्चय ज्ञान छे,आत्मानुं स्वरूप ध्यावुं,व्यवहार अने निश्चयनयथी आत्मानुं स्वरूप जाणी आत्म स्वभावमां रमवुं तेनुं नाम निश्चय ज्ञान छे, ए ज्ञाननी पाप्तिथी कोटी भवनां कर्भ नाश पामे छे, माटे ते ज्ञान आदरणीय छे, ए ज्ञाननी प्राप्ति थतां पश्चात् राग द्वेपनी क्षय थाय छे, जे ज्ञानथी आत्मा परमात्म पद पामे ते ज्ञान-नी प्राप्ति पूर्व पुण्ययोगे थाय छे, तेनुं नाग सम्यग् ज्ञान छे, ए निश्चय ज्ञाननं सट्हेतु श्री सट्गुरु महाराज छे, तथा वीतराग शास्त्र छे, एनुं अवलंबन करवुं. वीतराग शास्त्र कथित सम्यग् क्रि-यानुं अवलंबन करवाथी कर्म क्षय थाय छे, क्रिया वे पकारनी छे १ शुभ क्रिया २ अशुभ क्रिया, जे क्रियाथी पुण्य थाय छे, ते शुभ किया, व्यवहार नयथी आदरवा योग्य छे, जे क्रिया करवाथी पापार्जन थाय छे ते अशुभ क्रिया जाणवी. वीतराग भगवंते स-म्यग् क्रिया शास्त्रमां मरुपी छे, ते सम्यग् क्रिया जाणधी.

सद्गुरु-सम्यग् ज्ञानथी सम्भग् क्रिया जाणी शकाय छे माटे

ज्ञान पूर्वक क्रिया छेखे छे, ज्ञान क्रिया विना पांगछं छे, अये क्रिया आंधळी छे, ए वेनो संगम थतां मुक्ति पामी ज्ञाय छे. श्री तीर्थंक्र महाराजा त्रण ज्ञानना स्वामी छतां चारित्र अंगीकार करे छे, तपश्चर्या अंगीकार करे छे माटे क्रियानी जहर छे, ज्ञान अने क्रियाथी मुक्ति छे, माटे शाख्यमां कह्युं छे के-ज्ञान क्रियाभ्यां मोक्षः ए सिद्धान्त वाक्यानुसार प्रदृत्ति करवी. मोक्षाभिलाषी भव्यात्मा-ओने द्रव्यानुयोग ज्ञान अत्यंत उपकारी छे, सम्यग् ज्ञानथी बलि-हारी छे. ज्ञानरूप सूर्योद्य थतां भिध्यात्व अंधकारनो नाश थाय छे. जेम जेम आत्म स्वरूपनुं विशेष ज्ञान थतुं जाय छे, तेम तेम क्रोध, मान, माया, लोभनी भंदता थती जाय छे. ज्ञानद्शा थया विना जीवनी मुक्ति थती नथी, आत्मज्ञानथी मुक्ति थाय छे.

शुष्कज्ञानीनां लक्षण कहे छे.

" दुहा. "

वाक् पड़ताए विद्रता, जन मन रंजन हेत; पोथी पुस्तक वांचतो, शाश्वत पद क्युं लेत ॥१८॥ अहं बुद्धि अभिमानथी, यावत् परमां थाय ॥ तावत् ज्ञानी को नहीं, पामे नहि शिव टाय ॥१९॥

भावार्थ-मनुष्योनां मन खुशी करवाने माटे वाणीना वाचाल पणामां जेनी विद्वता समायी छे, एवो अष्क ज्ञानी पोथी पुस्तक वांचतो छतो अने परने उपदेश आपतो छतो मुक्ति पद पामे नहीं, लोकोमां मारी विद्वता दर्शाववी, लोको मारी पशंसा करे अने हुं जगत्मां मिसद थाउं आ प्रकारनी इच्छाथी जे ज्ञाननां पुस्तको भगे छे, व्याख्यान वांचे छे, तेता पुरुषो मुक्तिपद पामी शकता नथी, आत्मभावे ज्ञान परिणमतां परमात्मपदमय आत्मा वने छे, श्रावकथी व्याख्यान वांची शकाय नहीं, कारण के ते संसारमां राची माची विषयसुख भोगवतो संसार असार जाणीने पणपडी रहीं छे, अहंकारबुद्धिथी परमां अहंपणानी बुद्धि थायछे, हुं मोटो आ सर्व मारुं, मारा समान दुनियामां कोण विद्वान छे ? एवा विचार थायछे त्यां सुधी निश्चयज्ञानीपणुं नथी, शुष्क झानीपणुं जाणबुं, एवा शुष्कज्ञानी परमात्मस्वरूप तरफ लक्ष आन्यता नथी अने बहिरात्मपणुं धारी मुक्ति स्थान पामता नथी.

आत्मंज्ञानी हूं छक्षण कहे छे.

" दुहा. "

वैरार्यादिक ग्रण दृंद, आतममां प्रगटाय; समभावे निरखे सदा, परमातम पद पाय, ॥२०॥

भावार्थ-वैराग्य, संवेग, समता, सहनशीलता, निर्लोभता, आदि गुण समूह आत्मामां मगटावे अने गुणधारकआत्मा, शम-भावे शत्रुमित्र, कंचन, उपल, निंदक, वंदकादिने देखे, त्यारे पर-मात्म पदनी माप्ति धायले.

" दुहा. "

त्याग विराग विना कदी, थाय न आतम ज्ञान; आतम ज्ञान विना कदी, पामें निह शिव ठाण ॥२१॥

भावार्थ-संसार वंधन भूतपुत्रह्मीधनादिकना ममत्वरूप त्याग विना अने वैराग्य विना आत्मज्ञान थतुं नथी, अने आत्मज्ञान विना शिवस्थाननी माप्ति नथी, सारांशके-संसारनी मोह जालनो त्याग अने तित्रस्थिरज्ञान वैराग्यथी सद्गुरु उपदेशद्वारा आत्मस्वरूप समजी आत्मस्वरूपमां लीन थायले, आत्मज्ञानीओने अमुकमां अमुक दोपले, अमुक कोषीले, अमुक मारो सतुले, आवी

भावना थती नथी, ते तो एपज विचारेछे के जीवनो कोइ शत्रु मित्र नथी, तैम संबंधी पण नथी, पारकी निंदा करवी तेमां मने कंइ फायदो नथी, आत्मज्ञानीओ तो एम विचारेछे के-सर्व जीव कर्मना वशे जुदी जुदी सारी नटारी आचरणा करेछे, तेमां हुं सर्व ना आत्मानी निंदा करुं के शरीरोनी निंदा करुं, अळवत विवेक-थी विचारतां कोइ पण निंदाने पात्र नधी, ज्यां सुधी मनमां निंदा करवानी बुद्धि थायछे त्यां सुधी कोइ अपेक्षाए धर्मी नथी, तेम परनी निंदा करतो साधु वा श्रावक होय तो पण ते चंडाल समान मनोष्टत्तिथी जाणवी, शुष्कज्ञानी मुखयी आ संसार असारछे एम मुखथी पोकारेछे, पण संसारमां आसक्ति राखी भवश्रमण करेछे, शुष्कज्ञानी चारित्र अंगीकार करी शकतो नथी, केटलाक श्रावको जपरथी त्याग विराग देखाडी संसारमां शुकरनी पेटे आसक्ति धारण करेछे तेम ज्ञानमुं फल विरति पाम्या विना स्वजन्म नि-प्फल गुमावेळे. केटलाक जीवो उपरचोटीया वैराग्यधी दीक्षा अं-गीकार करी पूजा माननी लालचे गच्छमतना कदाग्रहे नड्या छता आत्मस्वरूपना ज्ञान विना विहरात्मपद पामता परस्पर एक वी-जानी निंदा करी टोर्छ भेग्रं करवानी बुद्धिथी, व्याकरण, न्याय आदि अभ्यास करी एक वीजानुं खंडन मंडन करेछे तेवा साधु-ओ आत्मज्ञान पापी शकता नथी पण जे साधुओना हृदयमां सं-सारनी असारता वसी रहेलीछे, अने शांत मुखाकृतिथी विचरेछे, सद्गुरुतुं तथा गीतार्थ साधुनी संगति करेछे ते आत्मज्ञान पामी कर्भ क्षय करी मुक्तिपद पामेछे, संसारमां वसतां त्याग विरागपणुं पामबं मुक्केलके, त्यागी अने वैरागीपणुं अध्यात्म दशावाळा मुनि-वरो पामी शकेले, अने आत्मामां अनंत सुख अनादि कालधी तिरीभावे रहांछे, ते पण आत्मानुभवी भव्यो जाणेछे, काया मा-

याने आत्माथकी भिन्न जाणे ते पुरुषो तेनो त्याग करी शकेछे, संसार वळता अग्रि समान छे, संसारनां दरेक कार्यो जपाधिमय छे, संसारनीं जपाधिमां वसतां आत्मानुं ध्यान यह शकतुं नथी, मादे संसारी जपाधि त्यागी सद्गुरु जपदेश सांभळवो के जेथी वै-राग्य प्राप्त थाय, अने वैराग्य प्राप्त थतां गुरु महाराजने पूछी आरमानुं स्वरूप ओळखबुं, अने ते आत्मस्वरूप जाणतां तेनुं ध्यान थरतां कर्मनो नाश थायछे, मादे आत्मस्वरूपाभिळाषिओए त्याग अने वैराग्यनी प्राप्ति मादे प्रयत्न करवो.

" दुहा "

# योग्य होय ते आदरे, इठ कदाश्रह त्यागः वैराग्ये मन वासिखं, तस परमातम रागः ॥२२॥

भावार्थ-आत्मतत्त्व तथा तेनी प्राप्तिना अन्यभिचारी हेतुओंने
भन्यात्मा अंगीकार करे आत्मतत्त्व जेनाथी पामी शकाय नहीं
एवां साधनोमां इठ कदाग्रहपणानी बुद्धिनो त्याग होय, सद्गुरु
महाराजा भन्यात्माओंनी विचित्र प्रकृति जोइ जे साधनथी जेने
फायदो थाय ते साधन व्रतादि तेने अंगीकार करावे, त्यारे अतिशय प्रेमभिक्तिथी गुरु वाक्यने शिष्य अंगीकार करे, आत्मार्थी जीव
भवभयथी बीक पामतो विचारे के—जो दुर्छभ मनुष्यावतार पाभी
स्वछंदाचारीपणे वर्ताश तो अनंत भवश्रमण करवां पदशे माटे
गुरुनी आज्ञा मस्तके धारी मत कदाग्रहनो त्याग करे अने संसाराश अनित्यता विचारे—कर्मनुं स्वरूप सुध्मदिष्टथी विचारी साराश ग्रहे के—आ जगत्मां सम्यग्धमधी आत्मिहत छे, एम विंतन
करी जल्पंकजवत् संसारभावथी न्यारो रहे, तेवा भन्यात्माओंने
परमात्मपदनो राग थाय किंतु संसारमां विष्टा शुकरवत् अहर्निश

विवेक्यी शून्य हृदयवाळा, अने परवस्तुने पोतानी माना हर्ष शोक धारण करनारा रागांधयहिरात्मीयोने परमात्मपदनो राग यतो नथी, वैरागी, त्यागी, मत कदाग्रहवर्जित जीवों परमात्मपदपामी शके छे, आ आत्मार्थीनुं छक्षण छे.

" दुइ।• <sup>>></sup>

समिकत जेणे अर्धियं, ते मोटा यह देवः निमित्त गुरु ते आत्मना, कीजे तेहनी सेव. ॥२३॥ त्यां त्यां प्रकृती बुद्धिथी, भटके जाणे रोझ; यर यर शी वस्तु छे, नहीं करतो तस खोज ॥२४॥ घोळुं तेटलुं दुध एम, तेवी ग्ररुमां बुद्धिः युरुबुद्धि सर्वत्र जासः तस निह आतम शुद्धि ॥२५॥ सेवे सद्युरु प्रेमची, चरणकमल आधीन; पामे ते परमार्थने, थावे ।शवसुखलीन. धरहा सद्युरु सम कोनो नहीं, भवमांहि उपकारः कामक्रंभश्रीसद्युरु, भवजल तारण हार ॥२७॥ प्रत्यक्ष उपकारी ग्ररु, परोक्ष जिनवर होयः एहवी बुद्धि प्रगटतां, धर्म योग्यता सोय. · ।।२८॥ ग्रुम्भद्धाभक्ति विना, लागे नहीं उपदेश; भणवुं सुणवुं शास्त्रतुं, ते पण हेतु क्लेश. ॥२९॥ सद्ग्रह वचनामृत विना, तत्त्वस्वरूप न पाय; सदगुर सेवंतां थकां, समकतरत श्रहाय. ાાર્ગા तारक बुध्धियी ग्ररु, कयन करे उपदेश; अध्या भक्तिथी सुणी, आदर करो विशेष- ॥३१॥

भावार्थ-अनंतकरूणायोगे केवलपरमार्थबुद्धिया अनंत भव दुःखविल्लिखेदककुठारसद्द्या धर्ममूलभूतसमिकत रूप रत्न जे सद्गुरुए अर्पण कर्धु ते गुरु मोटा देव समानले, देव गुरु धर्मनी श्रद्धाधी समिक्ति आत्मामां उत्पन्न थायले, देव वीतराग अष्टादश द्षण रहीत होय तेने स्त्रीकारवा.

यतः जिनेन्द्रो देवता स्तत्र, राग देष विवर्जितः हतमाहमहामहः, केवलज्ञानदर्शनः ॥१॥ खराखरेंद्रसंप्रज्य, सङ्क्तार्थप्रकाशकः कृत्स्वर्मक्षयं कृत्वा, संप्राप्तं परमं पदं ॥२॥ जीवाजीवौ तथा प्रण्यं, पापमाश्रवसंवरौः; बंधोविनिर्जरामोक्षौ, नवतत्त्वानि तन्मते. ॥३॥ तत्र ज्ञानादिधमेंयो, भिन्नाभिन्नविवर्त्तिमान् कर्म शुभाशुमं कर्त्ता, भोक्ता कर्मफलस्य च ॥१॥ चैतन्यलक्षणो जीवो, यश्चैतद् विपरीतवान् ॥ अजीवःसः समाख्यातः पुण्यं सत्कर्मपुद्गलाः ॥५॥ इत्यादि

वीतराग शासनमां जिनेन्द्र भगवान देवछे, ते राग द्वेष रहित छे, जेणे मोहरूप महामछनो सर्वथा नाश कर्योछे, अने जेपने केवछ ज्ञान अने केवलदर्शन साकार निराकार उपयोग तरीके भार्यांछे, वैमानिक अने भूवनपति आदिना चोसट इंद्रोवडे जेनां चरण कमक

( 803 )

नवर्त्ति धर्मीस्तिकायादिक षद्द्रव्योना गुण पर्याय आदि सत्य प-दार्थीना मकाशक छे, जेवुं जगत्तुं स्वरूपछे तेवुं तेमणे केवलझाने पकार्युंछे. असत्य जल्पनतुं तेमने कंइ प्रयोजन नथी, दयाछ अने उपकारीपणाने लीचे सत्य तनानी प्रक्पणा करीले, भरत, ऐरवत अने महाविदेह क्षेत्रमां तीर्थकरोनी उत्पत्ति थायछ वीश स्थानक-मांतुं गमे ते स्थानक उत्कृष्ट परिणामयोगे आराधवाथी त्रिभुवन आराध्य तीर्थकरनामकर्म वंधायछे, अनादिकालसंगी रागद्वेष स्वरूप महामछ शत्रुनो जेणे सर्वया नाश, स्वशुद्धआत्मिकपरि-णामधी कर्योछे. एवा तीर्थंकर महाराजाने चोत्रीश अतिशय अनु-क्रमे उत्पन्न थायछे, स्वआचार कल्प अने भक्तिभरथी गमन करी प्रभुनी प्रभुता दर्शाववा माटे चतुर्निकायना देवता देवीओ प्रभुने लोकालोक प्रकाशक केवलज्ञान अने केवलदर्शन उत्पन्न थतां अ-लोकिक विचित्र मनहर देवताइ अष्टमहाप्रातिहार्य युक्त समवसरण नी रचना करेछे ते उपर वाहा अने अंतर्छक्षीवडे सुशोभीत त्रिज-गतारक तरिण, पांत्रीस वाणीगुणधारक, प्रमपूज्य प्रमपितत्र त्रयोदश गुणस्थानवर्ति श्री देवाधिदेव तीर्थंकर महाराजा वचनाः तिशये युक्त देवता मनुष्यतिर्थेचोत्पन्न वार पर्षद अग्रे मधुर ध्वनि॰ थी विहरात्मा, अंतरात्मा, परमात्मास्त्ररूप तेमज देवगुरू धर्म अने नवतत्त्व, पह्द्रव्यमुं स्वरूप, भव्योना कल्याणार्थे प्रकाशेष्ठे, अने देशनान्ते साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका रूपचतुर्विधसंघनी स्यापना करेछे, तेमां सर्विधी मुख्य चतुर्विध संघमां मुनिराज छे, धर्मनी अपेक्षाए संघछे, बीतराग आज्ञा मुजव ज्यां प्रवर्तन नथी, ते संघ कहेवाय नहीं, मोहजनितभ्रमणाए केटलाक श्रावकना कू-ळगं उत्पन्न यइ थावको साधु साध्वी विना श्रावक वर्गनेन संप ŧ

तरीके अज्ञानथी गणेखे, ए वर्तन वीतरागशास्त्रयकी विरुद्धे, साधुना सत्तावीस अने श्रावकना एकवीस गुण पळी अहताळीश गुणयुक्त संव कहेवाय छे. ज्ञान दर्शन चारित्रधी भिन्नाभिन्न अने व्यवहारनयथी शुभाशुभ कर्मनो कर्ता तथा भोक्ता, चैतन्यलक्षण यक्तजीवतत्त्वनी परुषणा तीर्थंकरे करीछे. जीवथी विपरीत अ-जीवतत्त्वन मरूपण तेमने कर्युछे, एम नव तत्त्वनुं मरूपण कर्ता वीतराग देवछे, आयुष्य मयोदा पर्यंत पृथ्वीतल पावन करी अ-घातीयां कर्ष खपावी अशरीरी अनामी थइ सिद्धस्थानमां पहेंची सादि अनंति स्थिति अगरामर पद भोगवेछे, एवा देवने देव तरीके मानवा, वीतराग आज्ञाधारक पंचाचार, पंचमहाव्रत आ-राधक गुरुने गुरु तरीके स्वीकारवा, वीतरागकथीतमोक्षमार्ग स्वरूप धर्मने धर्मरुपे स्वीकारवो, आ त्रण तरानी अद्धा गुरु महा-राजना उपदेशयी थायछे, माटे गुरु महाराज समकितदायक मवल निमित्त कारणछे, तेमनेज गुरु तरीके सदा स्वीकारी तेमनी आज्ञा-नुसार चाळ्युं. विवेकशुन्यः अज्ञानवासीत चितवाळो मृहपुरुष परमार्थबुद्धिहीन जेटछं प्रवाही धोळं तेटछं दुग्य एवी अज्ञानताथी रोज पशुनी पेठे सर्व मुंडोमां, सर्व धर्मोपदेशकोमां मुहबुद्धि धारण करेछे ते अज्ञानी स्वभात्मशुद्धि करी शकतो नथी अने भविष्यत काले सदगुरूश्रद्धा विना करशे पण नहीं, आत्मतत्त्वज्ञ, अध्या-त्मोपयोगी गुरुतुं आलंबन अनादिकालसंलयअज्ञाननो नाग करेछे, सहजानंदी आत्मानुभव मंदिरमां म्हाळनार गुरु महाराज प्रत्यक्ष मारा उपकारीछे, अने निनेश्वर परोक्ष उपकारीछे, एक विवेक्टाप्टि जेने मत्यक्ष थइ छे ते धर्म पाभी शकेंछ, गुरु श्रद्धा अने श्राद्धान्तः कर्णयी गुरु भक्ति करवाथी तेमनी उपकार भव्यात्माने कार्गक, अने श्रद्धा भक्ति विना उपदेश लागतो नथी, ग्रह्मी आहा

ļ

विना स्वयमेव शास्त्र वांचे तो पण यथायोग्य तत्व तेना हृदयमां परिणमे नहीं, अने विपरीत परिणमे तो अपध्यसेवननी इव उप-देश निष्फळ थाय.

परमार्थथी जोतां तारक बुद्धियी गुरुराज उपदेश अर्पेछे, ते उपदेश विनयथी अति हर्षे अवण करी आदरवा योग्य आदरो, अने त्याज्यने त्यागो. सुगुरुमां गुरुवुद्धि थया विना उपदेश कंइ असर करी शकशे नहीं, ए निश्चय जाणवुं. अने गुरुए जिज्ञास अने अद्धाळने उपदेश आपवो, पात्र विना उपदेश लागतो नथी.

अज्ञानी मृद मत कदाग्रही इगुहओनी संगतिथी जे लोकोनी वृद्धि विपरीतपणे परिणमीले, तेमने उपदेशथी असर क्वचित् थाय ले, खारी भूमिमां पतितजलनी जेम निष्फलताले, तेम खल भनवाभिनदी जीवोने उपदेशनी पण निष्फलताले, जेनां नीचे लख्या ममाणे लक्षण होय तेने उपदेश देवो योग्यले.

- ? संसारनी अनित्यताए वाभित चित्त होय.
- २ हुं कोणछुं वयाथी आन्यो वयां जइश शुं मारे कर्तव्यछे?
- ३ हुं ते कोण ? हुं अने मारुं ते छुं ? ए जाणतो होय अथवा जाणवानी जिज्ञासा होय.
- ४ भवनो भय लागे एटले जन्म जरा मृत्युथी व्याप्तसंसार वळताअशि समान छे तेमां पडीश तो वळी मरीश एवो जेने भय होय.
- ५ गुरु महाराजनी वाणी अपर पूर्ण विश्वास होय तेप श्रीति होय.
- ६ सत्य अने असत्यने समजी शकतो होय अने कदाग्रही न होय.
- ७ गुरु महाराजना कथन। तुसार प्रवर्तनार होय.

- ८ कपट रुत्ति जेने होय नहीं, अने सदाचार परुत्तियुक्त होय.
- ९ लोकविरुद्धनो त्याग करनार होय.
- १० विनेय होय अने गुरुनी श्रद्धा सहीत सेवामां तत्वर होय. इत्यादि छक्षणो जेनामां होय ते उपदेश ग्रहनार उत्तम पात्र-भूत श्रावक वा ग्रानिपणे पण शिष्यो जाणवा.

नीचेनां लक्षणवाळाओने उपदेश लागी शकतो नथी.

#### गाथा.

## रत्तो दुठो मूढो--पुव्विबुग्गाहिओअ चत्तारि उवएसस्स अणरिहा अहवासएहिं परिबुजंति ॥१॥

- १ संसारनेज सार मानी तेमां अत्यासिक धरनार.
- २ हुं कोण छं १ मारे शुं कर्तव्य छे १ तेनो पण जेने विचार थाय नहीं.
- ३ पापनां कार्यो करतां भय पाम नहीं,
- ४ जीवोनो घात करनार धूर्त शट मूर्खपणुं जेनामां होय,
- ५ गुरुना दोषो जोनार, तेमनी निंदा करनार अने गुरुनी अद्धा तथा गुरुनो विनय वहुमानरहीत होय.
- ६ गुरुमहाराजनी वाणी उपर विश्वास, श्रद्धा, तेमज तेमना उपर भीतिरहीत होयः
- ७ इगुरु अने सुगुरुनी परीक्षा करवानी जेनामां बुद्धि न होय.
- ८ कपटी, व्यसनी, तेमज निंदक होय,
- ९ कुगुरुना फंदामां फसाएछ होय अने दिधरागी होय.
- २० जेतुं स्थिर चित्त न होय, जेम भमावे तेम भमे, विवेकशून्य हृदय होय.

११ गुरु करतां पोताने मोटो माननार, अने पोतानो कको खरो माननार होय.

१२ उपदेश समजे नहीं अने गुरु उपर द्वेष करे.

१३ अविनयी होय.

इंत्यादि लक्षणयुक्त जीवो होय ते उपदेश देवाने योग्य नथी, तथापि गुरुसंगतिथी तेवा जीवोने पण लाभ मले, एकांत नथी, आत्मज्ञानी गुरु महाराज अवसरना जाणले, माटे स्वपर लाभार्थे महत्ति करेले, योग्य लागे तो उपदेश आपे अने अयोग्य लागे तो उपदेश आपे नहीं, मौन धारण करे, ज्ञान, दर्शन, चारित्र वीर्यादि गुणोमां ध्यानथी मवर्ते, सद्गुरु महाराजा सदा स्वतंत्र आत्मोपयो-गपणे वर्तेले, धर्मध्यान अने शुक्रध्यानना योगे आत्मा परमानंद स्वक्रपमां रमण करी तत्पद माप्त करे एम गुरुनी महत्तिले, एवा गुरुनी आज्ञासह वर्तनुं.

" दुहा. "

त्याज्यने त्यागी ज्ञानथी, उपादेयशुं हेत;
करता हरता कर्मने, शाश्वत पद झट लेत.
इन्यकर्म ने भावकर्म, तेनो करी परिहार;
समता संगे झीलतां, लहीए भवजल पार.
स्वच्छंदाचारीपणुं, रोकी सद्युरु सेव;
गुर्वाधीन मनइं करी, पामो शाश्वत मेव.
धन्वंतरिसमसद्गुरु, कर्ता कर्मनो नाश;
उत्तम वैद्यनी उपमा, तेना थइए दास.
३५

मूळ विना नहि वृक्ष जग, ग्रहगम वण क्यां ज्ञान; वांचो पोथी पत्र पण, नहीं टळे अज्ञान. ३६ भणवुं गणवुं मानथी, जन मन रंजन काज; आत्मलक्ष्यना ध्यान विण, लहे न शिव साम्राज्य.३७ किया कांड कपटे करी, करतो रंजे लोक; शुष्कज्ञान पण एकछं, जाणो भविजन फोक. 'लाभालाभे सुख दुःख, शत्रु मित्र सम भाव; उदासीनता चित्तमां, भवसागरमां नाव. ३९ निंदो निंदक नेहथी, प्रजो प्रजक कोइ; धूर्तों कहेरो ढोंगीए, समभावे सब जोइ. 80 अंतर्सृष्टिग्रणतणी, आतममांही अनुपः बांठा बहु बोले खुणी, मनमां राखी चुप. 88

भावार्थ-ज्ञानधी त्याज्य वस्तुने त्यागी आद्रवा योग्य वस्तु स्वरूपज्ञानाधार आत्मा प्रति प्रीति अंतरात्मायोगे उत्पन्न यह छे एवा मुनिवरो आत्मानी साथ एकतानधी प्रीति करता छता कर्मनो नाज्ञ करी झटिति सिद्धि सौधमां प्रवेशे छे, हे आत्मा जेना योगे तारी अशुद्ध परिणति यहछे, एवं द्रव्यकर्म अने भावकर्मने स्वतः शुद्धपरिणतिथी असंख्यातप्रदेशथी ट्रकर, समतास्त्रीनी साथे ध्यान रूप सरोवरमां क्रीडा करतां तुं भवपाथोधि सहेजे उत्तरी मुक्तिनगर प्राप्त करीज्ञ, एम मुनिराज ध्यानमां भावे, अष्टकर्मनो आत्मानी साथे जे वंघ तेने द्रव्यकर्म कहे छे, अने राग देपनी परिणातिने भावकर्म कहेछे, आत्मस्वरूपमारमण्यता करवाथी द्रव्य- कर्म अने भावकर्मनो नाश थायछे.

हे श्विष्य तुं परमात्मपदनी अभिलामा राखतो होय तो स्व-च्छंदताचारीयपणुं टाळी गुरुना आधीन मन करी सद्गुरुनुं सेवन कर के जेथी शाश्वतपद पामीश, कर्मरोगनो नाश करणार्थम् गुरु-धन्वंतरी वैद्य समान छे, तेमना दास थइएतो कर्मनो नाश थाय, वैद्य विना दवाओ पोताने फायदाकारक थती नथी, तेम गुरुनी आझा प्रीति विना गमे तेटलां सद्वतो धारण करीए तो पण यथा-योग्य आत्महित थतुं नथी.

मूळ विन वृक्ष क्यां ? अने गुरुगम वण आत्मज्ञान क्यां ? श्रावक वर्ग अविद्या तथा अविनयना योगे स्वयंगुरु वनी ज्ञानी गुरुनी अपेक्षा राख्या विना पोथी पुस्तक वांचे पण ते ज्ञान सत्य-ज्ञान तरीके थशे नहीं, पोतानी मेळे वांचेळा ज्ञानथी वैराग्यादि गुणो जोइएतेवा माप्त थशें यहीं अने शंकादि दोपोनुं निराकरण पशे नहीं. मुनिवर्गने पण गुरुगमद्वारा विनयमक्ति वहु मानयी ज्ञान ग्रहवुं योग्य छे, अने तदर्थम् योगवहनादिनुं शाख्मां अनंत ज्ञानी वीतराग भदंते भव्यात्माओना हितार्थे मरूपण कर्यु छे.

मानयी पूजावाना अर्थे जनमन रंजनार्थम् विद्याभ्यास करवो, शास्त्र वांचर्ता इत्यादि सर्व मोसहेतुभूत कार्य नथी, आत्माना हितने माटे भणवुं, गणवुं, वांचवुं, इत्यादि शुद्ध परिणाम थयो नथी त्यां सुधी शिव साम्राज्य पामी शकातुं नथी. वाह्याडंवरी क्रिया-कांडेना कपट्यी देशोदेश विचरतो छतो मनुष्योने रंजे ते पण आत्मळक्ष्यना उपयोग विना व्यर्थ छे तेमज क्रियाने नहीं मान-नार, त्रतादिनो खप नहीं करनार जेने सत्यज्ञान थयुं नथी एवा वाक्पदुताथीज पंडित पद धारण करनार शुष्कज्ञानीनुं एकछं ज्ञान पण आत्महित मित थतुं नथी. लाभ, अलाभ, सुल, दुःख, शत्रु, भित्र, जीवितन्य, मरण आदि माप्त यतां जेनुं समिचित्त छे अने सांसारिक पदार्थी मिति उदासीनता जेना हृदयमां वर्तेछे एवा सद्गुरुस्निवर संसारूप समुद्रमां नाव समानछे.

निंदक खुशीथी (वेलाशक) एवा मुनिवरनी निंदा करो, अने पूजक भावथी भले पूजो, धूर्ती भले होंगी कहे, पण एवा महात्मा सर्वने समभावे निरखे छे. वीजाना भला भुंडा कहे तेमां पोताने थुं ?

ज्ञानिगुरुपहाराजा आत्मानी गुणखृष्टि अंतर्देष्टि योगे नीहाळी ममुद्दित थायछे, आत्माना असंख्यातमदेशोछे, एकेकं मदेशे अनंत झान, दर्शन, चारित्र, वीर्यादि गुणो सदा शाश्वत भावे रहाछे, वळी आत्मा पोताना स्वरूपे रूपीछे, पुद्गलनी अपेक्षाए अरूपीछे, द्मानरूप उपयोगनी अपेक्षाए साकारछे, दर्शनरूप उपयोगनी अपे-क्षाए निराकारछे, वळी शाश्वत आत्मामां उत्पादव्यये अने ध्रुव समये समये वर्तेछे, वळी आत्मामां स्थित अग्रुक्लघु पह्गुणहानि दृद्धि करेंछे, ए आत्मा पुर्गल द्रव्य साथे मिलेंछे तोपण ते थकी न्यारोछे, अनंत ऋदिनो भोक्ता मारा आत्मा विना परद्रव्यनी साथे मारे कंइ संवंध नयी, मारो आत्मा कर्मे अवरायोछे, पण ते गुणे। मारा नष्ट थया नथी, मारा आत्माना गुणोने जपमा आपवी व्यर्थछे, अहो हुं आत्मा अखंडछुं, सर्व पदार्थनो हुं समये समये ज्ञाता हुं, त्रग अवनमां एवो कोइ पदार्थ नथी के माराथी अजाण्यो होय, हुं मकाशकछुं, अन्य द्रव्य मकाश्यक्रे, ज्ञाता अ-शाता ए हुं जाणुंछुं, पण तेथी हुं न्यारो छुं, मारुं स्वरूप वाच्या-बाच्य वैखरी भाषायी छे, मारा अनंता गुणोछे तो इवे मारे पर-भावमां रमणता केम करवी ? एम विचारी आत्माना गुणो तरफ

पोतानी दृष्टि दीधीछे, जेणे एवा मुनिश्वरत्तुं शरण याओ एवा मुनिवरो आत्मध्यान ध्याता आपस्वभावमां विचरेछे, बकवादी ओना धर्तीगो सांभळी मौन धारण, करी सद्गुहओ विचरे छे, कुगुहरूप विषधरोनी कुदेशनारूप विषज्वालाधी अज्ञान सर्व मनुष्यो पायः मुंझाइ गयाछे, कोइ विरला आसन्न कालमां सिद्धिपद पामिनारा महात्मओ वा तेमना अनुयायी शिष्यो सम्यग्मार्गे गमन करेछे.

" दुहा. "

नाटिकयानी पेठ ज्यां, धर्मतणो उपदेश; अंतर्दृष्टि ज्यां नहीं, तेनो मिथ्या वेष. ४२ अहो दुःषम कलिकालमां, विरला सुभग्ररु जोय; बाकी फूट्यो राफडो, सर्पतणो अवलोय; ४३ फेष गच्छ ममता प्रही, वळी कदाग्रह चित्त; मतमतांतरमां पड्या, दुर्गतिनारीमित्त. ४४

भावार्य-अंतर्दिष्टिना उपयोग विना नाटकीयानी पेठे ज्यां घ-र्मनो उपदेश साधुनाम घरावी आपेछे तेनो वेष मिथ्याछे.

पंचितप ज्यां भेगां मळ्यांछे एवा आ कलिकालमां विरला शुद्ध मुनियो होयछे, वाकी लौकिक अने लोकोचर कुगुरुओनो जाणे राफडो फुट्यो होय अने सर्पी फाटी नीकले तेनी पेठे फाटी नीकळ्याछे.

वेषनी ममता, गच्छनी ममता वळी कोइ प्रकारनो मनमां कदाग्रह राखी जे साधु राग द्वेषना उद्ये मतमतांतरमां रक्त थया छता, शुद्ध परुपणा भूळी पोतानी पुष्टिने माटे मोहांध वनी आ-त्मस्वरूपनुं भान भूळी परभावमां राचेछे, माचेछे तेवा कुग्रहओ दुर्गति नारीना मित्र जाणवा.

**स दुहा**, "

जलि भरती ओटमांही, मत्स्यो आकुल थाय; तीरे आवे पाण नाश, गन्छतणो ए न्याय, ४५ शरारपर ममता नहीं, करे शुं तेने देह; गन्छ वस्यो न्यवहारथी, अंतर्शण गण गेह. ४६

भावार्थ-समुद्रमां ज्यारे भरती ओट आवेछे, त्यारे जल्मवाहना जोरथी मत्स्यो आकुल व्याकुल थायछे, तेमांथी कोई कंटालीने कांठे आवेछे, भरती उत्तरी जातां जल विना तरफडी, मरण पामछे, वा धीवरो तेने पकडी लेछे, अने दुःखभागी थायछे,
तेम गच्छ सिंघाडामां वसतो कोई मुनि, आवी केवल आत्मनी
वात सांभळी एकाकी विचरेछे, तो ते आत्महित करी शकतो नथी,
माटे गच्छमांहीं वसीने आत्मसाधन करतुं, वैरागी, त्यागी गीतार्थ
इानी पोतानी योग्यतायी आत्मस्वरूपना ध्यान माटे एकल विहारी थाय तेनो एकांत निषेध नथी.

जे मुनिवरोने शरीरपरथी आत्मज्ञानना वलवेडे ममताभाव हठी गयोछे, तो ते मुनिवरोने शरीर राग द्वेपनुं कारण यतुं नथी. तो,पश्चात् व्यवहारथा गव्छमां वसेला तथा वसता एवा मुनियोने गव्छ हपर केम ममता थाय. अने केम गव्छ राग द्वेपनुं कारण थाय ? अलवत थाय नहीं. गव्छ एटले साधुनो समुदाय, समूह, तेमां ज्ञानीने केम मोह थाय ? अने अज्ञानी तो गव्छनो स्वीकार करे नहीं, तो पण शरीरपर ममता धारण करे. ज्ञानना अभावे संबर्गा कारणो पण अज्ञानीने आश्रवरूपे परिणमेछे. जेनाथी वंशायले, तेनाथी ज्ञानी छुटेले, माटे ज्ञानी ग्रह मराराजा अंतर्मांथी संसार खेलथकी न्यारा रही वर्तेले, ज्ञानिको भोग सवी निर्जराको हेत्रहे=ज्ञानी भोग कहे तो पण तथी निर्जरा था-यके ज्ञानीन कोइना मतिबंध नथी, राग द्वेषतुं जे कारण लागे तेनाथी द्र रही आत्मध्यान करेके. श्री यशोविजयंजी ममुख सुगुरुओ जाणवा.

कपटी मुनितुं लक्षण कहे छे.

<sup>44</sup> दुहा. ''

मनभीतरनी ओरने, वर्ते बाहिर ओर; कहेणी रहेणी सम नहीं, ए पण चऊटा चौर, ४७

मन्मं कंइ अने वाहिरं आचरण कंइ कहेणी ममाणे रहेणी न होय, श्रावनी आजीजी 'करनार होय, कपट्पणाथी वर्ते ते पण चडटानो चोर जाणवो, कदापि ब्रतादि पाळी शंकतो होय नहीं पण मरुपणा वीतरागमार्गना अनुसारे करे ते आराधक छे, पण कपटी तो विराधक छे.

" दुहा "

योग्य जाणतां खोलता, पेटी:धर्म विशाल; सेवो साचा दीलथी, सदयुरु महा कृपाल.॥४८॥

ज्ञानी गुरु महाराजा योग्य जीव जाणीने धर्म रत्ननी पेटी मनोहर विशाल खोले छे, अने तेना आत्मानुं फल्याण करे छे, भन्योने उपदेश द्वारा मोक्ष मार्ग दर्शावे छे, अयोग्य मनुष्यनी आगळ मीन धारण करे छे, जे दृष्टिरागी न होय अने विनयी होयं तेनी आगळ योग्यता प्रमाणे अवसरे उपदेश आपेछे, एक सरखो उपदेश प्रत्येक मनुष्यने परिणमतो नधी, मादे योग्यनेन उपदेश देवों, मेधनुं जल, सीप, माड, सर्प आदिना मुख्मां पड्युं पतुं भिन्न भिन्न परिणमे छे तेम अत्र पण दृष्टांत जाणबुं.

कोइ एम फहेशे के-मुनिओए सर्वने उपदेश आपवी अने उपदेश आपवा माटे तो साधुपणुं अंगीकार कर्धे छे, अने न आपे तो अन्य कोण आपे ? तेने प्रत्युत्तरमां कहेवानुं के-जेम सेनापति छक्करी सिपाइने तरवार खेळतां मारतां शीखवे छे,पण **जेनी योग्यता थ**इ नथी तेवां छघु बालकने कंइ हाथमां तरबार ( खड्ग ) आपतो नयी, ने आपे तो वाळकनो नाश याय तेम ज्ञानी ग्रुर योग्यता जेने प्राप्त यह छे तेने उपदेश आपे छे. उपदे-भमां पण पात्रना आधारे फेरफार रहे छे, केटलाक स्थाने संसा-रमां राचेळा माचेळा श्रावको विरतिधर्मना भाषणरूपे उपदेश आपे छे, पण तेमहुं वैराग्य त्याग विना सर्व अलेखे जाणवुं. गुरुना उप-देश्रथी जे वैराग्य थाय छेते अन्यथी थतो नथी. पंचमारकमां श्री तीर्थे-करादिना अभावे तथा पंचविषना योगे योग्य जीवो अल्प जाणवा माटे हे भव्यात्माओ मोक्षनी पाप्ति माटे निर्मळ बनथी सद्गुरुतुं शरण करो, अने ते फरमावे तेन श्रद्धाथी अंगीकार करशो तो परमपद पामशो.

" दुहा. "

वने वने नहीं हिस्तयो, अगे अगे निह देवः मुंड मुंड निह उरुपणुं, जाणी सद्युरु सेवः ४९ विषय भीख भोगी नहीं, ब्रह्मचारि उणवंतः कपट वृत्ति त्यागी सदा, नमुं सद्युरु महंत. ५०

वन वन प्रति हस्तियो होता नथी, अने भरत ऐरवतनो प्रत्येक आरक्षमां कंइ तीर्थिकरोनी उत्पत्ति यती नथी, ते प्रमाणे मस्तक मुंडाची रजोहरण मुहपत्ति झाळी छीघेळा गृहस्थ जेवामां सर्वमां कंड् गुरुपणुं होतुं नथी, जीव अजीवतुं स्वरूप जाणे नहीं अने दुःख-गर्भित वैराग्यथी साधुवेष ग्रहण करी राग द्वेषना फंदमां फसाय, इसे, तोफान करे, क्रेश करे ते सर्व इग्रहओ जाणवा, जे महात्माओ विषयभिक्षाना भोगी नथी, ब्रह्मचारीछे, क्षमादि गुणवंतछे, अने कपटहत्तिनो जेणे त्याग कर्योछे अने जे गाहरीयानी पेठे चालता नथी तेवा सङ्ग्रहने हुं पुनः पुनः नमस्कार करुंछं, वाकी वेष धरवा मात्रथी शुं १ माटे परीक्षा करी आत्मतत्त्रवना उपयोगी ग्रहतुं शरण करवुं, एकगुरुनी आज्ञा प्रमाणे वर्त्तवुं, पतिव्रतानी पेठे मांथे एक धर्मपद ग्रह होय, एक ग्रहनी भक्ति श्रद्धाथी शिष्यश्रा-वक सद्गुणधाम वनेछे, अनुभवधी जोतां एम जो न वत्तीय तो संपूर्ण धर्म पामी शकाय नहीं, कोइ गुरु कंइ कहे अने कोइ गुरु कंइ कहे, इवे वेमांथी कोनी आज्ञा मानवी, जैवो जोइए तेवो ए-कथी अधिक गुरुओपर भक्तिभाव, रहे नहीं, अनुमवीभोने आ वास्य सत्य लागशे, नहीं छागे तेनुं भाग्य, वाकी अन्य सुसाधुओं मानवा पूजवा योग्यले तेमनी भक्ति करवी अने सद्पदेश सांभळतो. आ वात गुरुवत ब्रहणनी अपेक्षाएछे.

" दुहा "

धर्मरत जेथी मुदा, लहीयुं ग्रह रसाळ; शरण शरण तेनुं सदा, अवर म झंखो आळ ॥५१॥ भटकी ग्रह ग्रह वंदीया, शिर पटक्युं सोवार; ज्यां त्यां माथुं नामियुं, लह्यो न किंचित् सार ॥५२॥

भावार्थ-जेनी पासेथी धर्मरत्न समजी समिकत ग्रहण कर्यु, इर्षवदे ते गुरुनुं सदा मन वचन अने कायाए करी शरण अंगी- कार करंछं, अने भव्यात्माओं करो, अन्य आळ पंपाळ झंखो नहीं.

कुगुरुओमां गुरुनी बुद्धि धारण करी वांद्या, तेमना चरणे शतवार शिश पटक्युं अने हराया ढोरनी पेठें ज्यां त्यां माथुं घा-ल्युं अने माथुं नमाव्युं पण सार कंइ पाम्यो नहीं, अने ते प्रमाणे वर्तवाथी आत्महित थवानुं नथी.

यतः

अगीयध्य क्रसीलेहिं, संगं तिविहेण वोसिरे ॥ मुरुषमग्गंसिमे विग्घं, पहंमि तेणगे जहा ॥१॥

अगीतार्थ अने कुशीलियानो संग त्रिविधे वोसिराववो, पंथमां चोरनी पेठे मोक्ष मार्गमां विघ्न करनाराले.

" दुहा. "

एम अनंता भव भमी, पाम्यां दुःख अपारः सद्युरु स्हेजे ओळख्या, तार तार मुज तार ॥५३॥

भावार्थ-एम अनादिकालयी क्रगुरुनी संगतियोगे आत्माना अग्रुद्ध परिणामे, चतुर्गत्यात्मक संसारमां अनंतिवार अमण करी विचित्र श्वरीर धारण करी ताडन तर्जन, छुधा, तृषा, रोग, शोक, वियोगादिथी अनंत दुःख ल्रांगं, हवे भवितन्यतायोगे सद्गुरुने ओळख्या, जीव आनंद पामी, गुरु विश्वासयो कहें के हे गुरु तं मने तार तार, तार तार ए शब्द पुनः पुनः कथनथी संसार भय साथे मुक्ति मार्गनी अति आकांक्षा जणावी, आत्मार्थी ध्यानी समिकत दाता धर्मगुरुनी आज्ञा ममाणे वर्ते बं

#### " परमात्मार्थि गुरुभक्त शिष्योतुं छक्षण कहेछे."

" दुहा. "

यरु विनयी भक्ति घणी, श्रद्धा ए मन स्थिरः शिवपद अर्थी साइसी, मनमां आते गंभीर ॥५४॥

गुरुनो विनय मन बचन अने कायाधी करवामां तत्पर होय, यथाशक्ति भावथी अत्यंत भक्ति गुरुनी करनार होय, गुरुक्त तत्त्वने विषे जेनी श्रद्धा स्थिरपणे होय वा गुरुना द्वेषीला इर्ध्यावाळा तथा वेपना प्रतिपक्षी कुगुरुओ तथा कुभक्ती आहुं अवछं समनावे, गुरुना दोषो देखाडे कुयुक्तिथी गुरु महाराजे कहेलां तत्त्वतुं खंडन करे, वळी एम कहे के-एनामां शो भळीवार छे, एतो कंइ जागतो नथी. कपटीछे, एम पोतानी मरजीयां आवे तेम बोछे पण तेथी सुशिष्योनी ग्ररु उपरनी अद्धा जरा पात्र पण कभी थाय नहिं, **उछ** हुं सुवर्णने जेम जेम गाळीए तेम तेम दिप्तिमंत थाय तेम गुरु भक्त शिष्योनी श्रद्धा उछटी वयती जाय, अने गुरुओनी संगतिथी श्रद्धा उठे तो पीतळ समान भक्तो जाणवा, एवा भक्तो ४ चार गतिमां भटक्या, भटकेछे, अने भटकशे, श्रद्धा वे प्रकारनी छे, इळद्रना रंग समान अने अन्य मजीड समान, इळद्र समान श्रद्धानी कारण पाम्याथी नाश थायछे, माटे गुरु उपर मजीउना रंग समान श्रद्धा थवी जोइए वळी श्रद्धाना वे भेदछे. १ प्रशस्य श्रद्धा, अने २. अमशस्य श्रद्धा ते मत्येकना पण वे नेद छे, इलदर रंग समान, मजीठ रंग समान, वळी छौकिक ग्रुरु अने छोकोत्तर गुरुनी श्रद्धा जाणवी.

वली श्रद्धा वे प्रकारनी छे, न्यवहार नय गुरु श्रद्धा,-न्यव-द्वार नयथी गुरु अनेक प्रकारनाछे, पापनी विद्या शिखवे ते पाप गुरु, आजीविकानी विद्या शिखवे ते आजीविका गुरु, पण ए गुरुओ न्यवहारथी छे, धर्म संक्ष्य समजावे ते न्यवहारथी शुद्ध गुरु जाणवा, अस्ति नास्ति भेदोवह करी आत्मानं स्वरूप सम्रज्ञावनार धर्मगुरु समान अन्य कोइ गुरु नधी. वीजा गुरुओने तो अनंतिवार जीव पाम्यो, पण तथी आत्महित थयुं नहीं, अने समिकत मगटयुं नहीं, पण धर्मगुरुयोगे समिकतनी श्रद्धा थइ, माटे धर्मगुरु समान कोइ गुरु नथी, न्यवहारनयथी सत्यश्वास्य धर्मगुरु श्रद्धा जाणवी. आदरवा लायक छे निश्चय नयथी पोतानो आत्मा गुरु जाणवी, गुरुबी श्रद्धा भक्तिमां खामी तेटलीज धर्ममां खामी समजवी.

मोक्ष जिज्ञासु अने ते माटे उद्यम करनार जिन्य होय, धर्म-कार्यमां साहिसिक विक्रमराजानी पेठे होय, बीकण ना होय तेमज कोइयी दवाय नहीं, कोइना तेजमां अंजाइ जाय नहीं: बळी मनमां अति गंभीर होय, एटळे गुरुए कहेळ वातो हित वचनो पोताना मनमां राखे अने गुरुना दोष अन्य आगळ वोळे नहीं, गुरुनो विश्वासी होय, श्रद्धा अने विश्वास ए वे मोटा गुणछे, गाडरीया प्रवाहयी गुरुनाम धरावनाराओ क्ळाचारमां आसक्त जीवो गुरुनी गुरुता जाणी शकता नथी। एवं शिष्यनं ळक्षण कहुं.

युरुभक्त शिष्योतं छक्षण.

" दुहा. "

वैराग्ये मन वाळीयुं, वार्या विषय कपायः धीरज जस सुरगिरिसमी, वश जश मन वन काय५५

भावार्थ-संसारनी अनित्यता भावी मन जेतुं वैराग्यरंगमां भव्ययुंछे, अने जेणे विषय कषायने यथाशक्तिए वार्याछे अर्थात् विषय कषायनी परिणति जेनी मंद यहछे, आत्मामां रहेल धर्ममां जेनु मन बळ्युंछे, वाकी सांसारिक कार्यमां जेनुं क्षित्र लागतुं नथी, अने सांसारिक कार्य करेछै तोषण ते यकी न्यारो रही लुखा परिणामे करेछे, मेरुपर्वत सम जेने धर्यता प्रगट यहछे, देव-वाथी पण हगायो हमे नहीं, एवो धर्यवंत होय, मन वचन अने कायाना योग जेना वशवर्ति थयाछे, एवा ग्रहभक्तशिष्यो भवनो पार पामशे

" दुहा. "

समता चित्त अंगी करी, अदेखाइनो नाश; करता एक भक्तो सदा, पामे शिवपुर वास ॥५६॥ एक आज्ञाए चालतो, करे न आज्ञालोप; शिक्षा एक देतां सदा, कदी करे निह कोप ॥५७॥ गुरु सेवामां रत सदा, एक एण करे प्रकाश; एक अवगुण दाखे नहीं, ते एक भक्तो खास ॥५८॥

भावार्थ-जे शिष्योप समता पोताना मनमां अंगीकार करीछे, कोभादिक अवगुणोनी मंदता थइछे, अने अदेखाइनो नाश जेंगे कर्योछे, गुणिनी अभिष्टिद्धियी जेना मनमां इर्प्या यती नथी, अथवा गुहमहाराज कोइ शिष्य उपर विशेष मीति राखे पण तेथी अन्य शिष्यनी अदेखाइ करे नहीं, गुहमहाराजना जेटछा भक्तो होय तेटछा उपर पोताना माण पाथरे, एवा गुह भक्तो आ तोफानी दुनियामां रह्या छता पण अंतरंगथी न्यारा रह्या छता गुहनी भक्ति द्वारा ज्ञान पामी अनंत सुखसमय सिद्धि सौध पामे मुमुझु शिष्य गुह आज्ञामां धर्म मानतो गुहनी मरजी प्रमाणे चाळे, मन, वचन

अने कायाने गुरुनी आज्ञा मरजी अनुसार प्रवर्तावे, कदी गुरुनी आज्ञानो छोप करे नहीं, विपरीत मार्गमां अज्ञान, प्रमाद, मति-भ्रमथी चालतां गुरु भक्तोने गुरु महाराज शीखामण आपतां क्रोध याय नहीं, गुरु प्रत्यक्ष होय वा परोक्ष होय तो पण देवनी पेठे तेनुं सदा ध्यान करे, परोपकारनी समृति छावे. अने गुरुनी भ-क्तिमां शिष्य सदा आमक्त रहे, अने गुहना गुणोनो सर्वनी आ-गळ प्रकाश करे, कोइ गुरुनी निंदा सांभळवाना करतां पृथ्वीमां पेसी जबुं सारुं, कोइ एम कहेशे के ग्रुरुमां दोषो होय तो केम गुरुने मानवा ? अत्र समजवानु के अन्यना कहेवाथी दोषोनी शंका छाववी नहीं, दोषो होय तो पण ढांकवा, उपकारीना उपकारतुं लक्षण ए छे के कोइ कर्म उदयनी प्रवळताथी गुरु अवला मार्गे चाले तो गुरुभक्त बुद्धियुक्तिपयत्नथी ठेकाणे लावे. पण पाण जतां तेमनी अन्यना आगळ निंदा करे नहीं, निंदा करवाथी कंइ फायदो थतो नथी माटे परोपकारज्ञशिष्य, गुरुना अवग्रण प्रकाशे नहीं, गुरुद्रोही गुरुनिंदक कुशिष्यने आत्मज्ञान सवछं परिणमतुं नथी, अरिइंतनी स्तुतिथी जेटलो लामछे, तेटलो गुरुनी स्तुतियी लाभ जाणवी दीक्षादायक पण धर्मगुरु होयले, उपर कहेलां लक्षणो जेनामां होय तेने गुरुभक्तो जाणवा, प्वा गुरुभक्तो संसार समुद्रनो पार पामी शकेछे, सत्य असत्य धर्मनी परीक्षा करनार पण शिष्य होवा जोइए, तेम देवनुं लक्षण पण जाणनार अने क्रदेवने परिहरनार शिष्य होवा जोइए, अन्यथा कुगुरुमां गुरुनी बुद्धि धारण करी भवपाशमां सपडाय माटेशिष्य सुगुरुना परीक्षक होय ते मुक्तिपद पामे

" दुहा• "

विधिए सदगुरु वंदता, निंदे अवध

क्षणे क्षणे गुरु देखतां, राखे मनमां रीज ॥५९॥ अनुभव पिचशी कह्यो, विनय तणो अधिकार;

गुरुभक्ती विधि पूर्वक त्रिकाल सट्गुरु वंदन करे, अने पो तानामां रहेला दोषो गुरु आगळ निंदे, के लेथी ते दोषोनो झाटीति नाश यह शके. जेटलीवार गुरुने देखे तेटलीवार मनमां आनंद पामे.

विनयनो विशेष अधिकार अस्मदीयकृतअनुभवपंचविंशति नामक ग्रंथमां कह्यो छे.

#### ते रीते जे चालहो, ते लेहो भवपार ॥ ६० ॥

ते कम प्रभाणे जे चालशे ते भन्यात्मा संसार समुद्रनो पार पामशे, अमुक मारुं कल्याण करशे के अमुक एवं जेतुं अस्थिर चित्त छे, ते गुरुनो विश्वास पात्र थतो नथी.

" दोहा. "

### रमाणिक रामा देखतां, प्रेमी मनमां प्यारः तेह्यी अधिको सद्गुरु, शिष्य तणो निर्धारं ॥६१ ॥

शोळ शणगारे अलंकृत नवयौवना सुंदर अंगवाळी स्नी उपर तरुण पेनी पुरुपनो जेटलो राग होयले, ते थकी अधिक सद्गुरु उपर प्यार शिष्यनो होय तो शिष्यनुं कल्पाण थाय. अने गुरु भक्तोनुं कल्पाण थाय, अन्यथा आत्मिहत थनुं मुक्केळले, आ रहस्य अनुभवधी अववोधवा योग्यले, मूर्कात्माओने माटे आ छखाण नथी, दुःखाव्धिभवनो नाश करवाने जे तत्पर धयाले, अने जेमने तत्त्व रहस्य माप्त करनुं तेने माटे आ छखाणले. वं-चक, अस्थिरिच्चवाळा मपंची, कृतगुणने नहीं जाणनारने सद्गुरु तत्त्वरहस्य पतावता नथी. रासभने शर्करा अवगुणकारीले, सप्ने दुग्धपानसदृश अयोग्यने तत्त्वोपदेशक्चे, योग्य अने अयोग्यनी प् रीक्षा करवी गुरुमहाराजना हस्तमां छे, विडालना उदरमां खीर टकती नथी तद्वत् अयोग्यना हृदयेधर्मतत्त्व टकतुं न ी. अविनयीने गुप्तधर्मतत्त्वरहस्य आपबुं आत्महितकर थतुं नथी.

संपति काले धर्मतत्त्वनो उपदेश शाक भाजीपालानी पेठे योग्य अयोग्यनी परीक्षारहीत दृष्टिगोचर थायछे, तेथी वाक्कलेश वा अल्पफळनी प्राप्ति थायछे, खेडुत पण भूमीनी परीक्षा करी वाववा योग्य धान्यकाळे वावेछे, तो धर्मरुप बीज योग्यायोग्यनी परीक्षा कर्या विना काळविना कोइपण मनुष्यना हृदयमां रोपन्नं, ते अनुचित्त, चिंतनीयछे. जगत्मां मनावा पूजावानी लाळचे जग-त्ना प्रवाहमां पडेला गुरुनाम धरावनाराओ गमे तेम उपदेशआपी भोळा जीवोने फसावी पोताना वशमां करी लेइ राचेछे, माचेछे, ते पोतानं तथा अन्यनं यथायोग्य भळं करी शकता नथी. सट्गुरु स्वतंत्रछे, योग्य होय तेहने उपदेश आपे, अन्यथा मौन रहेछे.

कुयुक्ति करनारा अने पोतानी पंडिताइ जणावनारने सद्गुरु अंतकरणधी उपदेश आपता नथी, तेमज गुरुना वचन उपर वि-श्वास नथी तेनी साथे गुरुजी माथाक्कट करता नथी. पत्थर उपर कमल उमे तो अविश्वासीने गुरुनो उपदेश लागे. गुरुना उपदेशथी वच्चमां पोतानु डहापण चलावनार गुरुभक्त कही शकाय नहीं, हालना कालमां गुरुभक्त थन्नं गुरुकेलले, केटलाक पत्थर समान कुगुरुओले, पोते संसार समुद्रमां दृडे अने स्वआश्रितोने बुडाहे, संसार समुद्र तरवामां केटलाक पांदडा समान गुरुओले, अने केटलाक वहाण समान ले, एमजाणी सद्गुरुनं अवलंबन करनं ए परमार्थ छे.

प्रमासद्वीम. ( दुहा ?) समकितदायक सद्युरु, तेनुं निहं मन भानः

परोपकारी बुद्धि वण, ते भटके अज्ञान. ॥ ६२ ॥ समिकत दायक सद्गुरुना उपकारतं जेने भान नधी ते प-रोपकृतिथी अजाण सम्यक्तवनो सार फल पामी शके नहीं, उप-कार बुद्धिनी विकलताए गुरुना विनयना अभावे राखमां घी होम्या जेवुं थाय ते संसार समुद्रनो पार पामी शके नहीं. ॥ दुहा. "

समिकतदायक गुरु अने, दीक्षा गुरुमां भेदः अंतर रवि खजुआ समो, सुशिष्य मनमां वेद. ६३ दीक्षा दायक महामुनि, धर्मग्रह जग जोयः समजे समजु सानमां, करो न संशय कीय ६४

भावार्थ-सम्यक्तव द।यक धभगुरु अने दीक्षा गुरुमां घणो भेद छे क्यां, रिव अने क्यां खद्योत एटलो अंतर् हे सुशिष्य मनमां जाण. दीक्षा पदायक गुरु वाहुलताथी धर्मगुरु होइ शके छे. कारण के-धममाप्ति जेनाथी थइ होय ते दीक्षा आपे तो ते होइ शके छे, समजु सानमां समजिशे शंसयतुं कंड् प्रयोजन नथी. धर्मगुरुनी उपकार कोइ पण रीत्ये वळे तेम नथी. " दुहा."

एवा गुरुने सेविए, थइए सद्गुण धार्मः

गुण धारी शिष्यो लहे, शिवपुरनो विश्राम. ६५ सट्गुण्याम भूत गुरुपद्षंकम सेवतां अनेक गुण्धाम भूत शिष्यो थाय, अने गुगधारी शिष्यो शिवपुरतो विश्राम छइ शके छे, सद्गुणी थनारने प्रथम गुरुती आवश्यकताछे, दुष्पंथयी सुपंथे छावनार गुरुमहाराजछे, जेने गुरु नथी ते पोते गुरु यह शकतो नथी.

" दुइा. "

सहस्र सूर्योदय हुवे, चंद्र उगे शतवारः दीपक करो हजार पण, अंध न जुवे लगार. ६६ ज्ञानी सद्युरु जो मले, अतिशय दे उपदेशः मूर्विन लागे नहीं, उलटो थावे क्वेश. ६७

भावार्थ-सहस्रामे सूर्यो प्रकाशे, हजारवार चंद्रनो उदय थाय, हजार दीपक सळगावो, पण जे अंधपुरुषछे ते जरा मात्र पण देखी शकतो नथी. तेम मूर्खात्मा मोहांध जडपुरुषने ज्ञानी सट्गुरु मळे अने अतिशय उपदेश आपे तोपण मगशैलीया पाषाणनी पेठे जरा मात्र असर थती नथी. उलटो मूर्खने क्रेश थायछे, अने सद्गुरुने पण वाक्केश अवशेष फल जाणवं.

" दु**हा.** "

जडताए जड थइ रहे, ग्ररुमां कुग्ररु बुद्धिः रासभपुच्छ ग्रही इव, करे न आतम शुद्धिः ६८ सद्ग्ररुनो विश्वास नहि, कुग्ररुनो विश्वासः अज्ञानी पश्च आतमा, सर्व दुःखनो वासः ६९

भावार्य-आत्मस्वरुपनी अज्ञानताए जड जेवो थइ जइ दृष्टि-रागथी तथा मोहांघपणाथी गुरुस्वरुप समज्या विना कुलनी म-बीदाए गुरुपणु मानतो अज्ञानी जीव गुरुमां अगुरुपणुं मानेछे, अने अवळी परिणितयोगे कुगुरुमां गुरु बुद्धि धारण करेछे, ते पोतानी कुटेवने गद्धापुच्छ ग्रहनारनी इव भवभ्रमण दुःख राशि
पामतां सद्गुरुनो उन्देश लागतां पग पोतानी हठ ग्रुकतो नथी.
तेवो अज्ञानी जीव पोताना आत्मानी शुद्धि करी शकतो नथी.
जेने सद्गुरुनो विश्वास नथी अने कुगुरुना वचननो विश्वासछे, ते
अज्ञानी पशु आतमा सर्व दुःखनुं पात्र वनेछे, अवळी परिणितयोगे
अवला मार्गे भवितव्यतायोगे गमन करेछे. तेवा जीवने योग्यतानी माप्ति विना उपदेश पण हेशभूत थायछे, राजा, दीवान, शेठ,
लक्षाधिपति होय पण योग्यता विना सद्गुरुनो उपदेश असर
करतो नथी.

" दुहा. "

तर्कशक्ति जेनी घणी, वाणी जस गंभीरः मोक्षाशा मनमां वशी, धर्मकार्यमां धीरः ७० एवा शिष्यो पामशे, अनेकान्त सुपंथः गुरुगम ग्रंथो वांचीने, थाशे महानिग्रंथ. ७१

• भावार्य-जेनी तर्कशक्ति घणी होय, अने वाणी गंभीर होय, खन पढ़े तेटछं वोले, मोक्षाशा जेना मनमां वशी होय. अने धर्म कृत्यमां मेन्वत् अडगर्हात्ते होय, गृहनां वचनो यज्ञना टांक-णानी पेठेज जेम जेना हृद्यमां कोतरातां होय, एवा सद्गुणी शिष्यो स्यादाद अनेकांत मार्ग पामशे. अने रवच्छंदाचारीपणुं तथा अहंपणुं त्यागीने गृहगम ग्रंथोने वांची धारी श्रावकपणुं अंगीकार करशे. अथवा शक्ति परिणामयोगे निग्रंथ अवस्था ग्रहण फरशे, योग्यता पोतानी केटली छे अने कथा ग्रंथो वांचवा योग्ये होते गृहमहाराज जाणे छे माटे नेमना फरमाथेला ग्रंथो वांचवा

एवी हिताकांक्षा धारवी.

" दुहा<sub>•</sub> "

सदा महानिंग्रथथइ, पाळे पंचाचार; पंचमहात्रत पाळता. शुद्ध धरे व्यवहार. ७२ निश्चय आत्मस्वरुपमां, रमता रहे निशदीन; गुणपर्याय विचारने, करवामां लयलीन. ७३

भावार्थ-द्रव्यर्था धन धान्यादि नवविध परिग्रह त्यागी भा-वथी राग द्रेपनो त्याग करी निर्ममत्त्वपणे वायुवत् अमितवद्ध-पणे सदा विचरे, व्यवहारयी पंचमहात्रतः अने ज्ञानाचार, दर्शना-चार, चारित्राचार, तपः आचार अने वीर्याचारने पाळे, आदरे, निश्चयनयथी पोताना आत्मस्वरूपमां निश्चदिन मुनिवर् रमे हवे प्रसंगतः प्रथम पड्द्रव्यमुं स्वरूप वतावेळे.

१ धर्मास्तिकाय द्रव्य-चलण सहावो धरमो,=चालताने सहाय आपवानं गुण धर्मास्तिकायनो छे, ते अनीवद्रव्य छे, अरुपी, अचेतन, अक्रिय, चलनसाह्यगण तेनो जाणवो. माल्लं पाणीमां तरे छे तेनो ए स्वभाव छे, पण पाणी तेने साह्यकारक छे. धर्मास्तिकायना असं ख्याता प्रदेशो छे, प्रत्येक प्रदेशमां उत्पातव्यय थया करे छे, द्रव्य स्व ख्या भ्रुवपणुं असंख्याता प्रदेशोमां अनादि अनंतमे भांगे छे. अगुरु लघुयी प्रत्येक प्रदेशमां पड्गण हानि दृद्धि थया करे छे. धर्मास्तिकायद्रव्य अन्यद्रव्यमां परिणमतुं नथी. अने अन्यद्रव्यना गुणोनुं घातक नथी, केवल ज्ञानव डे धर्मास्तिकाय द्रव्य देखी शकाय छे. अन्य जीवोने केवलीना वचननी श्रद्धा गम्य छे, धर्मास्तिकायना को इपण प्रदेशनो नाश यतो नथी, एक ठेकाने छेथी अन्य स्थाने तेना प्रदेशो जता नथी, छो काकाशमां व्यापीने

रहेळे, धर्मास्तिकायने कोइ उत्पन्न करनार नयी, जलमां थलमां ज्यां त्यां धर्मास्तिकाय ज्यापी रह्यंछे, तेनामां वर्णगंध रस अने स्पर्श नथी. समये समये अनंता जीवोने तथा अनंत पुद्गलमय परमाणुओने गमनमां साहाय्य आपेछे. पदेशे पदेशे अ-नंता गुण अने अनंता पर्यायछे. पोताना स्वरूपे धर्मास्तिकाय अस्तिरूपेछे. अने परस्वरूपे नास्तिछे. पदेशे पदेशे अनंत स्वगुणनी अस्तिता समये समये परिणमी रही छे, तेमज धर्मास्तिकायना म-त्येक प्रदेशे अनंत पाद्रव्य, परक्षेत्र, परकाल, अने परभावनी ना-स्तिता परिणमीछे, तेमज महेशे महेशे अनंत पर्यायनी समये समये अस्तिता जाणवी. तेमज घर्मास्तिकायना असंख्यात पदेशमांसमये समये परद्रव्यना अनंत पर्यायनी नास्तिता परिणमी रही छे, जे समयमां अनंत निजगुणनी अस्तिता तेज समयमां अनंत परगुणनी नास्तिता जाणवी. जो धर्मास्तिकायमां परद्रव्य, गुणपर्यायनी ना-स्तिता न रहे तो अन्य द्रव्यरूपे धर्मास्तिकाय परिगमे अने द्रव्य द्रव्यनो भेद रही शके नहीं, माटे स्त्रगुग स्त्रद्रव्यनी अस्तिताना समयमां परद्रव्यनी नास्तिता मानवाथी प्रत्येक द्रव्य पोताना स्वरू । परिणमे, अस्तिपणुं धर्मास्निकायमां रहां हे, ते पग अवक्त-व्यक्ठे, अने अनंत नास्तिपणुं रह्यंक्ठे, ते पण अवक्तव्यक्ठे, एक शब्दनो उनार करतां असंख्याता सभय व्यतीत याय छे, तो एक समयमां स्थित अस्तिता अने नास्तितानुं कथन अशक्यछे, ज्ञानवडे जाणी वैखरी भाषाथी तेतुं स्वरूप कही शकातुं नयी, थोइं कही शकाय छे, जेटलुं जाणवामां आवे तेटलुं वेखरी वाणीधी कही शकातं. नथी. माटे वक्तव्याव कव्यपणुं तेमां जाणवुं. इत्यादि विचारतां सप्त भंगी उत्पन्न याय छे, वळी धर्मास्तिकाय छे ते द्रव्यपणे नित्य छे,

अने उत्पाद, व्ययनी अपेक्षाए अनित्य छे, द्रव्यार्थिक नयनी अ-पेक्षाए धर्मास्तिकाय शाखतछे, अने पर्यायास्तिकनयनी अपेक्षाए धर्मास्तिकाय अशाखतछे, धर्मास्तिकाय ज्ञेयछे, पण तेनामां ज्ञाता-पणुं नथी, जह छे माटे.

२ अधर्मास्तिकाय-स्थिर रहेवामां साह टयदायक गुग अधर्मी-स्तिकायनो छे, मनुष्य मार्गमां चालतां थाके छे, त्यारे झाड जेम तेन वेसवामां सहाय्यकारक छे, तेम अधर्मास्तिकार्यनी साहाय्यथी जीव पुर्गल स्थिर थाय हे, ए द्रव्यना चारगुण छे, अमूर्त, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श थकी रहित, जीवत्वथी रहीत माटे अचेतन, वि-भाविक क्रिया रहित माटे अक्रिय, निश्चयनयनी अपेक्षाएतो स-क्रिय छे, स्थिर पदार्थने साहाय्य करे छे, माटे स्थिर साहाय्यगुण अधर्मास्काय असंख्यात प्रदेशपर्या छे, लोकाकाशमां व्यापीने रह्युं छे, अनादि कालथी छे, माटे तेनो उत्पन्न कर्ना कोइ नयी, कोइ पण काले तेनो अंत नथी, माटे अनंत छे, अवमीस्तिकायना मत्येक मदेशमां अगुरु लघुथी समये समये षड्गुण हानि दृद्धि परिणाी रही छे, अधर्मास्तिकाय चर्म चक्षुथी देखी शकातुं नथी, अधर्पास्तिकायना चार गुण छे, रुप राहित माटे अमूर्च, अचेतन एउछे जीव रहीत, अक्रिय एटछे विभाविक क्रिया रहीत, अने स्थिर सहायगुग ए चारगुण अनादि अनंतमे भांगे अवर्मास्तिका यमांछे, समये समये अनंत जीवोने तथा पुर्गहोने स्थिति सहाय आपे छे, एकेक प्रदेश अनंता गुण पर्याय रहा छे. अधमास्तिका-यद्रव्यमां स्त्रगुण पर्यायनी अस्तिताछे, परगुण पर्यायनी नास्तिता छे, इब्यत्वनी अवेक्षाए दरेक अधर्मास्तिकायना प्रदेशो एक सम्ला छे, कारण के दरेके परेशमां द्रव्यत्वपणुं रह्यं छे, किंतु अगुरुलघुयी धतीपड्गुगहानिवृद्धि पदेश परेश प्रति भिन्न भिन्न परिण्मी

रही छे. ते अधर्मीस्तिकायना प्रदेशमां अनंतगुणनी हानी छे, त्या अनंत गुणहानी मटीने असंख्यात गुणहानि थाय छे, संख्यात गुणहानि होयछे, त्यां अनंतगुण हानि थायछे, एम असंख्याता मदेशोमां पर्गुण हानिद्देष समये समये भिन्न भिन्न परिणमवाथी सर्व प्रदेशो अपेक्षाए एक सरखा नथी, एक स्थानथी वीजे ठे-काणे मदेशो गमन करता नथी. माटे मदेशो अचल छे, वली मदे-श्वना कडका थता नथी, माटे अखंडछे. अधर्मास्तिकायमां जाण-वानो गुण नथी माटे जडछे, पोताना स्वरूपे अधर्मास्तिकायमां अनंत शक्तिछे, तेनी केवली भगवान्ना वचनथी श्रद्धा करवी.आ द्रव्य लोकाकाशमां व्यापक लतां कोइ द्रव्यना गुणतुं घातक नथी। अने ते अन्य द्रव्यमां परिणमतुं नथी, पोताना स्वभावनो त्याग करतुं नथी. अधर्मास्तिकायने पुण्य पाप लागी शकतुं नथी, पर-द्रव्यनी साथे परिणम स्वभाववाळा जीवद्रव्यने पुण्य पाप लागी शकेछे. अधर्मास्तिकाय द्रव्य जाणी श्रकायछे, माट अधर्मास्तिकाय मकाश्यछे, अने ज्ञान प्रकाशक छे, अधर्मास्तिकाय ज्ञेयछे, अने जीव ज्ञातांछ, द्रव्यार्थिक नयापेक्षया अधर्मास्तिकाय ज्ञाश्वत छे. पर्यायार्थिक नयापेक्षया अधर्मास्तिकाय अज्ञाश्वत छे, अन्य द्रव्य साथे परिणमतुं नथी. माटे अधर्मास्तिकाय अपरिणामीछे, अधर्मा-स्तिकाय द्रव्यक्षे नित्य छे. अने पर्यायक्षे अनित्य छे, अनंत अस्तित्व धर्मथी युक्त अधर्मास्तिकायछे. आ द्रव्य जाणवा योग्यछे, अने ते आहरवा योग्य नथी फक्त ते द्रव्यतुं स्वरूप ज्ञानद्दिश्यी जणायछे, आत्मानी साथे तेने कंड् संवंघ नधी. एकेक प्रदेशे अनंत धर्म अनंतगुण अनंतपर्यायनी अस्तिता छे, अने अधर्मास्तिकायना एकेक महेशमां परद्रव्यना अनंतधर्भ अनंतगुण अने अनंतपयार्यनी नाम्तिता व्यापी रहीछे, पत्येक पदेशमां रहेला धर्मनी अस्तिता L.

तथा परधर्मनी नास्तितानी अपेक्षाए सप्तभंगी उत्पन्न थायछ, जेम जेम सम्यग् ज्ञान थतुं जायछे, तेम तेम उपयोगनी एकाग्रताए वि-शेव ज्ञान थतुं जायछे.

३ आकाशास्तिकाय-अधर्मास्तिकायादिकने अवगाहना आ-पवानो स्वभाव आकाशनोछे, आकाशना वे भेदछे, १ लोकाकाश अने २ अलोकाकाश, जेमां छ द्रव्यनी स्थीति छे, ते लोकाकाश जाणवुं, जेमां आकाश सिवाय अन्य पदार्थनी स्थीति नथी तेने अलोकाकाश कहेछे. तेना चार गुण छे, अरूपी एटले रूपरहीत, आकाशनुं कालुं, पीलुं, धोलुं, नीलुं, श्वेतआदि रूप नथी.

प्रश्न-आकाशतुं चक्षयी जोतां काळं रूप देखायछे, अने तमे केम ना कहोछो ?

उत्तर-आकाश साम्चं देखतां जे कालीमा देखाय छे ते कंइ आ-काशनी कालीमा नथी. किंतु पुद्गलद्रव्यनी कालीमाछे, माटे आकाशनुं रूप नथी.

प्रश्न-निर्मेळ जलथी परिपूर्ण स्थिर सरोवरमां आकाशनुं प्रतिविंव पडेळे, देखो, सरोवर माटे आकाशनुं रूप मानवुं जोइए.

उत्तर-विशेष स्रक्ष्मगुद्धिद्वारा परीक्षा करतां अववोधाशे के आकाशनुं मितिविंव सरोवरमां पहतुं नथी, अने सरोवरमां जेनुं मितिविंव पहेन्छे ते पुर्गलद्रव्यन्छे, तेमां जोतां मान्नम पहेन्छे के-वादलां विगेरेनुं मितिविंव सरोवरमां देखायन्छे, साकारनुं मितिविंव पहेन्छे, निराकारनुं मितिविंव पहतुं नथी, छ द्रव्यमां एक पुर्वगल द्रव्य साकारन्छे, वाकीनां पांच द्रव्य निराकारने, साकारने विपेज मितिविंव पहेन्छे, आकाश निराकारने मादे तेनुं मितिविंव पडी शकतुं नथी.

प्रश्न-आत्माने विषे अन्य द्रव्य भासे छे, त्यारे आत्मामां अन्य द्रव्यतुं मतिविव पड्या विना केम भासे ?

उत्तर-दर्भणमां मुखनुं पतिविंव जेम भारेछे, तेम आत्मामां अन्य पदार्थीनां प्रतिविंच पहतां नथी, ज्ञान गुण पोतानी शक्तिथी सर्व पदार्थीने जाणेछे, तेथी सर्व पदार्थीनां प्रतिविंव आत्मा-मां पडतां नथी. ए उपरयी सिद्ध थायछे के-आकाश अरुपी छे, अचेतन एटले जीवरहित, विभाविक कियारहीत आकाश जाणवुं, फेटलाक मतवादी एम मानेछे के-आकाशयी जलनी जत्पत्ति थइ पण ते मंतच्य नथी. कारण के-आकाश निराकार अक्रियछे अने तेनाथी कोइ पण पदार्थनी उत्पत्ति थती नथी, जळादिक साकारछे, अने आकाश निराकारछे, माटे निरा-कारथी माकार वस्तुनी उत्पत्ति थइ शके नहीं, वळी आकाश अनादि काल मुं छे, अने कदी तेनो अंत आववानो नधी माटे अनंत छे, माटे आकाशनो वनावनार कोइ नयी, बळी आकाशनो उत्पन्न करनार कोइ होवो जोइए, एप कोइ कहे तो विकल्प के-आकाशरूप कार्यनुं उपादान कारण कोण ? अने निमित्त कारण कोण ? प्रथम पक्ष-आकाशनुं उपादान कारण इश्वर जो कहेशो तो ते संभवतो नथी, कारण के इश्वर ज्ञानवान् छे, अने आकाश जडछे, इश्वरनो ज्ञान गुण आफाशरूप कार्यमां आववी जोइए, पण तेम नथी. माटे इश्वर आकाशनुं उपादान कारण कहेवाय नहीं, अलवत आ-काशनुं उपादान कारण कोइ नथी। जेने उपादान कारण नथी तेने निमित्त कारण पण नथी। इन्दर आकाशनुं निमित्त फारण नथीं। आकाश अनादि कालधी स्वयंसिद्ध छे, आ-काश्रमां अवगादना गुणछे. तेथी अन्य द्रव्योने रहेवा माटे

अवकाश आपेछे. आकाशना एकेक प्रदेशे अनंता धर्म, अ-नंता पर्याय रह्या छे. आफाश द्रव्यना प्रत्येक प्रदेशो द्रव्यत्व पणाथी एक सम्खाछे, अने प्रत्येक प्रदेशमां अग्रुह छघुथी षद्गुण हानि वृद्धि समये समये थइ रही छे तेनी अपेक्षाए एक सरखा नथी। आकाशमां स्वद्रव्य स्वक्षेत्र, स्वकाळ, अने स्वभावनी अपेक्षाए अस्तिपणुं छे. अने परद्रव्य,परक्षेत्र, परकाल अने परभावनी अपेक्षाए नास्तिपणुं छे. आकाशमां परद्रव्यनी जे नास्तिता ते पण अस्तिपणे छे. परद्रव्यनी ना-स्तिता अस्तिपणे आकाशद्रव्यमां न रहे तो अन्यद्रव्यनी अस्तितानो नाश थायं अने अन्यद्रव्य कहेवाय नहीं, जे स-मयमां स्वद्रव्यादिकनी अस्तिता छे तेज समयमां परद्रव्यादि-कनी नास्तिता छे, अस्तिता अने नास्तिता वैखरी वाणीथी कही शकाय सर्वथा माटे अवक्तव्य छे. इत्यादि विचारतां सप्तभंगी उत्पन्न थायछे. आकाशमां जाणवानो स्वभाव नथी. माटे जडछे. वळी तेना प्रदेशना कडका थता नथी माटे अ-खंडछे. ज्ञानगुणे जणायछे माटे ज्ञेयछे. छोकाछोक च्या-पी आकाशद्रव्य छे. जलमां थलमां ह्यां त्यां अरुपी-पणे आकाशद्रव्य व्यापीने रह्यंछे, आत्मग्रणोत्तं घातक आ-काशद्रव्य नथी. अने ते अन्य द्रव्यमां संयोगपणे परि-णमतुं नथी. अन्य द्रव्यो तेनामां रहेछे. माटे अन्य द्रव्य आ-घेय छे. आकाश द्रव्य आधार छे. आकाशद्रव्यना स्कंध, देश, प्रदेश, केवलज्ञानथी जाणी शकायले, आत्माना एक प्रदेशमां ज्ञाननी एवी शक्ति छे के-आकाशद्रव्यना अनंता गुण-अनंता पर्याय, अनंत धर्म एक समयमां जाणी शकेछे. ४ पुत्गलास्तिकाय-वर्ण, गंघ, रस अने स्पर्श थकी युक्त पु-

परमारमंद्रशनः द्गकद्रव्यक्ठे, तेना चारगुणछे. मूर्त अचेतन जीवपणायकी रहीत. सिक्रिय एटले मलवा विखरवारूप क्रिया करेछे, पुद्गळपरमाणु अनंतछे. परमाणु वाळयो वळे नहीं, भेद्यो भेदाय नहीं, परमाणु दर्शन चक्षु अगोचर जाणवुं. द्विपरमाणुं संयोगी स्कंघने द्विपदेशी स्कंध कहे छे. अनंत परमाणुं संयोगी स्कंध हिंगोचर थायछे, ते व्यवहार परमाणु कहेवायछे. निश्चयनये तो स्कंधकथायछे. एक प्रमाणुगां एक वर्ण एक गंध एक रस अने वे स्पर्श रह्याछे, परमाणुषी वनेला केटलाक स्कंघो चक्षुषी देखाय पण हाथमां पकदाय नहीं, केटलाक स्कंथोनो स्पर्श ग्रहाय किंतु चक्षुयी देखाय नहीं जेम वायु, केटलाकनी गंधग्रहाय पण चक्षुग्राझ थड् शकतां नथी जेम कस्तुरीना पुद्गल स्कंधी विगेरे. एम विचित्र स्वभावयुक्त पुर्गहरकंषो थापछे. अने विचित्र पदार्थ वनेछे. प-श्रात् विलरी जायछे. यावन्त पदार्थी चर्मचसुर्थी ग्राह्मछे ते सर्व पुट्गळ छे. केटलाक पुट्गल स्कंशे चमैचक्षुणी पण अग्राह्य छे, अंधकार तथा प्रकाश पण पुद्रल द्रव्यक्ते. कमे पण पुद्रल द्रव्यक्ठे, पंचधा औदारिकादि शरीर पण पुद्रल द्रव्यके. वादर पदार्थना ज्ञानयी सूक्ष्म पदार्थ स्वरूप अनुपाने जणायछे, पत्थर मृतिका आदि सर्वे पुहल द्रव्य जाणवां. एकेंद्रियथी यानत् पंचिद्रि जीवोप पुद्र र संघोने शरीरपणे प्रदी स्व-सत्तामां लीपाले, ते सर्वपुद्गलद्रन्यले, पुद्गलद्रन्य जीवद्रन्यना गुणोने आच्छादन करेछे. पुह्रहद्रच्यरूपी छतां जीवद्रव्यने मश्र-जीवनी अनंति शक्ति छै, तेने पुरुष इन्प शुं करी शके ? षापा करेछे. इतर-अधुना कर्पधारक जीवोनी अनंति शक्ति तिरोभावे सत्तापां वर्ते है, किंतु आविभीने शक्तिं मगट थड़ नधी अनादि का कथी आत्माने कर्म लाग्युंछे, तेथी अनादिकाकथी आत्मानी शक्ति तिरोभावे वर्तेछे। जो आविभीवरूपे शक्ति यह होय तो कर्मनुं कंइ जोरि नथी, माटे कर्मना योगे जीवनी शक्ति अवराइछे, जेम सूर्यने वादळां आच्छादन करेछे तो सूर्यना प्रकाशनुं आच्छादन थायछे, प्रकाश ढंकाइ जायछे, किंतु यदा वादळां विखराइ जायछे त्यारे प्रकाश स्वच्छ पढेछे. एम आत्मा अने कर्म विषे जाणवुं आत्मा सूर्य समान छे, अने कर्म वादळां समानछे, दृष्टांत एक देशी जाणवुं.

प्रश्न-अद्यो आत्माना गुणोनो उपघातरूपी कर्मथी शी रीते थइ शके? उत्तर-ब्राह्मी औषधिरूपी, अरूपी बुद्धि दृद्धिमां उत्तेनकछे, मदिरा

रूपी छतां ज्ञानीना अरूपी ज्ञानमुं आच्छादन करी प्रथिल बनावेछे, तथा रीत्या आत्माना असंख्यात प्रदेशे लागेलां ज्ञाना वरणीयादिक कर्मरूपी अरूपी आत्मग्रणोनी आविभीवतामुं आच्छादन करेंछे•

विषयांतर्थी निष्टत्त थई पुद्रल द्रव्यतुं स्वरूप कथतां अन्य प्रश्न करेछे.

प्रश्न-पृथ्वी, पाणी, वायु विगेरेनी उत्पन्न कत्ती इश्वरछे, अने तमे तेने केम अन्य स्वरूपे कथोछो।

उत्तर-पृथ्वी, पाणी, वायु विगरेनो कर्ता इश्वर नयी अनादि कालथी ते वस्तुओं इश्वर अरूपी निरंजनले तेनाथी रूपी पृथ्वी आदि जगत् वनी शकतुं नथी, सर्व द्रव्य पोतपोताना स्वभावे वर्त्तेले. पुद्रल द्रव्यमां जाणवानो स्वभाव नथी माटे जहले, प्रत्येक परमाणुमां उत्यात, व्यय, अने ध्रुवपणुले. वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शनी परावर्त्तना प्रत्येक परमाणुमां थायले. पुद्रल द्रव्यमां स्वग्रुण, स्वथर्म, स्वपर्यायनी अस्ति- ताछे. परद्रव्य, परधर्म, परपर्यायनी नास्तिता पृद्गळ द्रव्यमां छे. जे समयमां अस्तिताछे, तेज समयमां नास्तिताछे. अस्ति-ता अने नास्तितानुं स्वरूप वक्तव्या वक्तव्य रूपेछे. पुद्गल द्रव्य चतुर्दश राजलोकमां व्यापीने रहुंछे. पुद्गल परमाणुआ अनंताछे. पुद्गल द्रव्यने आ जीवे शरीर, आहार, इंन्द्रि-यादिपणे अनंतिवार ग्रहण कर्युं अने मूक्युं पण पुद्गल द्रव्य कोइ काले आत्मानुंथयु नथी अने थवानु नथी एनुं विस्तारथी स्वरूप ग्रहमुखयी धारवुं.

५ काळ-काळना त्रण भेद छे, अतीत काळ, अनागत काळ अने वर्त्तमान काळ, काळनो समय अति सहम छे, सर्व द्रव्य उपर काळनी वर्तना वर्ती रहीछे, काळ द्रव्य आत्मगुणोनुं धातक नथी।

६ जीवड़ व्यास्तिकाय — जीव ड़ व्य अख्यी छे, श्ररीरधारी जीव व्यवहार नयथी हिंपी कहेवाय छे. जीव चेतन छे, पोता हुं स्वरूप निश्चयन यथी अित्रय छे, अने वळी निश्चयन यथी पोता ना धर्मनी क्रिया जीव करे छे, माटे जीव सिक्रय छे, व्यवहार नयथी जीवक मेनी साथे भळ्यो छतो पर इव्ययोगे गमना दिक किया करे छे माटे सिक्रय छे. जीवड़ व्य अनंत छे. जीवना वे भेद छे. एक संस्तारी अने सिद्धना जीवो संसारी जीव पण अनंत छे, अने सिद्धना जीवो संसारी जीव पण अनंत छे, अने सिद्धना जीवो पण अनंत छे, झान. दर्शन, चारित्र, वीर्य, उपयोग ए जीव हुं छक्षण छे. जीवमां स्वकीय इव्य, क्षेत्र का छादिक नी अन्दितता छे, पर इव्यादिक नी अनंत अस्तिता छे, स्वड़ व्यादिक नी अनंत अस्तिता अने पर इव्यादिक की अनंत ना स्तिता छे, स्वड़ व्यादिक नी अनंत अस्तिता अने पर इव्यादिक नी अनंत ना स्तिता सिपये समये जीवड़ व्यापा वर्ते छे. इव्याधिक नयधी जीव शास्ति। छे, अने पर्यायार्थिक नयधी जीव अशास्ति।

छे. जीवमां उत्पाद, व्यय अने धुत्रपणुं व्यापीते रह्युं छे, जीवना असंख्याता प्रदेश छे, एकेक प्रदेशे अनंतहान, अनंतदर्शन, अनंत वीर्य, अनंतभोग, आदि ऋदि रहीछे, पंचद्रव्यना द्रव्य, गुण, पर्याय धर्मनुं जाणवापणुं एक आत्माना प्रदेशमां रह्युं छे तो असंख्याता प्रदेशनी तो वातज शी कहेवी? निश्चयनये स्वगुणा-दिकनो कर्ता आत्मा जाणवो, व्यवहारनपथी कर्मनो कर्ता आत्मा जाणवो, व्यवहारनपथी कर्मनो कर्ता आत्मा जाणवो, व्यवहारनय, अशुद्ध व्यवहारनय, अशुद्ध व्यवहारनय, अशुद्ध व्यवहारनय, अशुद्ध व्यवहारनय, अशुद्ध व्यवहार, अनुपचरित व्यवहार, एक द्रव्याश्रित ते सद्भूत व्यवहार, वीजो असद्भूत व्यवहार, एक द्रव्याश्रित ते सद्भूत व्यवहार अने जे परिविषयनो आश्रय करे ते असद्भूत व्यवहार नय जाणवो।

मथम सद्भूत व्यवहारना वे भेदछे, एक उपचरित सद्भूत व्यवहार अने वीजो अनुपचरित सद्भूत व्यवहारनय सोपाधिक गुण गुणीनो भेद देखांड जेम जीवस्यमतिज्ञानं अत्रमतिज्ञान सो-पाधिक गुणछे, अने जीव गुणी तेनो भेद देखांड्यो, ते उपचरित मथम भेद जाणवो

तथा निरूपाधिक गुण अने गुणीना भेदे बीजो अनुपचरित सद्भूत व्यवहार जाणवो. जेम जीवस्य केवळज्ञानम् जीवनुं केवळ ज्ञान, अत्र केवळज्ञान निरूपाधिक गुणछे, अने जीव गुणी छे, माटे निरूपाधिकपणे गुण गुणीना भेदे बीजो भेद जाणवो.

असद्भूत व्यवहारनयना वे भेद छे, एक उपचरित असद्भूत व्यवहार, अने वीजो अनुपचरित असद्भूत व्यवहार जाणवो.

मथम भेद असंश्लेषितयोगे एटले कलिपत संबंधे होयछे, जेम

आ देवदत्तनुं धनछे, अत्र देवदत्त अने धनने उपर उपरनो संवंध छे, स्वस्वामीभावरूप कित्पत संवंधछे, ते माटे देवदत्तनुं धन कहेवुं ते उपचारथी जाणवुं. तथा देवदत्त अने धन एवे एक द्रव्य नथीं, माटे ते धननो आरोप देवदत्तने विषे असद्भूतछे ए उपचरित असद्भूत व्यवहार जाणवो. आत्मानी साथे कर्मसंश्लेपपणुंछे, एटछे आत्मानी साथे कर्म, तथा देहना संश्लेपपणाना (जोडावा वा मळवा) ना योगे अनुपचरित असद्भूत व्यवहार जाणवो.

आत्मानी साथे अष्टकर्मनो संवंधछे ते धन संवंधनी पेठे क-िएत नथी. वळी औदारिक-वैक्रिय, आहारक, तैजम अने का-र्मण शरीरनो आत्मानी साथे संवंधछे ते पण धन संवंधनी पेठे फिल्पत नथी. विपरीत भावनाए निवर्ते नहीं, जावज्जीव रहे तेमाटे ए अनुपचरित अने कमीदिक भिन्न विपय माटे असद्भूत जाणवी.

अनुपचित असद्भूत व्यवहारनये जीव कर्मनो कर्ता जाणवो, अने जपचिति असद्भूत व्यवहारतः गृह धननो कर्ता जाणवो, तथा स्वनाति जपचिति असद्भूत व्यवहारे पुत्र पुत्रीनो कर्षा जीव जाणवो. पुत्र पुत्री पोतानी जातिनां छे, पुत्रादिक जीवनां नथी तेम छतां जीवनां कहेवां ते जपचार, पुत्रादिक पोतानाथी भिन्नछे माटे असद्भूत जाणवो. विनाति जपचिति असद्भूत व्यवहारे धनादिकनो कर्ता जीव जाणवो. धन विगरेनी जीवना करतां जुदी जातिछे पटले ते पुद्गल जातिछे, माटे विजाति धनादिक जाणवुं, धन विगरेनो कर्ता जीवने कर्ता जीवने कर्ता जेवने कर्ता जेवने कर्ता जेवने कर्ता जेवने कर्ता जीवने कर्ता जीवना जीवने जीवने कर्ता जीवने कर्ता

स्वजाति विजाति उपचरित असद्भृतव्यवहारनयृतः नगरादिकनो कर्त्ता जीव जाणवो. जीव, अजीव वन्नेनो समास तेमां थयो. अशुद्धानिश्चय नये राग द्वेषनो अशुद्ध स्वभावे जीव कत्ती जाणवो.

ग्रुद्धनिश्चयनये स्वकीयनिरुपाधिकज्ञानदर्शनादिक गुणोनो कत्ती जीव जांणवी.

आत्मानुं केवळ्ज्ञान ते शुद्ध सद्भूत व्यवहार जाणवी, धर्म अने धर्मीना भेदथी ए व्यवहार थयो, तथा मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, आत्मानुंछे एम कहीए ते अशुद्ध सद्भूत व्यवहार जाणवी.

परक्रव्यनी परिणति भळवाथी क्रव्यादिकमां नवविध उपचा-रथी असद्भूत व्यवहार थायछे.

१ द्रव्ये द्रव्योवचार, २ गुणे गुणोवचार, ३ पर्याये पर्यायो-पचार ४ द्रव्ये गुणोवचार, ५ द्रव्ये पर्यायोवचार, ६ गुणे द्रव्यो-पचार, ७ पर्याये द्रव्योवचार ८ गुणे पर्यायोवचार ९ पर्याये गुणो-पचार, एनं स्वरूप कहे छे.

- १ द्रव्ये द्रव्योपचार-क्षीरनीरन्यायवत् जीव पुद्गळ साथे में व्यो छे माटे जीवने पुद्गळ कहीए ए जीवद्रव्ये पुद्गळ द्र-व्यनो जपचार जाणवो.
- र गुणे गुणोपचार—भाव छेदया ते आत्मानो अरूपी गुणछे तेने जे कृष्ण नीलादिक काळी लेदया कहीएछीए ते कृष्णादि पुद्गल द्रव्यना गुणने उपचार करीएछीए ए आत्मगुणे पुद्गल गुणनो उपचार जाणनो, इति गुणे गुणोपचार.
- ३ पर्याये पर्यायोपचार-अश्वहस्ति प्रमुख आत्मद्रव्यता असमान जातीय द्रव्यपर्याय तेने स्कंध कहेळे, आत्मपर्याय उपरे पुद्रक पर्याय जे स्कंध तेनो उपचार कहीए छीए ते पर्याये पर्यायोपचार.
- ४ द्रव्ये गुणोपचार—हुं गौरविर्णछुं एम बोलतां हुं एटले आत्म - द्रव्य अने गौरपणुं ते पुद्रलतुं उज्बलतापणुं, आत्मद्रव्यमां

गीररूप जे पुद्र छनो गुण तेनो उपचार कर्यो माटे द्रच्ये गु-

- द्रव्ये गुणोपचार—हुं गौरवर्णछुं एम वोलतां हुं ते आत्मद्रव्य
   अने देह तो पुद्गल द्रव्यनो सामान्य जातीय पर्याय जाणवो.
- ६ गुणेद्रव्योपचार-यया दृष्टांत ए गौर देखायछे, गौरतारूप पुद्गल गुण उपरे आत्मद्रव्यनो उपचार ते गुणे द्रव्योपचार.
- पर्यायद्रव्योपचार-देहने आत्मा कहेवो त्यां देहरूप पुद्गल
   पर्यायने विषे आत्मद्रंव्यनो उपचार कर्यो ए सातमो भेद जाणवो.
- ८ गुणेपर्यायोपचार-मितज्ञान ते पंचइदिय अने मनोजन्य छे माटे शरीरज कहीए अत्र मितज्ञानरूप आत्मगुणने विषे शरीररूप पुद्गल पर्यायनो उपचार कर्थो.
- ९ पर्यायगुणोपचार-शरीर ते मितज्ञानरूप गुणजछे अत्र शरीररूप पर्यायने विषे मितज्ञानरूप गुणनो उपचार करायछे, ए नवम भेद व्यवहारनये अनेकथा जीव व्यवहरायछे, निश्चय नये सर्व जीवनी सत्ता एक सरखीछे. सर्व वस्तुथी जीव व्यारोछे, अनादि कालयी आत्मानी अग्रुद्ध परिणितयोगे आत्मा कर्मादिकने ग्रहेछे, यथा मिद्रापानयी गुज्ञ मनुष्यनी गुद्धि फरी जायछे, तेमकर्मनायोगे आत्मा परस्वभावमां राच्यो माच्योछे, यदा उपयोगनी एकाग्रताए स्वध्यानमां आत्मा रमे तदा कर्मादिकनो नाज्ञ थायछे. जे रूद्धिने माटे जीव फांफां मारेछे, ते रूद्धि आत्मामां समायीछे. आत्मा पोतानुं स्वरूप जानवडे जाणेछे अने परद्व्यनुं स्वरूप पण जानवडे जाणेछे. आत्माना समान कोइ उत्तम वस्तु नथी, आत्मा आदेय, आर्रा राज्य पूज्यछे. आत्मानी ऋदि आत्मस्वरूपना ज्ञानथी माप्त राज्य पूज्यछे. आत्मानी ऋदि आत्मस्वरूपना ज्ञानथी माप्त थायछे. त्रण जगत्नो स्वामी आ मत्यक्ष देखाता शरीरमां रहेलो

आत्माछे, तेना करतां चमत्कारी वीजी कइ वस्तुछे? सुरमणि, कामकुंभ, कामधेतु पण आत्माना आगळ हीसावमां नथी. आत्मा तेज परमात्माछे. आत्मा ते निश्चयथी विचारतां पोतानो गुरुछे, स्याद्वाद रीते आत्मानी ओळखाण कोइ भाग्यवंत पुरुषने थायछे, आत्मानुं स्मरण करवुं. प्रवृत्ति मार्गमां प्रवृत्ति त्यां सुधी थायछे के ज्यां सुधी आत्मानुं ज्ञान तथा रमण नथी, आत्मानुं स्वरूप ज्यां सुधी जाण्युं नथी, त्यां सुधी प्रवर्धमान गुणठाणानी माप्ति थती नथी कहुंछे के-

आया सामाईअ आया सामाइयस्स अहै; वली कहुंछे के-

जे एगं जाणइ, से सब्वं जाणइ; जे सब्वं जाणइ, से एगं जाणइ ॥१॥

एको भावः सर्वथायेन हृष्टः सर्वेभावाः सर्वथातेन हृष्टाः सर्वेभावाः सर्वथायेन हृष्टाः एकोभावः सर्वथातेन हृष्टः २

यथातथ्य एक आत्मानुं स्वरूप जेणे जाण्युंजे, तेणे सर्व द्रव्यनुं स्वरूप जाण्युंछे. कारण के—ज्यां सुधी भव्यात्मा आत्मानुं स्वरूप जाणतो नथी तावत् अन्य द्रव्योनुं स्वरूप जाणी शकतो नथी, सर्व शास्त्रनी रचना पण आत्मज्ञान थकीछे. सर्व शास्त्रकारो आत्मानी स्तुति करेछे.

स्तोत्रम्-

अनंतदेवेश जगन्निवास, त्वमक्षरं त्वंपुरुषः पुराणः स्वमव्ययः शाश्वतधर्मगोप्ता, त्वमस्य विश्वस्य परंतिधानम्१ भावार्थ-हे आत्मा तुं अनंतछे, तारो कदी अंत नथी, तुं आत्मा देवतानो पण स्वामीछे—चतुर्दश रज्वात्मक लोकमां तारी स्थितिछे. तुं असंख्यात मदेशमयी छे, त्यारा मदेशो धरे तेम नथी. तारुं स्वरूप नाश पामवानुं नयी. माटे तुं अच्युत अने अक्षरछे, अनादि कालनो तुं आत्माछे, तुं अव्यय स्वरूपछे. सनातन शुद्धधर्ममय तुंछे, भव्या-त्माओने मोटामां मोढुं निधान तुंछे. तुंज परमेश्वरूपछे. आम पोते मुनिराज शरीरमां व्यापी रहेला आत्मानुं ध्यान करे.

" दोहा. "

नव तत्त्व षड् द्रव्यना, ज्ञाने छे उपयोगः अनंत ग्रणनी रूद्धिनो, कर्त्ता नित्यज्ञ भोगः ७४ भोगी निह परभावनो, आत्मस्वरुपे ध्यानः ध्यान निहं परभावनुं, देखे चरण निधानः ७५

भावार्थ-जीवतत्त्व, अजीवतत्त्व, पुण्यतत्त्व, पापतत्त्व, आश्रव, संवर, निर्जरा, वंध, ने मोक्ष ए नवतत्त्वनुं द्रव्य अने भावथी जेने ज्ञान थयुंछे, अने पड्द्रव्यनुं द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावथी ज्ञान जेने थयुंछे, ते ज्ञानी जाणवा नवतत्त्वनो पड्द्रव्यमां अंतर्भाव थायछे. पड्द्रव्य विना जगत्मां अन्य कोइ पदार्थ नथी, पड्द्रव्यमां पण एक आत्मद्रव्य पोतानुंछे. आत्मद्रव्यनी श्रद्धा थवी मुश्केलछे. कोइक तो आत्माने जल पंकजवत् सर्वथा अलिप्तमानी व्यवहार निश्चयनयना ज्ञान विना एकांत मिथ्यात स्वरूपे आत्मानुं ध्यान करता समिक्षत विना चतुर्गात्मक संसारना त्रिविध तापोने पुनः पुनः प्राप्त करी विवेक श्र्यताए प्रियलनी पेटें कृत्याकृत्यने नहीं गणता मोहनीयना उद्ये नरभवनी निष्कलताए संसारना चतुर्गितिलक्ष जीवयोनिना प्रवाहमां रोग गोकथी पीडाता चक्र खाता तणायछे, जेटला विद्वानो मख्यातवंन थया, थायछे, अने थशे ते सर्व ज्ञानना प्रताप थकी

'(८४) आस्मज्ञान सहस्रा.

अने ते ज्ञान आत्मद्रव्यमां रहां छे, दुनीयामां जैटलां शास्त्र ते आ-त्मामांथी नीकळ्यांछे. अभ्यासादिक ज्ञाननां साधनछे, अनंत गुणोनो भोक्ता आत्माछे, आत्मानी ऋद्धि सदाकाल आत्मामां रहीछे, आत्म ऋद्विनो कदापि नाश थनार नथी. निश्रयनयथी जोतां आत्मा परा-भावनो भोगी नथी. आत्मार्थी परभावनुं ध्यान निवारी स्वशुद्ध आत्मस्वरूपनुं ध्यान करे तो चरणनिधान देखे, क्रियाकांडथी भग-वदाज्ञा डोळघाळ कपटीओ अज्ञानी जीवने पोताना फंदमां फसावी धर्मना विश्वासमां फसावी पोते पण अज्ञानमां बुहे छे, अने अन्योने पण बुडाहे छे, सिंहना पराक्रमनो अभिमानथी प्रोतानामां आरोप करनारो शुंगाल क्यां सुधी कपट द्वित चलावी शके. आत्मज्ञान तेज धर्मछे, तेज आदेयछे, अधुना पंचविषना योगे आ भरत क्षेत्रमां कृष्ण पक्षीया जीवोनी वाहुल्यताएँ गीतार्थना, सद्गुरुना समागम तथा विश्वास विना अने भवाभिनंदीपणाना त्याग विना अशुभ व्यवहारना त्याग विना मुमुक्षुना योग्यगुणौ विना अज्ञानी जीवो ज्यां त्यां दृष्टिरागनी अंधताए विवेकनयनशुन्य थया छता डपर डपरथी धर्मनामे टीलां टपकां करता अने करभ विवाह मसंग रासभ प्रशंसाना आचरणमां पोतानी वाहवाहमां कृत कृत्यता सम-. जनार अज्ञानी जीवा सद्गुरुनी वाणी विषना प्याला समान लेखवी, कुगुरुनी वाणी अमृतना प्याला लेखवता, कुधारामां सुधारानी बुद्धि माननार, अस्थिर चित्तवाळा पामर प्राणीओ आध्यात्मिक शास्त्रोना क्कान विना अने देवगुरु धर्मनी श्रद्धा विना स्वच्छंदाचारीपणाने हीघे आत्मपशंसा अने परगुणापकर्षताए अज्ञानश्रद्धाए तत्त्व गम्या जाणे होयनी ? एम संसारमां पराभव प्रवृत्तिथी स्वआयुज्य र्ण करी टभवचिंतामणि रत्नसमान हारी नरकादिक गतिना

मेमान थइ आधि व्याधिनी दुःख श्रेणि परंप्राने पामेछे.

आत्मार्थि जीव स्वपरवस्तुनो विवेक करी हेयज्ञेय उपादेय स-मजी ग्रुणटाणानी परिणित समजी व्यवहार निश्चयनयनुं स्वरुप गुरु-गमद्वारा समजी वैराग्यनी तीक्ष्णताए सद्गुरु आज्ञाभिक्त विनययोगे सालंबन अने निरालंबन ध्याननी अभिलापाए अंतःकरण शुद्धि-पूर्वक स्पाद्वाद आत्मिक धर्मनुं आराधन करतो जल पंकजवत् वर्त-न चलावतो व्यवहारमां वर्तेछे, परभाव मट्टितमूलरागद्देषमहा मल्लेछेदक आत्मस्वभावपरिणितिमां वर्तता भव्यात्माओ ज्ञान ध्यानयोगे क्षयोपज्ञमभावे वा उपज्ञम भावे मोहनीय कर्मनो उच्छेद् करी समिक्ति पामी स्वल्पकालमां कर्मक्षय करी केवलज्ञानादि संपद्म पामी चउद्मुं गुणटाणुं आयुष्य मयीद्माए उल्लंघी सादि अ-नंति स्थिति पामी अनहद आनंददायक ज्ञान्यत शिवसुख स्वरूप मुक्तिधाम पामी ज्ञक्छे. समये समये जीव सात वा आठ कर्म वांचे छे, स्वभावमां रमे तो कर्मवंध टलेछे, माटे आत्मतन्वनी प्राप्ति अथें सद्गुरु वचनामृतनुं विनयभिक्तयोगे पान कर्रमुं एज हिताकांक्षा.

" दुहा. "

## अलंड अक्षय शाश्वतुं, देली आतम रूप; चित्ते चमक्यो आतमा, अरे हुं तो महा भूप.७६

भावार्थ-अखंड, अक्षय, शाश्वतस्वरुप पोतानुं पोते आत्मा देखी चित्तमां चमक्यो अर्थात् आश्चर्य पाम्यो, अने कहेवा छाग्यो के-अरे हुं तो महाभूपछुं, अग्नापि पर्यंत में पोताने अज्ञानी जाण्यो, हुं गरीव छुं एवी मने भ्रांति हनी पण हवे ए भ्रांति चाली गड़, हुं निर्धनछुं एम हुं पोताने मानतो हनो पण जाण्युं के-मारा आत्मामां अनंत धन रह्युंछे, तेनी संप्रति काले खबर पडी, चक्रवर्ति आहि राजाओंने हुं महाभूप तीरके स्वीकारतो हतो पण हवे आत्मानुं स्वरुप ओळखतां मालुम पडयुं के इंद्र, चंद्र, नागेंद्र करतां पण आ शरीरमां व्यापक आत्मा मदाभूपछे. एनी प्रभुताइने कोइ पामी शके तेम नथी. स्वी प्रत्रादिकपर जेटली ममता थाय छे तेटली जो आत्मा उपर ममता थाय अने तेनुं ध्यान करवामां चित्त लागे तो आत्मा परमात्मस्वरूपने पामे. बिहरात्मिसाधुओंने शिष्यो करवा उपर जेटली चाहनाछे तेटली जो आत्माना उपर चाहना थाय तो परमात्मपद अवश्य पामी शकाय. बाह्यवन तो मळेछे अने पापना उद्ये विणशी जायछे पण आत्मानुं अंतर्धन कहापि काले नाश पामी शकतुं नथी. दुनीयाना प्रवाहमां जे तणायछे ते आत्मक लक्ष्मी पामी शकता नथी—घणा भव कर्या, घणां शरीर छोड्यां, पौद्गिलक माया सर्व नाश पामी किंतु त्रणे कालमां आत्मा चेतन स्वभावेज वर्तेछे माटे आत्मा शाक्षतछे, वांचवा अगर कहेवा मात्रथी नहीं पण ते अनुभवगम्यछे.

" दुइा. <sup>"</sup>

## रझळ्यो हुं परदेशमां, लहियां दुःख अनंतः शुभ देखी निजदेशने, शान्त थयो शिवकंत. ७७

भावार्थ-पोताना आत्माना असंख्यात प्रदेश ते पोताना प्रदेश जाणवा अने पृथ्वीना जे देश ते पुद्गलास्तिकायले, पुद्गलास्तिकाय हव्य जडले, पृथ्वीना प्रदेशोने पोताना प्रदेश मानी प्रदेशमां रझळ्यो, श्रुधा पिपसाए ताडनतर्जन छेदनभेदन आदि आत्माए अनंत दुःखो सहन कर्यो, अने नाना प्रकारनां शरीरो धारण कर्यो पण दुःखनो अंत आव्यो नहीं, पण हवे सद्गुख्योगे आत्मानुं स्वरूप जाणतां पोतानो देश ओळख्यो अने आत्मा मुकिनो स्वामी शान्त

थयो, ध्यानथी आत्मा अने परमात्मानो मेद टळेछे. कहुंछे के-आत्मनोहि परमात्मानियो भूद्भेद बुद्धि कृत एव विवादः; ध्यानसंधि कृदमुंव्यपनीय द्रागभेदमनयोर्वितनोति.१

आत्मा अने परमात्मामां भेद बुद्धिनो विवाद अर्थात् तेमां पंडितना विवादरूप झघडा हता तेने ध्यानरूप संधि ध्यानी पुरुषे जलदीयी वेनुं अभेद्पणुं करी आप्युं, ध्यानमां आत्मा अने परमात्मानो अभेद थाय एटले ध्याननी सिद्धि जाणवी. ध्यानीने पौद्गलिक देश उपर क्यांथी ममता होय. भर-निंद्रामां शुन्यतानी पेठे ध्यानी पुरुष रागद्वेषशुन्य थायछे, खरुं सुख ध्यानी पुरुष जाणेछे, शब्दज्ञानियो भले व्याकरण न्यायना वाक्पंडितपणाथी इदंभवति इदं न भवति इत्यादिथी भोळा लोकोनी आगळ भ्रमजाल रचे. किंतु आत्मिक सुख मळतुं नथी, अने निरर्थक वाह्याचारनिंदकी थड् मनुष्य जन्म हारेछे, एवा शब्द ज्ञानीओने स्वदेशनी मत्रता थवी मुञ्केलछे, शब्दज्ञानियो खंडनमंड-ननी संकल्प जालमां पड़ी आत्मिकसुख प्राप्त करता नथी, अने तेमनुं परदेश पर्यटन वंध थवानुं नथी; वाह्य क्रियाकांडनी खटपटमां शब्द्ज्ञानीयो मतभेद चठावी परस्पर राग द्वेष करेछे, तेमनुं क-ल्याण मत कटाग्रहत्त्रथी थवुं दुर्लभछे. स्वदेश अने परदेशनुं ज्ञान नथी त्यां सुधी जीव मिथ्यात्वी जाणवो. आत्मतत्त्वतुं ज्ञान थाय त्यारे मनुष्य जन्म छेखे जाणवो, खरेखर आत्मज्ञ महाशयो आत्मा-नी तात्विक शांतताने पामेछे; उपर उपरनी इलद्रना रंग समान जे शांतना ते अंते टकी शकती नथी. केटलाक जीवो उपस्थी वगनी पेठे कपटहतियी जांत देम्बायछे, अने अंतर्मां कपट्यी भरेला होय छे, केटलाक जीवो उपस्थी देखतां शांत जगाता नधी अने अंतर्मा खरेखर जांत दोयछे, केटलाक जीवो उपस्थी पण जांत होयछे अने अंतर्मां पण शान्त होयछे, केटलाक अंतर्थी शांत होता नथी अने उपरथी पण शांत होता नथी. शांतावस्थानुं सुख आत्मज्ञानीयो पाम्या, पामेळे, अने पामशे.

<sup>44</sup> दुहा. <sup>37</sup>

परपुद्गलना देशने, मान्या मारा देश; तेनी ममताए करी, श्रहिया पुद्गल वेष. ७८ डाम डाम हुं भटिकयो, चार गति दुःख खाण; त्यां पण ममता देशनी, कीधी गुणनी हाण. ७९

भावार्थ-पौद्गलिक देशने पोताना मानी राग द्वेषथी कर्म ग्रहण करतो छतो विचित्र मकारनां शरीर धारण कर्या, नाना देहो धारण करी दुःखनी खाणभूत चार गतिमां ठेकाणे ठेकाणे चेतन भटक्यो, अने ज्यां ज्यां उत्पन्न थयो त्यां पण देशनी ममता धारण करी पोतानुं भान भूली आत्मगुणनो तिरोभाव कर्यो, आ मारुं घर, मारुं क्षेत्र, मारी पृथ्वी, आदिना अभिमानथी रुशिया जापाननी पेठे हजारी जीवोनो नाश थयो तेनुं कारण परपौद्गलिक देशनी ममताछे, अज्ञानी जीवो स्वदेशाभिमानमां एम. ए. छुधी भण्या होयछे तो पण अज्ञान पवाहमां तणाइ जायछे. पोतानो देश कयो छे-ते गुरुभक्तो निश्रयतः जाणी शक्छे. मन वाह्य विषयमां धावे छे, तावत जीव कर्मनी राशि अथुद्ध परिणामे ग्रहेछे, गुजरात, वंगालादि देशो माराछे अने हुं एनोछुं, आ राज्य मारुंछे अने हुं एनोछुं, आ कुटुंव मारुंछे, अने हुं एनोछुं, एवी बुद्धि यावत् थायछे तावत् जाणवुं के चेतन जडता अनुभवेछे, आत्मा अने परमात्म स्वरुपतुं ज्ञान थाय तेने ज्ञान कहेछे. अने आत्मा अने परमात्मानी ध्यानयांगे अनुयता थाय तेने विज्ञान

## उक्तश्र—

## अन्य शास्त्रेऽपि क्षेत्र क्षेत्र ज्ञयोर्ज्ञानं, तज्ज्ञानं ज्ञानमुच्यतेः विज्ञानं चोभयोरेक्यं, क्षेत्रज्ञ परमात्मनोः १

स्वकीय अज्ञानथी आत्मा भटकायछे, अने पोताना ज्ञानथी कर्म विम्रक्त आत्मा वने छे, आत्मानो उद्धार आत्माज करी शके छे, आत्मानुं उपादान कारण आत्माना गुणोछे, उपादाननी शुद्धि अर्थे भव्य जीवो निमित्त हेतु अवलंबी परमात्मपद पामे छे. अभव्य जीवोमां उपादान कारणनी शुद्धि थाय तथा मकारनो स्वभाव नथी. निमित्त कारण तो पामे छे, किंतु अभव्य जीवमां भव्य स्वभाव नथी, तेथी उपादान कारण शुद्ध थतुं नथी भगवद्गीताना छटा अध्याप्यना पांचमा श्लोकमां कहुं छे के-

श्लोक.

उद्धरेदात्मनात्मानं, नात्मानमवसादयेत्, आत्मैवह्यात्मनो वन्धु, रात्मैव रिपुरात्मनः १

आत्मा उद्धारवो पोते, आत्माने मारवो नहिः वंधु पोतेज पोनानो, पोतेज रिपु छे सहिः ?

आत्मा स्वशुद्धपरिणामयोगे पोते पोतानो उद्धार करेछे अधीत् परमान्मपद् पामेछे, ज्ञपुरुपो कहेछे के-आत्माने भव्यात्मा-ओए मारवो नहीं, पोताना आत्मानो घात करवो तेना समान पाप नथी, अध्यात्मगीतामां कृष्टुंछेके-

स्वग्रण रक्षणा तेह धर्म, स्वग्रण विध्वंसना ते अधर्म; भाव अध्यात्म अनुगत प्रवृत्ति, तेहथी होय संसार छित्ति.१ आत्माना अनंत गुणो कर्मयोगे हंकायाछे, तिरोभावे स्ताहे, तेनु रक्षण करवुं एटले ते अनंत गुणोने आविभीव करवा, कर्मशत्रुथी अवरावा देवा नहीं तेनुं नाम धर्मले, धर्मना चार भेदले, १
नामधर्म, २ स्थापनाधर्म, ३ द्रव्यधर्म, ४ भावधर्म, कोइनुं धर्म एवं
नाम आपवुं ते नामधर्म, कोइ पण वस्तुमां धर्मनो आरोप करवो ते
स्थापनाधर्म, धर्मना हेतुओनुं अवलंबन करवुं ते द्रव्यधर्म वा उपयोग शून्य जे धर्म ते द्रव्यधर्म जाणवो, आत्मानी उपयोगताए नयनिक्षेपा सप्तभंगीथी आत्मानुं अनेकान्त स्वरुप जाणी श्रद्धा करवी,
तेनुं रक्षण करवुं तेनुं नाम भाक्धर्म जाणवो.

ते भावधर्म आत्मामां रह्योछे, शुद्ध, सत्य, अखंड, अक्षयरुप भावधर्म अरुपीछे अने ते भव्य जीवोने माप्त यायछे, समिकतवंत जीवने भावधर्मनी प्राप्ति थायछे, भावधर्म विना सर्व क्रिया नि-ष्फल जाणवी.

द्रव्यथमेना वे भेदछे, छौिकक द्रव्यथमें वीजो छोकोत्तर द्रव्यथमें, छौिकक द्रव्य मिथ्यात्वतुं कारणछे, भावधमें सापेक्ष छोकोत्तर द्रव्यथमें परमात्मपद साधक निमित्त कारणछे, आत्मीयगुणोतुं रक्षण ते धर्म, अने आत्माना गुणोनो नाश करवो एटछे आत्माना गुणो तिरोभावे वर्ताय तेम रागद्वेषयोगे ज्ञानावरणीयादि कर्म ग्रहण कराय तेतुं नाम अधमें जाणवो, नाम अध्यात्म, स्थापना अध्यात्म, द्रव्य अध्यात्म अने भाव अध्यात्म ए चार ४ निक्षेपाए अध्यात्म जाणवुं. आग्रनां ३ त्रण अध्यात्म अनुपयोगी जाणवां, भाव अध्यात्म जाणवुं. आग्रनां ३ त्रण अध्यात्म अनुपयोगी जाणवां, भाव अध्यात्म श्रवि थाय तो तेथी संसारनो उच्छेद थायछे, माटे ज्ञानी पुरुषों कहे छे के आत्माने मारवो नहीं, आत्मानी जो अग्रद्ध परिणति थइ तो आत्माण आत्माने मारवो नहीं, आत्मानी जो अग्रद्ध परिणति थइ तो आत्माण आत्माने मार्यो कहेवायछे, आत्मा पोते पोतानो वंधुछे, एम कहेवाथी सिद्ध थयुं के पोतानुं भक्षं करवा पोते आत्मा समर्थ

छे, राग द्वेपने आत्मा जीते तो आत्मा वंधु समानछे, सगा सहोदर वंधुनी ममताथी आपणा पोताना आत्माने रागद्वेष लाग्याछेते द्र थता नथी, माटे वीजाने वंधु तरीके मानवा ए तो संसार व्यवहारनी कल्पनाछे, व्यवहारिक कार्योमां सहोदर वंधुनी जलरछे, किंतु आ-त्मा परमात्मस्वरूपमयथाय तेमां तो आत्माज पोते वंधुछे, त्यां अन्यन्नं कंधुं चालतुं नथी, रागद्वेपना मवाहमां आत्मा अगुद्ध परिणामथी वहेळे तो आत्मा पोते पोतानो शतुछे एय जाणवुं आत्मा परभाव त्यागी म्वभावमां रमे तो आत्मानो कोइ शतु नथी, आत्मा विना आत्मानो शतु अन्य कोइ व्यवहारथी कल्पना मात्र जाणवो. राग द्वेपे संसारमां राचवुं माचवुं, तथा आत्मानी अज्ञानताथी मिथ्यात्व परि-णतिए करी आत्माने परमात्मयद पामवामां आत्मा शतुभूतछे, यावत् जीव समिकित पाम्यो नथी अने मिथ्यात्व भावे रमी परने पोतानुं मानेछे तावत् तान्विक सुख पामी शक्तो नथी, माटे आत्मिक अ-संख्यात्ववदेशमां ध्यान देवुं.

<sup>(4</sup> दुहा• "

धर्माऽधर्माऽकाशना, प्रदेश हान न लेश; पुद्गलना जे देश छे, दे अज्ञानी क्लेश. ८०

धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकायना प्रदेशयी आत्मगुणोनी हानि छेशमात्र पण यती नथी, पग पुद्गल स्कंधो अज्ञानीने क्लेश आपेले

धम्मा धम्मा गासा तिन्निनि ए ए अणाइया। अपज्जवसियाचेन सन्वद्धं तु नियाहिया.

धर्म, अधर्म अने आकाश ए त्रग द्रव्य अनादिकालनांछे अने अनं छि १४ चडर्राजडोक व्यापि धर्मास्तिकायछे, अधर्मास्तिकाय पण चडद राजलोक न्यापीछे, आकाशास्तिकाय लोकालोक न्यापी छे. अग्रुद्ध परिगति योगे आत्मा पुद्गलास्तिकायना स्कंधोने ज्ञा-नावरणीयादि अष्टविधकर्पराशिरूप वनावी ग्रहण करी संसारमां परिभ्रमण करेछे.

आत्मा शुद्धस्वरूप जोतां अरूपीछे, छतां रूपी एवा कर्मथी आत्माना अनंत एणोतुं आच्छादन थायछे, आत्माना एकेक प्रदेशे अनंति कर्मवर्गणाओ छागीछे, किंतु आत्माना आठ रूचक प्रदेशे कोई कर्म छागतुं नथी ते आठ रूचक प्रदेश सिद्ध समान सदाकाल निर्मल अनादि कालनाछे, ए आठ रूचक प्रदेशे पण जो कर्म लागे तो जीवतुं जीवलपणुं चाल्युं जाय. रूचक प्रदेशनो एवो स्वभावछे के तेने कोई कर्म लागी शक नहीं, जेम जेम एकेंद्रियादिक भवतुं उछंघन करी उच्च गतिमां आवेछे तेम तेम तरतमयोगे सामान्यतः मितज्ञान श्रुतज्ञाननी प्राप्ति थाय छे.

शिष्यप्रश्न-आत्माना असंख्यात प्रदेशी शी रीते कहेवाय ? असं-ख्यात प्रदेश कहेवाथी आत्माना असंख्यात भाग थया त्यारे आत्माना खंड थया अने अखंड आत्मा कहेवाशे निहं माटे आत्माना असंख्यात प्रदेशो कहेवा ते शीरीते=

सद्गुर-आत्मा असंख्यातपदेश मळी कहेवायछे, असंख्यात प्रदेश कहेतां आत्माना असंख्याता भाग थइ शकता नथी. कारणके प्रदेशो एक एकथी जुदा पडता नथी, प्रदेशो वाळ्या वळता नथी, छेद्या छेदाता नथी, हण्या हणाता नथी. केवली केवली समुद्धात करे त्यारे आत्माना प्रदेशो लोक प्रमाण वि-स्तारेछे छतां पण प्रदेशो एकमेकनी साथे नित्य संबंधयी संबं-धितछे. तथी असंख्यात प्रदेशे मळी आत्मा कहेवामां कोइ जातनुं दूषण नथी आवतुं, आत्माना प्रदेशो अरूपीछे, तथी असंख्य मदेशात्मक आत्मा पण अरूपो कहेवाय छे. आत्माना खंड कोइनाथी पाडी शकाता नथी, अने कोइ काले खंड थता नथी. माटे अखंड आत्मा कहेवाय छे, असंख्यात मदेशो कल्पना मात्र नथी पण ते सत्य छे. कल्पना मात्र कहेवामां मत्यक्ष प्रमाण नथी, अनुमान प्रमाण नथी, उपमान प्रमाण पण नथी. अने आगम प्रमाणमां तो आप्तमुख्य श्री सर्वज्ञ वाक्य प्रमाण कहेवाय छे-श्री सर्वज्ञ भगवंते कशुं छे के-लोगागासतु छा अप्परसा माटे लोकाकाशना जेटला आत्माना पदेश हे एम सत्य श्रद्धा करवी.

- प्रश्न-कोइ एक गिरोलीनी पुंजडी कपाइ जइ त्यारे एक तरफ पुंजडी क्रेडे. उछलेले, अने एक तरफ घड उछलेले त्यारे जीव वेमां समजवों के एकमां?
- उत्तर-पुंडडी अने धडमां एम वेमां आत्माना असंख्य प्रदेशा होयाथी तेमां अपेक्षाए जीव कहेवाय छे. केटलाक प्रदेशो पुंछडीना भागमां रहेला होयछे तेथी ते हाले छे पग धडना भागमां ते सर्व प्रदेशो भली जायछे त्यारे पुंछडी हालती नथी. ते समये धडमां जीव कहेवाय छे ए उपस्थी सिद्ध थाय छे के आत्माना प्रदेशोथी एवो बनाव बने छे, स्क्ष्मबुद्धि अने गुरुगमयी आ दृशनत मनन करतुं. ज्ञानावरणीय कर्ष सर्व जीवने एक सरखं होय तो सर्व जीव एक सरखं होतं नथी माटे ज्ञानबाला होवा जोइए पग ज्ञान एक सरखं होतं नथी माटे ज्ञानबुं प्रतिवंधक ज्ञानावरणीय कर्म जीव जीव पत्थे भिन्न भिन्न नाना प्रकार हो हो पछे. तेथी तेना झ-योपश्रम भावे पत्थेक जीवन भिन्न भिन्न मकार हो ज्ञान वरणीय छे. उपाधि भेदे ज्ञानावरणीयक्री पंचित्र अहे, ज्ञानावरणीयार

अष्टकर्म आत्माना अष्ट गुणोनु आच्छादन करेछे. अष्टकर्मना नाशथी अष्ट गुणो आविर्मावे थायछे, यद्यपि जो के कर्म वलवान्छे तथापि आत्मा ज्ञानयोगे स्वस्वरूपमां रमे तो क्ष-णमां कर्ममो नाश करी शकायछे. भगवद्गीतामां पण कहुं छे के-अध्याय चोथो श्लोक ३७ मो.

यथैधांसि समिद्धाऽमि, भीरमसात् क्रुरतेऽर्जुन, ज्ञानामिः सर्वे कमाणि, भरमसात् क्रुरते तथा. ३७ निह ज्ञानेन सहशं, पवित्र मिह विद्यते, तत्स्वयं योग संसिद्धः कालेनात्मिन विंदति. ३८ अपिनेदसि पापेभ्यः, सर्वेभ्यः पापकृत्तमः सर्वज्ञानप्रवेनेव, वृजिनं संतरिष्यसि. ३७

भावार्थ-महामेरुना ओळंघनारने वालुका जेम लंध्ये छे, अपि हाष्ट्र संमूहने वाळी भस्म करेछे तेम ज्ञानरूप अपि सर्व कमीने कि भस्म करेछे आत्मानुं अनेकांतपणे यथातथ्य ज्ञान थाय तो हमेनो नाभ थायछे. परम पुरुषार्थ साधन ज्ञान समान कीइ नथी, एवित्रने पण ज्ञान पवित्र करेछे, माटे ज्ञान सहज्ञ अन्य कोइ पवित्र थी, ज्ञानी सर्व पापनो नाज्ञ करेछे, हुं आत्मा परमात्मा स्वरूप छं म स्वसत्ताने भन्यात्मा ध्यावेछे.

मोटामां मोटुं पाप करनारो तुं होइश तो पण हे अर्जुन तुं ज्ञान काथी सर्व पाप तरी जाइश एम कृष्ण कहे छे.

शिष्य-आ ठेकाणे तमो केम भगवद् गीतानो दाखड़ो आपोड़ो ? नैन-जैनधर्म एक देशी नथी पण सर्व देशीड़े, जैनोमां जेम ज्ञानतुं महात्स्य कथ्युंडे, तेम गीतामां पणडें ते जणाववा मादे साक्षी आंपीछे.अन्य शाखना श्लोकोने समिकती जीव अनेकान्तनयनी अपेसाए ग्रहण करी समिकित रूपे परिणमावेछे, एक शरीर त्यागी अन्य शरीर
धारण करवानु कारण कंइ पण होत्रं जोइए. ते कारण कर्मछे, अने
कर्म आत्माथी भिन्नछे, भिन्नछे त्यारे ते चैतन्य नयी, विपरीत जड
द्रन्य सिद्ध ठर्यु, माटे तेनो पुट्गलास्तिकाय द्रन्यमां अंतर्भाव थायछे.
लोहचुंवक पोतामां रहेली शक्तिवढे जेम संयने पोतानी भणी खें बेछे
तेम आत्मा अथुड परिणितयोगे स्वमायोग्य पुद्धलोने राग द्वेपयोगे
कर्मरूपे ग्रहण करेछे. अने कर्मथकी चार गितनां दुख जीव पामे
छे. नैश्चयिक थुड आत्मिक स्वरूप ध्यावे अने आत्म ने सर्वथकी
न्यारो माने अने परवस्तु उपरथी अहंममलभाव उठाडे तो
सिद्ध बुड परमात्म स्वरूपमय आत्मा थाय.

" दिही य

वर्ण पांच जेमां रह्या, गंध देश ज्यां खास; पांचे रसनी स्थाति ज्यां, स्पर्श आठनो वास-८१ एवा पर्यायो रह्या, तिह्रज पुद्गल द्रव्य; व्याखं लोकाकाशमां, कर्ता निह्न कोइ भव्य-८२ काल अनादिथी रह्यं, रहेशे काल अनंत; नित्यानित्यपणे सदा, रूपी द्रव्य कहंत-८३

भावार्थ-पांच वर्ण, वे गंध, पांच रस, अने आट स्पर्शस्य पर्यायों जेमां रहा छे, तेने पुद्गलद्रव्य कहे छे, ते लोकाकाशमां व्याप्युं छे, पण अलोकाकाशमां पुद्गलद्रव्य नथी, पुद्गलद्रव्य अन् नादिकालधी छे, अने अनंत काल गुधी रहेशे, द्रव्याधिक नथे पुद्-गलद्रव्य नित्य छे, अने पर्यायाधिक नये पुद्गलद्रव्य अनित्य छे, पुद्गल द्रव्य स्पी छे. " दुहा. "

घटपट वस्तु जे दिसे, ते सहु पुद्गल जाण। ते आतमथी भिन्न छे, शास्त्र वचन प्रमाणः पुद्गल देशे म्हालतां, मार्थो चेतन जायः तेमां ममता मानता, मरी मरी दुःख पाय-८५ पृथ्वी थइ निह कोयनी, कोटी करे उपाय; लक्ष उपायो लेखवे, नहि आकाश झलाय-८६ पुद्गल वस्तु कारमी, घर हाटां ने म्हेल; सोनुं रूपुं धन सहु, पुद्गलना छे खेल. 60 दृष्टा पुद्गलनो सदा, सुल दुःलनो जे जाणः वास वस्यो पुद्गल विषे, आतम ग्रणनी खाण-८८ पुद्गल जे देखाय छे, तेथी चेतन भिन्न; कर्त्ता चेतन कर्मनो, परपरिणति रस पीन ८९ आत्माऽसंख्य प्रदेश छे, प्रति प्रदेशे ज्ञानः अनंत जिनवर भाषियुं, छति पर्याये जान 90 विशेष सामान्ये करी, दो भेदे उपयोगः असंख्यात प्रदेशथी, वर्त्ते निजग्रण भोग. ९१ अस्ति धर्म अनंतनो, भोगी आतम राय; नास्ति धर्म अनंत त्यांय, समय समय वर्ताय ९२ उज्ज्वल आत्मप्रदेश छे, समता रस भंडार; तेनो कर्ता आतमा, शुद्धनये निर्धार. ९३वसतां तेह प्रदेशमां, रमतां समता संगः सुलसागरमां उछ्छे, ह्यीनंद तरंग. ९४ ममता पर परदेशनी, भागी जागी ज्योत; सहजे आत्म स्वरूपनो, थयो महा उद्योत-भिन्न जाति पुद्गल तणी, मारी तेथी भिन्न; भिन्न जातिशुं संग रयो, तेथी थइयो खिन्न. संग अनादि कालथी, तेने मानी मित्रः राग देषना योगथी, प्रहियां देह विचित्र. दुग्धनीरसंयोगवत्, आतम पुद्गल संगः थया अनादि कालथी, करतां कर्म कुढंग. तेथी अवळी परिणते, कर्त्ता कर्म कहाउ; सवळी परिणति योगथी, शुद्ध निरंजन थाउ. ९९ पुद्गल खाबुं पहेरबुं, पुद्गल वसति महेल; वास वसी तेमां सुधा, मानी सुखनी रहेल. १०० रमुं हवे शुं बाह्यमां, जेनी कूडी चाल; संगे तेनी माहरे, थवुं पडयुं वेहाल. १०१ मित्र निह ते माहरो, अवळो तास सहावः हाय हाय तस संगथी, बनिया एइ वनाव. १०२

भावार्थ-आ मत्यक्ष घट पट दंडादि वस्तु चक्षुपा विषय गोचर धायछे. ते पोद्गलिक वस्तु जाणती. अने ते आत्म द्रव्यथी भिन्नछे. एम श्री तीर्धकर महाराजा शास्त्रमां कथेछे.

पृथ्वी आदिक रूपे स्थित उपवन, गिरि, वसादि, गुनरात, पंजाब, इंग्लांड, युरोप, अमेरिकादि देशोमां मारापणानी बुद्धिथी राची माची तल्लीन बनी तेमां म्हालतां चेतन मार्ये जायछे, देश, यूह, धनादिक्तमां मारापणानी बुद्धि धःरतो मृत्यु पामी पुनः पुनः तद्गत वासना योगे जन्म धारण करी आधि व्याधि उपाधिनां दुःस्वी पामेछे. हे चेतन शुं तृष्णा जाळमां फसायछे ? स्वभावाभा-वरूप अज्ञानतमः राशिमां विवेक नयन शुन्यातमा अत्र तत्र ऐहिक सुखनी भ्रान्तिए भ्रमण करतो, मनोराज्यनी संकल्प विकल्प श्रे-णिए चढ्यो छतो धूम्र द्वन्द ग्रहण पुरुषवत् क्षणिक तुच्छ सर्वदा जड पृथ्वीने पोतानी मानी तद्थें सहस्रशः जीव घातक वनी शोफा-शुरुषवत् स्वमहत्वतामां अन्य भव्यात्माओने पर्वतारोहण पुरुष दृष्टिवत् छघु गणी पारमार्थिक तत्त्व शून्यात्मा क्षणिक तुच्छ स्वा-र्थमां राची परवस्तुमां ममतानो दृढ भाव संकल्पी रात्री दिवस तिछ-पीळक यंत्र द्वषभवत् असदाचरणोगां स्वकाल अज्ञानी पशुवत् नि-र्गमेछे, पोतानाथी अत्यंत भिन्न पृथ्वी कोइनी थइ नथी, अने थवानी नथी मारी मानवी ए केवल भ्रांतिछे, लक्ष उपायो करतां पण आकाश हायमां झाळी शकातुं नथी. तेम कोटि उपायो करतां पण पृथ्वी देश, घरवार पोतानां थवानां नथी, देश, घरने जीव मूकी परभवमां चाल्यो जाय छे, जे घर हाट म्हे व वंधावतां रक्षण करतां चेतने जरा पण शांति लीधी नहीं, ते घर हाट सूकी मरण समये जीव टगमग जोतो जीववानी सहस्रगः आशाओं करतो पण परभवमां चाल्यो जायछे, साथे कोइ पण वस्तु आवती नथी, ज्यां जे वस्तु हती ते त्यांने त्यां रही, अनंता भव कर्या पण कोई वंस्तु साथे आवी नहीं, तो आ भवमां तुं कइ वस्तु पोतानी साथे कंडू जइस ? हा अलवत कोइ पण वस्तु पोतांची साथे आवनार

नधी, पौद्गलिक वस्तु उपर शो राग अने द्वेप करनो ? केटलीक वस्तुओं पले के अने कंटलीक वस्तुओं नाश पापे छे, सगां संबंधी वर्गनी मीनि पण स्वार्थना लीधे क्षणिक छे. खरी वस्तु आत्मा छे, वाह्य पदार्थीमां मारापणानी बुद्धि थाय छे तेनो नाश यह अंतर आंत्मतत्त्वमां मारापणानी बुद्धि थाय ते परमात्मपद पामी शकाय. घर हाट महेल आदि पौद्गलिक वस्तु कारमी छे, सुवर्ण, रुपुं, मोती, हीरा आदि सहु धन जे कहेताय छे ते कार मुंछे, हे जीव तेमां तुं छुं ममना धारण करे छे ? जेनो संयोग तेनो अवश्य वियोग धवानो छे, पूर्वीक्त पुद्रलनो हृ छा अने सुख दुःखनो हाता आत्मा देहरूप पुद्रलमां वस्यो छे, अनंतगुणनो धणी आत्मा छे, पांच मकारना अरी-रथी आत्मा भिन्न छे, पर परिणितमां लीन थएलो चेतन व्यवहारथी कर्मनो कर्ता जाणवो.

आत्माना असंख्याता मदेशछे, मत्येक मदेशे अनंतु ज्ञान श्रां जिनवरे कछुंछे. भात्मामां अनंत धर्मनी अस्तिता रहीछे, तेमज आत्मामां अनंत धर्मनी नास्तिता रहीछे, अस्ति अने नास्ति धर्म समये समये आत्मामां वर्तेछे, सत्ताए संसारी जीवोना मदेश नि-मेळ सिद्ध समान जाणवा अने ते समता रसनो भंडारछे, शुद्धन यथी स्वज्ञानादिक गुणनो कर्त्ता आत्मा जाणवो.

आत्माना असंख्यात प्रदेशमां रमतां असंख्यपदेशक्य आत्मा पोते पोताना स्वरूपे स्थिर थनां अने शत्रु मित्रपर समपणुं ते रूप समता साथे रमां क्षणे झणे अनंत अनंतगणुं मुख यायछे, आत्म स्वरूपनो स्ववीर्यध्याने उद्योत थनां परपरदेशनी ममता नष्ट यइ अने बाण्युं के-पुर्गळनी जाति माराथी भिन्नछे, अने हुं तेथी भिन्नछुं, तो मारे पुर्गळ जानिथी शो लाभ ? अने तेनो संग केम करवो जोइए ? अरेरे हुं अनादि काळ्यी तेनी संगनियी खिन्न ययो. बळी पुद्गलने शत्रु तरीके छतां मित्र तरीके मानी राग द्वेपना योगे विचित्र देहो ग्रहण कर्यो.

हवे आत्मा अने पुद्गल स्वरूप कर्मनो परस्पर कोना जेवो संयोग थयो ते कहेछे=श्रीर नीरवत्=दुग्ध अने जळना संयोगनी पेटे.

जे देखायछे ते पुद्गलद्रव्य हे चेतन तारुं नथी अने तुं तेनो नथी तेम छतां तुं केम तेमां मारापणानी बुद्धि धारणकरछे, ज्यां सुधी चेतननी अवळी परिणतिछे त्यां सुधी संसार जाणवो, स-बळी परिणति थतां कर्मनो क्षय क्षणमां धायछे, अने आत्मा शुद्ध निरंजन परमात्मपद माप्ति करेछे.

पुद्गलतुं भोजन तरीके तथा पुद्गलतुं पाणी तरीके खान पान करबुं, तथा वस्न तरीके पहेरबुं, पण पुद्गल जाणबुं, स्थान, मा-सादरूप पुद्गलद्रव्य जाणबुं. फोगट आत्माए पुद्गलमां वसी सु-स्वनी सहेल भ्रांतिथी मानी.

हवे हुं पुद्गल द्रव्यमां केम राची माची रम्नं ? तेनी संगतिथी मारी खराव अवस्था थइ, मारा अनंत गुणोनो पुद्गलद्रव्य घा-तक्छे, माटे ते मारो भित्र नथी, कारण के मारा करतां तेनो अ-वळो स्वभावछे, मारो चेतना गुणछे तो तेनो जड गुणछे, अरेरे तेनी संगतिथी आ संसारमां परिश्रमण करतां विचित्र वनाव वन्याः

" दुहा. "

चार गतिना चोकमां, लख चोराशी बजार; त्यां बहु जन्म मरण करी, पाम्यां दुःख अपार १०३ पुद्गल संगे राग छे, पुद्गल संगे रोग; रुचि अरुचि पुद्गले, पुद्गलनो छे शोग, १०४

घर पुद्गलनी लालचे, लडाइ करता लोकः राजन साजन मोटका, जन्म गमावे फोक १०५ विरोधिनी मित्रता, करतां निज उण हाण; अज्ञानी मृहातमा, रणना रोझ समान-३०६ चुंथी पुद्गल एंडनें, रमतो तेनी संगः विष्टाना कीडापरे, धरतो कर्म कुढंग भ्रामित थइ भूली गयो, अविचल आत्मस्वरूपः अशुद्ध परिणतिथी अरे, पडियो भवजल कूप. १०८ चेत चेत ज्ञर आतमा, शुद्ध स्वरूप निहाल; आ संसार स्वरूप सहु, परगट माया जाल- १०९ अधुना भ्रान्ति छोडीने, देखो अंतर्हाष्टे, अंतर्हाष्टे देखतां, प्रगटे निजयण सृष्टिः तिरो भाव निजऋदिनो, आविर्भाव प्रकाशः परमातम पद ते कह्युं, ते पदनो हुं दास- १९१ ते पद जेणे ओळख्युं, तेमां जेनुं ध्यानः साधुपद तेणे प्रसुं, तेनुं शुध्धं ज्ञान. 383 तत्पद्ना उपयोग वण, चाले जे व्यवहार; घाणी वृषभ तणीपरे, मटे नहीं संसार-११३ राचो नव रस ज्ञानथी, काव्य करो को लाख: तत्पदना उपयोग वण, घी रेडो ज्युं राख- ११४

तर्क नरक गांत दीये, जने नाहे निज भानः शब्दशास्त्रथी भिन्नछे, आतमपद ग्रणवान् ११५ कथा पुराणी बहु करे, जन मन रंजे भाट, वाद वाघरी घेरछे, धर्म विना सहु वात ११६ क्रियाकांड निव मुक्ति दे, जो नाई आतमभान, आत्मापयोगी साधुने, धर्माक्रयाः ग्रणखाण ११७

भावार्थ-चतुर्गति संबंधी चतुराशिति लक्ष जीवयोनिमां आ प्रत्यक्ष<sup>्</sup>शरीरनिष्ठजीवे जन्म मरण करी अनंत दुःख पाम्यां.

पुद्गल ममता वा अरूचिथी जीवनी परिणित रागद्वेषम्य यइ जायछे, रूचि अरूचि पण पुद्गलना संबंधेछे, पुद्गल संबंधे शोक थायछे, देशधनादिक पुद्गलनी लालसाए दुनियाना जीवो सहस्रशः जी तिना प्राणनी आहुति युद्धाप्तिमां होमेछे. रूशिया, जापान, विगेरे युद्ध करेछे ते पग पुद्गलनी लालसाथी जाणती. म्हमद् गीजनीवत् तृषो पुद्गल लालसामां रक्त वनी शोका पुरूषवत् स्वमहत्वनी भ्रमणामां भूली तत्त्व विवेचन विवेकश्नय अंतःकरणवालाओ अजागल स्तनवत् स्वआयुष्यनी निष्कलता करेछे.

पुद्गल द्रव्य आत्मग्रग विरोधी छे, तेनी मित्रता करतां स्व-कीय गुणनी हानि थया विना रहेती नथी, पुद्गलथी पोताने भिन्न नहीं माननार अज्ञानी मृढात्मा रणना रोझ समान ज्ञान-शुन्य जाणवो.

आहार, पाणी आदि पुद्गलने अनंता जीवोए भोगन्युं तेज पुद्गलने आ जीव भक्षण करेके, अनंता सिद्ध भगवंतोए संसारा-वस्थामां अनंता भव करी पुद्गल स्कंधोने खाधा, पीधा, वळी तेज पुद्गल द्रव्यने अभव्यादि जीवोए पण पाताना भोगमां ग्रह्मा माटे पुद्गल सर्व जीवोनी वमन करेली ऐंठ जाणवी. ते ऐंठने हे जीव! तें अनंतिवार चूंथी, हाल पण चूंथेछे, भविष्यकाले पण कोण जाणे शुं धदो ? हनी तुं केम चेततो नथी, तारी अनंति ऋदि तारी पासेछे ते मृकीने तुं ऐंठ चुंथे ते तारी ओछी अज्ञानता! अरे जीव तुं जरा मात्र पण शरमातो नथी, शुं तने भिश्चकनी पेठें पुद्गल ऐंठ चुंथवाथी तृप्ति वळवानीछे ? ना कदी नहीं, जेटला पुद्गल ऐंठ चुंथेछ ते गमे तो इंद्र, चंद्र, नरेंद्रादिक हो। तो पण भिलारीना सरला जाणवा.

प्रश्न-हे सद्गुरु! त्रयोदश गुणस्थानवर्ति श्रीतिर्धिकर केवली पण

आहार पाणी ग्रहण करें छे तेथी ते पण शुं भिक्षुक जाणवा ? उत्तर-हे शिष्य-श्री त्रयोदश गुणस्थान वर्षि तीर्धकर महा जि मोहनीय, अंतराय, ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, ए चार ४ कर्मनो सर्वया भायिक भावे भ्रय कर्यों छे, वंदनीयादिक चार अगतीयां कर्म अवशेष रह्यां छे, श्रुधा लागवी, तृपा लागवी ए वंदनीयक नो विषयछे, मोहनीय कर्मना अभावे श्रुधा वेदनीयना उद्ये श्रुधा श्रांत्यर्थम् गृहभाटकवत् आहारादिक चुं ग्रहण करेछे, तेथी पुद्ग अंठ चुंथी कहेवाय नहीं, ममताभावे आहारादिक जे ग्रहण करेछे ते पुद्गल अंठ चुंथनारा जाणवा.

मुनिराजो के जे स्वस्वभावमां रमनारा अने परस्वभाक्ष्मा त्याग करनारा कदाग्रह त्याग करनारा शत्रु मित्र सम दर्शक अध्यात्मिनिष्ट चित्तवृत्तिवंतो पुद्गलने माटे धुधा तृपा शांतिने माटे आहार पानादि ग्रहण करेले, पण तेमां राचता नधी तेथी ते पुद्ग-गलनी अंठ चुंथनारा जाणवा नहीं, मेवा मिष्टात्र आदि भक्षण करतो नयी पण ते भक्षण करवानी जना मनमां लालसाळे, अने ते मिष्टान्नमां राचे माचेछे तेने पुद्रल अंट चुंथनार जाणवो.

वाह्य भी सी भोगववानुं पचल्खाण कर्युं छे, पण अंतरमां स्त्री भोगववानी लालसा वनी रही छे तो ते स्त्री भोगवनारज जाणबी. जो एम न मानीये तो घणा दोषो आवे.

- प्रश्न-कोइ वहुचराजीनो फातडो (पुरुष पण खीनो वेष पहेरनार) छे ते ही कायाए करी भोगवतो नथी तो शुं ते ब्रह्मचारी कहेवाय के नहीं ?
- उत्तर-जो फातडाना मनमां श्ली भोगववानी इच्छा वनी रही छेतो ते व्यभिचारी जाणवो. कारण के रागथी कर्म बंधाय छे, ते राग तो मनमां श्ली उपर वनी रह्यो छे माटे ऋजुसूत्र नयना मते व्यभिचारी जाणवो.
- प्रश्न-कोइ ठेकाणे एम कहुं छे के-मन जाय तो जाणे दो, मत जाने दो शरीरः विन चढावी कामठी, क्युं लगेगा तीर. १ आ उपरथी सिद्ध थायछे के मन कदापि आहुं अवछं जाय तो हरकत नथी किंतु शरीर जवा देशो नहीं, कारण के शरी-रथी कर्म वंधायछे, माटे शरीरथी ब्रह्मचर्य पाले तो शुं ब्रह्म-चर्य कहेवाय नहीं ?
- उत्तर-ए कथननो सार ए छे के पनमां कदापि स्त्री भोगववानी इच्छा थइ पण हे भव्य शरीरथी स्त्री भोगवीश नहीं, कारण के तथी एक तो कर्मवंध, ताडन तर्जन, निंदा, अवहेळनादि विशेष दोषो पाप्त घशे, ते जणाववाने माटे अने वळी जाणबं के-मनयोगनी साथे काययोग भळे तो विशेष कर्मवंध थाय, तथी एम शिक्षा वाक्य लख्युंछे.
- प्रश्न-कोइ माणसे मनमा एम चिंतव्युं के मारे विष खाबुं अने अन्य मनुष्ये विष भक्षण कर्युं, ए वे मध्ये कोने वधारे हानि

थाय ? तथा एक पतुष्ये−कायाए करी लाख मनुष्य मार्थी अने एक मनुष्ये मनमां चिंतवना करी लाख मनुष्य मार्यी. तेमां विशेश दोष कोने लागे ?

उत्तर-कायाए करी विष भक्षकने विशेष हानि थाय कारण के ते मनीयोगथी चिंतनपूर्वक विष भक्षण करेछे, अने तेथी ते मृत्यु पाये के. मनीयोगथी नेटली हानि थती नथी माटे प्रायः थोडो दोष जाणवो. कायाए लक्ष मनुष्य मारनारनी साथे मनीयोग भळेलोछे, तेथी विशेष दोष लागे तथा फक्तमनमां चिंतवनाथी लक्ष मनुष्य मारनारने तेना करतां थोडो दोष लागे. प्रसम्बद्ध राजपिए मनमां युद्ध करवाथी घणां कर्म ज्याज्यी तेथी कर्मवंघमां पननी ग्रुष्यता जाणवी, मननायोगे अन्यमद्वित्त थायछे, मनमां विकल्प संकल्प थाय नहीं तेने माटे ध्याननी अन्त्यता छे, घणां कर्म ध्यान करवाथी नष्ट याय छे.

श्री यशोविजयजी उपाध्यायजी कहे छे के

### श्लोक

यत्र गच्छति परं परिपाकं, पाकशासनपदं तृणकल्पं ॥ स्वत्रकाशसुखवोधमयं तद्,ध्यानमेव भव नाशि भजध्वं १

शावार्थ—ज्यां ध्याननी परिषक्तता थएछते मुनिराज इन्द्रनी पर्वीने पण तृण बका वरोवर आणे, गणे, माटे पेताना आत्माना स्वस्पनुं मकाशक एवा ध्य नथी दुःखनी अनित टळे छे, अनुभ-षयी भासे छेके-ध्यानिता आत्मिकमुखनो अनुभव यती नथी, केवल मुखनुं निधान छे, तथा ध्यानधी आत्मानुं शुद्ध ज्ञान मगटे, माटे हे भव्यात्माओ! मुनिवरो! तमीए वाह्य उपाधिने स्वागीछे तो रागदेषमोहादिक अंतर उपाधियी भरपूर एवो जे चार

गतिरूप संसार तेनो नाश करनार जे ध्यान तेने सेवो, तेनो आहर करो, तेना उपर राग धरो. अने ध्यानवंत पुरुषोनी संगति करो के जेथी मित श्रुतज्ञाननी स्फूर्ति थाय जे ध्यानतुं अवलंबन करतां मसन्नचंद्र राजिष कर्मग्रंथी छेदी मोक्षे गया ते ध्यानतुं अवलंबन करवाथी मनुष्य जन्मनी साफल्यता जाणवी.

श्लोक.

आतुरैरपि जडैरपि साक्षात्, स्रत्यजाहि विषयाननुरागः ध्यानवांस्तु परमद्यनिदशीं, तृप्तिमाप्य नतम्च्छित भूयः २

भावार्थ-कामातुर अने जह पुरुषोवहे पण कारण पामी पंत्रेदियना विषयो त्यनायछे. जेमके-कोइने स्त्री भोगववीछे पण केदखानामांछे, तेथी सुखे विषय त्यागे. कोइ रोगी द्वाखावाना
प्रसंगे चरी पाळेछे, तेथी ज्ञाकादिकनो सुखे त्याग करेछे, पण
ते विषयनो कारणीभूत जे राग तेनो नाश थतो नथी. राग दशा
त्यागवी दुर्घटछे. किंतु ध्यानवंत पुरुष तो मात्र परमात्म स्वरूपने
देखनारछे तेथी ते ध्यानमां तृप्ति मानी पुद्रल वस्तुने न्यारी गणी
आत्म स्वरूपमां मन्न थयो छतो अत्यंत आनंद भोगवेछे, तेवीध्यान
दशा पामी फरीथी विषयनुं मूल कारण रागदशाने वांछते। नथी,
कारणके ध्यानीने विषयमां थती जे सुखनी श्रांति ते टळीछे तेथी
राग थाय नहीं.

श्लोक.

यानिशा सकलभूतगणानां, ध्यानिनो दिनमहोत्सव सएषः। यत्र जात्रति च तेऽभिनिविष्टा, ध्यानिनो भवति तत्र सुष्टीसः सर्व प्राणीने निद्रामां जे रात्रि जायछे, ते रात्रि ध्यानद्शावंत ध्रुनिने दिवसना महोत्सवरूपछे, अहो ध्यानिनी केटली उत्तमना तेतुं सुख अतुपमछे. अने संसारी जीव विषयमां लीन थइ जे वेलाए जागेछे ते वेला ध्यानवाला मुनिराजने शयनरूपछे, एमां केटलो भेटले ते विचारवो.

#### श्लोक.

# वध्यते न हि कषायसमुत्यैर्मानसैर्नततभूपनमद्भिः अत्यनिष्टविषयैरपि दुःषे ध्यीनवान् निभृतमात्मनिलीनः १

भावार्थ-ध्यानवान् पुरुष ंरागद्देषरूप क्षाय जनित मनधी वंधातो नथी. ध्यानीने नृपतितित आवी नमस्कार करे नोपण तेनुं चित्त होळातुं नयी, अर्थात् तेना मननी स्थिरता पूर्वना जेवी वनी रहेछे. अत्यंत अनिष्ट विषयना दुःखे पणनिश्रळपणुं छोडे नहीं तेने आत्मामां लीन जाणवी.

#### श्लोक.

# स्पष्टदृष्टसुलसंभृतिमष्टं, ध्यानमस्तु शिवशर्मगरिष्ठं । नास्तिकस्तु निहतो यादेन,स्यादेवमादि नयवाङ्मयदंडात्

मावार्थ-स्पष्टदुष्टसुखे भर्यु एवं इष्ट ध्यान ते मोक्षना सुल करतां पण अधिकछे, पण ज्यांसुधी शास्त्रना दंड धकी नास्तिक भावने अतिशयपणे हण्यो नथी त्यां सुधी नथी, पण नास्तिक भावे गहिन जे ज्ञान ते मोढुंछे.

#### श्लोक.

ज्ञातेषात्मिन नोभूयो ज्ञातव्यमवशिष्यते । अज्ञानंपुनरेतस्मिन् ज्ञानमन्यन्निरर्थकम् ॥१॥ जेने आत्माने जाण्यो तेने पुनः किंचित् अन्य जाणवानुं रहुं नथी, अने यावत् आत्माने जाण्यो नथी तावत् अन्य सर्व जाण्युं निरथक छे.

श्लोक.

नवानामिप तत्त्वानां, ज्ञानमात्मप्रसिद्धयेः येनाजीवादयो भावाः स्वभेदप्रतियोगिनः १

नवतत्त्वतुं ज्ञान पग आत्मज्ञान मगट करवाने माटेके, कारण के अजीवादिक जे भाव ते पण आत्मज्ञानवडे शमायके.

श्लोक.

एक एविह तत्रात्मा, स्वभाव समविस्थतः।
ज्ञानदर्शनचारित्र, लक्षणप्रतिपादितः
प्रभा नैर्मल्यशक्तीनां, यथा रत्नान्नभिन्नताः
ज्ञानदर्शनचारित्र, लक्षणानां तथात्मनः
अत्मनो लक्षणानां च, व्यवहारो हि भिन्नता।
पष्ठवादिव्यपदेशेन, मन्यते न तु निश्चयः
घटस्यरूपमित्यत्र, यथा भेदो विकल्पजः।
आत्मनश्च ग्रणानां च, तथा भेदो न तास्विकः ४

त्यां आत्मा एक पोते स्वस्वभावपणे रह्योछे, ते आत्मा ज्ञान, दर्शन, चारित्ररूप लक्षणे करी युक्तछे.

रत्ननी कांति अने निर्मलता शक्ति कंइ रत्न थकी भिन्न नथी तेम ज्ञान, दर्शन, चारित्र लक्षणथी आत्मा भिन्न नथी. आत्मा अने आत्मानुं लक्षण ए वे व्यवहारे जुदाछे ते पष्टी विभक्तिना व्यपदे-इत्थी मनायछे किंतु निश्चयथी नहीं.

जेम घट अने घटनुं रूप तेनो भेद विकल्प मात्रछे ते प्रमाणे आत्मा अने आत्माना गुणोनो भेद नाचिक नथी। श्लोक.

वस्तुतस्तु गुणानां तद्रूपं न स्वात्मनः पृथक् आत्मास्यादन्यथानात्मा, ज्ञानाद्यपि जडं भवेत्॥

भावार्थ-वस्तुतः जोतां गुणोतुं अने आत्मातुं रूप जुदुं नधी यदि भिन्न कथीए तो आत्मा ते अनात्मा थाय ज्ञानादिक पण जह धाय. श्लोक.

मन्यते व्यवहारस्तु, भूतग्रामादिभेदतः।

जन्मादेश्व व्यवस्थातो, मिथो नानात्वमात्मनां १ न चैतनिश्चये युक्तं, भृतग्रामो यतोऽिषलः नामकर्मप्रकृतिजः स्वभावोनात्मनः पुनः

जन्मावस्था वाल, गुत्रान, रुह, स्त्री, पुरुष, नपुंसक आहि भेट्यी आत्माओतुं विचित्रपणुं व्यवहारनयवाळो मानेछे, पण ए बात निश्चयनये जोतां युक्त नथी अर्थात् सत्य नथी, ते नय एन कहे हे के-जीवने सर्व अवध्या नामकर्मना स्वमावयी प्रगटेडे पण ने

आत्मानो स्वभाव नधी. श्लोक. जन्मादिकोपिनियतः परिणामो हि कर्मणाः

न च कर्मकृतो भेदः स्यादात्मन्यविकारिणि

( 110 )

निश्चयनयथी जोतां जन्म जरा मरणादिक परिणाम ते आ-त्मानो नथी पण ते कर्मनो परिणामछे माटे अविकारी आत्माने विषे कर्मनो वास्तविक संबंध नथी.

यथा तैमिरकश्चंद्र, मध्येकं मन्यते द्विधाः

अतिश्चयकृतोन्माद स्तथात्मानमनेकधा

भावार्थ-जेम तिमिर राग वाळा एक चंद्रने वे तरीके मानेछे तेम निश्चयनयना ज्ञान विनानो उन्मादक प्राणी आत्माने अनेक प्रकारे मानेछे

श्लोक.

व्यवहारविमूदस्तु, हेतूंतानेव मन्यते । बाह्यकियारतस्त्वान्त स्तत्वं गूढं न पश्यति

भावार्थ-व्यवहारनयमां रक्त विमुद्दातमा परपर्यायने पोताना फलहेतु माने छे माटे जे तुं मन वाह्य क्रियामां रक्त छे तेवा प्राणी ग्रुप्त तक्तने देखी शकता नथी.

श्लोक.

अज्ञानी तपसा जन्म, कोटिभिः कर्मयन्नयेत् । अन्तं ज्ञानतपो युक्तं, तत्क्षणेनैव संहरेत् ॥

ज्ञानिवना एककोटि भवसुधी अज्ञानी जेटलां तप करे है तपमां जेटला कर्मनो क्षय न थाय तेटला कर्मीने एक क्षणमां ज्ञान

श्लोक.

सहित तपश्चर्याए खपावे.

तद्भ्यानं सा स्तुतिर्भक्तिः सैवोक्ता परमात्मनः । युण्यपाप विहीनस्य, यदूपस्यानुचितनं ॥

## शरीर्रेष्ट्रपलावण्यं, वप्रछत्रध्वजादिभिः । वर्णितैवीतरागस्य, वास्तवीनोपवर्णनाः ॥

पुण्यपापरिहत परमात्माना स्वरूपनुं चिंतवन करबुं तेने ध्यान कहेबुं अने स्तुति तथा भक्ति पण तेज जाणवी.

पण शरीरना वर्ण लावण्य-वम, छत्र ध्वजाओधी परमात्माओने करी परमात्माने वखाणवा एवी जे स्तृति ते वस्तुतः वास्तविक स्तृति मधी.

श्लोफ.

व्यवहार स्तुतिः सेयं वीतरागात्मवर्तिनाः । ज्ञानादीनां ग्रणानां तु, वर्णना निश्चयस्तुतिः ॥ पुरादिवर्णनात् राज, स्तुतिः स्यादुपचारतः । तत्त्वतः शौर्यगांभीर्थ्य धैर्थादि ग्रणवर्णनात् ॥

श्री तीर्थकरना श्रीरादिकनुं वर्णन करवुं एवी जे स्तुति ते व्यवहारे जाणवी. अर्थात् ते व्यवहार स्तुति जाणवी. पण वीतराम परमात्माना झानादिक गुण मशंसवा अने ते गुणो पोताना आत्मा-मां सत्ताए रहाछे एम जाणी तेनुं ध्यान करवुं. तेज खरी स्तुति छे परमात्म स्वरूप हुं छुं, एम सतत हृद्ध निश्चयथी चिंतवबुं ते निश्चय स्तुति जाणवी.

जेम देश नगरादिकना वर्णनथी राजने वखाणेले। ते उपचारे स्तुति जाणवी अने राजानुं वल गांभीयर्थ धेर्य्यादिक गुणोनुं वर्णन ने निश्रय स्तुति जाणवी.

श्लोक.

पुण्य पाप विनिर्मुक्तं तत्त्वतस्त्वविकल्पकं । नित्यं त्रह्म सदा ध्येयमेषा शुद्धनयस्थितिः ॥ पुण्य पाप रहित अने तस्वथी जोतां निर्विकरप एवे। शायत आत्मा ध्यान करवा योग्यछे. भव्यात्माओए तेनुं ध्यान करवुं एवी शुद्धनयनी स्थिति जाणवी. ए ध्यानथी घातिकर्पनो पण सहजमां क्षय थायछे.

्र आत्मध्यानीने क्रोधादिक शत्रुओ उपद्रव करी शकता नथी, अदेखाइ पण थती नथी. आ स्थळे क्रोधादिकनुं वर्णन करेछे.

## क्रोधादिकनुं स्वरूप.

अत्माना गुणोनो घातक क्रोधरूप चंडालछे, क्रोधरूपि अपि हृद्यने वालेखे. तथा शरीरने तपावेछे. वळी क्रोधयी चित्रनी नि-र्मलता नाश पामेछे अने मन शान्त वहु वखते थायछे. कोइ महा-त्माने कोई शिष्ये पक्ष कर्युं के हे पूज्य, हुं क्रोधधी क्यारे मुक्त थाउं ? त्यारे पत्युत्तरमां जणाव्युं के समताने आदरे त्यारे. क्रोधरूप अप्रि धर्मद्वसने वाळी भस्म करेछे, मुमुक्षुए धैर्य धारण करी उपजता क्रोधने सहनशीलताथी जीतवो. जे मनुष्यना हद्यमां क्रोधरूप अग्नि रहेछे ते अपवित्र जाणवो. मनुष्य ते गंगाना जलमां स्नान करे तो पण क्रोधदोष गया विना पवित्र थतो नथी. मनुष्य ज्यारे अन्यना उपर क्रोधायमान थायछे त्यारे कर्म क्रोध करनारना उपर कोंधायमान थायछे, क्रोधरूप चंडाळ छिद्र जोइने हदयमां प्रवेश करेछे, कोइ वखत तो तेनुं एटछं जोर थायछे के ते क्रोधना उदये मनुष्य घणा जीवोने भारी नांखेछे. क्रोध चुद्धिनो शत्रुछे. स-मतासागरमां क्रोध वडवानल समानछे, क्रोधरूपी अप्रि हदयमां भगट थायछे त्यारे तेनो धूमाडो शरीरमां प्रसरेछे. क्रोधनुं कारण परस्वभाव रमण जाणद्यं. परवस्तुमांथी मारापगानी दुद्धि टळी आ-त्मस्वरूपमां जेतुं मन लीन थयुंछे तेवा महात्माओना हदयमां क्रोध-रूप अग्निवास करतो नयी. कारण के तेमना हृदयमां समतारूप

परमारमङ्शेन. गा नदी सटा वहा करेछे. त्यां मजीनता रही शकती नथी.आहार, ह्म, स्थान, धन, अवमानथी क्रोध उत्पन्न थायछे, आहारादिक उपर ममता थवायी तेनुं कोइ हरण करे तो क्रोध उत्पन्न थायछे. मीति ज्यां होय त्यां पण क्रोध करवाथी थायछे. वैर क्रोधने क्षमाथी जीतायछे. अदेखाइ संतोपयी जीतायछे. क्षमाथी क्रोधहप अग्नि शान्त थायछे.

यतः श्लोकः क्षमा नाथः क्षमा तातः क्षमा माता क्षमा सुहृत्। क्षमा लयश्च लक्ष्मीश्च, क्षमा शोमा क्षमा शुमं. क्षमा श्ठाघा क्षमाचारः, क्षमा कीर्तिः क्षमा यशः क्षमा सत्यं च शोचं च, क्षमा तेजः क्षमा रितः क्षमा श्रेयः क्षमा पूजा, क्षमा पथ्यं क्षमा हितं । क्षमा दानं पवित्रं च, क्षमा मांगल्यमुत्तमं. 3 क्षमा तुल्यं तपो नास्ति, न संतोपात् परं सुखं । न मेत्री सदृशं दानं, नास्ति धर्मो द्यासमः 8 कामकोधसमेतः सन् किमरण्ये करिष्याते । अथवा निर्जितावेती किमरण्ये करिष्यसि. सकपायस्य चित्तस्य, कपायैः किंप्रयोजनं । अथवा निष्कपायत्वं, कपायैः किंप्रयोजनं. किमरण्येरदांतस्य, अदान्तस्य किमःश्रमेः । यत्र यत्र वसेद्ांतः, तद्रण्यं स आश्रमः

4

६

# कमा खड्गं करे यस्य, दुर्जनः किं करिष्यतिः अतृणे पतितो वन्हिः स्वयमेवोपशाम्यति

क्षमा एज भव्यात्माओनो नाथ जाणवो, माता पिता मित्र समान पण क्षमा जाणवी. क्षमा एज मोटी शोभाछे. क्षमा एज कीर्चिं जाणवी. कारण के जेनामां क्षमा नधी अने क्रोधे करी धमधमाय-मान सदा रहेके. तेनी कीर्त्तिं जगमां थती नथी. क्षमाथी कीर्त्ति उत्पन्न थायछे. क्षमा तेज सत्य जाणवुं. क्रोधीमां सत्य क्यांथी होय. क्षमा एज मोटी पवित्रताछे. क्षमा विना स्नान पण छेखे नथी. दान पण छेखे नथी. क्षमा रहीत साधु होय तो ते नामनो साधु जाणवो, ज्यां क्षमा नथी त्यां गंभीरता रहेती नथी. क्षमा एज मोडं तेजछे, मुखकारक आनंदमदा पण क्षमाछे, जे क्रोधी होय ते आ-नंद क्यांथी पामे ? क्रोधीना अनेक वैरियो दुनीयामां होयछे तेथी क्रोधीने निरांते उंघ पण आवती नथी. वळी क्रोधी मनुष्यनो कोइ मित्र पण होतो नथी. कारण के ज्यां त्यां क्रोधयी तेना उपर अशीत जलनी दृष्टि यया करेछे, क्षमा कल्याणकारीछे, जे मनुष्यमां क्षमा नथी ते पोताना तथा परना आत्मानो घातक वनेछे. क्षमा मोटी पूजाछे. कर्मरूप रोगथी रहीत थवा माटे क्षमा पथ्यछे. क्षमा एज मोड़ं हितछे. क्षमा ए मोडुं दानछे. जेनामां क्षमाछे ते पोताना आ-त्माने ज्ञान दर्शन चारित्र गुणोनुं दान आपेछे. क्षमा तुल्य अन्य कोइ तप नथी. क्रगड ऋषिए क्षमारूप तपथी आत्महितनी सिद्धि करी. श्री वीरभगवाने क्षमावडे अनेक उपसर्गी सहन कर्या, श्री मेतार्यमुनिए क्षमायी आत्महित साध्युं श्री स्कंधकसूरिना शिष्योने घाणीमां घाली पील्या पण तेमणे क्षमाथी कर्म शत्रुनो पराजय करी. आत्मिक लक्ष्मी माप्त करीः समरादित्य केवळीए साधु अवस्थामां क्षमाए करी घोर उपसर्ग सहन कर्या. क्षमाधारक अनेक मुनिवरोए

परमातमपद माप्त कर्यु भविष्यत् काले पण करहो, अंतरमां क्रोधरूप अप्नि सळगी रह्यों अने वाह्यथी छठ अहम विगेरे करे तोपण आत्महित यतुं नथी. क्रोध नरकतुं वारणुंले. क्रोध फणीधर सर्प समानले ते क्षमारूप नागद्मनी औषधीथी वश थायले. क्षमाना समान तप नथी, संतोष समान सुख नथी. द्या समान धर्म नथी.

काम अने क्रोध सहीत जे माणीछे ते जंगलमां जोगी धइ वास करशे तो पण शुं धयुं ? अलवत कंइ नहीं. अथवा जेणे काम क्रोध जीत्याछे ते अरण्यमां जइ शुं करशे ? अलवत कंइ नहीं. काम क्रोधनों तें जय कर्षोछे तो तुं अरण्यमां जइ शुं करीज ? जेनुं चित्त काम क्रोधादिक कषाय सहीतछे तो तेने कषायलां वस्न पहेरवावडे करीशुं ? अथवा जो चित्तमां काम क्रोधादिक कथा-यनी उत्पत्ति नधी तो तेवा पुरुषने कथायलां वस्न पहेरवाथी शुं ? अर्थात कंइ नहीं.

जेणे इंद्रियो दमी नयी तेने अरण्य थकी शुं ? तथा अदांतने आश्रमोवडे करी शुं ? अर्थात् कंड नहीं. जेने इंद्रियीने जीतीछे एवो दान्त पुरुप जे ठेकाणे वसे ते अरण्य तथा आश्रम जाणवुं, माटे भव्यात्माओ क्षमा धारण करो. क्षमा रूप खह्ग जेना हाधमांछे तेने दुर्जुन शुं करशे ? अर्थात् कंइ नहीं, तृग विनानी जगाए पडेलो अंगारो पोतानी मेळे शान्त थइ जायछे, तेम आपणा उपर अत्य पुरुषे कोध कर्यो पण आपणे कोध करीशुं नहीं अने क्षमा राखीशुं तो अन्य पुरुषे आपणा उपर वरसावेलो क्रोध पोतानी मेळे शान्त धशे.

श्लोक.

कोधान्धाः पश्य निव्नंति पितरं मातरं ग्रहम् । सहदं सोदरं दारा नात्मानमपि निर्धृणाः ॥ १ ॥ हे भव्य देख कोधान्ध जीवो पिता माता अने गुरुनो पण' नाश करेछे तेमज मित्र सहोदर श्ली तथा पोताना आत्मानो पण निष्ठुर पुरुषो क्रोधवशे घात करेछे. माटे क्रोधने त्यागी क्षमा धा-रण करवी, भव्य पाणी क्षमा धारण करी सामायक समभाव स्वरूप करे आत्मा अने आत्माना गुणो ज्ञान दर्शन चारित्रादिकनुं स्वरूप मनमां विचारे—

यतः श्लोक.

नचात्मनः पृथक्ज्ञाना, दि त्रयं विद्यते कतित्। ज्ञानादि त्रयं मेवात्मा, नास्य कापि परा भिदा ॥१॥ आत्मानमात्मना वेत्ति, योहत्यागाद्य आत्मनि । तदेव तस्य चारित्रं । तज्ज्ञानं तच्च दर्शनम् ॥१॥ आत्माथी पृथक् ज्ञानादित्रिक नथी, ज्ञानादित्रिक स्वरूप आत्मा छे, व्यवहारथी तेनो भेद जाणवो.

श्री हरिभद्रसूरियोगनदीपमां सामायिकतुं लक्षण कहेळे. श्लोक.

अतीतं च भविष्यं च यन्न शोचित मानसं ।
तत् सामायिक मित्याहु, निर्वातस्थानदीपवत् १
निस्संगं यन्निराकारं, निराभासं निराश्रयं ।
पुण्यपापविनिर्मुक्तं, मनः सामायिकं स्मृतं ॥२॥
गते शोको न यस्यास्ति नैव हर्षः समागते ।
शन्नु मित्र समं चित्तं, सामायिक मिहोदितं ॥३॥
भावार्थ-अतीतकालमां जे थइ गयुं, आपणा संवंधी वा परसंवंधी तेनो विकल्प संकल्प करे नहीं, वा अतीतकाल संवंधी कोइ

वात याद करे नहीं. सारांश के अतीतकाल संबंधी शोक करे नहीं. तेम भविष्यकाल संवंधो स्व अने पर आश्रयी विकल्प संकल्प करी शोक करे नहीं. विकल्प संकल्प रहीत आत्मानी स्वउपयोगे अव-स्थीति-तेने सामायिक कहेछे कोनी पेठे ते दर्शावेछे, वायु रहीत दीवानी ज्योतिनी पेठे दीवाने वायु लागतां ज्योति चंचल थायछे, तेम आत्मामां पण विकल्प संकल्प थतां आत्मा चंचल थइ परस्व-भावमां पढेछे. माटे एकाग्रचित्ते स्थिरपणे एक आत्मस्वरूपमां उप-योग राखवो ते सामायिक जाणवुं मनमां कोइ पण वस्तु चिंतववी नहीं, मननी साथे कोइ पण वस्तुनो संग थाय नहीं. अर्थात् मन अन्य वस्तुना संगथी रहीत होय, कोइपण वस्तुनो आकार मनमां चिंतववो नहीं, मनमां कोइ पण वस्तुनो आभास रहे नहीं. कोइपण वस्तुना आश्रय रहीत मन निराश्रित होय, मन पुण्य अने पापना व्यापार रहीत होय, मनने आत्म स्वरूपमां लीन करी देवुं, जेम भरउंघमां कोइ पण वस्तुना व्यापार रहीत वाह्यथी देखतां ज-णायछे, तेम भरउंचनी पेठे पस्वस्तुने भूली अखंड निर्मल आत्म स्वरूपमां आत्म स्वभावे जागवुं, अने परस्वभावनी चिंतवना करवी नहीं अने तेने सामायिक कहे छे.

गतकाल, गतअवस्था, गतवम्तु आदिने विषे मनमां शोक थाय नहीं, अने आवतो काल, आवनार भावीकाले वस्तुना इष्ट संयोग तेनो मनमां हर्ष थाय नहीं, अने शत्रु तथा मित्र उपर समचित्त होय एवी जे आत्मानी अवस्था तेने सामायिक कहेछे. आ उपरना भण श्लोको कथाकोष ग्रंथमां कहाछे. जे भन्यात्माओने क्षमाविष्ठ तथा समपणे सामायक वर्तेले तेमने कोषादिक शत्रुओ पराभव करी शकता नथी.

भव्यात्माए मुक्तिपद्नी चाह्ना राखनां अदेखाइना नाश फ

रवो जोइए. अदेखाइ रूप नागण हृद्यमां पेसतां आत्माना गुणो हणायके. परना गुणो सांभळी तथा परजीवनी कीर्ति सांभळी पाणी विचारे छे के-हाय, हाय ते माराथी वधारे वखणायछे लोकोमां तेने वधारे मान मळेछे, एनी जो भूल काई वा एना उपर कंइ कलंक चढे तो ठीक थाय एम पाप विचार करी लोकोनी आगल निंदा करे. खोटां कलंको चढाववां. ए सर्व अदेखाइनुं फलछे. नागण कदापि कोइने करडे तो सारी पण अदेखाइरूप नागिणी जे पाणीने इसेछे तेनुं आ भवमां तथा परभवमां पण खराव थायछे, अदेखाइ ज्यां सुधी हृदयमांछे त्यां सुधी आत्मज्ञान थतुं नथी. वकील वकीलनी साये अदेखाइ, साधु साधुनी साये अदेखाइ, वेपारी वेपारीनी अदेखाइ, शोक शोकने अदेखाइ पायः रहेवानो संभवछे, माटे आत्मार्थी पाणी मनमां विचारे के-सर्व प्राणी, पोतानां कर्पयोगे ज्ञाता वा अञ्चाता भोगवेछे. कोइनी कीर्चि थाय तेमां मारे शा कारणथी अदेखाइ करवी ? जेवां कर्म ते प्रमाणे यश वा अपयश थया करेछे, तेमां मारे शुं ? यश वा अपयश, मान वा अपमान ए कंइ आत्मिक वस्तु नथी हुं आत्मा तेनाथी भिन्नछुं, हुं कर्मयोगे कोइ वावत राजी थयो ते वावत याचकोए कीर्त्ति गाइ, पण तेमां ज्ञां कंइ नथी. वळी कोइ भवमां अपमान पण घणां थयां हशे पण तेमां नुं हाल कंइ नथी. जे पोतानी वस्तु नथी तेमां अहंगाव संकल्पी केम रति अरति करवी जोइए, कहुंछे के-

कविहक काजी कविहक पाजी, कविहक हुआ अपभ्राजी, कविहक जगमें कीर्त्ति गाजी, सब पुद्गलकी वाजी, आप स्व०१

धवलशेठ श्रीश्रीपालनी अदेखाइयी अंते मरण पाम्या अने दुर्गितमां गया. धवलशेठे अदेखाइयी शुं शुं कृत्य कर्षुं नथी, दुनी-यामां अदेखाइ करनारनी पडती थया विना रहेती नथी. अदेखा- इथी निंदा कपट हिंसा, असत्यादि दोपो उत्पन्न थायछे, विशेषे छं कहेन्नं ? आत्मार्थी पुरुषे अदेखाइनो नाश करवो. तेनो नाश करवा संत पुरुषोनी संगति करवी.

जे पुरुपने मानद्शा होयछे ते मानी कहेवायछे, मानी पुरुप कृत्य अकृत्यने विचारतो नथी, तथा तेने जरा पण शान्ति मळती नथी अने ते विद्या धन पामी शक्तो नथी, लघुताथी प्रभुता थाय माटे लघुता भावी माननो नाश करवो. रावण दुर्योधनादि पुरुपोए मानथी दुःखराशि ग्रहण करी. गमे तो राजा होय. करोडाधिपति होय तोपण मान दशा ज्यारे छूटे त्यारे कल्याण थायछे, वाहुवल मुनिवरने मान केवलज्ञानमां विद्यकारक थयो. अने ज्यारे मान दशा छोडी त्यारे केवलज्ञान उत्पन्न थयुं श्री यशोविजयजी उपाध्याय मान नामना पाप स्थानकनी सङ्गायमां कहेछे के— विनयश्रुत तपशील त्रिगुणहणे सवे,माने ते ज्ञाननो भंजक होय भवोभवे; छंपक छेक विवेक नयणनो मानछे, एहने छंडे तास न दुःख रहे पछे.

इलादि विचारी भव्य पुरूषोए मानद्शा त्यागी आत्मस्वरूप-मां आयुष्य गाळबं. मायास्त्र रूप कथाकोश ग्रंये आ ममाणे छे. माया परित्याग महो विधाय, सदार्जवं साधुजना विधत्ते यथैहिका मुष्मिक कामितानां, सिर्फिभेवेदः परमार्थशुद्धा यतः श्लोकः

दंपती पितरः पुत्राः सौदय्याः सहदो निजाः । ईशा भृत्यास्तथान्येऽपि माययाऽन्योऽन्य वंचकाः ॥१॥ सर्वे जिम्हं मृत्युपद मार्जवं ब्रह्मणः पदं । एतावान् ज्ञान विषयः प्रलापः किं करिष्यति, ॥२॥

समग्र विद्या वैदुष्येऽ, विगतासु कलासुच । धन्यानामुपजायेत । बालकानामिवार्जवं 11311 अज्ञानामपि बालानां, आर्जवं प्रीतिहेतवे । किं पुनः सर्व शास्त्रार्थ परिनिष्ठित चेतसां. 11811 श्रुताब्धि पारमाप्रोपि । गौतमो गणभृद्धरः अहो शैक इवाश्रोषीत आर्जवाद्गगवद्गिरः الإاا अशेषमापि दुःकर्म रुज्वा लोचनया किपेत्। क्रिटलालोचनां कुर्वन् अल्पीयोपि विवर्धयेत् ॥६॥ काये वचिस चित्तेच समंतात् क्रिटेलात्मनां । न मोक्तः किं तु मोक्तः स्यात् सर्वत्रा कुटिलात्मनां ७ तपः किया ज्ञान विचक्तणा अपि। कौटिल्यमेकं न परित्यजंतः॥ दुर्योनि दुःखानि लभांति ते नराः। साध्वी यथा वीरमतीति नाम्नी.

अहो आ जगत्मां जे खरेखरा गुणोथी साधुजनोछे ते कप-टना त्याग करी सरलताने धारण करेछे, आ भव अने परभव संवंधी इच्छित कार्योनी सिद्धि सरलताथी थायछे. अने परमार्थथी विचारतां धर्मनो अधिकारी पण निष्कपटी भव्यात्माछे. स्त्रीओ पि-ताओ, पुत्रो, मित्रो सहोदरो, स्वामीसेवक आदि मायावडे परस्पर वंचक जाणवा. मृत्युने देनार (मृत्युपद) कपट जाणवुं. सरलता व्रह्मनुं स्थान आत्माने हितकारकछे. - समग्रविद्याएकरी विद्वान होय अने सर्वकछानो वेत्ता होय तोपण कपटनो त्याग थवो मुञ्केछछे. धन्यछे एवा पुरूपोने के नानां भोळां वाळकोनी पेठे सरछनाने धारण करेछे.

जेने तत्त्वनुं ज्ञान नथी एवा वालकोनी सरलता पण प्रीति माटे थायछे तो जे सर्व शास्त्रार्थना पारंगामीछे, एवा पंडितोनी सरलता आत्माने विशेष हिनकारी धाय तेमां थुं कहेबुं ?

श्रुतज्ञाननो दिरयो एवा गौतम गणधरे पण सरहताथी भग-वाननी वाणी सांभळी अहो केवी आश्चर्यता ?

सरलपणे आलोचना करवाथी चणां कर्मने पाणी खपावेछे, कुटिलताथी आलोचना करनो अलप पापी होय तो पण पाणी पापने वधारेछे, जेनी कायामां मनमां वचनमां कुटिलताछे, एवा जीवो उत्कृष्ट तप नपे, आकरी क्रिया करे, वैराग्यरंगमां झील्या होय एवा देखाय तोपण तेनो आत्या कर्परहीत धर मोक्षपट पामता नथी, मायाए रहीत जीवोनो मोल थायछे एमां संदेह नथी. विचित्र प्रका-रनां तप अने विचित्र प्रकारनी धर्म संबंधी क्रिया अने ज्ञानमां विचक्षण एवा पुरूषो पण एक समग्रदुःखमूलभ्ना कुटिलताने सेवता दुर्योनिमां उपजी विचित्र पकारनां भयंकर दुःखोना भागी थायछे. जेम वीरमती नामनी साध्वी कुटिलताथी दुःख पामी तेम कपटी पुरुषो पण धर्म विषयमां कुटिलता करी चतुर्गतिरूप संसा-रमां परिश्लमण करेछे, माटे आत्माधि पुरुषोए मने करी वचने ' करी तथा कायाए करी कृष्टिलतानो त्याग करवो, निष्कपर्ये मनु-प्यने धर्म परिणमेछे. उडायीराजानो घातक वाद्यथी साधु अने अत्यंत विनयवंत एवो विनयरन इटिलतायी मरी नरकमां गयो, तेम तेनी पेठे जे धर्माचारमां बावशी जुटां आचरण अने मनमां जुर्द् एम करते ते धर्मरत्न पामी शकते नहीं, अने दुःखना

भागी थरो. भावधर्मनी प्राप्ति कोइ विरला जीवोने थायछे. द्रव्य धर्म तो कपटी पण आदरेछे, आत्मज्ञानी समिकती जीवने भावध-मेनी प्राप्ति थायछे, सारांश के मायानो त्याग करशे ते परमात्मपद पामवाने योग्य थशे. श्रीयशोविजयजी उपाध्याय कहेछे के-

श्लोक.

दंभेन व्रतमास्थायः यो वांछति परंपदं । लोइनावं समारुह्य, सोऽब्धेः पारंयियासति 11811 केश लोचधरा शय्या, भिक्षा ब्रह्मबतादिकं । दंभेन दुष्यते सर्वं, त्रासेनैव महामणिः 11211 सुत्यजं हुरस लांपट्यं, सुत्यजं देह भूषणं । सुंदांजाः कामभोगाद्या, दुस्टाजं दंभसेवनम् 3 स्वदोष निन्हवो लोक, प्रजास्यात् गौरवं तथा। इयुतैव कदर्थ्यते, दंभेन व्रत बालिशाः 8 अहो मोहस्य माहातम्यं, दीक्षा भागवतीमापि । दंभेन यद् विछुंपंति, कज्जलेनेव रूपकं आत्मोत्कर्षात् ततोदंभात्, परेषां चापवादतः। बध्नाति कठिनं कर्म, बाधकं योग जन्मनः

कपटहत्तियी पंचमहात्रत ग्रही जे जीवो परमपदने वांछे छे, ते जीवो लोहनी नावमां वेसी समुद्रनो पार पामता इच्छता होय तेम जाणवा.

केशनुं छंचन करबुं साधुने सहेल छे, सूर्यसामी दृष्टि राखी आतापना लेबी सहेल्छे, पृथ्वीने विषे शयन करबुं, लज्जानो त्याग, गृहे गृहे भिक्षा मागवी, काम विकारने जीती ब्रह्मचर्य पान्छ अदि सर्व सहेलछे किंतु साधुने कपटनो त्याग करवो मुश्केन्छ छे. सर्व ब्रत, तप क्रियादि कपटयी दुधित थायछे. जेम सुंदर निर्मल मणिने डायलागवाथी तेनी कांति मंद थायछे तेनी पेठे अत्र समज्र .

रसतुं लोलपीपणुं सुखे त्यागी शकाय, देह भूपम पण त्यामी शकाय. कामभोगादिने पग सुखे त्यागी शकाय. पग कपटनो त्याग करवो घगो विकटछे. जेम जेम विद्वत्ता दृद्धि पामे तेम तेम आत्म उपयोगी श्रुत्य मुनि काटमां पोतानी विद्यानी उपयोग करे छे क्रवटमाव त्यागवाथी सुख थायछे, कोइ माणी मान पूजानी लालचे उपाधी वाह्य चारित्र शुद्ध पाले, पंचेंसिमितिनी वाह्यधी खंबे करे, त्रम गुप्तिनो वाद्यथी सिंही रीते खप करे. उपस्थी एनो वैराग्य जगावे के छोको तेना उपर फीदा फीदा थई जाय पग अंतरमां आत्मानो उपयोग होय नहीं अने अभ्यंतर निर्मेल परि-णाम न होय पोताना गच्छनो मतनो पक्ष सबल करवानी ला-लसा वनी रही होय, आत्मा अने परमात्मानुं स्वरूप शुं छे ? तेनो तो विचार पण करे नहीं, व्याख्यान वाणीयी हजारी जीवोने रं-जन फरे, वोलवानी कळा एवी होय के जेयी विचारा मुग्ध जी-वोने वश करी दृष्टी रागीया करे, एवो साधु कपटवृत्तिधी परमात्म स्वरुप पामी शकतो नधी. ज्यारे साधुनी पुग आबी स्थीति छे तो अल्पह संसारना खाडामां पतिन श्रावकवर्गनो भाग्ये कप-टनो त्याग करी शके. कपट रुप काळो नाग जे भव्यना हृद्यमां पर निंदा, स्त्रमहत्वता, परापकर्पभ्य फणीवडे करी सहीत वसनो होय ते माणी दुःखनी परंपराने पापेछे. अल्पत पुरुषो कपटीयोना फपटने पारखी शकता नथी, ने मुनि वाब क्षणिक मान पूना की-र्तिनी लालचे श्रावक आगळ ठीकठाक आचरण देखाडी रंजन

करे ते श्रावकनी आगळ एवं वोलेके ते भद्रिक महामुनि तेमने जाणे पण पातानामां कंइ होय नहीं.

श्री चिदानंदजी महाराज कहे छे के-कथनी कथे सहु कोइ, रहेणी अति दुर्लभ होइ: जव रहेणीका घर पावे, तव कहेणी छेखे आवे.' १'

निष्कपटी अने कपटी साधुओनी परीक्षा करवी दुर्घटछे, महा बुद्धिना धणी एवा अभयकुमार सरखा कपटी वेदया श्राविकातुं 'कपट जाणी शक्या नहीं, तो वारुजीवोर्तुं शुं कहेबुं ? जेने मान पूजा कीर्तिनी लालच गइछे एवा पुरूषोने धन्यछे, विवेकी सुज्ञ पुरुप इंसनी पेठे कपटी अने निष्कपटी साधुओनी परीक्षा करी देखे, कपटी एम धारेखे के हुं अन्यने छेतरुं छुं पण कपटथी तेना आत्माने कर्म छेतरी पोताने वश करेछे ते जाणी शकतो नथी. आखी दुनीयामां कपटजाळ मोह राजाए पाथरीछे तेमां मनुष्या-ंदिक रूप माछलां विचारां अंतर्ना अज्ञाने सपडायछे. अने विविध दुःख पामेछे, जेने खरेखरं निज आत्मानुं ज्ञान थायछे ते कपट-जाळने छेदी नाखेछे, निष्कपटी पुरुषोनी वाणीमां द्विधाभाव रहेतो नथी, निष्कपटी मनुष्य जेवुं होय तेवुं कहेके. कपटीनी ष्टित्ति काक सदद्याळे. पोताना दोपने गोपवनार लोक पोतानुं गौरव मान पूजा जेम थाय तेम दंभथी आचरण करेछे, अहो केटली अ-्ज्ञानता ? जेनो अंते त्याग करवानोछे तेनामां मुंझावुं ए वाङजी-वोतुं लक्षणछे. पाणी मनमां परमार्थवुद्धिथी विचारे तो कपट करवानुं कंइ कारण नथी. एम विश्वास थाय. गुरुमहाराजने पण कपटी शिष्यनो विश्वास आवतो नथी. ज्ञानी गुरुराजनी पासे जड कोइ प्राणी कपटथी पृच्छा करे तो ते तुरत जाणी लेके. अने तेथी पृच्छकने अयोग्य जाणी मौन धारेछे, कपटी एवं जाणीने कपट

करेछे के, हुं युक्ति रचुं छुं, हुं कळा करूं छुं, हुं वो छुंछुं, ते अन्य कोइ जाणतुं नथी. पण याद राख के मथम तो कपटने जॉलनार तारा शरीरमां रहेछो तारो आत्माछे. वी छुं सिद्ध भगवंत हाने करी तारुं कपट जाणी रहा छुं, को नाधी छा छुं तारुं कपटछे. हे मूर्व जीव! तुं चार घडीना चांदरणानी पेठे आ दुनीयामां धोडो काछ रही परभवमां चाल्यो जनारछे, तारा शरीरनी खाख थइ जशे, हाडकांना चुरेच्रा थइ जशे. करेछां कर्म परभवमां भोगववां पड़िशे. तुं तारी मेळे विचार तो तारा आत्मा न्यायाधीशनी पेठे न्याय करी आपशे, कपट विनानी तारी केटली जींदगी गइ? तेनो विचार कर—तारुं कपट कदापि तुं अत्र छा छुं राष्टीश पण परभवमां केम छूटीश ? राजा, राणा, शेठ, गरीव आदि सर्व कपट करशे तो ते ते छुं फल भोगवशे. पोताना आत्माने छुछुद्धि-धी मक्ष करो के हे आत्मा तने कपट मियछे ? स्यारे आत्मा तरफ्थी विचार थशे के कपट कर छुं ते महापाय छे.

अहो मोहराजानुं भाहात्म्य तो जुओं के माणी श्री तीर्थक रोक्त भागवती दीक्षाने पण काजळें करी चित्रामणनो जेम छोप थाय तेम कपटे करी छोपी नाखेळे.

पोताना आत्मानी वडाइ करे, घणुं कपटं धरे अने पारका अवर्णवाद वोले तेथी माणी कटीन कर्म वांधेछे, तेवा पुरुषो योगीना जन्मने वाध करनाराछे. ते शुद्ध चारित्र पामी शके नहीं. श्री यशोविजयजी उपाध्यायजी "माया" विषे कहे छे के—

नममास उपवासीया सुणो संताजी । शीत लीए कृश अन्न गुणवंताजी ॥ गर्भ अनंता पामशे सुणो संताजी । आरम्यते पूरियतुं, लोभगतों यथा यथा। तथा तथा महचित्रं, मुहरेषो विवर्धते १३ लोभस्यको यदि तदा, तपोभिरफलैरलं लोभस्त्यक्तोनचेत्तर्हि, तपोभिरफलैरलं 88 लोभमूलानि पापानि, रसमूलानि व्याधयः

स्तेहमूलानि दुःखानि, त्रीणित्यत्त्का सुखीभव े १५

सर्व दोषतुं स्थान छोभछे, गुणनो ग्रास करवाने छोभ राक्षस समान छे. व्यसनरुप वल्ली कंद्रभूत लोभ जाणवी एम सर्वार्थनो वाधक लोभ जाणवो. निर्धन सो रुपीयाने इच्छे, अने सो रुपीया मळे हजारनी इच्छा, अने हजारनो अधिपति थये लाखनी इच्छा थाय. लक्षमळे करोडनी इच्छा थाय कोटी वर तृप रुद्धि चाहे, राजा चक्रवर्तिनी पदवी इच्छे अने चंकवर्ती देवतानी ऋदि चाहे छे. देवताने इंद्रनी पदवानो लोभ रहे छे. एम मूलमां लघु अने अंते दृद्धिने पामनार लोभ शरावनी पेठे जाणवो.

पापनं मूळ हिंसा अने कर्मनं मूळ जेम मिथ्यात्व, अने रोगोन विषे जेम राजरोग ( क्षयरोग ) सर्व रोगनुं मूळछे. तेम लोभ सर्व पापनो गुरु छे. अहो लोभतुं साम्राज्यतो जुओ, पृथ्वीने विषे एक छत्र लोभनुं राज्यले, दक्षो पण निधानने पामी मूळीए करी संताडेले. द्रव्यना लोभमां द्वीन्द्रियादि जीवो पण सपडायाछे पूर्व भवना

निधान उपर मूच्छावडे अधिरोहण करे छे.

सर्प, उंदर, गिरोली प्रमुख पण धनना लोभमां पूर्व भवनी

मूर्छीना योगे फसायछे. अने निधानना उपर वास करेछे. भूत पेत पिशाच यक्षादिक पण धनना अधिष्टाता तरीके रहे छे, अहो लोभनी केवी सत्ताके देवताओं सरखा पण धनादिकनी मूर्छीए नीच योनिमां अवतरेछे. मोटा मोटा मुनिवरो के जे उपशा- न्तमोह गुणटाणे कोघादिकने झीती चढ्याछे तो पण तेमने लोभ धको देइ पाडी नाखेळे.

लोभधी राजाओ ठाकोरो विगेर गामनी सीमोनी तकरारमां हरसाल क्षेत्र करी वैर धारण करी लढी मरेछे, जुओ प्रत्यक्ष रुशीया अने जापान देश लोभना कारण माटे मोटी मोटी हाल लडाइओ करी अने तेमां लाखो जीवोनो संहार धयो.

लोभरूपी खाडाने पूरवा माटे जेम जेम प्रयत्न करीये छीए तेम तेम दृद्धि पामेछे. अहो केंबुं आश्चर्य ?

लोभ त्याग्यों तो तपवडे पण क्षुं ? अर्थात् लोभना नाशधी तप तपवानी कंइ जरुर नथी अने कदापि जो लोभ हदयमां छे तो तपश्चयावडे करीने शुं ? अर्थात् कंइ नहीं. लोभ मूळ भूत पाप कृत्य जाणवां, रसमूळ भूत व्याधियों जाणवी. स्नेह मूल दुःखों जाणवां, एटले स्नेहथी सर्व दुःखों उत्पन्न थायछे, माटे हे माणी ए त्रण वस्तुओंनो त्याग करी तुं मुखी था.

लोभधी कपट थाय लोभधी जोवहिंसा थाय, लोभधी असत्य वचन वोलवुं पढ़े, लोभधी चोरी करवानुं पन थाय. लोभधी कृत्य अकृत्यनुं भान रहे नहीं। लोभधी लज्जा दूर रहे, लोभधी धर्मनाश पामे, लोभधी विवेकनो नाश थां छे. लोभी पुरुपने मुखे निंद्रा पण आवती नधी, लोभी पुरुप गरज बखतेगधेडाने पण वाप कहें छे. लो-भी पुरुप सटा पारकुं खाब चाहे छे, लोभी पुरुप मानापिताने पण छेतरे छे, लोभी पुरुप साधु पुरुपनुं पण अपमान करे छे, मम्मण शेठ जेवा लोभी पुरुपो परभवमां पण मुख पामी अकता नधी, आ दुनीयामां लोभी पुरुप गुं शुं कृत्य करी शकता नथी। लोभी पुरुप धनने माटे अन्यनो घान करे छे ते नुं परण इच्छे छे, जुओ लोभ बशे धवल शेठ श्री श्रीवाळ राजाने मारवा माटे गया, पण खोटे ने पड़े

ेतेनी पेठे पोते मरण पाम्या अरे दुर्गतिमां गया. लोभथकी सागर शेठ सम्रद्रमां बुढी मरण पाम्या. लोभथी पुत्र पोताना पि-तानो राज्यने माटे घात करेछे, करावेछे, वांछे, लोभी पुरुषनी पासे लाखो रुपैया होय तो पण सुखे उंघी सकता नथी, लोभी पुरुष पापकर्मथी जरा मात्र पण हरतो नथी. साधुओने वस्त्र पात्र शि-ष्यादिकनो लोभ होय छे. ज्ञांनी पासे तेमांनुं कंइ नथी. ज्ञानी वस्त्र पात्रादिक राखे छे छतां ते उपर मोह राखतो नथी. झानी मनमां एम विचारे छे के हुं कइ वस्तुनो होभ करुं. जे वस्तुनो लोभ थाय छे ते वस्तुक्षणीकछे अने मारी नथी, राज्य धन, कुदुंब, पुत्र, पुत्रीओ, घर, हाट, वस्त, विगेरे वस्तुओ आत्मानी नथी अने आत्मानी साथे आवनार पण नथी. फक्त अज्ञानताए जीव परव-स्तुने पोतानी मानी तेना लोभमां विचित्र दुःखो पामेछे. मरी गया वाद सर्व वस्तुओ ज्यां हशे त्यांनी त्यां रेहेशे. माटे अरे जीव जरातो विचार!! पृथ्वी,घर,हाट,राज्य, लक्ष्मी मूकी घणा मनुष्यो चाल्या गया तेम तुं पण एक दिवस सर्व मूकीने चाल्या जवानो, जे का-यामां सारुं सारुं मिष्टान तुं भरेछे, जे कायामां तुं वस्योछे, जे कायावडे तुं हाली चाली शकेखे, जे कायाने तुं व्हवरावे धोवरावेछे ते काया पण अंते तारी थवानी नथी. तो तुं छोभ शा माटे करेछे ? धुमाडाना वाचक भरवा जेम नकामाछे ते परवस्तुने पोतानी मानी लोभ करवो ते पण खोटोछे. खारु जल पीवाथी जेम तृप्ति वळती नथी तेम लोभ करवाथी शान्ति सुख मळतां नथी. माटे अमृत स-मान संतोष गुणतुं हे जीव तुं सेवन कर के जेथी शान्ति मुख मळे.



## संतोप स्वरूपः

## श्लोक=कथाकोप ग्रंये.

यथा नृणां चक्रवर्तीं, सुराणां पाक शासनः
तथा ग्रणानां सर्वेषां, संतोषः परमोग्रणः
संतोषग्रक्तस्य यते रसंतुष्टस्य चिक्रणः
तुलयासंमितोमन्ये प्रकर्षः सुख दुःखयोः
किमिंद्रियाणां दमनैः किं कायपरपीडनः
नन्त संतोष मात्रेण सिक्सिस्यम्भिते
यत् संतोषवतां सौख्यं, तृणसंस्तारशियनां ।
कतत् संतोषवंध्यानां तुलिकाशायिनामापे

जेम मनुष्णेमां चक्रवर्ती देवताओमां जेम इंद्र, तेम सर्व गुणोमां संतोप मोटामां मोटा गुणछे. संतोप गुक्त यतिना जेटछं इंद्र चंद्र नागेंद्रने पण सुख होतुं नधी. इंद्रियोना दमन करवावहे करीथुं, कायाने पाडवावहे थुं ? संतोप मात्रवहे मुक्तिसी मुखनं निरीक्षण थापछे. तृणना संथारा टपर शयन करनार एवा संतोप बाळा मुनिवरोने जे मुखछे ते मुख संतोप बंध्य तृष्टिकामां शयन करनार हुप गृहस्थाने होतुं नथी. संतोपी नर सदा मुखी जाणवो. असंतोपि पुरुपने संतोपी एवा भिक्षक जेटछं पण मुख होतु नथी. संतोपीने चिंता होती नथी. संतोप कल्पहक्ष समानछे. संतोप अन्वह्य आनंददायकछे. संतोपी पारकानो उपकार करवा सपर्थछे. असंतोपी मरीने परभवमां पण मुख पामतो नथी. संतोपी मोटा पनमान जाणवो. संतोपमां जे मुखछे ते मुख अन्यत्र नथी. भान् त्मज्ञान थया विना तात्त्विक संतोष थतो नथी माटे आत्मज्ञान क-रतां सर्व दोषो नाश पामशे. चक्रवर्तीं सरखा मोटा राजाओ पण लक्ष्मीनो त्याग करी सुखी थया.

आत्मार्थी भव्योए पारकी निंदानो त्याग करवो, कारण के निंदक चंडालछे. निंदक मोटो पापीछे. नाम देइने निंदा करे तो अधम जाणवो. परमां भूल होय पण तेना पृंठे निंदा करवाधी कंइ फायदो यतो नथी. पापमां शक्तिवाळा पुरुषोने निंदा करवानो स्वभावछे. गंगाजलमां स्नान करनार होय, अडसट तीर्थनी यात्रा करे किंतु जो ते निंदक छे तो ते अपवित्र अने दुष्ट जाणवो, वहा-दूर पुरुषो निंदा करता नथी. निंदक कागडाना करतां पण भूंडोछे. अदेखाइथी निंदा उप्तत्र थायछे अने निंदाथी क्लेश उप्तत्र थायछे अने ते सामा पुरुषना जाणवामां आवे तो परस्पर वैर वंधायछे, निंदक आभवमां तथा परभवमां पण दुःख पामेछे, निंदा करवाथी मित्रनी मित्राइ पण तूटेछे.

जो तमे गुणी थवाने चाहताहों के मनुष्यनी घोळी वाजू तरफ हिष्टियो. पण काळी वाजु तरफ हिष्टि यो नहीं, हाळना वखतमां कोइ सर्व गुणी नथी, कोइ पुरुषनी कोइ निंदा करे तो तेने मनमां एम विचार बुं के भळे ए निंदे. हुं जो सारो मनुष्य छुं तो तेनी निंदाथी मारे थुं ? निंदकना उपर मारे केम क्रोध करवो जोइए ? सामा मनुष्य बुं हित इच्छ बुं होय तो तेना गुण गावा. कोइ निंदक निंदा करे तो उछ दुं निंदकनामां जे गुण होय ते आपणे वखा-णवो पण खराव छागणीथी सामु तेनुं बुरुं करवा मयक करवो नहीं. कोइ आपणा उपर दुष्टता करे तो पण आपणे तेनी तरफ शुभ भावना राखवी, तेनु सारुं करवा शुभ संकल्प करवो एम क-रवाथी सामो दुरुप अंते दुष्टतानो त्याग करशे आ नियमनो अनु- भव करवाथी खातरी थशे.

आत्मज्ञानीओ कोइनी पण निंदा करता नथी तेओ तो आ-तम स्हत्रपमां तल्लीन रहेछे. परना तरफ दृष्टि देता नथी अने कदापि उपकारने माटे परतरफ दृष्टिछे तो पण आत्मिहितथी अ-न्य प्रदृत्ति करता नथी.

कोइ विरला जगत्मां आत्म नन्वनी शोधमां स्वकाल निर्गपन करेछे, अने कोइ विरला परमात्मपद्ने पामेछे, सत्य तरफ मायः दुनीया प्रद्यति करती नथी पण असत्य तरफ करेछे ते उपर एक दृष्टांत मुसलमानी धर्मभां मगट थयुं छे ते एवी रीते के कोइ एक महान् पाटशाह्ना वख-तमां एक फकीरे, मक्ष कर्यों के-हे पाडकाह आ सब खलक चुरे रस्तेपर कयुं चल रही हे ? त्यारे एना उत्तरमां पादशाहे फफीरने विज्ञप्ति करी कहुं के-अ।पकुं मेरा मुकामपें दो वर्षतक रहेना चाहिए. जब आपका सवालका जवाब में देनेकुं शाक्तिमान होडंगा-अा उपायी फकीर वावा त्यां रत्या के तुरत पादशाहे पोताना राज्यमांना तमाम अमीर उमरावोने वोलावी हुकम आ-प्यो के-अमारा खजानायांथी तमाम लक्ष्मी खर्ची एक महा मोडो वाग बनाववो जोइए ने ते वागमां तमाम सृष्टिनी सर्व वस्तुओ पगट करीदेवी. वाट तमाम जगत्यांनी सर्व प्रजाने ते वाग जोवा बोलाववी, ने तेमनो तमाम खर्च तेमनी जम्यापर पहींचाडचा सुधी नो आपणे करवो जोइए. आवा प्रकारनो हुकम मळतां सर्व फचेरी मंटळे तावडतोव आखी पृथ्वीमां रहेला तमाम कारीगरोने बोला-व्या ने तेमना कथा ममाणे असंख्य जातनां साधनो पुरां पाइवा छाग्या. जे उपर्धी वसे फोसनी वज्यमां जनीन पहाट समुद्र नाना मकारनां नमाम दुनीयामां रहेलां पशुपंखीओ नथा अहारगार

वनस्पति, मेवानां झाड, विचित्र प्रकारनां अमूल्य वस्न रत्न झ्वाहिर भातभातनां पक्वान्न, वागमां फरवाना मनोहर लताना मंडपोवाळा रस्ता, ठेकाणे ठेकाणे सुंदर वेक्याओ नाटक करे तेम गोठवण थइ, स्थळे स्थळे विचित्र प्रकारनां नाटकां. तेमज खेळाडुओनी गोठवण थइ, साकरीयां पाणी, गुलावजल लोकोना उपभोगने माटे तैयार क-राव्यां. अनेक तरेहना जानवरोना तमासानी रमतनी गोठवण थइ. वाग जोनाराने वेसवाने माटे अनेक खुरशीओ आदिनी सगबड थइ. वागमां सुंदर सरोवरो हवा खावाने माटे वंधाव्यां अने ते सरोवरनी आसपास चारे तरफ छीमडा ववराव्या घटा करावी, ठेकाणे ठेकाणे पाणीना फुंवारा मूकी दीधा, विषेश शुं ? अपरं-पार तेनी शोभा वाह्य जगत्नी वस्तुओथी वनावी दीधी, अने रा-जवर्गे पादशाहने खबर आपी. पादशाहे जगत्मां एवी जाहेरात ख़बर आपी के-मारा वसो कोशना वागना मध्यभागमां एक महे-ल में रचावेलो छे, ते महेलमां अमुक दिवसे वपोरना त्रण वागे हुं एक कलाक संताइ रहीश, तेवामां जे पुरुष मने शोधी काढशे तेने हुं मारी तमाम पादशाही आपी देइश. एवी रीतनी जाहेर खबर दुनीयामां फेलाबी दीधी. ठरावेला दिवसे तमाम लोको वा-दशाही बाग जोवा आच्या. तमाम प्रजा वाग जोवा मशगुल 'थइ कोइ फुलनां झाडो जोवा लाग्या. कोइ वाघसिंहादि पशु-ओने जोवा लाग्या, वे.टलाक शोखीन तळावनी शोभा जोवा लाग्या अने ठंडो पवन खावा लाग्या, नाटक जोवाना रसीया ना-टक जोवामां लीन थया. मेवाना रसीया मेवा खावा लाग्या. कोइ पुरुषे वीजा पुरुषने कहुं के-भाइ चालो आपणे वादशाहने शोधी काढीए, त्यारे सामा पुरुषे जवाव आप्यो के-तुं तो घेलो थयों छे, शुं राजा ते महेद्यमां संताय ? एने एउं राज्य व्हाइं छे,

माटे आपणे तो वेक्याओनो नाश जोवामां आनंद मानीशुं-कोइ व्याकरण शासना विद्वाने नैयायिकने कहुं-हे नैयायिक तुं वादशा-ह महेलमां संताणो छे ते वातने खरी वात माने छे के खोटी त्यारे नेयायिके कहां वे.-वादशाह वाक्यं प्रमाणं वा अप्रमाणं वा, तस्य वाक्यं सत्यं वा असत्यं वा. एतत् कार्यस्य किं मयोजनं, इदशं पूर्व न भूतं, कदापि वादशाह गांडो थयो दशे, कदापि महेलमां तेने शोधवा जतां वाटशाह मारी नांखे तथा वळी एक एवी शंका थाय छे के-वादशाह महेलमां छे तेमां शुं ममाण ? मत्यक्ष ममाण मत्यक्ष विरद्ध छे. अनुमान ममाणमां कोड हेतु अध्यभिचारी सिद्ध थतो नथी, उपमान प्रमाण पण साद्यमा अभावथी वाधितछे. आ-गम प्रमाणनी पण अत्र सिद्धि थती नथी, माटे अमो तो वादशाहने शोधवानुं वंध राखी आ मत्यक्ष देखाती वस्तुओ जोवामां आनंद मानीशुं, त्यारे व्याकरणशास्त्रवेत्ताए कर्त्युं सत्यं सत्यं भवतां कथनं पाद्शाह वाक्यं प्रमाणीभूतं मया न ज्ञायते-कोइ स-गां संबंधीनी वातो करवा लाग्या. वागनी मनोहरतानी एवी खुबी हती के पगले पगले विचित्र जीवानुं मळे, खावानुं मळे, के-टलाक तो इक्ष तळे मुड़ गया, बेटलाकएक बीजाने वस्तुओ ओळ-खाववा लाग्या, वे.टलाक रूपैया खर्ची टीकीटो करावी तमासा जोवा लाग्या, केटलाक एम विचारवा लाग्या के वादशाह बुढिमान् छे, तेनी ओछी माया नथी ते एवो संताणो हशे के आपणा हाथमां आववो मुब्केलछे, माटे आपणा करना होइए ते करो. केटलाक एम चिंतवबा लाग्या के ज्यारे आ वागमां पण एवी भूलवणी चुकवणी छे के आपणे भूला पडीयेछीये तो बादशाहना महेलमां तो बहु भूलवणी जुकवणी हवे के जेथी शोधवाने बढले आपणे भूला प-दीए तो अतोभृष्ट ततोभृष्ट थइए. वे.टलाक सुंदर परीओ देखी तेमां

मोह पाम्या. केटलाक रागरागणीना तानमां गुलतान यया. केट-लाक व्यापार करवा लाग्या, केटलाक विषयनी वातो करवा लाग्या केटलाक एम चिंतववा लाग्या के आ वागमां सदा रहेवातुं थाय तो ठीक. एम सर्वजन वागनी मोहमायामां फसाया. कोइए बादशाहने शोधी कहाडवानो पयत्र कर्यो नहीं, एवामां एक डाह्यो पुरुष हतो तेणे विचार्यु के-खरेखर आ जगत्नी तमाम मजा गांडीने मूर्ख छे, केमके ते जोवामां मशगुल थइ पडी पण तेमनामां एटली सम-जण नथी के पथम बाग जोवाना करतां वादशाहने शोधी कहाडवो जोइए वादशाहने शोधी काढे तो आ सर्व वाग तथा वादशाही तेने मळे, माटे आपणे तो पथम वादशाहने शोधी काढवो जोइए एम निश्रय करी आ पुरुषे महेल तरफ मयाण कर्धु. कोइ वस्तु तरफ दृष्टि दीधी नहीं, अंते महेलमां गयो, वादशाह-ने शोधी काढ्यो, के तुरत वादशाहे एक हजार तोप फोडावी मान साथे पोतानी वादशाही तेने इवाले करीने तुरत पेटा फकीर वा-वाने पादशाहे कहुं के-फकीर साहेव देखों. ऐंसी दुनीया दिवा-नीकी रीति है के सब खलक ज़ुटा वाग देखनेमें मशगुल हुइ, लेकीन कीसीका ध्यान मेरी शोध तरफ नहीं आया. सारांश के एवी रीते आ दुनीयाना जीवो असत्य मोहमायाथी जगत्मां फ-सायाछे. मोहमायानो त्याग करी जिनाज्ञा सत्य मानी पोतानी कायारू भी महेलमां अनंत शक्तिमान् अनंत मुखभोक्ता एवा आ-त्मारूपी वादशाह रहेलोछे तेने शोधवा ध्यान लगाडे तो जीव पोते परमात्मा वनी त्रण जगतनो स्वामी थाय. संसाररूप वागमां सर्व जगत् मोहमायाथी फसायुंछे, कोइ विरला प्राणी आत्मज्ञानने माटे सद्गुरुतुं संसेवन करेछे, जेम झांझवाना पाणीथी तृपा शान्त थती नथी तेम संसारनी मोहमायाथी आत्माने शान्ति मळती नथी, संसारनी सर्व खटपटने त्यागी आत्मस्वरूप पाप्त करबुं. एज

सारमां सारछे. पुनः पुनः मनुष्यभव मळवानो नथी, गयो वस्तत पाछो आवनार नथी सद्गुरुनां वचन इद्यमां उस्यां नथी एम लागेछे, जो उस्यां होत तो संसारना पदार्थोमां मन जाय तही, हे चेतन तुं क्षणमां सारां सारां भोजन जमवानी इच्छा करेछे पुनः खीविपयाभिलापे तुं बहेछे पण समजतो नथी के—स्त्रीना उपर मोह पामवानुं शुं कारण ? खीनुं शरीर सात धातुथी भरेछुंछे, स्त्रीनी कायामांथी मळमूत्र लीट वह्या करेछे, एना शरीरमां जरा पण पविन्त्रता देखाती नथी. परसेवो, मेल, मस्तकना कशमां ज् विगेरे प्रत्यक्ष देखायछे माटे हवे तुं वैराग्य लावी ब्रह्मचर्य व्रत धारण करः

## ब्रह्मचर्य स्वरूप

श्लोकः

विन्हस्तस्य जलायते जलिनिधिः कुल्यायते तत्क्षणातः, मेरुःस्वरूप शिलायते मृगिरपुः सद्यः कुरंगायते; व्यालो माल्य ग्रणायते विषरसः पीयूप वर्षायते, यस्यांगेऽिखल लोक वल्लभतमं शीलं समुन्मीलितिः १ ऐश्वर्धस्य विभूषणं सजनता शोर्थस्य वाक् संयमो, ज्ञानस्योपशमः श्रुतस्य विनयो वित्तस्य पात्रे व्ययः, अक्रोधस्तपसः क्षमा प्रभावितः धर्मस्य निव्याजता, सर्वेपामिथ सर्वकारणिमदं शीलं परं भूषणं.

तथा गाधा

शीलं कुल आहरणं, शीलं रूवं च उत्तमं जयइ; शीलं चिय पंडिचं, शीलं चिय निरूवमं धम्मं. १.

#### तथाच श्री हेमसारेपादाः

प्राणभूतं चरित्रस्य, परब्रह्मैककारणं; समाचरन् ब्रह्मचर्यं, प्रजितैरापि पूज्यते २

तथा च दशमांगे श्री मश्न व्याकरणे यस्य ब्रह्मचर्यस्य नामानि गुणाश्चेवग्रुच्यंते तथाहि जंबू एत्तोय वंभचेरं उत्तम तव नियम गाण दंसण चरित्त सम्मत्त विणयमूलं गुणप्पहाणजुत्तं हिमवंत महंत तेय मत्त पसथ्यं गंभीरं थिमितमज्जं अज्जव साहुजणा चरितं मोख मम्मं विसुद्धं सिद्धिगति निलयं सासत मन्वाबाहं अपुण भवं पसध्यं सामं थुभं सिव मयल मख्खर करं जित वरसा रिव्खियं सुसाहस्सहियं नवरि मुणिवरेहिं महा पुरिस धीर सूर धम्मिय धितिमंताणय सया मुविमुद्धं भव्वं भव्वजण समुचिणं निसंकियं निभ्भयं नित्तुसं मिरा-यासं निरुवलेवं निव्वुइ घर नियम निष्पकंषं तव संजम मूल दलि-यणेगां पंचमहब्वय सुरिक्खियं समिति गुत्ति जाणवरं कवाड सुकय-रख्खण दिण्ण फलिह सण्णद्धोध्थयिअ दुग्गतिपहं सुगतिपह देसगं च छोगुत्तमं च वयमिणं पडमसर तछाग पाछिभूयं महा सगडअर तुंव भूअं महाविडिम रुख्ख खंधभूतं महानगर पागार कवाड फलिह भूअं रज्जपिणद्धोव इंदकेउं विसुद्धणेग गुणसंपिणद्दं, जिम्मअ भ-गाम्मि होइ सहसा सन्वसंभग्गसिख्य महिय चुण्णिय कुशि तप-ल्रुट्ट पडिअ खंडिय परिसडिय विणासियअं विणयसील तव नियम गुण समूहं तं वंभं भगवंतं गहगण णख्खत्त तारगाणं वा जहाउछपति मणिमुत्त सिलप्पवाल रत्त रयणागराणंव जहा समुद्दो वेरुलि उन्वेव जह मणीणं जह मडडो चेव भूसणाणं वध्थाणं चेवरुखोम जुअलं अरविंद चेव पुण्फ जेहं गोसीसंचेव चंदणाणं हिमवंता चेव ओस-हीणं सीतो आचेव निम्मग्गाणं उदहीस जहासयंभूरमणो रुअगवरो चेव मंडिल अपन्वयाण पवरे ऐराषणो इव कुंजरागं सीहोन्व ज-

हामिगाणं पवरो पन्नगाणं चेव वेणुदेवे धरणे जणपण इंद्राया कप्पाणं चेव वंभलोए सभामु अजह भवे मुहम्मो ठितीमु लवसत्त मगासन्वपवरा टाणाणं चेव अभयदाणं किमिराओं चेव कंबलाणं संघयणे चेव वज्जिरसभे संटाणे चेव चउरंसे आणेमुअ परम मुक्किंसां लेखाने परम मुक्किंसां लाणेमुअ परम केवलं सिद्धं लेसामुअ परम मुक्किंसां तिध्थकरो जहचेव मुणीणं वासेमु जहा महाविदेहे गिरिरायाचेव मंद्रावरे वणेमु जहा नंटणवणं परंच दुमेमु जह जंबू मुदंसणा वीमुजसा जीसे नामेण अयं दीवो तुरगावती रहवती नरवती जहवीमु ते चेव राया रहिए चेव महारह मते एवं अणेग गुणा अहीणा भवंति एकिम्म वंभचेरे जिम्मअ आराहि अं वयिमणं सचं सीलं तवो ओय विणओय संजमोय खंती मुत्ति तहेव इह लोइअ पारलोइय जसोकित्तिय पन्वओय तम्हा निहुएण वंभचेरं चिरअव्वं सन्वओ विमुद्धं जावजीवाए. इत्यादि महिमा ब्रह्मचर्य व्रतनो कह्नो छे.

" दुहा. "

आतम सुलनी: चाहतो, विषयेच्छा परिहार; विषयेच्छा मनमां घणी,तो शुं ? आत्म विचार. १ आत्म स्वरूपे, ध्यानतो, विषयेच्छानो नाशः प्रतिपक्षी वे धर्मनो, नहीं एकत्र निवासः २ वे साथ वर्ते नहीं, वर्ते त्यां छे दंभ; भोगज कर्माधीनधी, त्यां शुं होय अनंभः ३ दुर्गधीनी कोथळी, मळमूत्रे भरी देह; कान्ता काया एहवी, अपवित्रतानुं गेहः १ रंग रूप खोटा सहु, श्रवे अशुःची नित्य;

मोह करे शुं जीवडा, समज समज तुं चित्तः अ भोग रोग सममानतो, स्वप्ने पण नहीं आशः अनित्य आ संसारमां, क्यांथी तेनो वास. ६ दुर्लभ आत्मस्वरूपनी, वातो करवी सहेलः किंतु आत्म स्वरूपनी, प्राप्तिछे मुस्केल. ७

निंदा, आलस्य, असत्यादि दूषणो निवारी निःसंगी थइ आ-त्म तत्त्वनी खोज करनार आत्मतत्त्व पामी शकेछे. आत्मतत्त्वनी वातो करवी सहेलछे पण आत्म तत्त्वनी माप्ति थवी मुश्केलछे. कोइ विरला माणी आत्मा उपर रुचि करेछे.

आ चेतन अज्ञानयोंने श्रमित थइ करापि चलित थइ जाय छे. एवं आत्म स्वरूप भूली गयो तथी परवस्तुमां मोह पाम्यो, अशुद्ध परिणत्तिथी औदारिका, वैक्रिय आहारक, तेजस, कार्मणादि श्रारीरो धारण करी तेना योगे ताडन तर्जन छेदन भेदनादिक दुःखो छह्यां, हवे जो तने सुखनी आशा थइ होय तो हे आत्मन चेत चेत समय चाल्या जायछे मनना मनोरथ मनमां रहेशे, सद्गुरु संगे रही आत्म स्वरूप समज अने तेना ध्यानमां रहेशां,आश्रवतुं दृरी करण थशे. अने अंतर तत्त्वोपयोगे संवरनी प्राप्तिथशे तारुं स्वरूप तुं देखे एटले तारो मोक्ष थशे.

> श्री देवचंद्रजी पण कहे छे के-" दुहा."

तत्त्वते आत्म स्वरूपछे, शुद्ध धर्म पण तेहः परभावानुग चेतना, कर्म गेहछे एहः १ तजीपर परिणति रसणता, भज निज भाव विशुद्धः

( 484 ) आत्म भावथी एकता, परमानंद प्रसिद्धः स्याद्वाद गुण परिणमन, रमता समता संगः साधे सुद्धानंद्ता, निर्विकल्प रसरंग. मोक्ष साधनतणुं मूळ जे, सम्यग्दर्शन ज्ञानः वस्तु धर्म अववोध विणुं, तुस खंडण समान. ४ आत्मवोध विणुं जे किया, तेतो वालक चाल; तत्वार्थनी वृत्तिमं, लेजो वचन सभालः

इत्यादिथी पण आत्मज्ञाननी खास जरुरछे, आ जगत्मां राग द्वेपच्यापी गयोछे ने आत्माना अज्ञानने लीवे जाणवो. आ शरी-रमां रहेला आत्माना सरखा अन्य शरीरोमां पण रहेला आत्माओछे एम जो जाणवामां श्रद्धा पूर्वक आवे तो कोट दुःख कोट् जीवने आपे नहीं, अने कोड़ जीवना उपर कोड़ जीव वेर राखे नहीं. आ-त्मज्ञानी सर्व जीवने सिद्धसमान गणे तो पछी कया जोवनी साये ते विरोध करे ? अलवत कोड़ जीवनी साथे ते विरोध करे नहीं, ए वातनो अनुभव करवार्थ। मालम पड्जे, आत्मिक शुद्धानंद पण त्यारे अनुभवमां आवशे. राग हेपयी जेनु मलीन हे तेने मुख म-लतुं ननी. जगत्मां तान्विक मृखना भाक्ता आत्मज्ञानी मुनिवरोछे. तेमने स्त्री नथी. पण समता रुपन्नी भावथी जाणवी. राजाओं रोठी-

याओ, नकीलो, दावतरो, ज्यारे नाप आदिना निवारण माटे छत्री धारण मरेहे तो तेना वटले आत्मज्ञानी मुनिवरो क्षमारूप छत्रीने धारण कोहे. समारूप छत्रीधी क्रोधरूप ताप लागतो नधी, अने अदेखाइरूप उटण पत्रन तो जग मात्र लागतो नधी. वळी मोहरूप मेचनी रृष्टियी पटेन्डं तृत्णारूप पाणी तेने समा उत्रीयी शीली र

कायछे, अन्य राजाओ पादशाहो ज्यारे एक देश वे देशना मालिक होयछे त्यारे मुनिराज तेना करतां पण अधिक पोताना आत्माना असंख्यात प्रदेशना मालीक होयछे. ज्यारे अन्य राजाओ घणी लक्ष्मी भेगी करेके त्यारे मुनिराज आत्मानी ज्ञान द्र्शन चारित्र लक्ष्मी भेगी करेछे. तफावत एटलो के राजानी लक्ष्मी खोटी, क्षणिक छे अने मुनिनी लक्ष्मी सत्य अने अचल अखूटछे, राजा पादशाहने मनवचन कायाए करी संतोष रहेतो नथी. त्यारे मुनिने मनवचन कायाए करी संतोप रहेछे. राजा ज्यारे नृपादिक शत्रुओनी साथे युद्ध करेछे, त्यारे मुनीश्वर रागद्वेषरूप शत्रुओनी साथे युद्ध करेछे, राजाओ ज्यारे वागमां क्रीडा करेछे त्यारे मुनीश्वरो धर्मध्यानरूप वागमां क्रीडा करेछे-धर्मध्यानरूप वाग केवो छे ते कहेछे-धर्मध्यानरूप वागनी चारे तरफ उदासीनतारूप वाड करेली छे. ज्ञानरूप कूपधर्म ध्यानरूप वागमां शोभी रहेलोछे. संवेगादिक वनस्पति त्यां खीली रहीछे. त्यां मुनिराज स्थिर चित्तरूप आसन उपर बेसी विचरेछे. ते वा-गनी शोभा अनहद्छे. तेनी सुगंधीथी अनेक जातना रोगो नाश पामेळे. ए वागनी अंदर धुद्र पाणीओ प्रवेश करी शकतां नथी. जेनी याग्यता होय ते त्यां जइ शके छे. जगतनी मोह मायामां फ-साएला पाणीओने ते वागनुं सुख थतुं नथी, वळी ए वागमां एक चारित्ररूप महेल शोभी रह्योछे. तेनी अंदर जन्म जरा मरणनां दुःख नाशक अनेक औषधो रह्यांछे तेना मुनीश्वर उपयोग करी शकेछे. अने ते औषधोतुं भक्षण करी अजरामरपद पामेछे. वळी ते वागमां रहेला ज्ञानकूपमांथी मुनिश्वर जलपान करेले. ज्यां परोपाधिरूप ता-पता आवी शकतो नथी. वळी ते वागनी असंख्यात मदेशरूप ज-भीन स्वच्छ निर्मलके. मुनीश्वरनी साथे शुद्ध चेतना रहेके. वळी वे मुनीश्वर आत्मा अने परमात्मानी अक्यतारूप भांगने कायारूप ख-

लमां ग्रंटी मनरूप प्यालाधी पीवेछे. तेथी शुद्ध चेतनारूप नीशो मु-नीभर महाराजने एवो चढ़ छे के ते बखते अगम निगम दर्शाय छे. अने ते समये शरीर अने शरीरीनु पण भान रहेतुं नथी अने ते बखते अनहद् आनंद् थायछे. आवा मुनिराजने मुख थायछे ते अनंत छे. श्री यशोविजयजी उपाध्याय अध्यात्मसारमां कहे छे के-

श्लोक.

कान्ताधर सथा स्वादात्, यूनां यज्जायते सुलं । विंदुः पाश्वें तदध्यात्म शास्त्रस्वादसुलोदधेः १ अध्यात्मशास्त्र संभूत-संतोप सुल शालिनः गणयंति न राजानं नश्रीदंनापि वासवम्. २

भावार्थ-स्त्रीना अधर रूप अमृतना स्वाद्थी युवान पुरुषोने जे मुख थायछे तेतो भ्रमणा मात्र छे, ताच्विक मुख नथी, ते मुख तो अध्यात्म शास्त्रना स्वाद्थी उत्पन्न थयेछं द्रिया समान मुख तेनी आगळ विंदु समान छे. अध्यात्म शास्त्रथी उत्पन्न थयेछं संतोष रूप मुखना भोक्ता जे माणी छे ते माणी राजाने तथा धनद्ने तथा इंद्र सरखाने पण छेखामां गणता नथी.

श्लोक.

रसी भोगावधिः कामे, सद्भक्ष्ये भोजनावधिः अध्यातम ज्ञास्त्र सेवाया रसो निखिध पुनः १

कामने विषे भोगवतां सुधी रसछे, मिह भोजनने विषे जम-बाना वस्तत पर्यंत मधुरपणुंछे. पण अध्यान्म शाखनी सेवानो जे रस ते तो निर्विध छे. कारण के अव्यान्मशाखनो रस मारंभ कालधी मांडीने प्रतिदिन हिंद्स पामेछे. ते रस कोड वस्तत बहुलानो नथी, ज्यारे आत्मानंदी मुनिराजने अत्यंत मुख थामछे त्यारे सिद्ध-भगवंतोने अनंत सुख छे तेमां शुं कहेवुं ? अनुभवथी सुखनी म-तीति थायछे. वळी मुनीश्वर उपर कहेला एवा वागमां सदाकाल वास करेछे, तेमने कोइ जातनी स्पृहा नधी आवा मुनींद्रना वाग-नी तोले राजा वा शाहुकारोना वाग आवी शकना नथी. राजाने तो मनुष्य सेवेछे किंतु मुनीश्वरने सुर असुर इंद्रादिक पण सेवेछे. राजाने परशतु थकी भय रहेछे. किंतु मुनीश्वरने जय होतो नथी. राजानी पासे अनेक सुभडो होयछे त्यारे सुनीश्वर रूपी राजानी पारे क्षमा, वैराग्य, ज्ञान, दर्शन चारित्रादि अनेक सुभटो हायछे. राजानी लक्ष्मी जन्मांतरमां साथे आवती नथी. पण मुनींद्रनी लक्ष्मी तो परभवमां साये आवे छे अने मोक्षमां पण साये रहे छे, राजा पो-ताना देशमां पूजायछे, अने मुनींद्र तो ज्यां त्रिचरे त्यां पूजायछे. राजा वैभव छतां दुखी थायछे, अने आत्मज्ञानी मुनीश्वर ता वैभव विना पण अंतर् वैभवथी सुखी रहेछे, राजाने पोताना राज्यथी संतोष रहेतो नथी. अने मुनींद्रने तो सदा संतोष छे. राजाने आ भवमां तथा परभवमां क्लेश सहन करवो पडेछे, अने मुनीश्वरने आ भव तथा परभवमां सुखनी प्राप्ति थायछे, राजा संसारमां पर्हत्ति करेछे. त्यारे मुनीश्वर मद्यत्तिनो त्याग करेछे, राजा हाथी उपर वेसी बखतरथी शोभा पामतो तीक्ष्ण भालाने धारण करेछे त्यारे मुनीश्वर संवेग रूप हाथी उपर बेठा थका ब्रह्मचर्यरूप वखतरथी शोभा पा-मता ध्यानरूप तीक्ष्ण भालाथी रागद्वेष रूप शत्रुनो शिरच्छेद करेछे, मनी वरने तो कोड शत्रु नथी. किंतु व्यवहारथी शत्रुनी कल्पना जाणवी. पोते पोताना आत्म स्वभावमां रमेछे एटले स्वतः राग द्वेषनो क्षय थायछे, राजाने जरापण शांति मळती नथी, अने मुनी-भ्रता सदा शान्तिमां रहेछे. राजा ज्यारे वाह्यवस्तु उपर मगता

प्रमारमें द्वीन. राखेडे त्यारे मुनींबर अंतर्धन उपर ममता राखेडे. क्यां मेरु अने क्यां सरसवनी टाणो, क्यां सागर अने क्यां तळाव, क्यां रात्रि अने क्यां दिवस एटलो तफावत आत्मज्ञानी मुनीभ्वर अने राजा वच्वे जाणवो. दुनियामां आत्मज्ञानी मुनिसहग अन्य कोड मुखी नथी, जेट, वकील, वारीएरादि लोको तत्त्वथी विचार्तां सत्य मुख भोगवता नधी. सत्य मुखनी प्राप्ति तो आत्मज्ञानीने धायछे - अंत. दृष्टिना अभावे वाहादृष्टिजीवो सत्य मुखनो अनुभव करी शकता नथी. आत्मज्ञानी मुनि सटा निर्भय रहे छे, अहा ते जीवता जीवः न्मुक्तनी द्शाने अनुभवेछे. आत्मज्ञान विना खंडनमंडननी विदूताथी आत्मिहत थतुं नथी. दुनीया ज्यारे पर्परिणतिमां म्हालेखे त्यारे

# मुनीश्वर स्त्रपरिणतिमां म्हालेखे अात्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पश्यति

आ वाक्यनो अनुभव पण आत्मज्ञानी मुनीवर करी शकेले... शुटकहानी जीवो वाक्षडुनाथी आत्महानीनो डोल भले वतावो पण तेना अनुभवधी थतुं मुख ते पामी जकता नथी. आत्माना केवल ज्ञानादिगुणोनी माप्ति आत्माधिने थायछे.

संसारी जीवने ज्ञान दर्शन चारित्रादिक ऋदि सर्व तिरोभावे हे. ते तिरोभाव ऋदिनो आविर्भाव थाय, तेज आत्मानुं पर्मात्म पट जाण हुं. ते परमान्मनो हुं दास एटल उपासक हुं ने परमात्मपद जेजे ओल हमें अने परमात्मपद्मां जेतुं एकाम चित्रभी ध्यान चेतिले. तेने साधुपद ग्रंगु एम जाणवुं. अने शुद्धज्ञान पण ते पाम्यो एम

जाणकुं. नाम. प्यापना, द्रव्य, भाव ए चार निक्षेष साधु जाणवां. कोइनु साधु एवं नाम न नाम साधु, स्थापना करीए ते स्थान पना साधु तथा जे पंचपहात्रन पाळ कियानुहान को शुद्ध, ओहार ग्रहण करे पण झान ध्याननो जेवो उपयोग लोडए तेवो उपयोग न होय ते द्रव्य साधु जाणवा. जे भाव संवरपणे मोक्षनो साधक थइ
भाव साधुनी करणी करे ते भाव निक्षेपे साधु जाणवा.

कोइ जीवनो ज्ञान एहवो नाम ते नामज्ञान तथा जे पुस्तकमां अक्षररूपे छख्युंछे ते स्थापना ज्ञान, अने उपयोग विना सिद्धान्तनो भणवो अथवा अन्यमितनां सर्व ज्ञास्त भणवां तथा शरीरादिक ते सर्व द्रव्यज्ञान. अने नवतत्त्वनो नय निक्षेपाए जाणवां अने आत्मतत्त्व आद्रखुं ते भावज्ञान जाणवुं. ए आगमसारमां कृषुंछे. शुद्ध ज्ञाननी प्राप्ति पंचमकाळमां कोइक महा पुरुषने थायछे. ज्ञानना पंच मकारछे. १ मतिज्ञान, २ श्रुतज्ञान, ३ अवधिज्ञान, ४ मनःपर्यवज्ञान. देविह वाचक कहेछे के-पाठ. से किंतं महनाणं दुविह महनाणं पस्नत्तं तंजहा स्रुयनिस्सियं च अस्रुयनिस्सियं च सेकितं असु-यनिस्सियं अस्रुयनिस्सियं च अस्रुयनिस्सियं च उविह पन्नत्तं तंजहा उप्पत्तिया वेणह्या किमया परिणामिया बुद्ध च जिवहा पन्नत्ता.

भावार्थ-मितझान वे मकारेछे. श्रुतिनिश्रित मितझान, बीर्ज अ-श्रुतिनिश्रित मितझान. प्रायशः श्रुतझानना अभ्यास विना सहज क्षयो-पन्नामवशे जे उत्पन्न थाय तेने अश्रुतिनिश्रित कहे छे ते चार मकारनुंछे. उत्पादिकी बुद्धि, वैनियकी बुद्धि, पारिणामिकी बुद्धिः तथा कर्मजा बुद्धिः

पोतानी मेळे उत्पन्न थाय ते औत्पातिकी बुद्धि अने गुरूनो विनय शुश्रुषा सेवा करतां आवे ते वैनयिकी बुद्धि, कर्म करतां उपजे जे ते कार्मिकी बुद्धि अने परिणामते दीर्घकालनं पूर्वापर अर्थनं अवलोकन करतां उपजे ते पारिणामिकी बुद्धि.

पूर्वश्चत परिकर्मित मितना उत्पादकालने विषे शासार्थ पर्यालोन चुन करतांत्र जे उत्पन्न थाय तेने श्चतनिश्चित मितज्ञान कहेले. तेना चार प्रकारके. अवग्रह, इहा, अपाय अने धारणा तेमां अवग्रह वे भेदेके. व्यंजनावग्रह, अर्थावग्रह. किमिदं एउछे आ शुंके ? एवो (अव्यक्त) अमगट ज्ञानरूप अर्थावग्रह थायके. तेनी पूर्व अत्यंत अव्यक्ततर (अति छातुं जे ज्ञान) होयके तेने व्यंजनावग्रह कहे छे. वंजणवग्गहच उद्दा एटछे व्यंजनावग्रह चार प्रकारे छे. ते नी वे सुजब-मणनयण विणिदिय च उक्ता = मन तथा नयन ए वे विना वाकीनी चार ४ इंद्रियोने आश्रयी चार भेदे छे. श्री नंदीसूत्र पाठ. से किंतं वंजणुग्गहे च उविवहे पत्रचे तंजहा, सो इंद्रिय वंजणुग्गहे घाणिदिय वंजणुग्गहे, रसेंदिय वंजणुग्गहे, फार्सिदिय वंजणुग्गहे च श्रीत, ग्राण, जिव्हा, स्पर्शेन्द्रिय व्यंजनावग्रह जाणवो. मन तथा नयन ए वे इंद्रियो अधाष्यकारी छे. च श्रुरिन्द्रिय छे ते विषयदेश मित जाइने देखती नथी, तेम माप्त अर्थनुं अवलंबन करती नथी, तेम मननुं पण जाणवुं.

भा कंइपणछे ? एवं अनिर्धारित सामान्यस्य अव्यक्तपणे अ-र्थवं जे ग्रहण तेने अर्थावग्रह कहेछे, ते पांच इंद्रियो अने मने करी छ मकारनोछे. श्रोतेंद्रियार्थावग्रह, चश्चरिंद्रियार्थावग्रह, घाणेंद्रियार्था-वग्रह, रसनेंद्रियार्थावग्रह, स्पर्शनेंद्रियार्थावग्रह तथा मानसार्थावग्रह. अवग्रहगृहीत वस्तुने विषे जे धर्मनी गवेषणा करवी एटले आ स्थाणुछे ? अथवा पुरुषछे ? तेमां पण हाल संध्याकालके अने महा अरण्यछे, वळी सूर्य पण आधम्पोछे, माटे पुरूष नथी. इत्यादि व्यतिरेक धर्मनुं निराकरण करवं. अने एने पक्षीओ भजेछे. वच-मांथी वांकुछे, अने कोटर सहितछे. इत्यादिक अन्वय धर्मनो अंगी-कार करवो, एवं जे ज्ञान विशेष तेने इहा कहेछे. ए पण पंच इंद्रियो अने मने करी छ मकारेछे. तथा इहित वस्तुने विषे आ निभये करी स्थाणुजके, एवो एक कोटिना निश्चयस्य जे बोध तेने

र्अपाय-कहेर्छे. स्थाणुरेवायं इत्यात्मकरूपो अपायः तथा निश्चित वस्तुने विर्षे अविच्युतिष्णे अथवा स्मृतिषणे अथवा ,वासनाप्ने **चे** आरण करवुं तेने. धारणा कहे छे. ते पण पंचइंद्रियो अने सने. करी छ प्रकारे छे. एर्म छनें चारे गुणतां चोवीस भेद अने व्यंज-नांग्रहना चार मेळवतां २८ अहावीश भेद मतिज्ञानना जाणवा एमां चारःभेद अश्रुत निश्चितना मेळवतां वत्रीस भेद थाय छे, तथा जाति स्मरण पण अतीत कालना संज्ञी पंचेंद्रियना संख्याता भन्न देंखे मतिज्ञाननीज ते भेद जाणवी श्री आचारांग सूत्रनी टीकामां ज्यतिस्मरण ज्ञानने धारणानो भेद कह्यो ंछें⊸पतः जातिसमरणं त्वाभिनिवोधिक ज्ञान विशेषमिति. कोइ एक संभामों घणा पुरूषो वेटाछे ते वस्ति शंख, तथा भेरी, रणशिंगुं, आदि वाजींच वागवा लाग्यांश्रोताजनोए सर्व वाजित्रनो शब्द सम-काले सांभळ्या छतां सर्वनी क्षयोपशमनी विचित्रताथी अधिक न्यूनादिक सांभळवामां आवेछे जेमके कोइने ते शंख भेरी आदि वाजींत्रनो शब्द भिन्न भिन्न सांभळवामां आवेछे तेना जाणवामां एम आवे के अमुक भेरीओ आटला शंख वागेछे एम जणाय तेने बंहु कहे छै. १ कोइने मात्र वाजींत्र वागे छे. एम जणाय तेने अवह जाणवोः '२ तथाः ते शब्दमां पण कोइ-केने मधुर मंद्रवादि वहपर्यायोपेते जे शंखादिक ध्वनि पृथक् पृथक् र्घणा प्रकारे सांभळवामां आवेछे तेने वहुविध कहीए. ३ कोइने एक वे पर्यायोपेत ते ध्वनि सांभळ्यामां आवेछे ते अवहु-विद्य जाणवो । ४ कोइकने तुरत ते नाद सांभळवामां आवे छे ते क्षिप जाणको ु५ कोइक विचारी विचारी घणी वार पाछळथी काँगे ते अक्षिम जाणवा. ६ ध्वजारूप छिगेकरी निम् देवकुछ ओळखायछे तेम छिंग साहित जाणे तेने निश्चित कहेछे. भी

ं क्रोंड उक्त मकारे हिंगरहीत जाणे तेने अनिश्रित कहेंछे. ८ भि कोईने शंसयरहीत संभठायछे तेने असंदिग्ध कहेंछे. ९ भि कोईने शंसयसहीत संभठायछे तेने संदिग्ध कहेंछे. १०

कोइके एक वेळा सांभळी ग्रहण करी लीधे लें ते सदा सर्वदा स्मरण रहे पण वीसरे नहीं तेने ध्रुव कहे छे ११. अने कोइक एकवार ग्रहण करे लें सर्वदा स्मरणमां रहे नहीं तेने अध्रव कहे छे. १२. एवी रीते वार भेदे ज्ञान धाय छे तेने पूर्वोक्त अद्वावीश भेदीयी गुणतां त्रणशेंने छत्रीश भेद मतिज्ञानना धाय. तथा तेमां अध्रत निश्चितना चार भेद मेळ शिए तो त्रणसेने चार्कीस भेद मतिज्ञानना धाय छे. अधीवग्रह एक समय ममाण छे. इहा अने अपाय अंतर्ग्यहर्त्त ममाण छे. धारणा संख्यात असंख्याता काल सुधी छे अथवा द्रव्यक्षेत्र कालभावधी मतिज्ञान चार प्रकार सुंछे.

मतिज्ञानी आदेशथी सर्व द्रव्य जाणे पण देखे नही..

ृ क्षेत्रथकी सर्व क्षेत्र लोकालोक जाणे पण देखे नही.

कालधनी आदेशे सर्व काल जाणे पण देखे नही.

भावधंकी आदेश सर्व भाव जार्ण पण देखे नही.

## ्रश्रुतज्ञान स्वरूप

· श्रुतज्ञान चौद तथा वीश प्रकारनुंछे चौद भेद कहेछे-

'गाथा.

अर्ला सत्री संग्में, साईयं खेळु सपजवासियं च । गमियं अंग पविद्यं, सत्तविए ए सपडिवख्ला भावार्थ-अक्षरश्चत, अनक्षरश्चत, संज्ञीश्चत, असंज्ञीश्चत, सम्पन् क्श्चत, असम्यग्श्चत, आदिश्चत, अनादिश्चत, पर्यवसितश्चत, अप-यवसितश्चत, गमिकश्चत, अगमिकश्चत, अंगमि शिश्चत, तथा अंग बाराश्चत, ए चौद भेद जाणवा.

वाराश्रुत, ए चाद भद जाणवा.

१ अक्षरश्रुत-अक्षरश्रुतना त्रण भेदछे संज्ञाक्षर, व्यंजनाक्षर तथा लब्ध्यक्षर. तेमां प्रथम संज्ञाक्षर-अढार प्रकारनी लीपी, तथाहि-हंसलिवी, भ्र्यलिवी जख्खातह रख्खसीय बोधवा। जुड़ी जवणी तुरुकी कीरी दवडीय सिंधविया १ माल विणी निंडनागरि लाडीलवी पारसीय बोधव्वा। तह अनिमित्तयलिवी चाणकी मुलदेवीय. २ बीजो व्यंजनाक्षर प्रकार ते अकारथी हकार पर्यंत वावन अक्षर मुखे उचारवाक्ष्य जाणवो ए वने प्रकार यद्यपि अज्ञानात्मक तथापि श्रुतना कारण होवाथीं उपचारे करी ए वे प्रकारने श्रुतकानी संज्ञा आपीछे.

३ शब्द श्रवण तथा रूप दर्शनादिक थकी अर्थ परिक्रान मर्भित जे अक्षरनी उपलब्धि रूप लब्ध्यक्षर श्रुत जाणवं, करपललवी आदि-के जेथी अक्षर संख्यातुं ज्ञान थायछे तेनो समावेश लब्धि अक्षर श्रुतज्ञानमां जाणवो.

२ अनक्षरश्चत-शिरकंपन, हस्तचालन प्रमुख तथा समझ्याए करी गमनागमनादिक मनना अभिमायनुं जे परिज्ञान तेने जाणनुं, यथा कोइ मनुष्य कोइ मनुष्यने पृच्छा करे के भाइ बाहेर जानुं छे के ? तेनो पत्युत्तर मुख्यी नहीं देतां मस्तक हलानीने अथना हाथनती शान करीने पोतानी नामरनी जणाननी, पूलनारने तेना मनना अभिमायनुं परिज्ञान (जा-जणान्नी, पूलनारने तेना मनना अभिमायनुं परिज्ञान (जा- ३ त्रीजं संक्रीभृत-संज्ञा त्रण पकारनीछे १ दीर्घकालिकी, २ हेतुबादोपदेशीकी, तथा दृष्टिवादोपदेशिकी.

केम करवुं ? हवे केम थशे ? इत्यादिके करी अतीत तथा अ-नागत घणा कालनी घणा काल पर्यत विचारणा करवी ते दीर्घ-कालिकी संज्ञा जाणवी. तात्कालिक इष्ट अनिष्ट वस्तु जाणीने महित्त करवी ते हेतुवादोपदेशिकी संज्ञा. क्षयोपशम ज्ञाने सम्यग् दृष्टिपणुं होय ते दृष्टिवादोपदेशिकी संज्ञा जाणवी, विकलेंद्रिय असंज्ञीने हेतुवादोपदेशिकी संज्ञाले. संज्ञी पंचेद्रियने दीर्घकालिकी संज्ञाले. कारण के ते विचार चितवना करी शकेले, समकिती जीवने दृष्टिवादोपदेशिकी संज्ञा जाणवी. मन तथा इंद्रि-योथी उत्पन्न थयेलं जे ज्ञान तेने संज्ञीश्चत कहेले.

- ४ मन विना मात्र इंद्रियोए करी थयेछुं ज्ञान ते असंज्ञीतुं श्रुत जाणवुं.
- प पक्षपात विना कोई विषयना स्वरूपने जे यथार्थ जाणबुं तेने सम्यक्श्रुत कहेळे, अहत् प्रणीत आगमने सत्य मानबुं पक्ष-पात विना ते.
- ६ यथाबस्थित वोधना अभावधी मिध्यादृष्टिए अहत्पणीत अथवा मिध्यादृष्टि पणीत वाक्यादिकनुं जाणवुं एटले पक्ष-पात प्रमुख मुद्धिए करी कोइ विषयना स्वरूपने यथार्थ न जाणवुं तेने असम्यक्श्रुत कहेले.
- ८ शुतक्रान सादि पर्यवसितछे, तेमज अनादि अपर्यवसित पण छे.
- २० द्रव्यथी एक पुरूप आश्री लइए तो सादि सपर्यवसितछे, अने घणा पुरूषो आश्री लइए तो अनादि अपर्यवसित पणछे. भेत्रथकी भरत तथा अरवतने विषे ज्यारे तीर्थंकरनो तीर्थ

वर्तिछे त्यारे द्वादक्षांगी रूप श्रुत होयछे, अने ते तिर्थिनो निच्छेद थवाथी ते श्रुतनो पण विच्छेद थायछे, तेथी ते सादि सपर्वनासित जाण हुं. महाविदेहमां तीर्थनो विच्छेद श्रुतनो पण विच्छेद थतो नथी तथी त्यां अनादि अपर्यवसितश्चत जाण हुं. काल थी। उत्स- पिणि तथा अवसपिणीमां चोथे तथा पांचमे आहेरे श्रुतहान होय अने छहे आरे विच्छेद थायछे तथी सादि सपर्यवसित जान ण हुं. महाविदेह क्षेत्रमां एवं काल चक्र नहीं हो बाने लीथे त्यां श्रुत हान पण अनादि अपर्यवसित जाण हुं.

भावधी-भव्यासिदिआ जीवने ज्यारे सम्यक्तवनी माप्ति थाय छे त्यारे आदि अने केवलज्ञाननी माप्ति थायछे त्यारे अंत होवाधी सादि सपर्यवसित श्रुतज्ञान जाणवुं.

११ अग्यारमुं गमिकश्रुत ते ज्यां सूत्रना सरखा- आलावा आवे ते जाणबुं. दृष्टिवाद सूत्रमां जाणबुं.

१२ चारमं अगमिक श्रुत अणसस्त्वा अक्षरोना आलावा होप ,,,, ते जाणबुं, , ,,,

१३ तेरमुं अंग प्रविष्ट ते द्वादशांगीरूप जाणवुं.

१४ चौद्धं अंग वाह्यश्चत ते आवहयक तथा दशवैकालिकं जा-- णुर्चु तथा श्चतज्ञानना वीश भेद पण कर्मग्रंथ, विगेरेथी - जाणी लेवा.

## अवधिज्ञान स्वरूप.

अनुगामी, वर्धमान, मितपाति, अमितपाति, हीयमान, अर्न-सुगामी ए छ मकार गुण मत्यय अवधिज्ञानना छे. उक्तंचर नन्यः ध्युगामियं, वर्द्भाणयं, हीयमाणयं, पडिवाइ, अपतिवाइ, क्रिं

- १ प्रथम जे ठेकाणे अवधिक्षान उत्पन्न धयुं होय ते ठेकाणुं मू-कीने वीने देशांतर प्रमुख जाय त्यां लोचननी पेठे जे साथे आवे तेने अनुगामिक अवधिक्षान कहेळे. ज्यां पुरुष जाय त्यां साथे आवे ते.
- २ वीज़ं जे ठेकाणे रह्यां अवधिक्षान उत्पन्न थयुं होय ते स्थानके आवे तेवारेज होय. पण अन्यत्र स्थाने जाय तेवारे साथे न होय तेने अननुगामि अवधिक्षान कहे छे.

से किंतं णाणुगामीयं आहीनाणं ओहीन्नाणं तंजहा नामएगेइ पुरिसेगममहं जोइठाणं काउं तस्सेव जोइठाणस्स परि पेरं तेसुपरि-हिंडमाणे परिहिंडमाणे परिघोलमाणे तमेव जोइठाणं पासइ अन-ध्यगए न पासइ एतमेव अणाणु गामियं ओहिनाणं जध्येव समुप-ज्जइ तथ्येव संखिज्जाणि वा असंखिज्जाणि वा जोयगाइ पासइ न अन्नध्य.

, भाष्यकारोध्याह-अणुगामित अणुगच्छः गच्छंतं लोयणं जहा जहा पुरिसं इयरोत नाणु गच्छः ठियध्यः वन्त्रगच्छंतं-इति.

- ३ त्रीजं जे दृक्षि पामे तेने वर्द्धगानअवधिक्षान कहेछे, जेमके शळगतिअप्रिमां जेम जेम वळतग नाखीये तेम तेम वधती ज्वाला थायछे तेनी पेठे यथायोग्य प्रशस्त अंतिमशस्त्रतर अध्यवसायने लीवे पूर्वावस्थाथी ते उत्तरोत्तर समय समय वधतुं वेधतुं जाय तेने वर्षमान अवधिज्ञान कहेछे अर्थात् प्रथम उपनती वलते अंगुळन: असंख्यातमा भाग जेट छं क्षेत्र जाणे देखे पश्चात् वधतां वचनां यावन् अलोकाकानने विषे लोक जेवडा असंख्यातां खांडवां देखे.
- ४ चोयुं पूर्वे शुभ परिणामनने घणुं उपने पश्चान् तथाविध

सामग्रीनो अभाव थयाथी पडता परिणामे करी हानि पामे तेने हीयमान अवधिज्ञान कहेछे.

- ५ पांचमुं संख्याता असंख्याता योजन उत्कृष्टपणे यावत् समप्र लोक देखीने पण पडे एटले जे आन्युं जाय तेने प्रतिपाति कहेसे.
- ६ छडं जे उत्पन्नथया पछी शीणताने न पामे ते लोक समग्र देखीने अलोकना एक मदेशने देखे ते अमितपाति ज्ञान जाणबं. ते ज्ञान आच्यं जाय नहीं.
- प्रश्ने-हीयमान अने प्रतिपाति ए वन्नेनां लक्षणो तो सरखांछे तेम छतां जूदां वताववानुं शुं कारणछे ?
- उत्तर-पूर्वावस्थाथी हळवे हळवे घटतुं जाय एटले क्षीणताने पामे ते हीयमान कहेवायछे अने जे विध्मात मदीपनी पेठे एक कालने विषेज निर्मूल थायछे ते मतिपाति कहेवापछे. अवधिज्ञानना असंख्यात भेदछे, वळी अवधिज्ञानना चार मकारछे तथा चाह.

तंसमासओ चउन्विहं पत्रतं तंजहा दन्वओ खित्तओ कालओ भावओ दन्वओणं ओहीनाणी जहनेणं अणंताइं रुविदन्वाइं जाणइ पासइ उक्कोसेणं सन्व रूविदन्वाइं जाणइ पासइ, खित्तओणं ओही-त्राणी जहनेणं अंगुलस्स असंखेळाभागं उक्कोसेणं असंखिज्जाइं अलोए लोयप्पमाण मित्ताइं खंडाइं जाणइ पासइ कालओणं ओहि-त्राणी जहनेणं आवलियाए असंखिज्जभागं उक्कोसेणं असंखिज्जाओ उस्सप्पिणी अवसप्पिणी अतीयं च अणागयं च कालं जाणइ पासइ भावओणं ओहिनाणी जहनेणंवि अणंते भावे जाणइ पासइ उक्कोसेणं वि अणंतेभावे जाणइ पासइ सन्वभावाणं अणंतभागं.

अवधिज्ञानी द्रव्ययी जवन्ययणे अनंतारूपी द्रव्यने जाणे देखे

उत्कृष्टपणे सर्वरूपी द्रव्यने जाणे देखे ते द्रव्यथी अवधिज्ञान.

े क्षेत्रधी जवन्यवणे अंगुजनो असंख्यातमो भाग जाणे देखे अने उत्कृष्टवणे अलोकाकाशने विवे लोक प्रमाण असंख्यातां खांडवां जाणे देखे.

कालधी अवधिकानी जवन्यपणे आविलकानो असंख्यातमो भाग जाणे, देखे अने उत्कृष्टधी असंख्याती उत्सर्ष्पिणी अवसर्ष्पिणी पर्यंत अतीतकाल अनागतकाल जाणे देखे ते कालावधि क्वान.

भावथी अवधिज्ञानी जघन्यपणे अनंतभावने जाणे देखे अने जत्कृष्टथी पण अनंता भावने जाणे देखे ते भावावधिज्ञान जाणवुं.

## मनःपर्यवज्ञानस्वरूपं.

मनःपर्यव ज्ञानना वे भेदछे. एक रुजुपति, वीजो वियुलपति अमुक पुरुषे घट चिंतव्योछे एम सामान्यपणे मननो अध्यवसाय प्रहे ते रुजुपति जाणवुं.

तथा अमुक पुरुषे घट चिंतव्योछे ते द्रव्यथी मुवर्णनोछे, क्षेत्रथी पाटलीपुरनोछे. कालथकी शीतकालनोछे, अने भावथी पीतवर्ग मुकुमाळ द्रव्यादि विशेष ग्राहिणीमित तेने विपुलमित ज्ञान कहेछे.

अथवा मनःपर्यवज्ञान ४ चार मकारनुंछे, द्रव्य, क्षेत्र, काल तथा भावधी उक्तंच तं समासओ च उन्ति हं पत्रचं तं नहा द्व्यओ खे-त्रओं कालओं भावओ. द्व्यओं रिडमङ्गं ते अगंतपएसिए खंदे जाणइ पासइ ते चेव वि उलमङ् अन्भहियतराण विमल तराण् जाणइ पासइ.

भावार्य-द्रव्यथी रुजुमित अनंत मदेशी अनंता स्कंध जाणे देखे अने विषुलमित तेहिज स्कंध कांड्क अधिकेरा विशुद्धपणे जाणे देखे, भेषधकी रुजुमित नीचे रत्नभभा पृथ्वीतं धुङ्क मतर लगे अने उंचुं ज्योतिषिना उपरीतल लगे तीच्छुं अहीद्वीप वे समुद्र प्रश्नर कर्मभूमि त्रीश अकर्मभूमी अने छप्पन्न अन्तरद्वीपने विषे संज्ञी पंचेद्विय पर्याप्ताना मनोगत भाव जाणे देखे अने विपुलमित तेहिज क्षेत्र अही अंगुले अधिक देखे अने विगुद्ध देखे. कालयकी जधन्यपणे रुज्यित पर्योपमनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्टपणे अतीत अनागत जाणे देखे. अने विगुलमित तथी अधिक अने विगुद्धतर जाणे देखे. भावथकी रुज्यित अनंताभाव जाणे देखे. अने विगुलमित तथी अधिक अने विगुलमित तथी अधिक जाणे देखे.

### केवलज्ञानस्वरूप.

केवलज्ञान उत्पन्न थतांज समकाले सर्व पदार्थीना द्रव्य क्षेत्र काल तथा भाव जाण्यामां आवी जायले, तथा दीटामां आवी जायले, माटे केवलज्ञान एक प्रकारनुं ले.

आत्मानुंछे, केवलज्ञानमां मतिज्ञानादिनो अंतर्भाव थायछे, आत्मज्ञानी समकिती मुनिने शुद्ध ज्ञाननी माप्ति थायछे.

आत्मस्वरूपना उपयोग विना जे संसारमां चाले के तेनो तिल पीलक यंत्र द्वमनी पेठे संसारनो पार आवतो नथी.

कान्यना नवरस ज्ञानयी राची अने लाखो कान्य करों किंतु आत्मपदना उपयोग विना अन्य सर्व राखमां घत सींचननी पेठे निष्कल जाणवुं. तकिशास पण आत्मतत्त्वना उपयोग विना मिथ्याभावे परिणमेलं नरकादिक गति भ्रमण हेतुभूतले. ज्याकरण शास्त्रथी पण आत्मपद भिन्नले.

सारांशके-व्याकरण शास्त्र भणतां छतां पण जो आत्मानी ओळखाण थइ नहीं तो तेथी शुं धयुं ? अलवत आत्मतत्त्व झानमां व्याकरण हेतुभूतछे पण आत्मतत्त्वना रस्ता उपरदोराय तो लेखे थाय. व्याकरणभणीने वाद्विवाद मिथ्या करवाथी वैरविरोध क्लेश शनी उत्पत्ति थायछे. मारा जेवो कोण विद्वानछे ? सभामां मने कोण जीतनारछे ? इत्यादि अभिमानना आवेशमां सपढाइ जवार्यछे. माटे व्याकरण शास्त्र भणीने पण आत्मस्व निज्ञास्त्र थवुं. एज परमोपदेश रहस्पछे, आत्मतस्व जाणतां रागद्वेष क्रोध मान माया छोभ विगेरेनो नाश थायछे. वैरिवरोध कदाग्रहनो आत्मः तस्व जाणतां नाश थायछे. जेना अज्ञानथी संसारनी मायामां छपटावानुं थयुं अने जेना ज्ञानथी अनंतकाल पंयत चतुर्गत्यात्मक संसारमां जडवत स्वचेतना नष्ट मायः थइ परिश्रमण करखं पढयुं तेनुं जो ज्ञान थाय तो संसारनी उपाधिथी मुक्तज थाय अने अन्त्यद्भूत अनहद शुद्ध अखंड निर्मल शास्त्रत आत्मस्रुख अनुभन्वी शकाय. पोतानुं व्यां अज्ञान त्यां रागद्देष अने पोतानुं ज्ञान थतां स्योद्यथी अंधकार जेम स्वतः नाश पामछे तेम रागद्देष स्वतः नाश पामछे.

अन्यदर्शनियो पग आत्मतत्त्र ग्रंगान करे छे ते निचे ममाणे छे.
फकीर फकीर क्या कहो, फकीर जगत्का पीर;
फकीरसे तो ढुंढ निकाला, पूर्ण रूप अमीर.
श मन मारे तन वश करे, सोधे सकल शरीर;
दया धर्मकी कफनी पहेरे, आप रूप फकीर.
वेद वेद शुं कहो, वेद छे धर्म तारो;
वेदथी वस्तु छे न्यारी, अखंड तरखलो मारोः
इचा देखा तळाव देखा, न्हाया देवकी कुंड;
गोळकी गंगडीके उपर, मख्खीकी वहोत हे जुंड, श्रु

युपामें तो साहेब देखा, सुरत तुरतसें जपनाः ५ हा कहुं तो हे नहीं, ना कहो। न जायः हा ना के भितर, कीडी साकर खायः ६ शास्त्र भण्यो पुराण भण्यो, वेद तो मने खटक्योः अनंतरूपे प्रभुजी मारो, श्राकाशमाहि चटक्योः ७ जोगी जंगम सेवडो, सन्याशी दरवेशः; चक्ष सामे प्रभुजी दीठा, वृत्ति आतमदेशः ८ वगर पाणीना तळाव माहि, खील्यं कमळनुं फूलः; बत्ती विना अजवाळुं आपे, झगझगति तेनी ग्रल९ रत्नाकर सागर मांहे, गागर फूटी जायः; पाणी मांहे पत्थर लडे, अगम निगम परखायः १०

आवां अनेक भजनपर अन्य मतावलंबीयो गायछे, किंतु ए-कृति तेनो अर्थ करवाथी जेवो जोइएतेवो सम्यग् लाभ यतो नथी.

अनेकान्तमत ज्ञाता आत्मार्थि अत्रळाने पण सवळा तरीके परिणमावेछे.

आत्मज्ञानने माटे प्रयत्न करवो ते अति उपयोगीछे.

कथा मात्र कहेवाथीज जो आत्महित थतुं होत तो पुराणी-ओ बहु कथाओ कहेछे माटे तेमनुं तो कल्याण थनुं जोइए किंतु तथी कल्याण थतुं नथी. आत्मतत्त्वनुं ज्ञान नथी तो एक उदर पोषक कथाथी शुं थाय ? अलबत् कंइ नहीं. मनुष्योना मननुं रंजन करवाथीज जो धर्म थाय तो भाट चारण, नाटकीआ विगेरे मनमनरंजन करेछे ते मने धर्म थवो जोइए परंतु समजवानुं के आत्मधर्म समज्या विना अने आत्मधिंपणाना गुणो मगट्या विना जनमनरंजनताथी पोतानी वाहवाहमां आत्मधर्म साधी श-कातो नथी. माटे भव्यात्माओए कीर्ति, वाहवाह जनमनरंजनता मित लक्ष्य नहीं देतां आत्मधर्म जपर लक्ष्य देवुं. आत्मधर्म मित जेनी दृष्टि ते माणी त्रण भुवनमां पूज्यताने पामेछे, व्याख्यान द्रारा जनमनरंजनपर ध्यान आपवुं ते अयोग्यछे. भव्यात्माओ आत्महित शी रीते करे ते जपर लक्ष आपवुं, अने तेवा शुद्ध अंतः-करणना अभिमायथी उपदेश देवो ते स्वपर हितकारकछे.

परस्पर क्लेशोत्पाद्क वादधी कंइ आत्मिहित थतुं नथी.
गाली देवीने लंबी एवो वादतो वाघरीना गृहे पणछे परमार्थ श्र्न्य वादधी कायक्लेशादि मात्र फल्ले. आत्मतत्त्व रमण तथा
आत्मक्कान विना सर्व वात निष्फल्ले. व्याकरण, न्याय, वादादि
आत्मतत्त्वमां उपकारकले माटे तेमनुं स्वरूप जाणी तेमां रमण
करे तो वादादि सफल्ले. दीर्घ आयुष्यना अभावे अवश्य झातत्य
आत्मतत्त्वनुं अवलंबन करी रागादि दोषोनो नाश करवा
प्रयत्न करवो ए हित शिक्षाले.

आत्मानुं ज्ञान की नथी तो क्रिया कांडथी पण मुक्ति थती नथी, आत्मस्वरूपना उपयोगी मुनिराजनी सर्व क्रिया गुणनी खाण जाणनी, तद्धेतु, अमृत क्रियाना अधिकारी मुनीश्वरुष्ठे,

अध्यात्मसार ग्रंथे श्लोक.

अपुनर्वधकस्यापि, या किया शमसंख्रता । चित्रा दर्शन भेदेन, धर्मविष्ठक्षयाय सा क्षे अशुद्धापि हि शुद्धायाः कियाहेतुः सदाशयात् । ताम्रं रसानुवेधन, स्वर्णत्वमधिगच्छति २

शमभाव सहित विचित्रदर्शनभेदे अपुनर्वधी जे चोधुं गुंगठाणुं तेनी जे क्रिया ते पग यग्रपि धर्मना विव्रवे कर-नारी छे, तो पण भंछा आशय थकी अग्रह किया करे ते पण शुंद कहेवाय जेम ताम्र रसानुवेधे सुवर्गताने पामे है, तेम अत्र समजवुं, अन्योऽन्य क्रिया, विषक्ति रा, गरलक्रिया, तहेतुक्रिया, अमृताक्रिया ए पंच मकारनी किया जाणवी. तेमांनी आग्र त्रण किया त्याज्य जांणवी. तद्धेतु, अने अमृत क्रियानी माप्तिथी मुक्ति थाय छे, अनेकान्त मार्गमां कदाग्रह करवो नहीं, समयसिंधुनुं विंदुग्रही मकलावं तें व्यर्थ छे, मतकदाग्रहग्रस्तमना जीवोनी रागद्वेषयोगे सर्व क्रिया दुःखतं धाम एटले स्थान छे, स्वात्मोत्कर्ष मान पूजा कीर्त्तिने माटे परात्मापकर्षकारक कियावादी स्वात्महित निरपेक्ष पणाने लीघे साधन साध्य बुद्धि शुन्यताथी परमात्म पद साधी श्वकतो नथी, सापेक्षपणे व्यवहार निश्वय पूर्वक जिनाज्ञा साहत तद्वेतु अमृत क्रियानु अवलंबन करीने भव्यात्माओ अखंड निर्मल शाश्वत संखमय शिवस्थाननी प्राप्ति करे छे, जे भव्यो क्रियानुं अजीरणजे निंदा तेनुं सेवन करेछे ते मुक्तिपदना अधिकारी थता नथी, अ-मुकमां अमुक दोषछे, अमुक तो आम करेछे, इत्यादि परभाव परिणति र्ज्यां सुधी छे त्यां सुधी आत्तध्यान अने रीद्र ध्याननी क्रिया जाणवी. अंतर्द्धि यतां धर्मध्याननी क्रिथा थइ शकेन्छे, जगत्मां रोगो अनेक प्रकारना होयछे, तेमज औपधो पण अनेक प्रकारनांछे, कोइने उधरस थइ होय ते अग्रुक औषघथी मटे अने ते उधरस कोइने ते दबाधी मटती नथी. स्रतथी विहार करता मीयागाप आव्या त्यां श्री दुर्लभविजयजी साथे दीपाविजयजी तपस्त्री हता तेमने उधरस घणी हती, तेम ताव पण हतो ते गाममां मोटां मोटां मरचां खा-वाधी उधरस मटी नो भन्यात्माओने समजवानुं के भावरोगी जी-

वा अनेक मकारनाछे, कर्मरोग पण अनेक मकारनाछे, तेना उपर् धर्मनां औषधो पण अनेक मकारनांछे, कर्मरोगने टाळनार सद्गुरू वैद्यों पण अनेक प्रकारनाछे, कोइ जीवने कोइ धर्म औषध्यी लाभ थाय, कोइ जीवने कोइ मुनीश्वर वैद्यथी लाभ थाय, माटे पक्षपात करी एकान्तमतरूप कदाग्रहनुं अवलंबन करनुं नहीं, पंचमारके अरुपपुण्यवंत वहुपापकर्मीजीवो मायशः धर्मनुंनाम धरावी मारा तारा पणानी बुद्धि धारण करी पक्षपातरूपविषत् पान करी अ-नंतभवश्रमण करनारा थशे. अज्ञानरूप निद्रामां स्रतेलाने तो सद्गुरू महाराज सहेलाइथी जठाडी शकेले किंतु जे मत कदाग्रह पक्षपातरूप दारूनुं पान करीने अज्ञानरूप निद्रामां सुइ रहेलाछे ते पुरूषने तो गुरूपहाराज पनीश लाकडीओ मारीने आत्मस्वरूपे जगाडवाने समर्थ नथी. कारणेक ते विलकुल वेशुद्ध वनी गयाछे, सत्यतत्त्व समजवाने शक्तिमान्छे किंतु जेगे मतकदाग्रह रूप मदि-रातुं पान कर्युंछे, एवा पुरूपनी आगळ सत्यतत्त्वनी हित शिखा-मण गुरूपहाराजा आपेतो ते व्यर्थ जायछे, उलडुं ते गुरूपहाराजने पण निंद्य वचन संभळावेळे, केटलाक जीवो तो एवा होयछेके पो-नाना मतमां वेठुं ते खरूं अन्य सर्व खोटुं मानेछे तेवा जीवोने ज्ञानी गुरूपहाराज वहु प्रयासे सत्यमार्गे दोरेछे, व्यवहार अने निश्चय नयना जाण ज्ञानी गुरूपहाराजा क्रियावडे कर्मनी नाज करेछे, ए परमार्थः

" दुहा. "

आत्मोपयोगी साधुने, किरिया सद्युण धामः मतकदाप्रह लालचु, सहु किरीया दुःख टामः ११८ जलनी जपाधियकी, जदी अवस्था थायः तेवी जे जननी थती, सवमां ते भटकायः ११९ ( १६९ ) याच बाधु सर्वाक्रवाया बात्मधम साधा शहछ.

उपादान समजे नहीं, समजे नहीं निमित्तः कारण कार्य समजे नहीं, तत्त्वे शुं शुभ चित्तः १२० द्रव्यभाव समजे नहीं, वर्ते बाह्याचारः अनुपयोगिआत्मनो, पामे नहि भवपार.

भावार्थ-मथम दुहानो अर्थ उपर लखायोछे जलनी उपाधिथी जैम भिन्न भिन्न अवस्थाओ थायछे-एटले जेम जलमां लाल रंग नाखीए लाल देखायछे. पीळो रंग नाखीए तो जळ पीछं देखाय छे, लीलो रग नाखीए तो जल लीलंदेखायछे, एटलेजल अन्यनी साथे भिश्र थवाथी व्यवहार्यी स्वश्रद्ध रूपनो त्याग करेछे. तेम जे जीवो असत् संगतिरूप उपाधिना योगे जेवा मळ्या तेवा थई जायछे, ते भवमां अटकेछे, अर्थात् सारांशके-जे जीव पादरीनी संगतथी तेना उपदेशवडे इशुने पूज्यमाने, अने स्त्रीस्त धर्म स्वीकारे, कदापि ते जीवने कोइ वौध गुरुनी संगति थइ. वौधे कहां स्त्रीस्ति धर्म तो अनार्य धर्मछे, ते धर्मथी मुक्ति मळती नथी, बौध धर्म सत्यछे माटे ते स्वीकार. त्यारे तेना उपदेशथी बीच धर्म स्वीकारे, वळी तेने कोइ मुसल्मान मळ्यो तेणे कहां बुद्ध धर्म तो खोटोछे,सत्य धर्म तो खुदाकाहै, वुड धर्ममें तो अग्रुक ज्ञा कहाहै, ओ तो काफरोंका धर्म है, इसलिये खुदाका धर्म मानेगा तो दोझखमे पहेगा नहीं, एम मुसलमानना उपदेशथी मुसलमान धर्म स्वीकार्यो. त्यारे ते प्रकृपने कोइ वेदांति भळ्यो. वेदांतीए कणुं सर्व धर्मनुं मूळ वेदान्त छे, नेदधी मुक्तिनी माप्ति धायले. इत्यादि कथनथी नेदधर्मनो श्मीकार कर्यों, रगारे फोइ कालीका भक्ते कतुं. अरे मनुष्य तुं कालिकामी भक्तमा, कालिका े वैभवने आपनारिके मारे भारतिका तेम खुरीके, ं सूख मलतुं नथी,

इत्यादि कथनथी कालिकानो भक्त थयो. त रिवर्ळ नाहित हवा शि तेने मलपो तेण कशुं भला मनुष्य तने धर्म धुनाराओ छेतरे छे केमके ने चस्तु आपणी आंख देखाती नथी. ते वस्तुनी इस्ला राखनी ते न्पर्थ छे, कालिका तो पत्यरनी मृत्ति छे ते कंद फल आपना समर्थ नथी इत्यादि कथनथी नाहितक थाय इत्यादि अव-स्था ने मनुष्यनी थाय छे ते कदापि आत्म मुख पानी शक्तो नथी. कारण के ते अज्ञानी अभिवेकी अने श्रद्धा रहीन छे, तेथी भवभ्रमण कर्षा करे छे.

वळी जे भव्यो उपादान कारणने समजता नथी अने निभित्त कारण हुं स्वरूप पण जाणता नथी, अप्रुक्त कार्य अने ते हुं कारण अप्रुक्त ते पण समजी शकता नथी. साधन अप्रुक्त अने साध्य अप्रुक्त ते पण समजी शकता नथी एवा अज्ञानी जीवो हुं तस्त्रमां चित्त होतुं नथी.

दृत्य अने भावथी चारित्रने समजता न होय. फक्त ओघ-दृष्टिथी वाह्याचारमां धर्म मानी प्रवर्तो, आत्मतत्त्वनो उपयोग होय नहीं तेवा जीवो भवनो पार पामी शक्ते नहीं श्री यशांविजयजी उपाध्याय कहें छे के-

हाल.

ज्यां लों आतम तत्त्वनुं, लक्षण निव जाण्युं; त्यां लों ग्रणगणुं भलुं, किम आवे ताण्युं. आतमः १

ए प्रमाणे विचारतां आत्म तत्त्वाववीध विना क्रिया मुक्ति मार्गमतिकारणीभूत धर्ती नधी. हुं क्रिया कोने माटे करुं हुं, क्रियाघी शुं धायळे, क्रियानो कर्ता कोणळे ? एनी ययायोग्य समजण विना अनुपयोगताण परमात्मपदस्यमाध्यसंमिद्धि धर् करेछे यथा विनायकं प्रकुर्वाणों, रचयामास वानरं। विनायकनी सूर्ति वनावतां वांदरों रच्यों तेनी पेठे—आत्मानी अज्ञानताए अन्योन्त्य, विष्, गरल, ए त्रण क्रियानुं सेवन थायछे—अने ए त्रण क्रियाधी जीव अशुध्धपरिणतियांगे शुभाशुभ कर्मपुद्गलो ग्रही अनेक जन्म ग्रहतो त्रिविध तापथी पीडातो क्र्यातो दुःख संततिनो भोगी बनेछे. जड चेतननुं विशेषतः भेद ज्ञान थयुं नथी त्यां सुधी वहि-रात्मपणुं टलतुं नथी. अने वहिरात्मयोगे चेतन जड जेवो भासेछे, अने अज्ञानी जीव परवस्तुमां अहंत्व परिणाम धारतो जडता अनुभवेछे-श्री यशोविजयजी उपाध्याय कहेछे के—

हुं एहनो ए माहरो, ए हुं एणी बुद्धिः चेतन जडता अनुभवे, न विमासे शुद्धिः आतमः १ आतम अज्ञाने करी, जे भव दुःख लहीएः आतम ज्ञाने ते टळे, एम मन सद्दहीएः आतमः २

जात्माना अज्ञानथी जे भवदुःख परंपरा पमायछे, ते भव दुःख परंपरानो नाश आत्मज्ञान थतां थायछे अर्थात् आत्मज्ञान थतां अनादि काळथी परमां परिणमन थयुंछे ते टळेछे. रागद्वेप योगे जीव परवस्तुमां परिणमेछे अने यदा रागद्वेषनी परिणति टळेछे, तदा आत्मा परवस्तुमां परिणमतो नथी. ज्यां सुधी सम्यग् रीत्या आत्मस्वरूप जाण्युं नथी. त्यां सुधी जीव रागद्वेप परिणामे मोही वनेछे. आत्मज्ञानथी रागद्वेपनी परिणति उद्भवेछे, आत्मज्ञाने सहज स्वभावे रमतां रागद्वेपनी परिणति नाश पामेछे, आत्मोपयोगे स्थिरना थतां निर्विकार अखंड शाश्वत सुख भोगवाय छे, माटे आत्मोपयोगी साधुने सर्व धार्मिक किया सुखनी सानि भूत याग्छे, अज्ञानीने संवरना हेतुओ आश्रवरूपे परिणमेछे अने स्याद्वादरूपे जेणे आत्मतत्त्व जाण्युंछे एवा ज्ञानीने आश्रवना हेतुओ पण संवररूपे परिणमेछे, एम ज्ञानीओनुं कथनछे - प्रथम कीइ अपेक्षाए अजीवतत्त्वनुं ज्ञान करवुं जोइए. कारणे अजीवने अवयोधतां सहेजे तेथी भिन्नजीव जाण्यो जायछे, जीवाजीवादि नवतत्त्वोनो सम्यगववोध भेदज्ञान थवामां मुख्य हेतुछे.—

आत्मज्ञानथी मुनिवर्यो मुक्तिपद पाप्त करेछे. कलिकाल स-र्वज श्री हेमचंद्र पण कहेछे के—

#### श्होक.—योगशास्त्रे.

मोक्षः कर्मक्षयादेव, सचात्माज्ञानतो भवेत्। ज्ञानसाध्यं मतं तच, तद्धचानं हितमात्मनः १ न साम्येन विना ध्यानं,नध्याने न विना च तत्। निःकंपं जायते तस्माद्म,द्रयमन्योन्य कारणम् १

मोक्षपद माप्ति कर्माष्ट्रकक्षयतः धायछे, अने भवसंताति दृद्धि कारणीभूतकर्माष्ट्रकनो क्षय आत्मज्ञानथी यायछे. इत्यादियी विचारतां आत्मज्ञान धवुं एज सर्व शाखनो स्पष्ट रहस्यभूत उद्देश समजायछे. मतिज्ञान अने श्रुतज्ञानना योगे अत्ति नास्ति धर्मपय आत्मानुं ध्यान धायछे, अने ध्यान एण आत्मानुं समजवुं. ध्यानयोगे स्थिरता मग-टनां अनंन सुख अनुभवी आत्मा वनेछे, अने अनुभव ज्ञानयोगे भव्यात्मा सुखनो आस्यादी वनेछे. कोइ वस्तुपर राग नहीं अने फोइ वस्तुपर द्वेप नहीं एवी आत्मानी अवस्थाने साम्य अवस्था करेछे. सूर्यना समान ज्ञान सुगे मकाशी आत्मा समजवो. सूर्य अश्रयी भाच्छादित धर्ना नेना किरणोना मकाशनुं पग आच्छादन धायछे, वायुना योगे वादळां दूर थतां जेम सूर्य किरणोथी प्रकाशेछे तेम आत्मारूपसूर्य कर्मरूपवादळांथी अवरायोछे तेथी सर्व वस्तुओ आत्माना ज्ञानमां ज्ञेयरूपे भासती नथी. पण मतिज्ञानने श्रुतज्ञानना यांगे ध्यानरूप वायु वातां कर्मरूप वादळां आत्माधी दूर धायछे. त्यारे आत्मारूप सूर्य ज्ञानरूप किरणोधी लोकालोकने प्रकाशेले. ध्यानपरंपराए आत्मोपयोगीपणुं मुनिराजने सतत बन्धुं रहेछे, भावचारित्रनी पाप्ति विना आत्मोपयोगता वर्तती नथी. इव्य चा-रित्रयी कर्म नाश थतुं नयी, चारित्र शुं छे ? ते जे जीवो अझ-नयोगे समजता नथी, ते भाव चारित्रनो स्पर्श करी शकता नथी, भावचारित्र पाप्ति पति रजोहरण मुहपात्त साधुवेष दीक्षा आदि निमित्त कारणोछे, अने तेवी दीक्षा मत्येक तीर्थंकरोए ग्रही भाव चारित्र प्रगटान्युं, तेम अन्य भन्यात्माओए पण प्रभुना पगले चा-ली तेमनं अनुकरण करी भावचारित्र मगट करवुं, ते भाव चारि-त्रनी निर्पेक्षताए वाह्याचारमां सरागदृष्टिथी संक्षाता एवा जीवो उपयोगनी शुन्यताए संसाररूप समुद्रनो पार पामी शकता नथी.

प्रश्न-भाव चारित्र विना साधुवेप असमंजसछे तो ते केम ग्रहण करवो जोइए?

उत्तर-रजोहरण मुहातिथी युक्त माधुवेप अंगीकार करी जीव वाह्यप्रंथिनो त्याग करेछे ते आभ्यंतरप्रंथि नाश प्रति कारणछे। माटे दीक्षा अंगीकार करवाथी वाह्य उपाधि टळेछे. अने छकायना जीवोनी रक्षा थायछे, पंचमहात्रत पाळवाथी आश्रवना मार्गो नाश पामेछे. सर्वतीर्थंकरभगवंतीए एवी भागवती दीक्षा अंगीकार करीछे। अने तद्द्रारा विकल्य संकल्य त्यागी आ-त्मध्यानमां प्रवर्ती परमात्मवद साध्युं, माटे भन्यात्माए पण भागवती दीक्षा अंगीकार करवा प्रयत्न करवो। संसारमां गृहस्थावासमां वसी सर्वतः विरतिपणुं पामवुं मुक्केलले, माटे दीक्षा अंगीकार करतां राग द्वेपनी हीनता थतां आत्मस्वरूपे रमण करतां भावचारित्र मगटेछे, ए राजमार्ग जाणवी. मोक्ष पद छक्ष्यमां राखी सद्गुरू संगति करतां आत्मज्ञान मगटेछे. उपाधिमां अहर्निश राचीमाची रहेन!र गृहस्य जीवोने दुःख संतः तिरूप फलनी माप्ति थायछे। आत्मज्ञानना अभि ठापि पुरूपोए सट्गुरूनुं सेवन करवुं. सट्गुरू सेवनथी जे ज्ञान मळेछे ते तान्विक फलने ममटावेछे, अने ते ज्ञानधी संयमनं ग्रहण थायछे. अने संयमधी पोताना स्वरूपमां स्थिरता प्रगटेछे, अने स्थिरतायोगे जीव स्वगुणोने आविभीव रूपे मकाशेले. माटे द्रव्यचारित्र एटले साधुवेप दीक्षाअंगीकार पंचमहात्रत धारण आदि द्रव्यचारित्र कदापि असमंजस कहेवाय नहीं, भावचारित्रनी सापेक्षताए द्रव्यचारित्र निषित्त कारणीभूत आदरणीयछे. माटे भागवती दीक्षा अंगीकार करवी एन दिताकांक्षा-निज गुण स्थिरता तेज वस्तुतः चारित्र जाणवुं. व्यवहार चारित्रयी निश्चयचारित्र प्रगटेछे, आत्म परमात्मपद ए माटेज न्यवहार चारित्रिक्रियारूप कथ्युंछे। निश्चय चारि-त्रनी सापेक्षताए व्यवहारचारित्र समपाण निमित्त कारणछे.

शिथिलाचारी आल्सु, विषय वासना रागः कृष्ण सर्प सम ते ग्ररु, करवो तेनो त्यागः १२२ बहाचर्य उपदेश दे, मनमां ललना वासः कृष्णसर्पसम ते ग्ररु, संग न कीजे खासः १२३ भावार्य-वळी के शिथिल आचारवंत-धर्मध्यानमां आल्स परस्वभाव र्मणतामां तत्पर, वर्ळा जेना हृदयमां विषयवासनानो राग सदा बन्यो रहेतो होय. तेवा कुगुरूओ कृष्णसपसहश जाणवा, तेनो धर्मीभिछाषी जीवोए त्याग करवो जोहए. कृष्ण सप संगतिथी एकवार मृत्यु थायछे, अने एवा कुगुरूनी संगतिथी फिथ्यातत्त्वोपदेशं पामतां रागद्देष परिणित योगे अनेक जनम्यारण करवा पडेछे. वळी जे गुरू नाम धरावता ब्रह्मचर्यत्रत पाळवानो छपदेश आपछे. अने अंतर्मां स्त्रीनो वासछे एवा कृष्णसर्प सहश कुगुरूनी संगति करवी नहीं. विषयना जे रागी होयछे तेनी संगनियी आत्मा निर्विषयी बनतो नथी। विषयो विषना करतां पण अति दुःखदायकछे. कहां छे के—

স্থান.

्विषस्य विषयाणा च, दृश्यते महदंतरं उपञ्चक्तं विषं हंति, विषयाः स्मरणादपिः १

विष अने विषयोतुं महद् अंतर् देखायछे, विष तो खाधुं छतुं प्राणनी नाश करेछे. अने कामादिक विषयोतो स्मरण मात्रधी आत्माना गुणोने हणेछे तो जे विषयना संगी होय तेनी संगतिधी आंत्मिहित थतुं नथी तेवा कुगुरूओनी पण निंदा करवी नहीं। मनमां एम चिंतववुं के ए विषयना भिखारी अशुद्ध परिणितयोगे हेयब्रेय उपादेय विवेक शून्य चित्तवाळा थइ चिंतामणि रत्नसमान आत्मधमेनो अनादर करी परपुर्गछरूप ऐंडमां राचीमाची रहाछे, ए तेमनी भवितच्यतानो वांकछे, एम विचारी माध्यस्थपणे वर्ती तेमनी संगति त्यागवी. कुगुरूनुं छक्षण जणाववानुं गुरूप कारण ए छे के-भव्यजीवो जेवुं आछंवन मळे तेवा थइ जायछे, सार्च आछंवन मळे तो आत्मा सारा रस्ते वळेछे. अने नडारं आछंवन

( 988 )

हे तो आत्मा अधोगति भाक् थायछे माटे भव्यजीवो असत्य पालंबननो त्याग करी सत्य सद्गुरुख्प निमित्त कारणतुं अवलं-रन करे, एज हिताकांक्षाछे.

विषय त्याग वैराग्यता, वनितानो निह संगः धन कंचननो त्याग जास, नमीए सद्युरु चंग. १२४ विषयाशा मनमां मटी, मन मर्कट वश जास;

भवभीरु भ्रमणा मटी, तेना थइए दास. सुगुर लक्षण कथेछे-जेओए विषयना त्याम कयोंछे. अने किंव मन वैराग्यथी सतत वासीत थयुंछे. अने जे वनितानी संग करता नथी. धन कंचन ए उगाविछे. तथी विकल्प संकला उद् भवेछे. एम जाणी जेणे त्याग कर्योछे, एटले वहा पीरग्रहती त्याग कर्योछे. एवा सुंद्रगुरूने नमस्कार करीए, विषयनी आशा तृष्णाना अंकुरा जेना हृद्यमां उत्पन्न यता नथी। अने जेणे मन रूप मांकहुं वश कर्युंछे. अञ्चद राग द्वेपनी परिणति योगे मनमां आर्तिध्यान वा शैद्रध्यान थायछे, ते मन वश करवाथी थतुं नथी। चित्तने वश करतां विकला संकल्पनो नाश थायछे. मन वश करवुं ते अत्यंत दुर्नपछे. कोइ धनुष्पपारी खबुद्धि विचक्षणतापी रायावेध सहज मात्रमां साधी शके तेवी पण मनने पोताना बशमां करी शकतो नथी। यनः श्लोकः

चित्तमेवहि संसारो, रागादि क्वेशवासितं। तथैव तेविनिर्मुक्तं, भवान्त इति कथ्यते रागादि केशधी वासीन चित्त तेज संसारहे, अने रागद्रेपा- दिकथी रहित मन थतां भवान्त कथायछे. एवं चित्त पण जेणे वश कर्युंछे एवा सुगुरुमहामुनिराजने देखी प्राणी पण शान्त भावने पामेछे. तेमना उपदेशथी अनेक जीवोने सर्वज्ञ कथीत त-रवनी श्रद्धा धायछे. कोइ श्रावक व्रत अंगीकार करेछे. कोइ साधु व्रत अंगीकार करेछे, वळी जे सद्गुरू ज्ञान दर्शन चारित्रथी मोक्ष सुख आराधेछे, ते सद्गुरू मुनिराज चोराशी उपमाए बिराजीग होयछे ते ग्रंथान्तरथी जाणवी वळी मुनिराज अनेक उपमाओने धारण करनाराछे. यथा.

कंसे संखे जीवे, गयणे वाउय सारए सलिले ॥ पुरुवरपत्ते कुभ्मे, विहण खग्गय भारंडे ॥१॥

कंस पात्र समान उज्जवळ, शंख, जीव, गगन, वायु, शरद्ऋतु जरुं, कमलपत्र, काचवो, पंखी, खड्गी, भारंडपंखी, हाथी, वृषभ, सिंह, मेरुपर्वत, समुद्र चंद्र, सूर्य, सुत्रण, पृथ्वी, अग्निनी आदि उपपा-ओने घारण करनार मुनीश्वर जाणवा वळी मुनीश्वर लक्षण कये छे—भवभीरु—एटले संसारमां अनेक मकारनां दुःख भयीं छे, ज्यां सुधी संसारछे त्यां सुधी तात्विक सुख नथीं पुनः पुनः रागद्देषयी वीता होय माटे रागद्देषने सेवे नहीं. भ्रमणा मटी—जड वस्तुमां आत्मवुद्धि हती ते टळी हुं अने मारूं आवी भ्रमणास्य बुद्धि पर-वस्तुमां थती हती, ते भ्रमणा बुद्धिनो जेणे नाश कर्योछे, एवा म-हात्मामुनीश्वर आत्मतत्त्व साधी शकेछे, वळी जे पुरूष शिष्यभाव तथा वराग्यथी रहितछे एवा अनियकारी पुरूषने मायः उपदेश देवा पण मवृत्ति करता नथी। अन्य शास्त्रोमां पण कर्ह्यां के

श्लोक. नापृष्टः कस्यचित् बूया । त्रचान्यायेन पृच्छतः ॥ जानत्रपिच मेघावी, जडवछोकमाचरेत् ॥ १ ॥ विद्वान् मुनिवर्यं पश्च कर्या विना कोइनी साये वोछे नहीं, अन्यायथी पृच्छकने पण उद्देश करे नहीं, किंतु सर्वतत्त्वनो जाण छतो पण मेथावी जगत्मां जहनी पेठ विचरे वळी जे मुप्त मुन्ति जात्ममान तरफ धारणाछे, अनेक प्रकारनी वासनाओथी वासित चित्त ज्यां सुधी होयछे त्यां सुधी आत्मस्वरूप प्रतिलक्ष लागतुं नथी जेम मलीन दर्पणमां प्रतिविंव स्वच्छ पडी शकतुं नथी. ज्यारे दर्पणने राख विगरेथी उटकीएछीए त्यारे तेनी अं-दर स्पष्ट प्रतिविंव भासेछे तेम मनोरूप दर्पण रागद्देप तेमन अनेक प्रकारनी वासनाओथी युक्त होयछे त्यां सुधी तेनामां आत्मस्वरूप भास तुं नथी, पण ज्यारे रागद्देप इच्छा वासनारूप मळीनतानो नाश धाय छे त्यारे आत्मस्वरूप भासेछे, निर्मेळ चित्त जेतुं थयुंछे एवा मुनिवर्यो आत्मत्त्वना अधिकारीछे.अन्य के जेनां मन ममत्व वासनाथी मळीनछे एवा पुरूषो गृहस्थो—तत्त्व प्राप्तिमां अधिकारी नथी.

वळी मुनीश्वर निंदा वा स्तुतिथी संतुष्ठ थाय नहीं. कारण के मायाना फंदमां पडेळी दुनीया दोरंगीछे, कोइ कंइ कहे अने कोइ कंइ कहे, छोक की ति अने छोकनी स्तुति अर्थे जे आचरण आच-रवं ते मायानी वृद्धिने माटेछे पण आत्मसुख माटे नथी. माटे छोकेकी ति स्तुति कर वासनानो मुनि त्याग करे.—स्वकीय आत्मातुं हित कर कुं तेज योग्य छे,

यतः श्लोक.

विद्यते न खलुकश्चिदुपायः। सर्वलोक परितोषकरो यः। सर्वथा स्वहितमाचरणीयं। किं करिष्यति जनोबहुजल्पः

आ दुनीयामां एवो कोइ उपाय नथी के जेथी सर्व लोक स्तुति करे. माटे आत्मतत्त्वाधि पुरूषे लोकवासनानी सर्वथा परि- त्याग करी आत्महित आचरवुं छोकनी निंदा स्तुति तरफ देखवुं नहीं, नळी अन्य शास्त्रोमां कहां छे के—

श्लोक.

नं लोकिचित्तप्रहणेरतस्य । नभोजनाच्छादन तत्परस्य॥ न शब्दशास्त्राभिरतस्य मोक्षो।न चातिरम्यावसथप्रियस्य

नो पुरूष सर्व मकारसें छोकोंके चित्त रंजन करणे विषे भीतिवाजा है तथा जो पुरूष भोजन आच्छादन विषेहीं तत्ररहें. तथा जो पुरूष व्याकरणादिक अनात्मशास्त्र विषे अभिनिवेशवाछा है. तथा जो पुरूष अत्यंत रमणीय गृहो विषे मीति वाछाहै ऐसे पुरूषकुं मोक्ष माम होता नहीं, यातें मोक्षकी इच्छा करनेवाछे मुनि-वर्षकुं सा छोकवासना सर्व मकारतें परित्याग करणी चाहिये.

ए श्लोकथी १ण विचारतां मुनिवर्यने सर्वे मकारनी वासना-नो परित्याग थवो जोइए. वासनारहित मुनिवर्य अनेक मकारनां घार्मिक कार्य करतां वंधाता नथी.

अंतर्थी वासना आदिनो त्याग विना बहिरनो निष्फळ त्याग जाणवो. आत्माथी भिन्न सर्व जगत्ने देखनारा मुनिराजना हृदयमांथी सर्व वासनानो नाश थायछे.

असंख्यात प्रदेशी आत्मा तेन हुं परमात्माछुं, अन्य जडव-स्तुओं हुं नथी. अने अन्य जदवस्तुओं मारी नथी आ प्रमाणे दृढ निश्चय भावनाभावे, अने अंतर्थी न्यारो वर्ते. आत्माभिमुख चेत-नापणे वर्ते. एवा परमपूज्य करूगासागर मुनिश्वर महाराजना दास थइने रहीए. एवा मुनिना दास महानाग्य होय तो थवाय-एमनी सेवा चाकरीथी भवोभवनां दुःख नाश पामे. अने सर्व उ-पाधि देळे, आत्मा परमात्मरूप थाय. माटे भन्य सुशिष्योए एवा मुनिवर्यना दास थइ रहेवुं, एमनी आज्ञा मस्तके चढावबी. कदी एवा मुनिवरनी आज्ञानो छोप करवो नहीं, तेमनुं सदाकाल ध्यान स्मरण करबुं, तेमनी वैयायच्च करवी.

पश्च-गुरू अने मुनिमां आपना बोछवा प्रमाणे कंइ शेद स-मजाय छे तेनुं शुं कारण ?

उत्तर-त्रेण उपदेश देइ सम्पक्तर पमाहधुं होय ते धमाचार्य गुरू जाणवा.

ते मुनिराज छते पण धर्म प्राह्माथी धर्मा चार्य गुरू मुनिराज जाणवा. अने ते विनाना उपरोक्त छक्षण सहित जे होय तेवा रजोहरण मुह्यिना धारक मुनिराज जाणवा. समिकतदान दातृ- स्वधी वेमां एटछो भेद जाणवो. उपकारथी भेद जाणवो. हवे सर्व जीवने धर्मनी प्राप्ति केवा छक्षणधी थाय ते देखादेछे, अत्र मुनि तेमज श्रावकनो भेद पाड्या विना, बन्नेने हितकारक आत्म धर्म जाणी बन्नेने उपदेश आपेछे.

#### " दुहा "

रहीए आप स्वभावमां, लहीए तत्त्व स्वरूप ॥ आपोआप विचारतां, मिटे अनादि धूप ॥ १२६ ॥ जाति नहीं हे आत्मकुं, जस जाति अभिमान ॥ पामे नाहि ते धर्मने । नक्की मनमां जाण ॥ १२७ ॥

भावार्थ-मोक्ष पदमाप्त्यर्थम् आत्मस्त्रभावमां रमणता करवी जो आत्मस्त्रभावमां रमण करीए तो तत्त्व स्वरूप एटले परमात्म पद पामीए, वेष वदलो, देश वदलो, किंतु आत्मस्त्रभावमां रमणता विना मुक्ति नथी। परवस्तु संवंत्रे थता अनेक प्रकारना विकल्प संकर्षो तेने मनथी द्र हटावी क्षेत्रळ आत्मानुं ध्यान करवुं. आ- त्याग करी आत्महित आचरवुं. छोकनी निंदा स्तुति तरफ देखवुं नहीं, नळी अन्य शास्त्रीमां कहां छे के—

श्लोक.

न लोकचित्तग्रहणेरतस्य । नभोजनाच्छादन तत्परस्य॥ न शब्दशास्त्राभिरतस्य मोक्षो।न चातिरम्यावसथियस्य

नो पुरूष सर्व मकारसें छोकोंके चित्त रंजन करणे विषे मीतिवाछा है तथा जो पुरूष भोजन आच्छादन विषेहीं तत्नरहैं. तथा जो पुरूष व्याकरणादिक अनात्मशास्त्र विषे अभिनिवेशवाछा है. तथा जो पुरूष अत्यंत रमणीय गृहो विषे मीति वाछाहै ऐसे पुरूषकुं मोक्ष मान होता नहीं, यातें मोक्षकी इच्छा करनेवाछे मुनि-वर्षकुं सा छोकनासना सर्व मकारतें परित्याण करणी चाहिये.

ए श्लोकथी पण विचारतां मुनिवर्यने सर्वे प्रकारनी वासना-नो परित्याग थवो जोइए. वासनारहित मुनिवर्य अनेक प्रकारनां धार्मिक कार्य करतां वंधाता नथी.

अंतर्थी वासना आदिनो त्याग विना बहिरनो निष्फळ त्याग जाणवो. आत्माथी भिन्न सर्व जगत्ने देखनारा मुनिसजना हृदयमांथी सर्व वासनानो नाश थायछे.

असंख्यात प्रदेशी आत्मा तेन हुं परमात्माछुं, अन्य जहव-स्तुओं हुं नथी. अने अन्य जदबस्तुओं मारी नथी आ प्रमाणे दृढ निश्चय भावनाभावे, अने अंतर्थी न्यारों वर्ते. आत्माभिमुख चेत-नापणे वर्ते. एवा परमपूज्य करूगासागर मुनिश्वर महाराजना दास थइने रहीए. एवा मुनिना दास महाभाग्य होय तो थवाय. एमनी सेवा चाकरीथी भवोभवनां दुःख नाश पामे. अने सर्व उ-पापि दळे, आत्मा परमात्मरूप थाय. माटे भव्य सुशिष्योए एवा मुनिवर्यना दास थइ रहेवुं, एमनी आज्ञा मस्तके चढावची. कदी एवा मुनिवरनी आज्ञानो छोप करवो नहीं, तेमतुं सदाकाल ध्यान स्मरण करबुं, तेमनी वैयावच्च करवी.

पश्च-गुरू अने मुनिमां आपना वोलवा प्रमाण कंइ भेद स-मजाय छे तेनुं शुं कारण ?

उत्तर-त्रेण उपदेश देइ सम्पक्तर पमादधं होय ते धमाचार्य गुरू जाणवा.

ते मुनिराज छते पण धर्म पपाडवाधी धर्माचार्य गुरू मुनिराज जाणवा. अने ते विनाना उपरोक्त छक्षण सहित जे होय तेवा रजोहरण मुहपत्तिना धारक मुनिराज जाणवा. समिकतदान दातृ-न्वथी वेमां पटछो भेद जाणवो. उपकारथी भेद जाणवो. हवे सर्व जीवने धर्मनी प्राप्ति केवा छक्षणथी थाय ते देखाहेछे, अत्र मुनि तेमज श्रावकनो भेद पाडया विना, वन्नेने हितकारक आत्म धर्म जाणी वन्नेने उपदेश आपेछे.

### " दुहा "

रहीए आप स्वभावमां, लहीए तत्त्व स्वरूप ॥ आपोआप विचारतां, मिटे अनादि धूप ॥ १२६ ॥ जाति नहीं हे आत्मकुं, जस जाति अभिमान ॥ पामे नाहि ते धर्मने । नक्की मनमां जाण ॥ १२७ ॥

भावार्थ-मोक्ष पद्माप्त्यर्थम् आत्मस्त्रभावमां रमणता करवी जो आत्मस्वभावमां रमण करीए तो तत्त्व स्वरूप एटले परमात्म पद पामीए, वेष वदलो, देश वदलो, किंतु आत्मस्त्रभावमां रमणता विना मुक्ति नथी। परवस्तु संवंथे यता अनेक मकारना विकल्प संकल्पो तेने मनथी द्र हटावी केवळ आत्मानुं ध्यान करवुं. आ- त्मा पोते सुखनुं स्थानछे. आत्मा पोतानी मेळे ज्ञान गुणथी पोतानुं स्वरूप जाणेछे, हुं आत्मा सदा सच्चिदानंद स्वरूपनो घारण करनारछुं. हुं मायाथी न्यारोछुं. सर्व उपाधिथी हुं भिन्नछुं. मारूं पोतातुं स्वरूप रागद्वेष रहितछे तो हुं केम तेना एटले परपुर्ग-छनो संग करूं ? हुं अरूपी छुं तो रूपीवस्तुने केम पोतानी मानुं? हुं विज्ञातियी न्यारोछ तो माराथी भिन्न विज्ञातिय पुट्-गल द्रव्य तेने क्षेम पोतानुं मानुं ? मारा शुद्ध स्वरूपे हुं रमुं तो हुं अखंड आनंदमयछुं, विकरा संकरा रहित हुं छुं तो विकर्ण संकरपने हुं पोताना केम मातुं ? अने विकरप संकरप हुं केम कं ईं श अने ज्यां सुधी विकल्प संकल्प करूं त्यां सुधी सुखी केम थां है तेमज निविकेट एवं मारुं स्वरूप पण शी रीते पामुं है विरुत्य संकल्प करवा ए मारा आत्मानो छुद्ध स्वभाव नयी तो इवे हं स्थिर असंख्यपदेशमय उपयोगी थाउं १ अने गाढ निद्रा-नी पेंडे सर्व माया जाळने भूळी जाउं, तो मारो अनुभव आपो आप विचारतां थाय अने एम निर्विकल्प दशामां रहेतां आत्मशक्ति मारी आविभीवेपकाशे, क्षायिकभावे, द्रढध्यान संततियोगे आत्म गुणो स्फुरायमान थाय, विकल्प संकल्प श्रेणि परंपरानाश पामतां सहत्र अनुभव सुखराशि पगटे, अने अनादिकाल संलग्न आधि व्याधि उपाधिरूप धूप नाश पामे. सारांश के-आधि व्याघि उपा-विनां दुःखोतुं मूळ कारण कर्षनी मकृतियोछे. अने द्रव्य कर्षस्य प्रकृतियोत्तुं आत्मानी साथे जे वंधावुं ते रागद्देव परिणति याज्यछे.

रागद्देप परिणतिनी नष्टता ज्ञान ध्यानथीछे. आत्मा स्वस्त-भावमां रमण करेतो अनंत भवोपाजित कर्भराशिने दूर करेछे अनुक्रमे सर्व कर्म मक्कति विकृति समूलतः क्षय करी परमात्मपद आत्मविषे प्रगटावेछे, आत्मज्ञानथी प्रताहश सुखोत्पाचिज्ञान क्रि-

### यामां प्रवर्तवायी थायछे.

## आत्मानुं स्वरुप दर्शावेछे.

" जाति नहि हे आत्मकुं "-आत्माने जाति नथी एटले ब्रा-स्मण जाति, वणिक् जाति, कणवी, सोनार, छवार. देड, चंडाळ, इत्यादिजाति आत्मानी स्वरुपतः विचारी जोतां विलक्कल जणाती नथी. जाति देहकुलने आश्रितछे, आत्मा अरूपी तेथीन्यारोछे. माटे जातिमान् आत्मा नथी. कोइ जात्याभिमानथी हुं ब्राह्ममण छुं, हुं वणिकछुं, हुं रजपुत छुं, हुं कणबी छुं, एम अज्ञानयोगे जाति अ-ध्यास पोताना आत्मामांमानी छेछे ते आत्मपद माप्त करी शकतो नथी. वस्तुतः विचारी जोतां माछम पडेछेके जगत्व्यवहारमां जाति एक संज्ञा मात्र छे, आत्मामां सदा ब्राह्मणत्व क्षत्रिय-त्वादि जाति कदी रहेती नथी अने रहेशे पण नहीं, व्यवहारमार्गे जातिनी कल्पना छे पण ते वस्तुतः सत्य नथी माटे जातिनो अध्यास आत्मामां धारण करवाथी वहिरान्मपदनी माप्तिनो वियोग थतो नथी. जेम आकाशवां कोइ जाति नथी. तेम आत्मामां पण कोइ जाति नथी अभिमानवाळा जडजीवो आत्मअनात्म विवेक शुन्य वनी परमां अहं-ममत्त्वबुद्धिथी रागद्वेष परिणति भजी मानसिक अनेकशः संतापो अनुभवी आर्त रौद्रध्यान वश थइ अधोगति प्राप्त करेछे. " जस-जाति अभिमान " जेने जातिनुं अभिमान छे ते वाह्य पदार्थोमां धर्म मानेछे, जातिना अभिमानथी लोको परस्पर एक बीजानी निंदा करेछे, एक वीजाने जाति अभिमानथी हलका गणेछे. जात्यभिमा-नी जीव जातिमां राची माची रहेछे, उंची जातिवाळी कहेवातो होय तो नीच जातिवाळाने हलको गणेछे. पोतानी जातिमां राग वंधाय छे, अने अन्य जातिमां द्वेष वंधाय छे. पोतानी जातिमां ज धर्मछे अन्य जातिमां धर्म रहेतो नथी एम दृढवासनाथी भवमां मंघायछे.

माटे तेवा जीवो विहर् दृष्टिपणाथी चिदानंद आत्मामां सदा रहेला धर्मने मासः करी शकता नथी, जात्यभिमानी जीवनी अंतर्दृष्टि थती नथी, तेतो क्षणे क्षणे हुं ब्राह्मण छुं, हुं क्षत्रीयछुं, हुं वाणियोछुं, छुं एवी बुद्धि धारण करेछे, पण हुं ब्राह्मण नथी, हुं विणक् नथी, हुं क्षत्रिय नथी, एवी बुद्धि धारण करी शकतो नथी, श्री यशोविजयजी उपाध्याय पण समाधिशतकमां कहेछे के—

" दुहा. "

जाति देह आश्रित रहें, भवको कारण देह ॥ तातें भव छेदे नहीं, जातिपक्षरित जेह ॥ १॥

इत्यादिकथी विचारतां पण जात्यभिमानी आत्मधर्म साधी शकतो नथी, माटे आत्मधर्माधीं मुमुक्ष जनोए आत्मानुं स्वरूप स-मजवुं, अने वाह्य जात्याभिमानरूपभ्रमयुद्धि त्यागी अंतर्दृष्टिथी आत्मधर्म साधवो, परमार्थ शिक्षा इत्येवं.

' दुहा• "

िलंग देह उपर रहे, आतमथी छे भिन्नः तेमां शुं रंगाइये, रंगातां दुःख दीन. १२८ वर्णाश्रमना भेदथी, माने ज मन धर्मः सत्य धर्म ते निव ग्रहे, बांधे छलटां कर्म. १२९

भावार्थ—पुरुषलिंग वा स्नीलिंग आदि लिंग देहाश्रित छे, देह ज्यारे आत्माथी भिन्न छे, अलवत आत्मानी देह नथी त्यारे लिंग आत्मनुं कहेवायज केम ? पुरुपादि त्रणे लिंगो आत्माने क-भीपाधिना संबंधथीज कहेवाय छे, हुं पुरुष ए अभिमान मनुष्य धारण करतो मायान्य वनी हुं असंख्यमदेशी आत्मा एवा विवेक

भूली जाय छे, पुरुष लिंग प्राप्त थयुं ए कर्मना उदयथी छे, तेमां अहंता धारण करवी ते अज्ञानी जीवनुं छक्षण छे, पुरुष वा स्तीना अध्यासथी वंधातां आपणुं आत्मातुं श्रद्ध स्वरुप भूलीपुछीए, हुं अने मारुं ए अभिमानथी त्रण जगत्मां कोइ आत्मानंदानुभवी थयो नथी अने थवानो नथी माटे वस्तुतः वियधर्मसाधक भव्यात्माओ लिंग अध्यासथी केम परमां रंगावुं जोइए ? अर्थात् कदी पण लिं-गाध्यास मनमां स्फ़रवा देवो नहीं, अने एमां जो रंगार्थं तो दुःख वडे दीन एटले गरीव अवस्था माप्त थशे एमा संशय नथी. कोइ मर्दे पुरुषने चंपालाल, नपुंसक कहे तो त्वरित तेना मनभां आवशे. के मने नपुंसक कहेनार कोण ? एम संकल्प थतां क्रोधनो आवि-भीव थतां मुख तोवरा जेवुं फुली जरो. वखते चंपालालने त्रण चार अपशब्दो पण संभळावे, परस्पर एक वीजानो अपकर्ष करवा वाकी राखे नहीं, ए लिंगाभिमानतुं फळ छे. माटे विवेकनयना-धिष्टाताओए परमात्मपद पाष्ट्यर्थ अन्तर्देष्टि साधी एतादश अभिमा-नने त्यजवो, ज्यां सुधी छिंगाध्यास छे त्यांसुधी जीव हुं परमात्मा छुं एवी दृढ भावना धारण करवाना अभावे जन्म मरणनी उपाधि -संचय संग्रहेके.

वर्ण, तेमज आश्रमभेदे जे आत्मिकशुद्धधर्मनो भेद मानेछे,
ते शुद्ध शाश्वत आत्मधर्म प्राप्त करतो नथी, सत्यधर्म तेवा व्यवहारजडजनथी समजातो नथी. अने कदापि तेवा पुरुषनी आगळ
कोइ सत्य धर्मनु दर्शावे तोपण कदाग्रहग्रस्त थवाथी वचनामृतो
पण तेने विषवत परिणमेछे, अने सत्य धर्म ते आत्मानो पोताना सहज
स्वभावे सदाकाल पोतानाथी जरामात्र पण दूर नथी तेने अज्ञानान्धजीव विपरीत दृष्टिथी जाणी शकतो नथी.—जडमां आत्म धर्मना अभिनिवेशथी जलटां कर्म संग्रही तेना जद्ये अधोगित भजे छे, श्री

यशोविजयजी उपाध्याय पण समाधि शतकमां कहेछे के— ि लिंग देह आश्रित रहे, भवको कारण देह; तातें भव छेदे ननीं, लिंग पक्षरत जेह. जाति लिंगके पक्षमें, जिनकूं है दृढ राग; ताते भव छेदे नहीं, जाति पक्ष रित जेह.

- जाति लिंगना पक्षमां जेने दृढ राग छे ते भुवान्त कदापि करी शकता नथी. आत्माने जाति नथी के छिंग नथी जैम स्वम-मां अनेक प्रकारनी जातियो तथा छिंगो धारण करायछे, अने ते जागीने जोतां कंइ भासतुं नथी, तेम जाति अने छिंगाध्यास पण ज्यारे आत्माभिमुख चेतना थायछे त्यारे स्वमवत् लागेछे. हुं पुरुष वा स्त्री नथी. आ मंत्रनो मनमां १००८ वार जाप जरा श्राद्ध रा-खीने जिज्ञासु कर, पछे तारा मनमां केवा प्रकारना विचारो आ-वेछे ते विचार अने पहेलांना विचारोमां केटलो फेर पडेछे ते विवेकथी विचार. एकवार आ मंत्रपयोग श्रद्धाथी जे अजमावशे तेने अनुभवनी माछम पडशे, हुं चंपालाल, मनसुखलाल नथी एम अर्ध कलाक पर्यंत धारणा करवाथी प्रथमनी अवस्था अने चालती अंवस्थाना विचारोमां एक मोटो भेद पडतो पोताने माछम पडशे, अने आत्म धर्म पाप्त करवानी जिज्ञासानो उद्भव थहो. शुं त्यारे जाति लिंग मानवुं खोढुं छे, तो कोइ पाताने अमुक जातोवाळी कहीने वोलावे तो वोलवुं नहीं ? वा कोइ कहे के तुं पुरुष छे के स्त्री छै ? त्यारे एम कहे बुं के हुं तो पुरुष वा स्त्री पण नधी. आम जो वर्तीए तो चाले केम ? तेना मत्युत्तरमां समजवानुं के-अंतर्थी जाति वा छिंगनो अध्यास धारण करवो नहीं ? व्यवहारथी जाति बा िलंगना व्यवहारो कराय छे तेम करवा, पण अंतर्थी पोताना

मानवा नहीं. तेमज जाति वा लिंग आश्रित धर्म मानवो नहीं, ध-में आत्मानो अने धर्मी आत्मा अरूपी छे अने ते देह तथा जाति-थी भिन्न समजवो. ए ज परमार्थ.

कुलाचारनी रीतमां, जे माने मन धर्मः

धर्भ मर्म समजे नहीं, ले नहीं शाश्वत शर्म. १३०

भावार्थ-जे भव्यो अज्ञानदशाथी पोताना कुछना आंचार-मां धर्म माने छे ते धर्म मर्भ समजता नथी. अने धर्मज्ञानना अँभावे शाश्वत शर्म पामी शकता नथी. कुळाचारनी प्रदत्ति दरेकती भिन्न भिन्न होयछे, अने ते प्रमाणे सर्व मनुष्योनी प्रवृत्ति थया करेछे, ज्ञानी पुरुषो कूलाचारनी रीतिमां धर्म मानता नथी. प्रायः कूलाचा-रनी रीति जे देशमां जे धर्म चालतो होय तेनी मिश्रताथी थइ होय छे:-जैनोनी कुलाचारनी रीति जैन धर्म फीलोसोफीथी मिश्रितछे, माटे जैनोनी क्लाचारनी रीतिमां धर्मना हेतुओमानो अंतर्भाव वर्त्ते छे. माटे तेनाथी विपरीत वर्षेषुं नहीं-वाल जीवोने क्लाचारनी रीति पण व्यवहारथी धर्म साधनमां कारणी भूतछे आ वचन वो-लवामां दीर्घदृष्टिथी विचार करतां घणो उंडो परमार्थ समायोळें, ते अर्धदग्ध उपलक डोळ घाछ जनोना जाणवामां आवशे नहीं,-जैन धर्मनी सत्यताथी ते धर्म जे लोको आचरेछे तेनी क्लाचारनी रीति पण धर्मकारणमिश्रित होयछे, माटे श्रावकना कुलाचारे पण जे धर्मनी श्रद्धा-आचार ते श्रेयस्कर छे, जेम कोइ क्रवामां पाणी ( जल ) ना होय अर्थात् सुकाइ गयुं होय तो पण ते खोदवा गा-ळवाथी जलनी सेरो फूटी क्वामां पाणि नीकळशे,-तेम जैन धर्म पण कूळाचारथी पाळतां ज्ञानीगुरुनो संग थतां तेनुं रहस्य समजा-तां-समकीतनी पाप्ति थको, माटे समजु भव्यजनाए आ वावतना विचार करवो-हालनो समय मथमना जेवो नथी, माटे जेनीओए

नहीं समजतांपण लोकिक देवगुरुनो त्याग तेमज देवपूजा-गुरुवंदनजैन देरासरे जबुं अन्यत्र नहीं, ए विगेरे ओघथी पळाती आचार पण धर्म जुं अंग जाणी त्यागवो नहीं, ज्ञानियोनी दृष्टिमां ते हलको छे, पण वालजीवोने तेथी चढवानुं छे, श्रावक क्लमां उत्पन्न ,थएलो माणस एट छं तो समजरो के अरे हुं ती जैन छुं, मारो धर्म जैन छे, एम मानी अन्य धर्म मानशे नहीं, तेम गुरुनो संग थतां समजतो थरो-क्रूलथी पण जैन धर्म पालनार, क्लूजमां उत्पन्न थनार विशेष धर्म समजरो नहीं तो पण मारो जैन धर्म छे एट्छंपण धर्माभिमान आवशे माटे सापेक्षपणे विचारतां व्यवहारनयथी श्रावक कूला-चारमां पवत्त थनारने धर्मनो प्राप्तिछे, अन्य क्लळमां उत्पन्न थना-रने माटे नहीं,-एकांत वादीओ क्ळाचारमां धर्म मानेछे तेना नि-षेधपर आ वचन छे. जाति संबंधी पण अंतर् अभिमान त्याग क रवो. कोइ एम चिंतवे के आपणे वर्णावर्ण गण्याविना देड भंगी स्त्रीस्ति विगेरे सर्वनी साथे खावुं पीवुं, तेथी आपणो आत्मातो अ-भंडातो नथी, त्यारे तेनी साये खावा पीवामां शो दोषछे ? आम कोइ सडेल भ्रष्ट बुद्धिथी कहे तेनो प्रत्युत्तर के जे जातोनी साये खावापीवानो व्यवहार नथी तेनी साथे खावाथी जाति अभिमान टळ्युं कंइ कहेवातुं नथी, पण अंतर्मां जाति अभिमान विलक्त्ल नहीं रहेवाथी अभिमान टळ्युं कहेवाय छे. जाति अभिमान ज्यांथी उत्पन्न थायछे त्यांथी तेनो नाश करवो जोइए. एज मुख्य परमार्थछे, इत्यादि घणुं कहेवानुं छे पण विस्तारभयथी लख्युं नथी, द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावनो विचार करी चालबुं.

## ह्वे कुसाधु संबंधी कहेछे. " दुहा."

सत्य धर्म समजे नहीं, दे उल्हों उपदेश;
धर्म मर्म समज्या विना, अंतरमां व्हे क्लेश. १३१
स्नीविषयाशक्ति घणी, त्याग विराग न लेश;
मन चंचल जेनुं सदा, लजवे साधु वेषः १३२
शिष्य यइने रीसथी, वर्ते ग्रुक्ती साथ;
अ त्महित ते नहि करे, विनयी ले शिवपाथः १३३
क्पटी काळा कागडा, कुग्रुरु कर्मचंडाल;
संगकदो करवो नहीं, भवतस अरहट्ट माळः १३४
तच्चनो उपदेश अज्ञानी कुग्रुक्त्रों सत्य आणी शकता नथी.

भावार्थ-आत्मानं स्वरूप सम्यग् जाण्या विना जे गुरू एवं नाम धरावेछे, ते कुगुरू जाणवा, धर्मनो मर्म जरा मात्र समज्या विना आत्मापरमात्मानो उपदेश आपवा तैयार थइ जायछे, जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, मोक्ष, इत्यादिनुं किं-चिदपि ज्ञान होय नहीं, तेम छतां उपदेश आपे तेवा कुगुरूओ मन्मां क्लेश पामेछे, अने पोते पण बूढेछे, अने वीजाने पण बूढाढेछे, आ वचन लौकिक कुगुरू अने लोकोत्तर कुगुरूना उपदेशने उदेशी कहुंछे, सामान्यनीति शिक्षण हितशिक्षा तो परस्पर मनुष्यो एक वीजाने आपेछे, तेनुं आ ठेकाणे ग्रहण कर्यु नथी. फक्त धर्मना उपदेश माटे लखवानुंछे, धर्मनो उपदेश आपवाने साधुओने अधिकार हो, संसारमां राचीमाची रहेला श्रावकोने तो धर्मनो उपदेश आपन

वातुं क्यांथी होय ? माटे श्रावकवर्गने उद्देशीने पण छल्युं नथी. उपदेशनो अधिकार अधिकारी विना नथी. सामान्यतः श्रावक वांचे ते माटे ना नथी. हवे मूळ विषय उपर आवीये, छौकिक तेम छोकोत्तर कुगुरुओ अज्ञानदृशाथी पोते पोताना आत्माना वेरी थायछे. अने अन्य जनोना आत्माना पण वेरी वनेछे. पोते हिंसा करे, असत्य वदे, परवस्तु ग्रहे, अब्रह्ममां छीन होय, स्त्री परिग्रहना धारी होय अने अंतर्थी विष्टामां राची रहेनार भूडनी पेठे पौद्ग- छिक सुखमां अहर्निश अभिठाषी होय. एवा कुगुरुओ अधोगित भाक थइ, अनेक प्रकारना क्छेशो पामेछे.

जेना मनमां त्याग तथा वैराग्य छेश मात्र पण होय नहीं, अने ह्यी विषयोनी आशक्ति घणी होय अने हस्तिकर्णवत् वा वि
ह्युत्वत् जेनु मन चंचळताने भजतुं होय, एटछे परवस्तुमां मन र
मण करतुं होय एवा साधुनो वेष जो के धारण करेछे, तोपण

ते साधुवेषने लजवेछे. जेम कोइ मनुष्य वष्त्तर वगेरे पहेरी धु
ह्यां लडवा जाय अने ज्यारे लडाइ थाय त्यारे नासे. ते जेम

वीरपणाने लजवेछे तेम अत्र पण जाणवुं. दुःखगर्भितवैराग्य

वा मोहगर्भित वैराग्यथी दीक्षा अंगीकार करी पश्चात् अंतर् दृष्टि

विना वाह्यपीद्गलिक विषयोमां मन वर्चे, अने तेना योगे आ
र्त्तध्यानने राद्रध्याननो परिणामी वनी उपस्थी साधु वेषना सद्
भावे साधु कहावे, तो ते अवश्य पोताना आत्माने टगेछे, अर्थात्

तेने राग द्रेषनी अथुद्ध परिणति टगेछे.

वळी जे धर्मदानथी तथा धर्मोपदेश दानथी वा दीक्षा आपः वाथी पोताना गुरु तरीके जे होय अने पोते शिष्य होय तेम छतां रीसना हेतुओनो संवंध पामी रीसथी गुरुनी साथे वर्ते गुरुनी निंदा करे वा तेमनां द्पणो शोधे— तेमनोजपकार भूछी जह तेमनी आज्ञा माणे करे नहीं, तेवा अविनेय शिष्यो आत्महित करी शकता नथी, हराया होरनी पेठे स्वच्छंदाचारपणे वर्ती बहिरात्मदशामां आयुष्य निर्गमन करता आत्महित साधी शकता नथी. जे शिष्यो नम्र विनयी परमार्थना ग्राहक लज्जा, आदि गुणोथी अलंकृत छे ते शिष्यो मुक्ति मार्ग ग्रहेछे.

कपटभावथी परिपूर्ण कृष्णलेक्या अंतर्मां वर्तवाथी कृष्ण सर्प सहश, चंडाल सहश जे कृत्यो करता होय एवा कुगुरुओनो हे भव्यात्माओ संग करशो नहीं. एतादश कुगुरुओनी भवरुद्धि अ-रहद्दमाळन्यायवत् जाणवी. स्त्रीस्ति आदि कुगुरुओनी संगति चेपी रोग समान छे तथी सदा दूर रहेवुं, विशेषतः लौकिक कुगु-हओंने माटे आ वचन छे. कदापि संसारी जीवे ने कार्यवशात् स्त्रीस्ति आदिक कुगुरुओनी संगति करवी पडे तो पण तेमना वचन सांभळवा नहीं, अने तेमना उपदेशनी श्रद्धा करवी नहीं, कारण-के तेथी संसारनी दृद्धि थाय, मिध्यात्वनी दृद्धि करनार पादरीओ विगेरे कुगुहओं छे, माटे मोक्षार्थी जीव कुगुहनो त्याग करी सुगुह-ने भजे-सेवे. " दुहा. "

ममता त्यजी तुं बाह्यनी, अंतर्धनने देखः १३५ अंतर्घन ते धर्म छे, सत्यज मानी लेख. अरूप अंतर्धनतणी, रूद्धि रहारी पासः १३६ तेनी भ्रमणाए करी, करे शुं अन्य प्रयास. अन्य प्रयासे दुःख राशि, परपरिणति परतंतः परपरिणतिमां लीन जे, करे न भवभय अंत. १३७

# संसारी अवळा फरे, सवळा फरे फकीरः नमो नमो ते सद्युरु,:भयभंजन् वडवीर-

भावार्थ-हे आत्मा सद्गुरु संगत्या आत्मतत्व समजी बा-हानी एटले धन, धान्य, क्षेत्र, स्त्री, पुत्र, गृह, हाट, राज्यादि जे पर वस्तु तेनी ममता त्यजी हे चेतन तुं तारा अंतर्धनने देख-ज्ञान द्रशनचारित्र रुप अंतर् धन आत्मानी अंदर रहां छे तेने हे आत्मा निहाळ, अंतर् धन ताराथी दूर वा भिन्न नथी, अंतर् धननी पार्ति-थी अपूर्व शान्तिनो भोगी आत्मा वनेछे, अंतर्धन विना क्षायिक सुखनी प्राप्ति कदी थवानी नथी. दरेक ग्रंथोमां आत्म स्वरुपना हि-तने माटे विवेचन छे, सात नयथी सम्यग् आत्मानुं स्वरूप जाणवुं. एकांत पक्षथी आत्म स्वरुप जे जाणेछे ते सम्यग् परमात्मपदनी माप्ति सन्मुख थइ शकता नथी. आत्मानुं ध्यान मनन करवाथी आत्मगुणोनो आविर्भाव थायछे, ते संबंधी श्री दैवचंद्रजीए आत्म-स्तुति मीचे ममाणे करीछे.

## स्तवन-ध्यानदीपिका.

गुण अनंत धर जीवने, वंचे भवमे कर्म-धरोनिज भावना-ए टेक.

राग द्वेष मुख हि वहढचा. शत्रु हणु धरी ध्यान.	धरो०	
आतम लखो निज ज्ञानशुं, वाळी कर्म अज्ञान.	ध्	२
कर्म हणु तिम ध्यानशं, जेम न पडं भवमांहे.	ध्	
भवज्वर अज्ञाने नडया, नवि दीठो शिव राह.	ध०	₹
प्रमातम जग गुरु ठग्यो, निरस विषयने संग.	भ०	
सर्वज्ञ आत्म नवी लेखीयो, भ्रम अज्ञाने रंग.	ध०	8
आत्म स्वरूप पिछाणवा, ज्ञान दृष्टिए करी देख.	ध०	, *
पंच ध्येय अरु आत्मा, ज्ञान गुण एक लेखः	घ०	५

किमे उदय चडगति भर्मुं, निश्यय सिद्ध स्वरूपः ध० किमेने भर्जुं केम हुं, अनंत चतुष्टय भूपः ध० प्रतिनी आशा निज शक्तिग्रं, हुं आंद स्वभावः ध० छेद अज्ञान अनादिनो, आन लह्यो निज दावः ध० प्रम जाणी धीरज धरी, रागादि मल खोयः ध० ध्यावे आतम शक्तिग्रं, धर्म शुक्त ध्यान होयः ध० ध्यावे आतम शक्तिग्रं, धर्म शुक्त ध्यान होयः ध० ध्यान ध्येय स्वरूपथी, ध्यायो स्ववेद ध्यानः ध० ६० किमेहीन सर्वज्ञता, निर्मल शील भगवानः ध० १० किमेहीन सर्वज्ञता, निर्मल शील भगवानः ध० १० परमेश्वर परमात्मा, ध्येय स्वभाव पिज्ञािनः ध० ११ परमेश्वर परमात्मा, ध्येय अरूपी देवः ध० द्वयािभैक नय शास्त्रतो, ए परमातम सेवः ध० १२ मवद्रुम क्षयकर शुद्धले, ज्ञान धकी पर भिन्नः ध० १२ दर्शन ज्ञान आनंदमय, अक्षर विगत-विकारः ध० दर्शन ज्ञान आनंदमय, अक्षर विगत-विकारः ध० १४ शुद्ध अष्ठ गुण युक्तले, निर्मल अमेय अभेयः ध० १४ अणुधी पण जे सूक्ष्मले, थंभथी पण जे वृद्ध, जगत् पूज्य निर्भय सदा, परमातम शिव सिद्धः ध० १६ ध्याने कर्ष सह गले, जगगुरू अमल अरूपः	ं नित्य छतोछे सहज ते, केवळ गुण गुज मांहि.	ध०	
कर्मने भजुं केम हुं, अनंत चतुष्टय भूप.  तजी आशा निज शक्ति शुं, हुं आंद स्वभाव.  छेद अज्ञान अनादिनों, आन लहको निज दाव.  एम जाणी धीरज धरी, रागादि मल खोय.  ध्यावे आतम शक्ति शुं, धर्म शुक्त ध्यान होय.  ध्यावे क्रमें सर्वज्ञता, निर्मल शिल्ल भगवान.  ध्यावे कर्में निर्मल शिल्ल भगवान.  ध्यावे कर्में निर्मल स्थार करों, ज्ञान ध्याप आणि.  ध्यावे लहों मन स्थिर करों, ज्ञान ध्याप आणि.  ध्यावे लहों मन स्थिर करों, ज्ञान ध्याप आणि.  ध्यावे लहों मन स्थिर करों, ज्ञान ध्याप आणि.  ध्यावे श्रमें परमातमा, ध्येय अक्षी देव.  द्रव्यार्थिक नय शास्त्रों, ए परमातम सेव.  भवदुम क्षयकर शुद्धेंलें, ज्ञान थर्मी पर भिन्न.  घ० १२  दर्शन ज्ञान आनंदमय, अक्षर विगत निकार.  ध्रद्धेंद्र विणुं निकल गुणी, शान्त जाण शिववार.  ध्रद्धेंद्र विणुं निकल गुणी, ज्ञान्त जाण शिववार.  ध्रद्धेंद्र अष्ट गुण युक्तेंछें, निर्मल अमेय अमेय.  पर स्यागी अक्षय गुणी, ज्ञानीने आदेय.  अणुधी पण जे सूक्ष्मळें, थंभयी पण जे वृद्ध,  जगत पूज्य निर्मय सदा, परमातम शिव सिद्धः  ध० १६  ध्याने कर्म सह गळें, जगगुरू अमल अरूवः	मोह दाह त्यां पीडवे, ज्ञान अमृत ज्यां नांहि.	ध०	६
तजी आशा निज शक्ति शं, हुं आंद स्वभाव. ध० छेद अज्ञान अनादिनो, आज लहचो निज दाव. ध० ६ एम जाणी धीरज धरी, रागादि मल खोय. ध० ६ धावे आतम शक्ति शं, धर्म शक्त ध्यान होय. ध० ६ धावे आतम शक्ति शं, धर्म शक्त ध्यान होय. ध० ६ धावे स्ववेता, निर्मल शिल भगवान. ध० १० कमेहीन सर्वज्ञता, निर्मल शिल भगवान. ध० १० जड चेतन जीवादि ए, ध्येय स्वभाव पिछागि. ध० १० परमेश्वर परमातमा, ध्येय अरूपी देव. ध० द्रव्यायिक नय शास्त्रतो, ए परमातम सेव. ध० १० परमेश्वर परमातमा, ध्येय अरूपी देव. ध० द्रव्यायिक नय शास्त्रतो, ए परमातम सेव. ध० १० वर्षान क्षान आनंदमय, असर विगत निकार. ध० १० दर्शन ज्ञान आनंदमय, असर विगत निकार. ध० १० १० श्वर अष्ट श्रु अष्ट श्रु शुण युक्ति हो, निर्मल अमेय अभेय. ध० १० १० अणुधी पण जे सूर्मले, थंमथी पण जे वृद्ध, घ० १० १० अणुधी पण जे सूर्मले, थंमथी पण जे वृद्ध, ध० १० १० अणुधी पण जे सूर्मले, थंमथी पण जे वृद्ध, ध० १० १० अणुधी पण जे सूर्मले, थंमथी पण जे वृद्ध, ध० १० १० ४० अणुधी पण जे सूर्मले, थंमथी पण जे वृद्ध, ध० १० १० ४० अणुधी पण जे सूर्मले, थंमथी पण जे वृद्ध, ध० १० १० १० ४० ४० अणुधी पण जे सूर्मले, थंमथी पण जे वृद्ध, ध० १० १० ४० ४० ४० ४० ४० ४० ४० ४० ४० ४० ४० ४० ४०	ं केम उदय चडगति भमुं, निश्रय सिद्ध स्वरूपः	ध०	
छेद अज्ञान अनादिनो, आन लहचो निज दाव.  एम जाणी धीरज धरी, रागादि मल खोय.  ध्यावे आतम ज्ञाक्तियुं, धर्म शुक्त ध्यान होय.  ध्यान ध्येय स्वरूपथी, ध्यावो स्ववेद ध्यान.  ध्यान ध्येय स्वरूपथी, ध्यावो स्ववेद ध्यान.  ध्यान ध्येय स्वरूपथी, ध्यावो स्ववेद ध्यान.  ध्यान कहो मन श्यिर करो, ज्ञान ध्याण आणि.  ध्यान लहो मन श्यिर करो, ज्ञान ध्याण आणि.  ध्यान लहो मन श्यिर करो, ज्ञान ध्याण आणि.  परमेश्वर परमातमा, ध्येय अरूपी देव.  द्रव्यार्थिक नय ज्ञाश्वतो, ए परमातम सेव.  ध० १२  परमेश्वर परमातमा, ध्येय अरूपी देव.  इव्यार्थिक नय ज्ञाश्वतो, ए परमातम सेव.  ध० १२  परमेश्वर अर्थ अर्थ जुं, जोर्ण च्योतिमय.  इव्यार्थिक नय ज्ञाश्वतो, ए परमातम सेव.  ध० १२  दर्शन ज्ञान आनंदमय, असर विगत-विकार.  ध० १३  दर्शन ज्ञान आनंदमय, असर विगत-विकार.  ध० १४  श्रद्ध अष्ट गुण युक्तछे, निर्मल अमेय अमेय.  पर स्यागी अक्षय गुणी, ज्ञानीने आदेय.  अणुधी पण जे सुस्मछे, थंभयी पण जे वृद्ध,  जगत् पूज्य निर्भय सदा, परमातम ज्ञिव सिद्ध.  ध० १६  ध्याने कर्म सहु गळे, जगगुरू अमल अरूप.	कर्मने भज्ञं केम हुं, अनंत चतुष्टय भूप.	घ०	9
एम जाणी धीरज धरी, रागादि मल खोय.  ध्यावे आतम शक्ति छं, धर्म शक्त ध्यान होय.  ध्यान ध्येय स्वरूपथी, ध्यायो स्ववेद ध्यान.  कर्महीन सर्वज्ञता, निर्मल शील भगवान.  जड चेतन जीवादि ए, ध्येय स्वभाव पिठागि.  ध्यान लहो मन स्थिर करो, ज्ञान ध्याए आणि.  ध्यान लहो मन स्थिर करो, ज्ञान ध्याए आणि.  परमेश्वर परमात्मा, ध्येय अरूपी देव.  द्रव्यार्थिक नय शाश्वतो, ए परमातम सेव.  भवदुम श्रयकर शुद्धेले, ज्ञान थकी पर भिन्न.  जगत् सकल आदर्श ज्यं, जीर्ण ज्योतिमय.  दर्शन ज्ञान आनंदमय, असर विगत-विकार.  ध्व थ्व ग्रुण युक्तले, निर्मल अमेय अभेय.  पर स्थागी अश्चय गुणी, ज्ञानीने आदेय.  अणुधी पण जे सुक्षले, थंभथी पण जे वृद्ध,  जगत् पूज्य निर्भय सदा, परमातम शिव सिद्ध.  ध० १६  थ० १६  थ० १६	तजी आशा निज शक्तियुं, हुं आंद स्वभाव.	घ०	
ध्यावे आतम शक्ति थुं, धर्म थुक्त ध्यान होय. ध० १० ६ धान ध्येय स्वरूपथी, ध्यावो स्ववेद ध्यान. ध० १० कर्महीन सर्वज्ञता, निर्मल शिल भगवान. ध० १० जड चेतन जीवादि ए, ध्येय स्वभाव पिछागि. ध० ११ ध्यान लहो मन स्थिर करो, ज्ञान ध्याए आणि. ध० ११ परमेश्वर परमात्मा, ध्येय अरूपी देव. ध० द्रव्यार्थिक नय शाश्वतो, ए परमातम सेव. ध० १२ भवडुम क्षयकर थुद्धले, ज्ञान थकी पर भिन्न. ध० जात् सकल आदर्श च्युं, जीर्ण च्योतिमय. ध० १३ दर्शन ज्ञान आनंदमय, अक्षर विगत-विकार. ध० १३ दर्शन ज्ञान आनंदमय, अक्षर विगत-विकार. ध० १३ थ० दर्शन ज्ञान युक्तले, निर्मल अमेय अभेय. ध० १४ थ० युद्ध अष्ट गुण युक्तले, निर्मल अमेय अभेय. ध० १४ अणुधी पण जे सूझ्मले, थेमथी पण जे वृद्ध, जगत् पूज्य निर्मय सदा, परमातम शिव सिद्ध. ध० १६ ध्याने कर्म सह गले, जगगुरू अमल अरूप. ध०	छेद अज्ञान अनादिनो, आज लहचो निज दाव.	घ०	C
ध्यान ध्येय स्वरूपथी, ध्यावो स्ववेद ध्यान. ध० १० कर्महीन सर्वज्ञता, निर्भेळ जील भगवान. ध० १० जड चेतन जीवादि ए, ध्येय स्वभाव पिछागि. ध० ११ प्रमेश्वर परमात्मा, ध्येय अरूपी देव. ध० १२ परमेश्वर परमात्मा, ध्येय अरूपी देव. ध० द्रव्यार्थिक नय ज्ञाश्वतो, ए परमातम सेव. ध० १२ भवदुम क्षयकर शुद्धेले, ज्ञान थकी पर भिन्न. ध० जगत् सकल आदर्ज ज्युं, जीर्ण ज्योतिमय. ध० १३ दर्जन ज्ञान आनंदमय, अक्षर विगत-विकार. ध० १३ दर्जन ज्ञान आनंदमय, अक्षर विगत-विकार. ध० १४ शुद्ध अष्ट गुण युक्तले, निर्मेल अमेय अभेय. ध० १४ अणुधी पण जे सूक्ष्मले, थंभथी पण जे वृद्ध, जगत् पूज्य निर्भय सदा, परमातम ज्ञिव सिद्ध. ध० १६ ध्याने कर्म सह गळे, जगगुरू अमल अरूप. ध०	एम जाणी धीरज धरी, रागादि मळ खोय.	ध०	
कर्महीन सर्वज्ञता, निर्मेल जील भगवान.  जड चेतन जीवादि ए, ध्येय स्वभाव पिछागि.  ध्यात लहो मन स्थिर करो, ज्ञान ध्याए आणि.  परमेश्वर परमात्मा, ध्येय अरूपी देव.  प्रवचार्यिक नय ज्ञाश्वतो, ए परमातम सेव.  भवदुम क्षयकर शुद्धले, ज्ञान थकी पर भिन्न.  जगत् सकल आदर्श ज्युं, जीर्ण ज्योतिमय.  दर्शन ज्ञान आनंदमय, अक्षर विगत-विकार.  इदि विणुं निकल गुणी, ज्ञान्त जाण ज्ञिवयार.  ध० १४  शुद्ध अष्ठ गुण युक्तले, निर्मेल अमेय अभेय.  पर त्यागी अक्षय गुणी, ज्ञानीने आदेय.  अणुधी पण जे सूर्मले, थंभथी पण जे वृद्ध,  जगत् पूज्य निर्भय सदा, परमातम ज्ञिव सिद्ध.  ध० १६  ध्याने कर्म सहु गले, जगगुरु अमल अरूप.	ध्यावे आतम शक्तिशुं, धर्म शुक्त ध्यान होय.	ध०	९
जड चेतन जीवादि ए, ध्येय स्वभाव पिछागि. ध० ११ ध्यान छहो मन स्थिर करो, ज्ञान ध्याए आणि. ध० ११ परमेश्वर परमातमा, ध्येय अरूपी देव. ध० द्रव्यार्थिक नय ज्ञाश्वतो, ए परमातम सेव. ध० १२ भवहुम क्षयकर शुद्धछे, ज्ञान थकी पर भिन्न. ध० जगत् सकछ आदर्श ड्यं, जोर्ण डयोतिमय. ध० १३ दर्शन ज्ञान आनंदमय, असर विगत-विकार. ध० १४ शुद्ध अष्ट गुण युक्तछे, निर्मेछ अमेय अभेय ध० १५ अणुधी पण जे सूक्ष्मछे, थंभथी पण जे वृद्ध, घ० १५ जगत् पूज्य निर्भय सदा, परमातम शिव सिद्ध. ध० १६ ध्याने कर्म सहु गळे, जगगुरु अमल अरूप. ध०	ध्यान ध्येय स्वरूपथी, ध्यावो स्ववेद ध्यान.	ध०	
ध्यान लही मन स्थिर करो, ज्ञान ध्याए आणि. ध० ११ परमेश्वर परमात्मा, ध्येय अरूपी देव. ध० द्रव्यार्थिक नय ज्ञाश्वतो, ए परमातम सेव. ध० १२ भवहुम क्षयकर शुद्धेले, ज्ञान थकी पर भिन्न. ध० जगत् सकल आदर्श ज्युं, जोर्ण ज्योतिमय. ध० १३ दर्शन ज्ञान आनंदमय, अक्षर विगत-विकार. ध० इंद्रि विणुं निकल गुणी, ज्ञान्त जाण ज्ञिवयार. ध० १४ शुद्ध अष्ट गुण युक्तले, निर्मल अमेय अभेय. ध० पर त्यागी अक्षय गुणी, ज्ञानीने आदेय. ध० १५ अणुधी पण जे सूक्ष्मले, थंभथी पण जे वृद्ध, ध० जगत् पूज्य निर्भय सदा, परमातम ज्ञिव सिद्ध. ध० १६ ध्याने कर्म सह गले, जगगुरु अमल अरूप. ध०	कर्महीन सर्वज्ञता, निर्भेळ शील भगवान.	ঘৃ৹	१०
परमेश्वर परमात्मा, ध्येय अरूपी देव.  प्रविधारिक नय शाश्वतो, ए परमातम सेव.  भवदुम क्षयकर शुद्धछे, ज्ञान थकी पर भिन्न.  घ०  जगत् सकल आदर्श च्युं, जीर्ण च्योतिमय.  दर्शन ज्ञान आनंदमय, अक्षर विगत-विकार.  इंद्रि विणुं निकल गुणी, ज्ञान्त जाण शिवधार.  घ० १४  शुद्ध अष्ट गुण युक्तछे, निर्मल अमेय अमेय.  पर त्यामी अक्षय गुणी, ज्ञानीने आदेय.  घ० १५  अणुधी पण जे सूक्ष्मछे, थंभथी पण जे वृद्ध,  जगत् पूज्य निर्भय सदा, परमातम शिव सिद्ध.  घ० १६  ध्याने कर्म सहु गले, जगगुरु अमल अरूप.	जड चेतन जीवादि ए, ध्येय स्वभाव पिछागि.	ध०	
द्रव्यार्थिक नय शास्त्रतो, ए परमातम सेव. ध० १२ भवद्रुम क्षयकर शुद्ध छे, ज्ञान थकी पर भिन्न. ध० जगत् सकल आदर्श ज्युं, जीर्ण ज्योतिषय. ध० १३ दर्शन ज्ञान आनंदमय, अक्षर विगत-विकार. ध० इंद्रि विणुं निकल गुणी, ज्ञान्त जाण शिवधार. ध० १४ शुद्ध अष्ट गुण युक्त छे, निर्मल अमेय अमेय ध० पर त्यागी अक्षय गुणी, ज्ञानीने आदेय. ध० १५ अणुधी पण जे सूक्ष्म छे, थंभथी पण जे वृद्ध, ध० जगत् पूज्य निर्मय सदा, परमातम शिव सिद्ध. ध० १६ ध्थाने कर्म सहु गले, जगगुरु अमल अरूप. ध०	ध्यान लहो मन स्थिर करो, ज्ञान ध्याए आणि.	ध०	११
भवद्रुम क्षयकर शुद्ध छे, ज्ञान थकी पर भिन्न. घ० १३ जगत् सकल आदर्श ज्युं, जीर्ण ज्योतिपय. घ० १३ दर्शन ज्ञान आनंदमय, अक्षर विगत-विकार. घ० १४ शुद्ध अष्ट गुण युक्त छे, निर्मल अमेय अमेय घ० पर स्यागी अक्षय गुणी, ज्ञानीने आदेय. घ० १५ अणुधी पण जे सूक्ष्म छे, थंभथी पण जे वृद्ध, घ० पर प्राने कमें सह गले, जगगुरु अमल अरूप. घ० १६ ध्याने कमें सह गले, जगगुरु अमल अरूप. घ०		ध०	
जात सकल आदर्श ज्युं, जीर्ण ज्योतिमय. घ० १३ दर्शन ज्ञान आनंदमय, असर विगत-विकार. घ० १४ इंद्रि विणुं निकल गुणी, ज्ञान्त जाण ज्ञिवयार. घ० १४ शुद्ध अष्ट गुण युक्तले, निर्मल अमेय अमेय घ० १५ पर स्यामी असय गुणी, ज्ञानीने आदेय. घ० १५ अणुधी पण जे सूस्मले, थंभधी पण जे वृद्ध, घ० नमत् पूज्य निर्मय सदा, परमातम ज्ञिव सिद्ध. घ० १६ ध्याने कर्म सहु गले, जगगुरु अमल अरूप. घ०	द्रव्यार्थिक नय शाश्वतो, ए परमातम सेव.	ध०	१२
दर्शन ज्ञान आनंदमय, असर विगत-विकार. ध० १४ इंद्रि विणुं निकल गुणी, ज्ञान्त जाण ज्ञिवधार. ध० १४ भुद्ध अष्ट गुण युक्तले, निर्मल अमेय अमेय ध० १५ पर स्थागी असय गुणी, ज्ञानीने आदेय. ध० १५ अणुधी पण जे सूस्मले, थंभधी पण जे वृद्ध, ध० नगत् पूज्य निर्मय सदा, परमातम ज्ञिव सिद्ध. ध० १६ ध्याने कर्म सहु गले, जगगुरु अमल अरूप. ध०		ध्	
इंद्रि विणुं निकल गुणी, ज्ञान्त जाण जिवबार. घ० १४ शुद्ध अष्ट गुण युक्तले, निर्मल अमेय अमेय घ० पर स्थामी अक्षय गुणी, ज्ञानीने आदेय. घ० १५ अणुधी पण जे सूस्मले, थंमधी पण जे वृद्ध, घ० जगत् पूज्य निर्मय सदा, परमातम ज्ञिव सिद्ध. घ० १६ ध्थाने कमें सहु गले, जगगुरु अमल अरूप. घ०	जगत् सकल आदर्श ज्युं, जीर्ण ज्योतिषय.	धo	१३
शुद्ध अष्ट गुण युक्त छे, निर्मल अमेय अमेय धि० पर त्यामी अक्षय गुणी, ज्ञानीने आदेय. ध० १५ अणुधी पण जे सूक्ष्म छे, थंभधी पण जे वृद्ध, ध० जगत् पूज्य निर्भय सदा, परमातम ज्ञिव सिद्ध. ध० १६ ध्थाने कर्म सहु गळे, जगगुरु अमल अरूप. ध०	दर्शन ज्ञान आनंदमय, अक्षर विगत-विकार.	ध०	
पर त्यागी अक्षय गुणी, ज्ञानीने आदेय. घ० १५ अणुधी पण जे सूक्ष्मछे, थंभथी पण जे वृद्ध, घ० जगत् पूज्य निर्भय सदा, परमातम ज्ञिव सिद्ध. घ० १६ ध्याने कर्म सहु गळे, जगगुरु अमल अरूप. घ०	इंद्रि विशुं निकल गुणी, शान्त जाण शिववार.	घ०	\$8
अणुधी पण जे सूक्ष्मछे, थंभथी पण जे वृद्ध, ध० जगत् पूज्य निर्भय सदा, परमातम शिव सिद्ध, ध० १६ ध्याने कर्म सहु गळे, जगगुरु अमल अरूप. ध०	शुद्ध अष्ट गुण युक्तछे, निर्मल अमेय अमेयः	ध०	
जगत् पूज्य निर्भय सदा, परमातम शिव सिद्ध. ध० १६ ध्याने कर्म सहु गळे, जगगुरु अमल अरूप. ध०		ध०	१५
ध्याने कर्म सहु गळे, जगगुरु अमल अरूप. ध०	अणुधी पण जे सूर्मछे, थंभथी पण जे वृद्ध,	ध०	
	जगत् पूज्य निर्भय सदा, परमातम शिव सिद्ध.	भ०	१६
निण जाणे सहु जाणीये, जाय अविद्या धूप. ध् १७	निण जाणे सहु जाणीये, जाय अविद्या धूप.	্ধ্৹	१७
तत्त्व दृष्टि निज थीर हुवे, जाणे निज अनुभूति. ध०	तत्त्व दृष्टि निज थीर हुवे, जाणे निज अनुभूति.	न्न०	

***************************************	~~~~~	124
धरो ध्येय ज्ञेय आदेय ते, अंतर आतम भूत.	ध॰	१८
वचन अगोचर भ्रम विता, चितवी सहज अनंत.	ध०	
जास ज्ञानमें अंशज्युं, मावे द्रव्य अनंत.	ध०	36
आत्म ज्ञानधी आत्मने, जाण्यां थाये सिद्धिः	ध०	
मुनि तन्मय गुण तिहां छहे, तजी ग्रहीका नहीं छव्धि.	ध०	२०
े लीन थइ ग्रहे एकता, ध्याता ध्यान सुध्येय	ध०	
परमात्मा अंतरात्मा, एक अभिन्न अमेय.	ध०	२१
कटमें कट कत्ती तणी, दिसे दुविधा रीति.	ध०	
पण ध्यान ध्येय ए आत्मा, एथी नवीय परतीत.	ध०	२२
भवमें भम्यो अज्ञानथी, विण लाघा निज नाण.	ध०	*
परम ज्योति जग दुःखहरु, तेहिज अनुभव जाण.	ध॰	२३
भावे एम निज भावना, ध्यान वीज गुणधाम.	ध०	
देवचंद्र सुख सागरु, ध्यान अमूलख पाम.	ध्	२४
श्री देवचंदजी पण ए प्रमाणे आत्म स्वरूपनं वर्ण	निक	रेछे.

श्री देवचंद्रजी पण ए प्रमाणे आत्म स्वरूपनुं वर्णन करेछे.

गुण विशिष्ट आत्माने संसार चक्रमां वर्ततां आत्मस्वरूपनी अनुपयोगताए परस्वभावमां रमणपणाथी परपुद्गलरूप जे कर्म तेनुं
ग्रहण समय समय मित थतुं जायछे, माटे हे चेतन स्वस्वरूप रमणता रूप निजभावनानो दृढ प्रयास अने स्थिरताथी आदर कर.
अनादि कालथी तुं परभाव एटले पुद्गल द्रव्यना वर्ण, गंध, रस स्पर्भ,
मय पर्यायोनी लालचमां—तृष्णामां, ग्रहणमां, ममत्त्वमां, पराभिम्रुख
चेतना करी अशुद्ध परिणित धारी, स्वभान भूली लोभायो पण
परवस्तु पोतानी थइ नहीं जलहं राग द्वेपनायोगे पुद्गल द्रव्यने आकर्षां कर्मरूप परिणमावी अनेक योगिमां विचित्र देही धारी स्वऋदिनुं आच्छादन करी परपुद्गुल भोगी थइ राजा जेवो पण तुं

रंक वन्यो, राग द्वेषरूप शत्रुने हणी आत्मीयध्यानमां प्रष्टत्त याज, अने ज्ञान शक्तिथी निजस्वरूप जाणुं आत्मज्ञान थतां परमां वंधाएलो अज्ञानाध्यास स्वतः दूर थायले, आत्मा निर्मल थतां परमात्मा कहेवायले—तेनुं स्वरूप कहेले.

श्लोक.

साकारं निर्गताकारं, निष्क्रियं परमाक्षरं । निर्विकल्पं च निःकंपं, नित्य मानन्दमन्दिरम् । १

आत्मा ज्ञानरूप उपयोगथी साकार छे, तथ दर्शनरूप उपयोग्या निराकार छे तथा आत्मा निष्क्रिय निश्चय नयथी जाणवो. प्रश्न-शरीस्थ आत्मा साक्रिय छे, अनेक मकारनी खावा पीवानी गमनागमनी क्रिया करे छे, छतां ते निष्क्रिम क्रेम जाणवो ? उत्तर—उयां सुधी जीवना मदेशोनी साथे कर्म छाग्युं छे त्यां सुधी ते साक्रिय छे—अने कर्मनो नाश सर्वथा थतां निर्मल सिंद्ध बुद्ध परमात्मा निष्क्रिय छे. शरीरस्थ आत्मा व्यवहार नयथी सिक्रिय छे कर्मनो संबंध छे माटे, अने निश्चयनयथी अक्रिय जाणवो. वस्तुतः आत्मानुं जेवुं स्वरूप होय तेवुं निश्चयनय वर्णवे छे, माटे आत्मानुं वस्तुतः ध्यान करतां निष्क्रिम भाववो, अने छे पण निष्क्रिय.

परमाक्षरं-क्षर एटले खरवुं, पोतानुं स्त्ररूप वदलवुं, परम ए-टले सर्वोत्कृष्टपणे पोतानुं स्त्ररूग निहे फेरवनार आत्माले, अनादि कालधी विभाव दशाणोगे भवचक्रमां आत्मा परिश्लमेले तोपण तेना असंख्यात पदिश्रमांथी एक प्रदेश पण खरी गयो निहे, तेमज अनंत गुणोमांनो एक गुण पण खरी गयो नधी, माटे आत्मा अक्षर, ।नदृष्टिधी जाणवो, यद्याप आत्माना मदेशोनुं तथा गुणोनुं कर्मधी आच्छादन थयुंछे तोपण मदेशो तथा गुणोनो नाश थयो नथी तेम पण थवानो पण नथी त्रण कालमां अक्षर रूप आत्माछे. प्रश्न—परमाक्षर असंख्यात प्रदेशी आत्मा कीडी अने हाथीना शरीरमां एक सरखो केम मनाय ? कीडी ग्रं शरीर छोडी ज्यारे हाथी ग्रं शरीर धारण करे त्यारे तेनो विकास थयो, अने ज्यारे हाथी ग्रं शरीर त्यागी कीडी ग्रं शरीर धारण करे त्यारे आत्मानो संकोच थयो, असंख्य प्रदेशी आत्मानो संकोच विकास थयो त्यारे ते नाना शरीरमां लघु अने मोटा शरीरमां महान थयो त्यारे आत्मानं एकसरखं रूप रहं नहीं, देहमात्र व्यापी जीव थयो तेनं केम ?

उत्तर—

गाथा.

जह पडम राय रयणं, खित्तं खीरं पभासयदि खीरं॥ तह देही देहथ्यो, सदेहमत्तं पभासयदि १

छाया.

यथा पद्मराग रत्नं, क्षिप्तं क्षीरे प्रभासयति क्षीरं; तथा देही देहस्थ, स्सदेह मात्रं प्रभासयति

भावार्थ-पद्मरागरत्न दुग्धशी भरेला वासणमां नांलीए तो ते रत्नमां एवो गुण छे के-तेनी प्रभाशी सर्व दुग्ध तद्वर्गमय यइ रहेले. जो नानी वाटकीमां दुग्ध भरी अंदर पद्मरागरत्न नांलीए तो पद्मरागना रंग सरखं सर्व दृध थइ जायले. तेमज मोडं कुंडं होय तेमां दृध भरी पद्मराग रत्न नांलीए तो ते रत्ननी प्रभा तेटला सर्व दूधमां व्यापी जायले. तथा संसारी जीव पण अनादि काळथी कषायोद्दारा मलीन थतो शरीरमां रहेले. शरीरमां असंख्यात मदेशोवडे व्याप्त थइ रहेले, स्तिग्ध पौष्टिक आहारथी जेम जेम शरीर प्रमात्मदर्शन.

द्धि पामेछे, तेम तेम शरीरनी अंदर रहेला आत्म मदेशो पण तेटला गरीरमां व्याप्त थायछे, मोटा शरीरमां जीवपदेशो विस्तारपूर्वक रहेडे, नाना शरीरमां शरीरने व्यापी रहे तेवी रीते आत्मपदेशो रहेछे, असंख्यात पदेशनी व्यक्ति स्वरूप जीव जाणवी, जो के आ-त्मा शरीरादि परद्रव्यथी जुदोछे तोपण संसार अवस्थामां अनादि कर्म संबंधथी नाना प्रकारना विभाव भाव धारण करेछे ते विभाव भावोथी नवीन कर्मवंय थायछे, वळी ते वांघेलां कर्मोना उद्यथी फरी एक देहथी देहान्तर धारण करेछे, अने तेम अशुद्धकारक चक्रथी संसारद्यद्ध पामेछे, संसार अवस्थामां जीव कर्मसहित होय हे अने मोक्षदशामां कर्मरहित आत्मा सादि अनंतभंगें सदा समये समये अनंत सुख भोगवतो वर्तेछे, संसारी यद्यपि आत्माछे तोपण तेनी सत्ताथी अक्षरछे, तथा सत्तातः निर्विकल्प आत्मा जाणवी, विकल्प संकल्प मनना योगे थायछे, विकल्प संकल्प योगे राग द्वेषमां आत्मा परिणमेछे, हुं आत्मा ज्यारे विकल्प रहीतछुं तो केम विकल्प संकल्प करूं ? परभावमां रमतां विकल्पादि उद्भवेछे, माटे परभावमां रमणता निवारवी, वाह्यहिष्ट योगे आत्मा परभावमां प-रिणमेछे माटे मुमुन्न भव्यजनोए वाह्यहिष्ट मचार वारवा माटे अं-तर्दिष्टिथी आत्मधर्म तरफ क्षणे क्षणे लक्ष्य आपवुं, अंतर्देष्टि थतां बाह्यवस्तुमां परिणमेलो मननो वेग अटकतां मन अंतरात्मा पति वळेछे, एम मितदिन सतत दृह अभ्यास थतां पोतानी ऋहिनो स्वयं अनुभव थायछे. क्षंबुं छे के-

बहिर्देष्टि प्रचारेषु, सुद्रितेषु महात्मनः । अंतरेवावभासंते, स्फुटाः सर्वाः समृद्धयः ॥ १ ॥ महात्माने वहिर्देष्टिनां प्रचारो वंध थए छते पोताना आत्मा आत्माथी न्याराछे, चक्षुथी देखाता आकारो अने स्वप्तमां देखाता आकारो पुद्गल द्रव्यनाछे, अने पुद्गल द्रव्यथी आत्मा त्रणे कालमां निश्चयनयतः जोतां भिन्नछे, माटे भिन्न वस्तुमां आत्मपणानी चुद्धि भ्रांति मात्रछे, माटे जेवी स्वप्तमां देखाता पदार्थोमां मारापणानी चुद्धि खोटी तेना सरखीज चक्षुषा देखाता पदार्थीमां मारापणानी चुद्धि खोटी जाणवी.

प्रश्न—त्यारे चक्षुथी देखाता सर्व पदार्थी असत्य समजवा? अने जो ते असत्यछे तो तेमां ममन्त्र भाव केम उत्पन्न थायछे?

प्रत्य न्यस्थी देखाता सर्व पदार्थो पुद्गलना पर्यायोक्षपे सत्य एटले अस्तित्व युक्त जाणवा, अने तं पुद्गल पर्यायक्षप पदार्थों आत्मस्वक्षपे नथी एटले आत्माथी भिन्नले, आत्मपणुं तेमां कंइ नथी माटे आत्मअवेक्षाए ते असत्य जाणवा, आत्मद्रव्यमां पुद्गल पर्यायक्षप पदार्थों अस्तित नथी किंतु आत्मद्रव्यमां पुद्गल पर्यायक्षप पदार्थों नी नास्तिता सदा समये समये परिणमी रहीले, तद्षेक्षया असत्य जाणवा, अने पुद्गलक्षे ते सत्य जाणवा, माटे पुद्गल वस्तुओ ज्ञानदृष्टिथी जोतां आत्माथी अत्यंत भिन्नले तेमां मारापणानी वृद्धि अज्ञान तथा मोहथी उत्पन्न थायले, ज्यारे अज्ञान नाज्ञ थतां ज्ञान प्रगटेले त्यारे मोहनो नाज्ञ थतां परवस्तुमां थती अहंममत्ववृद्धि नाज्ञ पामेले.

शंका-ज्यारे आ मत्यस देखातुं शरीर पोतानुं नथी एम जाण्युं त्यारे कोइ शरीरनो घात करे तो शुं करवा देवो ?

समाधान-कोइ शरीरनो घात करे तो विलक्कल करवा देवो नहीं. अने जलढुं शरीरनुं संरक्षण करनुं यतः शरीरमाद्यं खलु धर्म

( 348 )

साधनं पथम तो शरीरज धर्म साधनमां कारणीभूतछे. यतः कहां छे के-

श्लोक.

शरीरं धर्मसंयुक्तं, रक्षणीयं प्रयत्नतः

शरीराजायते धर्मः पर्वतात्सिललं यथाः

भावार्थ-धर्म संयुक्त एवा शरीरतुं यत्न पूर्वक रक्षण कर्बुं, कारण के जेम पर्वतयी नदी उत्पन्न थाय छे तेम शरीरथी धर्मतुं साधन थाय छे ने वळी कहुं छे के शरीरंच पुद्गल धर्मत्वात् आ-हाराधारं-शरीर पुद्गल रूपछे माटे ते आहारना आधारे रहेछे कहांछ के-

देहो अ पुगगलमओ । आहाराइ विरहिओ न भवे॥ तय भावे नय नाणं। नाणेण विणा कओ तित्थं १

भावार्थ-देह एटले शरीर पुद्गलमयछे, अने ते शरीर आ-हार विना होतुं नथी. तेना अभावे ज्ञान नधी अने ज्ञान विना तीर्थ नथी. पूर्ववार वर्षनी दुकाली पडी हती त्यारे आहारना अभावे श्रुत ज्ञाननी विस्मृति घणी थइ गइ माटे आहार पण श्रुत ज्ञानना अभ्यासमां चारित्र पालनमां कारणीभूतले. अने आहार विना ज्ञान नाश पामेछे, आहार पुनः वे प्रकारनोछे, सावद्य आहार अने निरवद्याहार-जीवमय जे आहार ते सावद्याहार, अने जीव रहित जे आहार ते निरवद्याहार-सावद्यआहार भक्षणथी कर्म वंध था-यछे. माटे मोक्षाभिलापिजीवोए निरवद्याहारतुं ग्रहण करंबु, तेमां मुनिराज तो सर्वथा सावद्याहारना त्यागी होयछे, सावद्यआहारना निमित्तथी जीवो सप्त नरक पर्यंत गमन करेछ यतः कर्हुछ के-

#### गाथा.

आहार निमित्तेणं, जीवा गच्छंति सत्तिमं पुढवीं। तंडल जसं आहरणं, भणियं सुत्ते जिणंदेहिं।

भावार्थ-आहारनो अभिलापी तंडुल तत्स्य वीजा जीवोने भक्षण करवानी इच्छामात्रथी सातमी नरक सुधी जायले. माटे भवभीरु सुनिवर्यो शुद्ध आहार संयमार्थे ग्रहण करेले, यतियोने आहार शुद्धि अति दुष्कराले कहां ले के-

### गाथा.

आहोरे खलु सुद्धी, दुलहा समणाण समणधम्मंमि । ववहारे खलु सुद्धी, दुलहा गेहीण गिहधम्मेः १

अमणोने अमण धर्मनां वर्ततां निर्दोष आहारनी प्राप्ति दुर्रुभछे, तेम गृहस्थाने गृहस्थावासमां वर्ततां व्यापारादिमां व्यवहार सुधी दुर्छभाछे. शुद्ध आहारथी शरीरतुं पोषण संयमार्थम् श्रमणो करेछे मसंगयी आहारनुं विवेचन करी शरीर धर्मसाधनमां कारणी भूत छे एम सिद्ध कर्यु, धर्माजीवोत्तं शरीर धर्म माटेछे तेम पापी जी-वोतुं शरीर पाप माटे जाणबुं, चतुरशीति लक्ष जीवयोनि परिश्र-मण करतां दुष्पाप्प मनुष्य शरीर चिंतामणि रत्न जेवुं पामी जे मनुष्यो खावा पीवामां. तेमज विषय सुख भोगववामां, मोज-मजा मारवामां शरीरनी सार्थकता समजेछे, ते जीवो मृढ अविवेकी पश्च समान जाणवा. देवताना शरीर करतां मनुष्य शरीर अत्यंत उप-योगीछे. मनुष्य शरीरथी मोक्ष पाप्ति थायछे, वीजा शरीरथी मोक्ष त्राप्ति थती नयी, माटे शरीरतुं आहारादिकथी पोपण करवुं. रोगादिक थये छते रोगनाशार्थ औपध दवा करवी. कोइ शरीरनो धात करे तो करवा देवो नहिं कारण के शरीर विना धर्म साधन थहं नथी।

श्वरीर मारूं छे एम मानवुं नहीं, कारण के ते पुद्गलछे श्विरियी न्यारो आत्मा भाववों, श्वरीर आत्म धर्मनी प्राप्तिमां निमित्त का-रणछे एवं, उपरना पश्चनो उत्तर थयों.

मश्र-गजसुकुपाल सुनीश्वरे इमशानमां शरीर घातनो उपसर्ग केम सहो ? केम तेमणे शरीरनो घात करवा दीधो ?

भत्युत्तर-गनसुकुपालेतो काउसमा कर्यो हतो अने एवी तेमनी श्रद्धा हती के श्ररीरना उपसर्गथी पग चळ्या नहीं. सर्व जी-वोने माटे एवी स्थीति नथी. अंतर्थी भिन्नपणे आत्मभावमां वर्तवुं ? व्यवहारथी तेतुं संरक्षण करवुं, गज सुकुमालनी एवी भवितव्यता हती. तेमज तेनी अंतर्भावना पवर्द्धमान हती, तेथी एवी स्थीति वनी. एकांत जैनमार्ग नथी तेथी शंका करवी नहीं, काल, स्वभाव, नियति, कर्म, अने उद्यम ए पंच कारणोधी मोक्षरूप कार्यनी सिद्धि थायछे, शरी-रनी सार्थकता व्रतधारण तपश्चर्या विगेरेथी अंते शरीर आत्मानुं थयुं नथी अने थशे पण नहीं. नित्य पर्व सम शरीरनी लालना पालना करवामात्रधी आ-त्महित थतुं नथी पण तेथी धर्मनां कार्य करवाथी आत्महित थायछे ? त्रण धन दरेक मनुष्यनी पासे रहेछे, प्रथम वाह्य धन धुवर्ण, रूपुं, जवाहीर, रत्न, राज्य विगेरे जाणवुं, ते बाह्य धन आनित्य चंचल जाणवुं, कोइनी पासे वाह्य धन वि-शेषछे तो कोइनी पासे स्तोकछे. ए वाह्य धननी अपेक्षाए गरीव तांगरमां भेद पडेळे, वाह्य धनने माटे अनेक ग्रकारना उद्योगो क्लेशो देशोदेश परिभ्रमग आदि उपाधियो वेठवी पडेंछे. किंतु ए बाह्य धननो ढगलो मरती वखते साथे लेंइ ग्यो नथी अने छेइ जवानो नथी. बाह्य धननी ममताए अह-

र्निश आर्तध्यान अने रौद्रध्यानमां आत्मा परिणमी अनेक मकारनां कर्म बांधेछे. अने वहिर्भावे राचीमाची अनेक ज-न्मनी दृद्धि करे छे.

जेम कुंभकार चक्रने एकवार वेग आपेछे तेथी ते चक्र चकर-चकर घणी वखत सुधी भम्या करेछे तेम मनने आर्तध्यान, रौह-ध्यानना चितवननो एकवार वेग आप्याथी घणा वखत सुधी आर्तध्यानादिमां परिणमी रहेछे. रागद्वेपनो वेग आत्माने आपवा-यी घणा काल सुधी आत्मा रागद्वेष वेग जोरे संसारमां परिभ्रमण करेंछे, माटे अत्र सार ए ग्रहवानोंछे के-धर्मनो वेगजो आत्माने आपवामां आवे तो मुक्तिपद आत्मा पामे, तत्पद अर्थे सदाकाल एम भाववुं के-देखाती वस्तुओमां हुं नथी. त्यारे मारे कंचन का-मीनीने केम मारी मानवी ? वा मनमां तेनुं चिंतन केम थवा देवुं. कारण के ते वस्तुओ पोतानी नथी तो निरर्थक ते संवंधी विचार मारे केम करवो घटे ? हुं एटले आत्मा जेमां नथी तेमां रागद्वेषथी परिणमबुं मारे केम घटे. कद।पि जाणोके शरीर निर्वाह आदि अर्थे ते वस्तुओतुं ग्रहण करवुं पडे तोपण उदासीन भावे ग्रहण करवुं. अंतर्थी ते वस्तुओथी हुं न्यारों छुं एवा उपयो-गनी स्थिरताए रहुं. पण तेमां रागद्वेपथी परिणमबुं योग्य नथी. संसारनां कार्यो करुं पण तेमां लपटाउं नहीं एवी रीते वर्तवुं तेज आत्माने हितकारीछे, देखाती वस्तुओ पुर्गलना पर्यायो जाणवा, पुट्गलनो सहण पडण, विध्वंसन स्वभावले. पुर्गलना पर्यायो अनेक आकाररुपे देखायछे. अने पाछा विखरी जायछे. जेम सं-ध्या समये पुद्गलना पर्यायो अनेक रंगरूपे परिणमेछे अने क्षणमां नष्ट थइ जायछे तेम चक्क्षयी देखाती वस्तुओ विचित्र वर्ण गंध रस स्पर्शमय देखायछे अने वळी ते पाछी जुदा आकाररूपे परिणभी

भिन्नतर्ण गंध रस स्पर्शने धारण करे छे शारीर पण पुर्गल छे. माटे ते मारूं नहीं अने हुं तेनो नथी, पुर्गलनी भिन्न जाति छे. अने आत्मानी भिन्न जाति छे तेनी जाति भिन्न अने जेनो धर्म भिन्न जेनी वर्तना भिन्न ते एक कदी होय नहीं. हुं आत्मा पुर्गलमां त्यारे केम हों हें जो के संसारमां कर्मनायोगे हुं पुर्गलधी वस्यों छुं तो पण पुर्गलधी निश्चय नयथी जोतां हुं न्यारो छुं ए त्रीजा विषयनो अल्प विचार कर्यो.

चतुर्थ विषय विचार-हुं क्यांथी आव्यो क्यां जाइश ? हुं , आत्मा क्यांथी एटले कया स्थानमांथी अत्र मनुष्य गतिमां आब्यो, अने इवे आ शरीरनो उत्सर्ग कर्या वाद क्यां जाइश्व. ते संबंधी स्थिरचितथी विचार करतां एम सिद्ध थायछे के पूर्व भवमां कोइ पण में सारुं कृत्य करेलुं. सिद्धान्तमां पण कथ्युंछे के-जे जीव स-रल हदवी होय, परोपकारी होय, दयाछ होय, धर्मार्थी होय, कोइ जीवनो घात करनार होय नहिं ते जीव मरीने मनुष्य थायछे. अ-र्थात श्रमभावनायुक्तजीव मरीने मनुष्य गाति प्राप्त करेछे, तप-श्रयीवंत, त्रती, परोप कारी, ज्ञह्म वर्यादि गुण विशिष्ट जीव देवगाते प्राप्त करेछे, पापी, मालेनारंभी, कृतव्र, कपटी, हिंसा असत्यादिथी जीव नरक गाति पापेछे, कपटवंत पापादि जीव तिर्येचनी गति पाप्त करेछे. माटे ते उपरथी विचारतां सिध्ध थायछे के पूर्व भवमां कंइ सारां कृत्य करेलां के जेना योगे मनुष्य शरीर ग्रही तेमां वश्यो छुं. जेने जाति स्मरण ज्ञान उत्पन्न थायछे ते पोतानो पूर्वभव यथातथ्य जाणेछे, जाति स्मरण मति ज्ञाननो भेरछे, संमातिराजा पूर्वे दुमकनो जीव हता. मिष्टान भक्षण लालचथी श्री आर्य सुद्दास्त आचार्यजीने साधु यवानी विनाति करी, ग्रह महाराजे योग्य जाणी लाभनी खातर साधु वेप समर्प्यो

एम थवानुं कारण इश्वरना हाथमांछे एम कहीए ता आपणे इश्वरने गेर इन्साफी अने दया विनानो ठेरवीए छीए, कर्मथी ज आवा अवतारो वनेछे. इश्वरने मुख दुःख आपनारो मा-नवुं ए न्यायथी विरुध्ध तेमज महा अज्ञान जाणवुं. इश्वर कोइने सुख दुःख आपतो नथी. जीव, पुण्य, पाप रूप कर्म-ना अनुसारे सुख दुःख पामेळे एम श्री तीर्थंकर भगवान् कहेछे, तीर्थंकर केवळ ज्ञानीछे माटे ते सत्य पदार्थ स्वरूप कथेछे. माटे तेमना वचन उपर विश्वास राखवी. पुनर्जन्म सिध्धि सर्व सिध्धछे, चोराशी ममाण जीवयोनिमां परिश्रमण करतो जीव महापुण्योद्ये मनुष्य जन्म पामेळे.अपूल्य चिंतामणि समान मानवतनुं पामी भवो द्धिनो पार पामवो एज कर्तव्यके. संसाररूप समुद्र तरवा मनुष्यावतार एक वहाण समान छे. मनुष्यरूप वहाणमां आत्म रूप उतारु वेटोछे. आत्मोपयोग रूप खलासी वहाणने चलवेतो वहाण सम्यग् मार्गे चाले. सप्रद्रमां तृष्णा रूप मोटी भमरीओ आवेळे तेमां वहाणने बुडवा नहीं देतां शुध्योपयोग रुप खलासी समुद्र पार वहाण उतारे माटे हे चेतन तुं शुक्षी-पयोगनो आदर कर के जेथी तुं अनंत शास्त सुख पामे.

तुं क्यां जाइश—परभवना पुण्यथी मानसिक शक्तिवाछं मान् नव तनु प्राप्त थयुंछे ते आयुष्यनी मर्यादा सुधी अंते रहेछे. पश्चात् ते शरीरमांथी आत्मा जुदो पडेछे. कोई आत्मा महापाप करी न-रक गतिमां संचरेछे. नरको सातछे, पहेछी करतां वीजी नरकमां विशेष दुःखछे, वीजी करतां त्रीजीमां विशेष दुःख जाणवं. सर्व करतां सातमी नरकमां विशेष दुःख भोगववं पडेछे, उत्कृष्ट तेत्रीस सागरोपमनुं आयुष्य सातमी नरकना जीवानेछे जे जीवो हनारो गायो भेंसो वकरांने रेंसी नांखेछे अने तेथी पोतानुं गुजरान च-

लावेछे तेवा जीवो प्रायः नरकगतिना मेमान थइ त्यां दुर्गेधमय खराव शरीरोने पामी असहा दुःख क्षणेक्षणे भोगवेछे, विविधं प्रका-रनी क्षेत्र वेदनाओं भोगवेछे, जे जीवो हजारों माछलीओं नुं भक्षण क-रेक्चे अने रात्रिदिवस तेमने मारवानो उद्यम करी रह्याछे तेवा जीवो नरकगातिमां गमन करेछे. मरती वखते तेवा जीवोनी लेक्या वगडे छे, अने नरकमां दुःख पामतां तेवा जीवोने मुकाववा कोइ जतुं नथी. त्यां नरकमां महारौरव दुःख पामेछे, करेला पापोमांथी छुटता नथी. जे जीवो शिकार रमी हजारो पंखी पशुने मारी तेना मांसथी पापी पेट भरेछे अने सदाकाल तेवा पापी शिकारकृत्यमां राचीमाची रहेछे तेवा जीवो प्रायः नरकगतिमां परमाधामीनी क-रेली वेदनाओ, बुमो चीसो पाडता भोगवेछे, सागरोपम वर्ष सुधी नरकमां रहेछे, ते जीवोने जरामात्र पण सुख नथी. आंख मींचीने उघाडीए तेटली वलत पर्यंत पण नरकमां सुख नथी जे जीवो मांसथी पापी पेट भरी आनंद मानेछे तथा परस्ती लंपटी होयछे तेवा जीवो पायः नरकगतिमां जायछे,रौद्रध्यानना चार ४पायामां वर्ततो जीव क्रुरपरिणामयोगे नरकमां गमन करेछे. माटे हे आत्मा तुं जो उपरोक्त हेतुओनुं सेवन करीशतो नरकगतिमां जाइश. अ-संख्य जीवो रौद्र परिणामने धारण करता नरकगतिमां गया अने अनेक जायछे अने जशे. तुं मनथी तारूं वर्तन तपासीजो, तुं गत्री दिवस केवा मकारना विचारो धारण करेंछे, तुं रात्रीदिवस पापनां केवां केवां कृत्य करेछे. वावे तेबुं उगे आ कहेवतने याद राख. तें अज्ञानथी नरकगतिमां जवाय तेवां पापा कर्या होय तो हंवे ते वावतनो पश्चात्ताप करवो घटेछे, अने गीतार्थगुरू पार्श्वे आलोचना लेवी घटेले. प्रायश्चित्त विना पापनी शुद्धि थती न्यी. जेने भवनी भीति उत्पन्न थइ होय ते पायश्चित्त ग्रहेछे, पान ल-

जानो त्याग थाय अने वैराग्य मगटे त्यारे मायश्चित्तं लेवायछे, जे जे ग्रम पापा कर्यो होय तेने वीजानी आगळ कहेवाथी जीव डरेछें वा लजा पामेछे. पण मोक्षाभिलाषी जीवोए गुरू पासे लोकवासना त्याग करी मायश्चित्त ग्रहण करवुं. व्रतभंगनुं माय-श्चित्त ग्रहनार जीव आराधक जाणवो. मनमां शल्य राखवुं नहीं कहुं छे के—

गाया.

ससलो जड़िव कटुरगं, घोरं चीरं तवं चरे। दिब्ववास सहस्सं तु, तओवि तं तस्स निप्फलं सल्लुक्ररण निमित्तं, गीयस्स नेसणाउ उक्रीसा। जोयण सयाइं सत्तउ, बारस वरिसाइं २ आलोअणा परिणओ, सम्मं संपिडओ एरू सगासे। जइ अंतरावि कालं, करिज आराहगो तहवि. लज्जाइगारवेणं, बहुस्सुअ मएणवाविदुचरिअं। जो न कहेइ ग्रहणं, नहु सो आराहगो भणिओ । ४ जंह बालो जंपंतो, कज्जमकज्जं च उज्जुअं भणइ। तं तह आलोइज्जा, मायामयविष्यमुक्रोअः न वि तं-सथ्यं व विसंवर, दुप्पउत्तो च कुणइ वेआलो। जं तं च दुष्पनत्तं, सप्पो व पमाइओ कुछो. माटे उपरोक्त भावार्थ समजी सद्गुरु पार्ने कृत पापोनी व्रत भंगोनी आलोचना लेवी गुरु गीतार्थ जाणवा तेमनी पासे आलोचना लेवी सातसे योजन तथा वार वर्ष सुधी गंभीर गीतार्थ पासे आछाचना छेवानी तीत्रेच्छा राखवी, तथा आलोचना लेनार पण आत्मार्थी तत्त्वनो अभिलाषी होवो जोइए. गुरुनी पार्श्व पापनो पश्चात्ताप करतो प्राणी कर्मथी हळवो थायछे अने निर्मल थयेलो निशल्य भन्यात्मा सत्पंथे चालेले, जेम कोइना उदरमां बगाड थइ ते अशक्त थयो होय तो ते माणस वैद्यने नाडी देखाडेछे, वैद्य तेनी वर्तणुक पुछी छेछे, क्या कया पदार्थी खावामां आव्या इता ते पुछेछे त्यारे रोगी पण सर्व वात कहेछे पश्चात् वैद्य तेना शरीने सारुं करवा प्रथम मळ शुद्धि जुलाव आपेछे. पश्चात् वीजी दवाओ आपेछे, तेम गुरु महाराज पण अनेक प्रकारना पापोनी आलोचना रूप जुलाव आपी तेनुं हुं-दय शुद्ध करेछे पश्चात् आत्महितने माटे अन्य मार्गो, बतो बतावेछे माटे हे चेतन तुं हवे विचार कर अने नरकना हेतुओ दूर कर. श्रीवीरभगवान्नी मर्शीए माथाना वाळ जेटला धणी कर्या एम मभुनी पासे पश्चाताप कर्ये। तेथी सर्व पाप जतुं रहा, हे चेत्न आर्तध्यान जो मनमां करीश तो तिर्धेचनी गतिमां जा-इश. धर्मध्यानथी देवगति मनुष्यगति प्राप्त थायछे अने शुक्छ ध्यानथी मोक्ष स्थान पाप्त थायछे. माटे चेतन-चारे गतिनां द्वार तारे माटे खुछांछे, जेवां कृत्य करीश तेवी गतिमां जाइश-आयुष्य पूर्ण थतां, देवता मनुष्य तिर्थेच अने नरक ए चार गतिमांथी गमे ते गतिमां कर्मानुसारे तुं जाइश-एक गतिमांथी नीकळी वीजीमां, वोजीमांथी नीकळी त्रीजीमां, एम अनादि कालथी तुं चतुर्गतिमां प-रिभ्रमण करेछे. चतुर्गतिमां परिभ्रमण करावनार कर्मछे. कर्माष्टक पक्र-ति रूप द्रव्यकर्म जाणवुं. राग अने द्वेष रूप भावकर्म जाणवुं, राग अगर द्वेपना विचारो कर्याथी जीव पुद्गल स्कंबोने कर्म रूप परि-णुमावी ग्रहण करेछे.

दरेक माणस पोते करेला रागद्रेषना विचारोथी ज पोताने कर्मनी जाळमां घेरी लेखे, एम समजवानुंखे.-विचारमां समायला जोखमनो ख्याल नही होवाथी रागद्वेपना सर्वे विचारो सुखेथी आ-ववा देखे. हवे एवा विचारोधी रागद्वेषना संस्कारो उत्पन्न थायछे. अने ते राग द्वेषना संस्कारो पोताना वनावनार उपर दवाण करी तिनी पासे फरीथी तेवा विचारो उत्पन्न करावेछे के जेनी अणस-मजु लोकोने खबर नहि होवाथी तेम थतं अटकाववानी कोशेश करवाने वदले उलडुं वारंवार तेवाज विचारो उत्पन्न थवा देले, अने तेनुं छेवट परिणाम एवं आवेछे के एकज विचार वे पांच चिखत कीधाथी माणस पोते रागद्देषना कवजामां आवी जायछे. अने ते पछी रागद्देष, निंदा, शोक, मोह, अदेखाइ, बुराइ, चोरी, असंत्य, व्यभिचार, हिंसा, कपट, विश्वासघातना विचारो माणसनी गरजी उपरांत तेनाथी थइ जायछे, एवी रीते राय द्वेप मोह मायाना विचारोना वंधनमां जीव पडेछे, कर्मनो कर्त्ता पोते अने जेमां वंधानार करोळीयाना जाळनी पेठे पोते ज छे, जे नठारा विचारो अजाण पणे फरी फरीथी करवाथी तेमां पोते वं-घाइ जाय छे वळी रागद्वेप मोह, माया, मत्सर, रुप नटारा विचारो थी छेवटे नठारुं काम थइ जायछे के जेनुं कडवुं फल भोगवती वेळाए ते दुःखी थायछे, दुःख खमती वखते तेने पोताना करेळा कर्मथी छूटो थवानी इच्छा थायछे. अने फरीथी एवं नटारं काम नहीं थाय अने नठारो विचार नहीं आवे तेने माटे हवे ते साव-चैत रहेवानी कोशेश करेछे. उत्पन्न करेली रागद्देपनी टेवो घणी 'बलवान तथा अनादि कालथी होवाथी शहआतमां तो मनुष्य निष्क-क जायहे, एटले तेनी मरंजी उपरांत रागद्वेप मोहना विचारी आवी जायछे. अथवा तो खराव काम थइ जायछे. पण लांवो वखत पो-

तानी महेनत चाछ राख्याथी छेवटे ते रागद्वेष मोह मायाना खरा-व विचारोने अटकावी शकेछे. अने तेम कीधाथी रागद्वेषथी वांघे-लां कर्मनो पण ते नाश करी शके छे, मनोजय अभ्यासथी थाय छे. रागद्देषना विचारोथी मनुष्य आवता भवने माटे नवां कर्म संग्रहेछे. तेथी परभवमां जन्म छेवा पडेछे, जन्म जरा मरणथी आत्मा खरूं सुख भोगवी शकतो नथी माटे हवे मनुष्य भवमां चेतवानुं छे,दरेक मनुष्या पोतानी बुद्धि अनुसारे सुखी थवा महेनत करेछे-कोइ रा-ज्यथी सुख मानी लेले. कोइ पैशायी तो कोइ स्त्रीयी कोइ कुटुंवयी तो कोइ पुत्रादिकथी सुख माने छे पण ते पुद्गल वस्तुओमां सुख नी बुद्धि धारवी ते केवल अज्ञानले, खरुं सुख आत्मामां रहुंछे, ते सुख आत्म ध्यानथी पाप्त थायछे. श्री तीर्थंकर महाराजाए मोक्षनुं सुख सत्य कथ्युंछे, अने मोक्ष तो आत्मा कर्मथी मूकाय त्यारे मळे छे, मोक्षतुं सुख कंइ वातोना गपाटा मारवाथी मळतुं नथी. पण ते माटे सांसारिक मुखनी इच्छा त्यागी मोक्ष मुख प्राप्त करवा मुख्य-ताए चारित्र मार्ग आदरवो जोइए.

प्रश्न-चारित्र विना श्रं मुक्ति नथी मळती ?

उत्तर-श्री सर्वज्ञे ज्ञाननुं फळ विरित कथ्युंछे माटे विरितिरूपचा-रित्र सर्व कर्मनो क्षय करेछे, विरित पणुं वे प्रकारेछे-देशिव-रित अने सर्व विरिति-देशिवरितिपणुं व्रतथारी श्रावकने होयछे. अने सर्वविरितिपणुं मुनीश्वरने होयछे. श्री तीर्थिकर महाराजाओ पण दीक्षा अंगीकार करेछे, जेटला तीर्थिकर थया अने थशे ते सर्व सर्वविरितिरूप चारित्रने ग्रहण करेछे. ज्यारे तीर्थिकरने दीक्षा लेवानो समय थायछे त्यारे लोकांतिक देवता वीनित करवा पशु पासे आवेछे. हे प्रभो आप दीक्षा लेइ जना जीवोनो उद्धारगत् करो, भन्यो विचारों के जेने ते भवमां केवल ज्ञान उत्पन्न थायछे तेवा तीर्थकर महाराजाओ पण चारित्र अंगीकार करेछे अने गृहस्थावासना त्याग करेछे. तो वीजा भव्यजीवोने चारित्र विना मुक्ति शी रीते मळे १अने वळी शास्त्रमां पण कहुं छे के-

#### गाथा.

दंसण नाण जुओ विहु। न कुणइ कम्मख्खयं चरण रहिओ। नाणरुइ जुओ विज्जुव्य । किरिय रहिओ अरोगत्तं १

भावार्थ-दर्शन अने ज्ञानवहे सहितपण पाणी चारित्र विना कर्मनो क्षय करतो नथी. जाणकार वैद्य क्रियाहीनपणाथी रोग रहित थाय नहीं तेनी पेठे-वळी कहां छे वे.-

### गाथा.

बहुभवं कयंपि कम्मं । खबइ चिरत्तमप्पकालंमि । चिर संचि इंधण भरं । खणेण निह्न इज् जलणोरे एग दिवसंपि जीवो। पव्यञ्ज मुवागओ अनन्नमणो। जय वि न पावइ मुरूखं। अवस्स वेमाणिओ होइ २ अध्यज ता एग दिणं। अंतमुहुत्तंपि चारु चरण जुओ। खबइ असंखिञ्ज भव । जिजयंपि जीवो बहु कम्मं ३ सुइरंपि चरण विणा। न दिंति नाणं च दंसणं सिवं। वरचरित्त जुयाइं। खणेण ताइं सिव फलाइं। ४

भावार्थ-वहु भवनां कर्यां कर्मने चारित्र अल्प कालमां क्षय करेछे घणा कालनो संचित इंधण समूहने जेम अबि वाली भस्मक-रेछे तेनी पेठे अन्यत्र चित्त नथी. अने आत्मरमणतामां चित्तवाछं एवं चारित्र एक दिवसनुं जो मोक्ष न आपे तो पण वैमानिक देव-

भाव सहित भावचारित्र एक अंतर्मुहूर्त्तमां एण असंख्यभवाजिंत पापनो क्षय करे, ज्ञान अने दर्शन ए बे पण चारित्र विना
मोक्ष आपी शकतां नथी. माटे सम्यग् कानदर्शनचारित्राणि मोक्षमार्गः ज्ञान, दर्शन, अने चारित्र मोक्षनो मार्ग जाणवो. भावचारित्रथी पण कोइने मुक्तिनी माप्ति थायछे. चारित्र विना रागद्वेषनो जय
थतो नथी. माटे कहां छे के-ज्ञान विना चारित्र निह, चारित्र विण
निहं मुक्तिनां मुख छे शाश्वतां। ते केम लहीए युक्तिरे-इत्यादि महापुरुषोनां वचनथी चारित्र मार्ग भावकर्मनो क्षय करनार वलवत्तर
जाणवो. हव चारित्र पालवा अशक्त होय ते श्रावकत्रत अंगीकार
करे तथि पण मननो शनैः शनैः जय थायछे. अने मोक्षाभिमुख
थवाय छे.

हवे भन्यात्माओंने समजवानुं के-श्रावकनां त्रत वा साधुनां त्रत अंगीकार करीने पण रागद्वेषनो क्षय करवानोछे, मनने जीत्या विना रागद्वेषने। क्षय करवो दुर्लभछे, अने आत्मज्ञान छे ते पह्द-न्य तेना गुण पर्यायना ज्ञानविना तथा वैराग्यविना थतुं नथी. मन पवन करतां पण घणुं चंचळछे. पवनने जेम मूंठीमां झाली राखवो तेम मनने पण वक्ष राखवुं दुर्लभछे, आत्मस्वरूप चिंतवनना कु-त्रूमां मनने लगाडवुं ए सिवाय वीजो रस्तो मनोजयनोनथी. पथम स्थिर दृष्टि राखीने जोवुं के मनमां कया कया ( क्षा क्षा ) विचारो थायछे, तुरत जोतां हजार विचारो आवता जणाको ते वखते एम चिंतववुं के हे आत्मा ! ए विचार त्हारा नथी; तुं तेनाथी भिन्नछे, त्हारे एणी तरफ लक्ष आपवुं नहिं, एम विचारी तुरत आत्मगुणोना चिंतनमां वळवुं, अरूपी आत्मा केवी रीतेछे ? तेनो विचार करवो.

मथम अभ्यासमां मनविचार करतां वंध रहेतुं नथी. माटे तेने कंइक उद्यम तो जोइए. माटे आत्मस्वरूप चिंतवनमां मनने दोरवं. एटले मन वहिर्नी हजारो वस्तुओमां भटकतुं पोतानी मेळे वंध थशे. म-नने वहिरनी वस्तुओमां भटकवाथी जेवो आनंद मेळेछे तेवो पहेलां मळशे नहीं. जेम नानां छोकराने निशाळे जतां जेवं कंटाळा भरेछं लागेछे तेम तथा कोइ पंखीने मथम पांजरामां प्रवामां आवेछे त्यारे जेम कंटाळा भरेखुं तेने लागेछे तेम पेला छोकराने ज्यारे निज्ञा-ंळमां भणतां समजण पहेछे त्यारे कंटाळो थतो नथी. अने पंखीने जेम पांजरामां खावा पीवानो आनंद थायछे तथा तेना धणीनी साथे हळी मळी जायछे त्यारे स्थिर थायछे तेम मन पण आत्मध्यानमां मथम कंटा-ळी जायछे. पण ज्यारे तेने स्थिर आत्मध्यानमां करवामां आवेछे त्यारे कंइक स्थिर थायछे. अने अंते तेना उपर काब मेलवी शकायछे. अने ते वाह्यना विषयोमां भटकतुं नथी अने शा-न्त जेवुं थइ जायछे. पश्चात् निर्विकल्पमय आत्मस्वरूपमां स्थिर उपयोगदृष्टिनी धारा दृद्धि पामेछे तेथी भव्यात्मा आत्माना असंख्यप्रदेशे लागेलां घणां कर्म निर्जरावेळे, अने निराधार स्वपर प्रकाशक वने माटे परमपदनी चाहना करनारे प्रथम मनो-जय करवो आवश्यकछे. श्री आनंद्यनजी महायोगी कहेछे के-

श्री कुंथुनाथजीना स्तवनमां=

मन साध्युं तेणें सघछं साध्युं. एह वात नहिं खोटी: इम कहें साध्युं ते निव मानुं, ए कंइ वात छे मोटी हो, कुंथुजिन०

जेणे मन वश कर्यु तेणे मुक्ति सुख वश कर्यु एम कहेवुं अ-तिशयोक्ति भर्यु नथी माटे पहेलां तो टरेक अभ्यासीए मन काबुमां राखवुं, जेम घोडाओं गाडी गमे त्यां घसडी जायछे. माटे तेओने काबुमां राखवा पढेछे, तेम इंद्रियो रूपी घोडाओ आ शरीररुपी गाडीने पोताने गमे त्यां नहिं खेंची जाय ते सारु अंदर वेंडेला आत्माए तेओने काबुमां राखवानाछे, प्रथम अवस्थामां मनने का-चुमां राखवानी जेम जेम वधारे कोशेश करवामां आवेछे तेम तेम नहीं जोइता विचारो धमधोकार थया करेछे, सारा, नठारा, उंच, धनना, स्त्रीना, वेपारना हजारो विचारोधवातुं कारण समजी काढी खप विना विचार थवा देवो नहीं, सारां सारां पुस्तको वांचवामां आवे त्यां सुधी मन ते काममां राकाइ रहेछे, अने खराव विचारो नो नाश थायछे, खराव विचारो महारोगोना करतां पण भूंडाछे, मोटा रोगो तो एक भवमां पीडा करेछे, किंतु खराव विचारोथी माठी असरो थइ घणां चीकणां कर्म वंधाय छे, माटे अंतर्ना ख-राव विचारो माटे विशेष लक्ष आपवानी जरुरछे अने तेवा अशुभ विचारमय आर्त्तध्यान अने रौद्र ध्याननुं स्वरूप शास्त्रमां कश्युंछे, आर्तध्यान अने रौद्र ध्याननुं मूल कारण अज्ञान, रागद्वेष अने मोहके, अज्ञान ए महा शत्रुके. अज्ञाननो नाश करवा सद्गुरु उप-देश वारंवार सांभळवो अने तेनो विचार करवो. षड्द्रव्योनुं स्वरुप धारवुं. जड चेतननो विभाग करवो तेथी स्व अने परनी समजण पडतां भेद ज्ञान पगट थशे. समिकत पगट थवानुं मुख्य कारण भेद ज्ञानछे. जड अने चेतन वे वस्तु भिन्न भिन्न छे एटला मात्रथी भेद ज्ञान मानी खुशी थवुं नहिं पण.आगल वधी अंतरथी सदाकाळ बे वस्तुओ न्यारी समजवी. हवे रागद्वेप ए वे मोटां भ्रुतछे, राग ए चूढेलछे अने द्वेष ए जन्दछे. ए वे ज्यां सुधी माणसमां छे त्यां सुधी विचारो मनुष्य सढाकाल दुःखीयो जाणवो, चृहेल जेम म-मुष्यमुं रुधिर चूसी छेछे, तेम रागरूप चुडेलथी आत्मानी अनंति रूदि कर्मावरणथी आच्छादन थती जायछे, जन्द जेम माणसना शरीरमां पेसी अनेक तोफान करेछे, माणसन् भान भूलावेछे. तेम

देषरूपी जन्द आत्माने वळग्यो छतो अनेक प्रकारनां तोफान करे छे अने आत्मानं भान भुलावेछे, चृहेल अने जन्दने कोइ महा उ-स्ताद मंत्र वादी काढेछे तेम आत्माने लागेलां रागरूपी चृहेल अने देपरूप जन्द ते उस्ताद गीतार्थ गुरुना उपदेशरूप मंत्रथी दूर थायछे त्यारे आत्मा अत्यंत सुखी थायछे आ ठेकाणे शिष्यना आ-त्माभां रहेला रागद्देपने काढवामां गुरु वलवान निमित्त कारण जा-णवा, अने उपादन कारण तो शिष्यना आत्मानी शुद्ध परिणित जा-णवी. आत्मानी शुद्ध परिणित थाय त्यारे आत्मा निर्मळ पदने पामेछे, निश्चय नयथी कहेवातुं जे पोतानुं शुद्ध स्वरूप, तन्मय आत्मा वनतां लोक अने अलोक तेना केवलज्ञानमां प्रकाशेछे. ज्ञानावरणीय कर्म नाश पामेछे त्यारे अनंतज्ञान उत्पन्न थायछे.

प्रश्न-ज्ञानावरणीय कर्म क्यां रहेतुं हशे ? अने तेनुं ग्रहण शाथी थतुं हशे ?

प्रत्युत्तर-ज्ञाननुं जे आच्छादन करे ते ज्ञानावरणीय कर्म-ज्ञानना पंच मकारछे पंच मकारनुं ज्ञान आच्छादन करे तेथी ज्ञाना-वरणीय कर्म पण पंच मकारनुं जाणवुं. पुद्गलना स्कंधोने आत्मा अग्रुद्ध परिणितियोगे ज्ञाननुं आच्छादन करे तेवा रूपे पोताना असंख्य मदेशोनी साथे क्षीर नीरनी पेठे परिणमावे ए उपरथी स्पर्ध समजाशे के क्षीर नीरना मळवाना संबंधनी पेठे ज्ञानावरणीय कर्म आत्माना मदेशोनी साथे रहुंछे अने ते ज्ञानावरणीय कर्मनुं ग्रहण अज्ञानयोगे अग्रुद्धपरिणितिथी ग्रहण थायछे.

जेम सूर्यनां किरणोनो प्रकाश वादळांना आच्छाद्ननी अवराय छे, तेम आत्मानुं सूर्य सदश जे ज्ञान ते ज्ञानावरणीय कर्मथी अव-रायछे. तेथी आत्मज्ञान स्वपर प्रकाशकरूप कार्य करी शकतुं नथी. इवे ज्यारे ज्ञानावरणीयकर्मनो नाश थायछे त्यारे अनंतज्ञान उत्पन्न थायछे, दर्शनावरणीय कर्मनो सर्वथा नाश थवाथी अनंत दर्शन उत्पन्न थायछे. तथा शाता अने अशाता वेदनीयनो सर्वथा क्षय थवाथी अनंत अव्यावाध सुख उत्पन्न थायछे. मोहनीय कर्मनो सर्वथा क्षय थवाथी क्षायिक सम्यक्तनी तथा चारित्रनी पाप्तिथायछे, आयुष्य कर्मनो क्षय थवाथीआत्मा सादि अनंत स्थिति पामेछे. सारांश वे.–आयुष्य कर्मथी मुक्त ययेलो जीव सिद्धशिलानी उपर एक योजनना २४ चोवीस भाग करीए तेमांना त्रेवीस भाग मूकी चोवीसमा भागे एक समयमां सिद्धिस्थानमां जीव विराजेछे त्यां गयानी आदिछे पण त्यांथी पडवातुं नथी माटे अंत नथी. माटे सादि अनंतमा भांगे सिद्धमां मुक्त थएल मुक्तात्मा रहेछे. नामकर्मना नाशथी आत्मा पोतानुं अरूपीपद आविर्भावे करेछे. गोत्रकर्मना नाशथी आत्मा अगुरु लघुगुण पाप्त करेछे. अंतराय कर्मना नाशयी आत्मा सहज जे अनंतवीर्ध तेने प्रगट करेछे एम ए आठ कर्मना नाशथी आत्मा अष्टगुणने प्रगट करेछे. अने परमात्मारूपे थायछे, पंचमीगति मोक्ष तेनी प्राप्ति कर्मना क्षयथीछे, एम जीवने चारे गतियोगां जवानां कारणो वताव्यां तेमज पंचमीगतिमां जवानो मार्ग याने उपाय वता-व्यो. आत्मा जेवुं वर्तन चलावशे तेवी गतिमां जशे. ए स्पष्ट वात छे. क्यांथी आव्योने क्यां जाइश ? ए संवंधी विचार लख्यो, हवे पंचम विषय संवंधी विचार लखेछे.

पंचमविषय-मनुष्य जन्मनी साफल्यता शाथी-पंचमगति साध्य क-रवाधी मनुष्य जन्मनी साफल्यता थायछे. पुण्यपापक्षयानमुक्तिः पुण्य अने पापना क्षयथी मुक्ति पद मळेछे शुभ कर्मने पुण्य क्येछे अने अशुभ कर्मने पाप क्येछे. शुभ वा अशुभ कर्म पौद्गलिक छे. वे प्रकारना कर्मने पण आश्रव कहेछे. शुपुण्य- भाश्रव कहेवाय छे अने पापने अशुभाश्रव कहेवायछे. आत्माने अनादि कालधी आश्रव एटले कर्म लाग्युंछे, श्लीरनीरवत् आत्मा अने कर्मनो संवंध थयोछे. आत्माना असंख्याता प्रदेशों छे तेमां पति प्रदेशे अनंति कर्मनी वर्गणाआ लागीछे. एकेक वर्गणा मध्ये अनंता पुद्गलपरमाणुछे एम अनंता परमाणु जीव साथे लाग्याछे. वर्णगंधरस अने स्पर्शमय परमाणुओनी वर्गणाओं जाणवी, जीवद्रव्यने लागेला परमाणुथकी अनंत गुणा परमाणुओं छुटाछे-कर्म सहित आत्मद्रव्य पण सत्ताथी सिद्ध परमात्मा समानछे. जीव द्रव्य नित्य पणछे अने अनित्य पणछे कह्युंछे के-

#### गाथा.

निचानिच सरूवा, भावा सन्वेवि ताव तियलोए ॥ उपाय विगम ठिइ धम्म, संगया ते पुणो एवं. ॥१॥ पुन्वभवपज्जएणं, विगमोइह भवगएण उपत्ती ॥ जीव दन्वेण ठिइ, निचा निचत्तमेवंतु ॥ २॥

नित्य अने अनित्य स्वरुपी सर्वे पदार्थो विलोकमां वर्तता उ-त्पाद्व्यय अने श्रीव्यता धर्ममय जाणवा, एक पदार्थमां उत्पाद्व्यय श्रीव्यता केवी रीते थायछे ते घटावेछे-

यथा जीवद्रव्यमां पूर्व भवना पर्यायनो विनाश अने आभवना पर्यायथी उत्पाद अने जीव द्रव्यत्वपणे धौव्यता एम त्रण धर्ममय जीव पदार्थ जोणवो, जीव द्रव्यमां गतिपर्याययी उत्पाद व्यय धौव्य-ता दर्शावी, आत्माना संसारावस्थामां अशुद्धपर्याय जाणवा वळी स्थूलदृष्टांते उत्पाद व्यय धौव्यना वर्णवेछे-

### गाथा.

कुंडल विगमो मउड प्याओ कणगं अवटियं जहा ॥ तहसब्वेवि पयथ्था, जीवोनेओ पुणो एवं ॥ १॥

कुंडलरूप पर्यायपणे सुवर्गनो नाज अने तेनो ज्यारे मुकुट वनाच्यो त्यारे मुकुटरूप पर्यायपणे सोनानो उत्पाद, अने सुवर्णपणे श्रीव्यता कुंडलमां तेम मुकुटमां पण वनी रही छे, सो कुं कायम वनी रहा छे सुवर्णमां सुवर्णना पर्यायोनो एटले, आकारोनो उत्पाद व्यय थया करे छे. तेम अत्र जीवद्रव्यमां पण अनंत गुणोनो उत्पात व्यय समये समये थया करे छे. एम धर्मास्तिकायद्रव्य, अधर्मास्ति काय, आकाजास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय अने उपचारे कालमां पण उत्पाद व्यय थया करे छे, अने श्रीव्यतापणुं सदा अवस्थित छे, पड्द्रव्य द्रव्यार्थिकनया पेक्षया नित्य जाणवां अने पर्यायार्थिकनया पेक्षया अनित्य जाणवां, जीवे धारण करेला मोटा शरीरमां वा नाना शरीरमां आत्माना असंख्यात प्रदेशो सरखा जाणवा नते वात ह्यांतथी दहा वे छे –

#### गाथा.

संकोय विकोएहिं, पईवकंतिव्व महागगिहेमु ॥ हथ्थिस्सव कुंथुस्सव, पएससंखा समाचेव ॥ १ ॥

मृत्तिकाना नाना वा मोटां कुंडामां टीपकनी कांति संकोच अने विकाशे करी युक्त जेमछे. एटले नाना कुंडामां दीपकनी कांति सं-कोचपणे रहेले, अने तेज पाळी दीपकनी कांति मोटा कुंडामां विका-शपणे रहेले, तेम जीव पण हायीनुं शरीर पामतां तेमां आत्माना मदेशोना विकाशयी सर्व शरीरने व्यापी रहेले. होम कुंयुवानुं शरीर जीव ज्यारे ग्रहेले त्यारे तेदला शरीरमां जीवना असंख्यातमदेशो (२१४) आत्मज्ञामधी कर्मनी नाश.

व्यापीने रहेछे. कर्म संयुक्त संसारी जीव शरीरमां वस्योछे तेनी अपेक्षाए नानामां नानुं अंगुलना असंख्यातमा भागनुं शरीर धारण करेछे माटे अंगुल असंख्यातमा भाग जेवडो आत्मा कहेवायछे. अने केवली समुद्धात करतां जीव लोकपमाण असंख्यात प्रदेशो

विस्तारेछे माटे तद्पेक्षाथी लोकपमाण आत्मा कहेवायछे. मोक्ष दशामां, आत्मा अक्रिय थवाथी एकरुपे आत्मानी स्थीति रहेछे. शुद्धबुद्ध सिद्ध परमात्मामां पण उत्पाद व्ययं ध्रीव्यता वनी रहेछे.

प्रश्न—हे सद्गुरो! संसारावस्थामां शरीर प्रमाणे आत्माना परे-शोनो संकोच विकोच थायछे त्यारे आत्माना परेशो एक वीजा परेशथी जुदा पडता हशे के केम—;

प्रतिया — तेवी स्थितिमां जो के आत्माना प्रदेशोनो संकोच विकाश थायछे तोपण पत्येक प्रदेशो एक वीजा प्रदेशोनी साये
नित्य संवंधे संवंधितछे. तेथी आत्माना प्रदेशो संकोच विकाश्वाने पामेछे तोपण एक वीजाथी जुदा पडता नथी. अप्रिना
तणखाओनी पेठे सर्वथा भिन्न आत्माना प्रदेशों जो पडे तो
असंख्यात प्रदेश मळीने एक आत्मा कहेवाय नहीं, अने आत्मापणुं नष्ट थइ जाय. माटे अरूपी आत्माना प्रदेशों
संकोचविकाशने संसारी अवस्थामां पामेछे तोपण ताटात्म्य
संवंधे संवंधीत होवाथी कोइ कालमां जूदा पड्या नथी अने
पडशे पण नहीं. एवो प्रदेशोमां स्वभाव रह्योछे ते केवलीना
ज्ञानगम्यछे, अनुभवीओ ए वातने सम्यग् अनुभवेछे.

181 - अस्याना असंख्यात प्रदेशने ठेकाणे एक प्रदेश मानीए तो

1श्न—आत्माना असंख्यात पदेशने ठेकाणे एक पदेश मानीए तो कंइ हरकत आवे; उत्तर-हा हरकत आवेछे, श्री सर्वत महाराजे आत्माना असंख्यात

भदेश दीठा छे तेथी एक भदेश केम मानी शकाय, हे शंका-

वादी तने केवलज्ञान थयुंछे के एम कही शके. ना. त्यारे असंख्यात प्रदेश आत्माना छे एम श्रद्धा कर. मित कल्पनाथी कंइ काम थतुं नथी. वली हे शंकावादी सक्ष्मदृष्टिथी समज के ज्यां आत्माना प्रदेशोछे ते आत्माना प्रदेशोने व्यापीने ज्ञान अनंत्रघणुं रहुंछे, प्रति प्रदेशे अनंतु ज्ञान रहुंछे. मितज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन पर्यवज्ञान अने केवलज्ञान ए पंच-मांतुं कोइपण ज्ञान आत्माना प्रदेशोने त्यागीने रहेतुं नथी। हवे आत्मानो असंख्यात प्रदेश न मानीए नहींतो एक मोटो विरोध आवेछे.—

शिष्य--हे सद्गुरो आत्माना असंख्यात मदेशो मानीए नहीं तो मोटो शो विरोध आवेछे—ते कृपा करीने कहो.

सद्ग्रह—प्रथमतो केवली केवलीसग्रद्घात करेछे. लोकाकाश प्रमाण आत्माना प्रदेशों कर्मनुं परिशाटन करवा विस्तारेछे. अने कर्म भोगवी लेखे ते वातनो विरोध आवेछे एक प्रदेश लोकाकाश प्रमाण विस्तारातो नथी तथी शी रीते कर्मनुं परिशाटन करे नागों पलाळे थुं अने नीचोवे थुं एवी वात थइ, वली वीजो विरोध ए आवेछे वे.—ज्यारे चतुर्दशपूर्वी शंका पुछवा माटे आहारकशरीर, लिब्धथी वनावी सीमंधर स्वामी पासे मोकलेछे त्यां जइ ते शरीर शंका पुछी तीधिकर सीमंधरम्वामी पासेथी उत्तर लेइ जलदी आवेछे. हवे कहो के—चउदपूर्वीए वनावीने मोकलेछं जे आहारक शरीर तेमां आक्तामा प्रदेशों खरा के नहि ?

शिष्य-हा सद्गुरो ते आहारक शरीरमां आत्माना प्रदेशो होवा जोइए- जो ते आहारक शरीरमां आत्माना प्रदेशो न होयतो ज्ञान विना भगवान्ने प्रक्षशी रीते पूछे. अने भगवान् वाणीथी उत्तर आपे ते आहारक शरीरमां आत्माना प्रदेशोना होयतो समजी शकाय ते विना उत्तरनो अर्थ शी रीते समजे अने उत्तर अमुक प्रकारनो छे ते कोण धारण करी शके—माटे अवश्य आहारक शरीरम! आत्माना प्रदेशो मानवाज जोइए. श्री ती-र्थकर भगवाने जे वात कही छे. ते सत्यज छे—अनंतज्ञानी सर्व पदार्थनुं वरावर स्वरूप जाणेछे.

सुग्ररु—ज्यारे चउदपूर्वीए आहारक शरीर अत्रथी वनावी महावि-देह क्षेत्रमां मोकल्युं त्यारे-बे शरीर थयां एकतो चउदपूर्वींनुं सात धातुथी वनेछं औदारिक शरीर अने वीर्जुं महाविदेह क्षेत्रमां मोकलेछं आहारक शरीर.

हवे वन्ने शरीरमां आत्माना प्रदेशो खराके नहीं-

शिष्य-हा गुरुजी वन्ने शरीरमां आत्माना परेशों छे. औदारिक शरीरथी तो चउद पूर्वी व्याख्यान वांबेछे. ते समजबं त्यां पण ज्ञान छे. नहीं तो व्याख्यान शी रीते वंचाय. वळी सम-जबुं के—यत्र यत्रज्ञानं तत्र तत्र आत्म मदेशाः ज्यां ज्यां ज्ञाननो सद्भाव छे त्यां त्यां आत्माना मदेशो जाणवाः वन्ते शरीरमां जो आत्ममदेशो होय नही तो वन्ने शरीरमां ज्ञान होय नहीं माटे वने शरीरमां ज्ञानथी आत्माना मदेशो छे एम नकी यथार्थ सिद्ध स्पष्ट माङ्म पडयुं.—

सुगुरु-हवे ते बन्ने शरीरमां आत्मपदेशो छे एम सिद्ध थयुं. हवे समजो के एक पदेशी आत्मा होय तो बन्ने शरीरमां ज्ञाननो सद्भाव शी रीते होय, एक पदेश जो आत्मानो होत तो एवो बनाव बने नहीं. अने लब्धिथी बीजां शरीर धारण करवामी बांधो आवे. वैक्रिय शरीर पण धारण करी शकाय नहीं. आ-त्माना असंख्य पदेशो मान्या सिवाय बन्ने शरीरमां, जाणवा- पणुं घटे नहीं. एम पण सिद्ध थयुं. चउदपूर्वीना आहारक श-रीरना दृष्टांतथी वने शरीरमां आत्ममदेशो असंख्याता छे एम सिद्ध थयुं अने एक मदेशआत्मानो मानवामां वाध आवेछे ते पण सिद्ध कर्युं. युक्त अने युंजान योगिया पण अनेक शरीर धारण करे छे तेमां पण आत्माना असंख्य मदेशो जाणवा. तीर्थंकर महाराजे छोकाकाश प्रमाण आत्माना मदेशो कहाछे ते वात पण सिद्ध ठरी, अने ते सिद्ध छे. हवे आत्माना मदेशो संबंधी वर्णन करेछे. आत्माना एकेक मदेशे अनंता पर्याय रहाछे, ज्ञान पण मति मदेशे अनंतु सदाका छ शाश्वत समये समये वर्ते छे.

प्रश्न-आत्माना दरेक प्रदेशे जुदु जुदु अनंतज्ञान छे एम मानीए तो एक प्रदेश जुदु जाणवारूप कार्य करे. त्यारे आत्मानो कंइक जुदु जाणवारूप कार्य करे. त्रीजो प्रदेश वळी कंइ जुदु जाणे. त्यारे एक जाणनार आत्मा रह्यो नहीं.

उत्तर-जो के आत्माना प्रत्येक प्रदेशे अनंतज्ञान सत्ताभावे रहुंछे तो पण असंख्यात प्रदेशो पळी एक उपयोग वर्तछे, पण प्रत्येक प्रदेशनो जुदो जुदो उपयोग वर्ततो नथी ते कंइ बाय आवतो नथी। असंख्य प्रदेशो पळी एक आत्मा कहेत्रायछे, माटे आत्मापणुं नष्ट थतुं नयी। असंख्यप्रदेशो पळी एक समये निर्मेळ सिद्धात्माने एक उपयोग होयछे तेथी एक न आत्मा जाणवा।

कोइक आचार्य युगपत् उपयोग मानेछे. तथा चतत्पाउः गाथाः

केइ भणंति जुगवं, जाणइ पासइ केवलीनिअमा ॥ अन्ने एगंतारअं, इच्छांति सुउव्वएसेणं ॥ १ ॥ केचित् सिद्धसेनाचार्य वगेरे कहेछे के—युगपत् एककाला-वच्छेदन केवल ज्ञानी जाणेछे देखेछे—अन्ये जिन भद्रसमाश्रमण वगेरे एक सभये केवल ज्ञानी जाणेछे अने बीजा समये देखेछे. एटले एक समये ज्ञानापयोग अने वीजा समये द्शानापयोग एक क्रमवर्तिपणे इच्छेछे—आगमना अनुसारे तेम इच्छेछे. आ वे पक्षनी नंदिस्त्रमां घणी चर्चाछे. त्यांथी विस्तार विशेष जोइ लेवो.

जिङ्गासु—केवल ज्ञान विना मतिज्ञानी, श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी, मनःपर्यव ज्ञानीने एक समये ज्ञानीपयोग अने वीजा समये दर्शनोपयोगे होय के गहीं.

उउर-केवलज्ञानी विना वीजां ज्ञानवाळाओने एक समये ज्ञानी-पयोग अने वीजा समये दर्शनोपयोग व्यक्त होतो नथी.

जिज्ञासु--आत्मज्ञानना छतिपर्याय अने सामर्थ्य पर्याय केवी रीते समजवा ?

सुग्र-आत्माना असंख्यात प्रदेश पैकी प्रतिपदेशे छतापणे अनंत अनंत ज्ञान रहां छे ते ज्ञाननो त्रिकालमां कदीपण नाश्च
थनार नथी. ते ज्ञानना छितपर्याय नाणवा, अने ज्ञानमां ज्ञेय
पदार्थनो भासनपणो तथी ज्ञानना सामर्थ्य पर्याय जाणवा.
ज्ञेयपदार्थी अनंताछे. अने ते समये समये ज्ञानमां भासेछे,
माटे ज्ञेय जे अनंत पदार्थी तेनी भासता कार्य करणशक्तिवाळा जे ज्ञानना पर्यायो ते ज्ञानना सामर्थ्य पर्याय जाणवा.
छिति पर्यायथी सामर्थ्य पर्याय अनंत गुण विशेष जाणवा.
सामर्थ्य पर्याय ते कार्यरूपछे. तथा च महाभाष्ये—यावंतो
क्रेयाः तावंत एवज्ञानपयार्थाः ते च आस्तिरूपाः प्रतिवस्तुनि
अनंताः ततोष्यनंतगुणाः सामर्थ्यपर्यायाः जेम एक दोरडो

शत एटले सो तांतणानो छेते आविभागपणे छता पर्यायछे अने ते दोरहाथी अनेक कार्य थाय, अनेक वस्तुओ वंधाय अने ते अनेकने आधार थाय. तेने सामर्थ्य पर्याय कहीए, छातिरूप जे पर्याय तेतो वस्तुरूपछे. अने सामर्थ्य पर्याय तो पर्वतन रूप एटले कार्यरूपछे. तेम अत्र ज्ञानना छाते पर्याय-मां अने सामर्थ्य पर्यायमां पण समजवं-

जिज्ञासु-श्री सर्वज्ञे पह्द्रव्यनी वहार कोइ वस्तु नथी एम कथ्युं छे अने नैयायिक शोळ पदार्थ कहेछे. तेनुं केम ?

सुग्रह-षड्द्रव्यक्ष छ पदार्थीनी अंदर शोळ पदार्थनो समावेश थायछे. तेथी छ पदार्थ सत्य जाणवा. प्रथम नैयायिक प्रमा-णने भिन्न पदार्थ कहेछे ते युक्त नथी कारण के प्रमाण जे-टलांछे तेटलां ज्ञानछे अने ज्ञानतो आत्मानो ग्रणछे तेने भिन्न पदार्थ कहेवाय नहि. प्रभेयपणुं पण पड्द्रव्योनी वहार नथी. वीजा प्रयोजन सिद्धांतादिक ते सर्व जीवद्रव्यनी प्रदृत्ति जाणवी माटे भिन्न पदार्थ कहेवाय नहीं,

जिज्ञासु-वैशेषिक द्रव्यगुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय अने अभाव ए सात पदार्थ कहे छे. तेनो पड्ड्व्यनी अंदर सम्मावेश थायछे के पड्ड्व्यथी भिन्न पदार्थ के तेनी यथार्थ स्पष्ट समजणं आषो.

सुग्रह-हे जिज्ञास स्थिर दृष्टि राखी सांभळ. गुणने पदार्थ वीजो कहेवाय नहीं. गुण तेतो द्रव्यमां रह्याछे. तेथी गुणने भिन्न पदार्थ कहेवाय नहीं, तथा कर्म ते द्रव्यमुं कार्यछे तथा सामा-न्य विशेष ए वे तो द्रव्य मध्ये परिणमनछे. वळी समवायने पण द्रव्यमां समायछे, अने अभावतो अछताने कहेवाय ते अछताने पदार्थ मानवो घटतो नथी अभावछे

ते वस्तुनो व्यतिरेक धर्मछे माटे वैशेषिक मतपण पड्द्रव्यमां समाइ जायछे. वळी वैशेषिक द्रव्यना पृथिवी अप, तेज वायु आकाश. काल, दिशा, आत्मा, मन ए नव भेद कहेछे. ते संबंधी समजबुं के—पृथ्वी, अप, आग्न वायु एतो एकेंद्रिय जीव जाणवा, पृथ्वीरूप शरीर धारण करी जे जीवो रहाछे ते पृथ्वीकायना जीवो समजवा, अने शरीरतो पुद्गल द्रव्यमां आव्युं. एम ए चार पण आत्मद्रव्य ठर्या. पण कर्मयोगे शरीर भेदे नाम जुदां पड्यांछे. दिशीतो आकाशमां मळी जायछे अने आकाश ए आकाशास्तिकाय द्रव्य जाणवुं. मनते आत्मानुं संसारिपणामां उपयोग मवर्तवानुं द्वारछे तथी ते भिन्न द्रव्य कहेवाय नहीं. वैशेषिक मतवादी सामान्य विशेष ए वेने भिन्न पदार्थ मानेछे ते पण युक्त नथी—

तथाहि सकलशास्त्रे पक्षद्रयं,
जातिपक्षो व्यक्तिपक्षश्च तत्रजातिः
सामान्यं व्यक्तिस्तुविशेषः
इतिवचनात सामान्येतुसर्वेषामेव
नित्यत्वं सत्ताप्रतिपादनपरत्वात्
यथागोत्वाश्वत्वादिकं नित्यं नतु गौर
श्वोवानित्यः व्यक्तिपक्षेत्वनित्यमेव
यस्तुजातिपक्षः सत्वस्माकं
जैनानां द्रव्यार्थिकनयः व्यक्तिपक्षः
सत्वस्माकं पर्यायार्थिकनयः

भावार्थ-सकलशास्त्रमां पक्ष वेछे. १ जातिपक्ष २ वीजो व्याक्तिपक्ष जाति एटले सामान्य अने व्यक्ति एटले विशेष. एवा वचनथी जाणवुं. सामान्ये एटले जातिपक्षमां सर्व पदार्थी तुं नित्यपणुं
जाणवुं कारणके जातिपक्ष सत्तानुं मतिपादन करवामां तत्परछे ते
हेतुयी जेमके गोल, अश्वत्व, गायपणुं अने अश्वपणुं ए नित्यछे.
पण व्यक्तिरूप जे गौ घोडो ते अनित्यछे. जे आ जातिपक्षछे ते
जैनोनो द्रव्यार्थिक नयछे. अने जे व्यक्तिपक्षछे. तेज जैनोनो पर्यायार्थिक नयछे. जातिपक्ष द्रव्यनुं ग्रहण करेछे अने व्यक्तिपक्ष पर्या
योनुं ग्रहण करेछे. जातिपक्ष ए सामान्य अने व्यक्तिपक्ष ए विशेष
छे माटे ते वेनो नयमां समावेश थवाथी सामान्य विशेष षह्दव्यथी
भिन्न पदार्थ नथी.

जिज्ञासु-पृथिवी, अप, तेन, वायु, ए चार विना वाकीनां पंच नित्य कह्यांछे. तो जैनोना स्पाद्वादपक्ष प्रमाणे नित्य अनि-त्य ए वे पक्ष प्रत्येक द्रव्यमां घट्या नहीं. ने तमी घटावोछो ते केवी रीते ते समजावो

सुग्रह-हे भव्य सांभव, मत्येक वस्तुमां ज्ञानदृष्टिथी जोतां नित्य अने अनित्यपणुं रह्यं अ. पृथिवी, अप, तेज अने वायु कार्य- रूप न्यायशास्त्रमां अनित्य कह्यां अने परमाणुरूप नित्य कह्यां छे, आकाश स्वस्वरूपे जणकालमां एकरूपछे माटे तद्व- पेक्षया नित्यछे. अने=प्रदाकाशोनष्टः पटाकाशोनष्टः ) घटा- काश नष्ट थयुं, पटाकाश नष्ट थयुं, एवी रीते घटपटनी उपाधिथी अनित्य पक्षपणुं आकाशमां आव्युं. दिशाकालमां पण तेवी रीते नित्यानित्यपणुं घटयुं=भात्मापितस्यमते सच- देहंद्रियव्यतिरिक्तः विश्वनित्यश्चेति वचनात् तत्र कोंद्रिन्य न्यायेन पारिशिष्यानुमानेन देहाश्रितोनित्यएवेति=आत्मा

स्तिकाय. ए वे द्रव्य पण मानवां जोइए. तथा केटलाक संसार चक्रनो कर्ता एक परमेश्वर मानेंछे. ते पण मृषा समजवुं. निर्मल राग द्वेपातीत प्रभु, विभु, परमात्मा, परना सुख दु:खनो कर्ता थाय नहीं. वली जगत्कर्ता इश्वर नथी. एनो विस्तार अग्ने कर्र वामां आवशे. हाल तो आत्मानुं स्वरूप वर्णवनां प्रसंगे अन्य चर्चा चाली. हवे आत्म स्वरूप विषयनुं वर्णन करीए. आपणे नक्की सम्मजवुं के आत्मद्रव्य वीजां पंचद्रव्यथी न्याक्छे. अनादि कालयी अशुद्ध परिणितयोगे पुद्गलद्रव्यने परमाणुओ तेना स्कंघो कर्मरूप परिणमी आत्मानी साथे क्षीरनीर पेठे परिणम्युंछे. मन, वाणी, लेक्या, श्रारे, संस्थान ए सर्व पुद्रल समजवुं. अप्टकर्मनी वर्गणा-अो पण पुद्रलछे.

# अष्ट वर्गणानुं स्वरूप लखेंछे.

औदारिकवर्गणा, वैक्रियवर्गणा, आहारकवर्गणा तेजसवर्गणा, भाषावर्गणा, श्वासोश्वासवर्गणा, मनोवर्गणा, कार्मणवर्गणा, वे परमाणु भेगा थाय त्यारे द्रयणुक स्कंध कहेवायछे. जणपरमाणु भेगा थाय त्यारे ज्यणुक स्कंध थाय. एम संख्याना परमाणु मिले त्यारे संख्याताणुकस्कंध थाय. तेमज असंख्याता परमाणुआ भेगा थाय त्यारे असंख्याताणुकस्कंध थायछे, तथा तेमज अनंतपरमा णुओनो स्कंध थायते अनंताणुकस्कंध थाय, एटला सर्व स्कंध ते जीवने ग्रहण करवा लायक नथी, पण ज्यारे अभव्यथी अनंतगुण अधिक परमाणुओ भेगा थइ जे स्कंध थाय. त्यारे तेनी औदिशिक शरीरने लेवा योग्य वर्गणा थाय.

एमज औदारिकथी अनंतगुणा अधिकवर्गणामां दल भेगा थायः तेवारे वैक्रियवर्गणा थायः वली वैक्रियथी अनंतगुणा परमा-णु मळे त्यारे आहारकवर्गणा थाय एमं, सर्व वर्गणाना एकेकवी

अनंतगुणा अधिक परमाणु मले त्यारे उपरनी वर्गणाओ अनुक्रमे थाय एटले पहेलीयी वीजी वर्गणा. वीजीयी त्रीजी, त्रीजीयी चोथी, अने चोथीथी पांचमी, अने पांचमीथी छही, छहीथी सातमी, मने।वर्गणा थी आठमी कार्मण वर्गणामां अनंतगुणा परमाणुआ अविक जाणवा आठवर्गणाओंमां औदारिक, वैक्रिय, आहारक, अने तैजस, ए चार वर्गणाओ वादरछे, ए चारवादर वर्गणाओमां पांच वर्ग वे गंध, पांच रस, अने आठस्पर्श, ए वीश गुग जाणवा. तथा भाषावर्गणा. श्वासोश्वास वर्गगा तेप पनोवर्गणा ए चार वर्गणा मुस्पछे, ए चार म्र्श्मवर्गणामां पांच वर्ण, वे गंध, पांच रस, अने चार स्पर्श, ए सोल गुण रह्याछे, अने एक परमाणुमां एक वर्ण एक गंध, एक रस, अने वे स्पर्श, ए पांच गुणछे. ए अष्ट वर्गणा संसारी आत्माने लागीछे. अने तेमां पण समये समये उत्पाद व्ययध्रुवता परिणमी रही छे. ते वर्गणामां पण अगुरू लघुयी पर्गुण हानिवृद्धि समये समये परि-णमी रही छे. ए आठ वर्गणामां आत्मानुं कंइनथी. पुद्गलद्रव्य अने अहमद्रव्य वे भेगां यह परिणमेछे-पुद्गल परमाणुआ अनंतछे.

हवे प्रसंगे पुद्गलनं स्वरूप लखेंछे-

## पुद्गलस्वरूप,

वर्णादिक गुणो दृद्धि पामे. गळी जाय. खरी जाय एवो जेमां स्वभाव छे. तेने पुद्गळास्तिक,य दृष्य जाण गुं. मूळद्रष्य पुद्गळास्ति॰ काय परमाणुरूप अववोध गुं—दृयणुक आदि जेटला स्कंध छे तेनुं मूल कारण जाण गुं. एटले घट,पट, दंड, चक्र, वस्न,पात्र, कपाट, इंट, पर्यर. आदि पुद्गलनी आकृतियो गुं मूळ उपादान कारण परमाणुओं छे.तेवा रूपे परमाणुआ परिणम्या छे, वी ना पण तेमां निमित्त आदि कारणो मळे छे. छ पकारनां पुद्गळ स्कंधों छे १ वादरवादर २ वादर ३ वादरस्थ ४ स्थ्यवादर ५ स्था ६ स्थ्यस्थ.

- १ पुर्गलिंडना ने खंड कयों पोते फरी मळे नहीं ते काष्ट्र पा-पाणादिक वादर वादर भेद प्रथम जाणवो.
- २. पुद्गल स्कंध खंडखंड कर्या पातानी मेळे परस्पर एकपेक थइ जाय एवां दुग्ध, घी, तेल वगेरेने वाद्दर कहे छे.
- रे जे पुद्गल एकंघो देखवामां स्यूल होय-खंडखंड करवामां आवे नहीं हस्लादिक्षयी ग्रहण थाय नहि, एवा धूप, चंद्र,चांदनी, आदिपुद्गलवादरस्हस्म कथायले.ल्लायातम पुद्गलो पणजाणवां.
- ४ जे स्कंथो सुक्ष्मछे किंतु स्यूलोपलंभ होय. स्पर्श, रस, गंध वर्ण, शब्द विगेरे सुक्ष्म वादर जाणवाः
- ५ जे पुद्गल स्कंधो अति मुश्मले इंन्द्रियोना ग्रहवामां, आवता नथी एवा कर्मवर्गणादिक मुश्मपुद्गल कहेनायले.
- ६ कर्मवर्गणाओथी पण अतिमुस्म द्वयणुकस्कंध आदि मुस्मम्स्स कहेवायछे.

पूर्वोक्त स्कंधोतुं मूलकारण परमाणुळे, परमाणु शब्दरहीतछे जोके स्कंधोना मिलापथी शब्दरूप पर्यायने धारण करें तो पण व्यक्तरूप शब्दपर्यायथी रहीतळे. वळी परमाणु आविभागी एटले भाग रहीतछे. पृथिवी, अप आग्ने, वायु ए चारतुं कारण परमाणुआछे अर्थात् पृथिवी अप आग्ने नायु ए चार भूतो पण परमाणुओथी पेदा थायछे. वळी परमाणु परिणमन स्वभाववाळोळे. परमाणु अशब्द छे तोपण शब्दनुं कारणछे. परमाणु पोते द्रव्यछे अने तेमां वर्ग, गंध रस अने स्पर्श ए चार गुणोकी अने ते मूर्त कहेवायछे. पृथिवी जाति परमाणुओमां चारे गुणोकी मुख्यताछे. जलमां गंध गुणनी गौणता, अने वाकिना त्रण गुणोनी मुख्यताछे. अग्निमां गंध अने रस गुणनी गौणताछे, अने स्पर्श वर्णनी मुख्यताछे. वायुमां त्रण गुणोनी गौणताछे, अने स्पर्श वर्णनी मुख्यताछे.

इन्द्रियो वडे उपभोग्य पदार्थो, तथा पांच प्रकारनी द्रव्येन्द्रिय तथा औदारिक वैक्रिय आहारक तेजस अने कार्मण ए पंच प्रका-रनां शरीर तथा पैद्गलीक द्रव्य मन तथा द्रव्यकर्म नोकर्म वि-गेरे मृत परार्थ पुर्गल द्रव्य जाणवुं. ए पुर्गल द्रव्य द्रव्यार्थिक नय्थी शाश्वतछे, अने पर्थायधिक नययी अशाश्वतछे. वस्तुतः पुद्-गल द्रव्ययी आत्मा न्यारोछे. परपरिणाति परिणामी थतां पुर्गल ब्राहक पुरुगल भोगी थए छते मति समये नवा कर्म वांधवे संसारी. ययाछे, ज्यारे आत्मा स्वस्वरूप ग्रन्हक तथा स्वस्वरूप भोगी थाय त्यारे सर्वकर्ष रहीन थइ परम ज्ञानमयी-परम दर्शनमयी-परमानंद मयी सिद्ध,बुद्ध अनाहारी,अशरीरी, अयोगी, अलेशी, अनाकारी, निःमयासी, अविनाशी,अज,अविचल, विमल स्वरूप,सुलनो भोगी सिद्ध परमात्मा थाय, माटे सर्व जगत् जीवनी अंठतुल्य पुद्गलना भोगनो त्याग करी स्वआत्मा स्वरूप भोगी पणाना रसीया थइ स्वस्वरूप अनुयायी चेतना योगे निजगुण स्थिरतारूप चारित्रनी प्राप्ती करवी. एज मनुष्य जन्म पाम्यानी साफल्यता जाणत्री. षष्ट्रविषय--धर्म क्यां रहेछे अने तेना हेतुओ कोण;

विचार-संसाररूपी क्पमां पडता माणिओने धारी राखे तेने

धर्म कहेळे. धर्मना वे भेदळे व्यवहारधर्म अने निश्चयधर्म, प्रश्न-ज्यारे धर्म एकजळे, त्यारे तेना वे भेद केम कथन कर्या. उत्तर-जो के आत्मामां स्थितधर्मरूप कार्य निश्चयता कारण विना

थती नथी. माटे सर्वज्ञ मग्रुए व्यवहार धर्म अने निश्चयधर्म एवे मकारनो धर्म कथ्योछे. व्यवहारधीजे धर्मछे ते निश्चय जे शद्ध आत्मिक धर्म तेने मगटाववामां कारणछे. व्यवहार धर्म ते साधनछे अने आत्मिक धर्म ते साध्यछे. माटे धर्मना पण कारण कार्यनी सापसता ए वे भेदछे.

प्रश्न-निश्चय नयथी शुद्ध आत्मानोज ज्यारे धर्मछे तो व्यवहा धर्म आदरवानुं शुं कारण छे. एक फक्त निश्चय आस्मिक धा आदर्वो जोइए.

उत्तर-व्यवहारधर्म विना निश्चयधर्म प्रगट थतो नथी. जेमके-वा जरीना दाणामां उगवानी घणी सारी शक्ति रहीछे तोपण ज लनो संयोग थतां उगी नीकळेछे. तेम व्यवहारधर्म विना निश्चय धर्मनी प्राप्ति थती नथी-

भिन-महदेवी माताए व्यवहारधर्म आदर्यो नहोतो. तेम छतां के तेम ने निश्चय आत्मधर्मनी सिद्धि थइ.
प्रत्यत्तर-कारण विना कार्यनी निष्पत्ति थती नथी. तेते। अवश्य समजवुं. जोके महदेवी माताए देशथीना सर्वथी चारित्र ग्रहें

नहोतुं. तोपण व्यवहारधर्मने अवलंक्यो हतो तेथीज निश्चय

आत्मिक धर्मने प्रगटान्यो. जिज्ञासु-हे सद्गुरो मरुदेवी माताए क्यो न्यवहार धर्म आदर्यो

हतो. ते समजावो.

सुग्रर-मरुदेवी माता प्रथम श्री रूपभदेव भगवान्ना दर्शन करवा

चाल्यां ए पण व्यवहारधर्मछे. तेमज मरुदेव माताए मनवचन
अने काया ए त्रण योगनी गुप्ति करी, एटले मनवचन अने

कायाना व्यापारोने परभावमां जता अटकाव्या. धर्म ध्यान ध्यायुं ते रुप व्यवहारथी उत्तम ध्याने चडयां. शुक्त ध्यानध्यायी अंतकृत् केवली थइ मोक्षमां गयां-पुत्रमेम नाश थवानुं कारण मरुदेवी माताने समवसरण थयुं. ते पण व्यवहार, तेमज तेथी संसारनी असारता उद्भवी, ते पण

व्यवहारथी उत्पन्न थइ. मनवचय कायाना खराव आश्रवना व्या

पार रोक्या. अलवत धर्मध्याना दिध्यावतां रोकाणा,पश्चात् शक्

रूप कार्यमां मनवचन कायानी ग्रिप्त तथा धर्मध्यानरूप व्यवहार धर्म मरुदेवी माताने थइ गयो, मनोग्रिप्त वचनग्रिप्त अने काया ग्रिप्तरूप तथा धर्मध्यानरूप व्यवहारधर्मने कारणता निश्चयधर्म रूप कार्यमांछे, व्यवहारधर्म घणा प्रकारेछे। तेनी विचित्रता सुगुरूना मुख्यी सांभळी अनेकांतधर्म ग्रह्वो. वळी भरतराजाने पण धर्मध्यानरूप व्यवहारधर्म केवल ज्ञान प्रगटवामां निमित्त कारणीभूत हतो. निश्चर्य धर्मतो अरूपीछे, ते व्यवहार धर्मनी मदत्तथी प्रगट थायछे। उपादान कारणनी शुद्धिमां निमित्त का-रण वलवत्तरछे। एम समजवुं सारांश के मरुदेवी माता वा भरत चक्रवित पण नीचला गुणठाणानुं छोडवुं अने उपरना गुणठाणे चढवुं ते रूप शुद्ध व्यवहार पाम्यां हतां।

जिज्ञासु प्रश्न--जो एमछे तो व्यवहारधर्म कोने कहेछे ते समजावो.

सुग्ररु-पंच महाव्रत उचरवां. सर्व विरित्धर्म देशविरित्धर्म अलवत साधुधर्म. श्रावकधर्म ए व्यवहारणी धर्म जाणवो. ए व्यवहा-रधर्म निश्रयधर्मनी प्राप्ति करावी आपेछे. निश्रयथी संपूर्ण नि-रावरण परमात्मपदनी प्राप्ति कराव्या वाद व्यवहार रहेतो नथी.

शिष्यप्रश्न--आत्मा परमात्मारूप थाय तेमां कयां कयां कारणोनी जरूरहे.

सुग्ररु-उपादान कारण. अने असाधारण कारण अपेक्षाकारण निमित्तकारण. ए चार कारणथी कार्यनी सिद्धि थायछे.

शिष्यप्रश्न-आत्मा सिद्धपणुं पामे तेमां पामे तेमां उपादान कोने समजवुं.

सुगुरु-सिद्धतारूप कार्य ते आत्मानुं अभेद स्वरूपछे. सिद्धतारूप कार्यनो कर्त्ता आत्मा पोतेजछे अने सिद्धपणुं आत्मानुं कार्य समजन्नं, अधुना सिद्धता प्रगटाववी तेज कर्तव्यधर्मछे. सिद्ध- तारुप कार्यनी रुचि विना अनंतकाल संसारमां परिश्रमणथयुं. अने अज्ञान रागद्देपयोगे पोताना धर्मथी श्रष्ट वन्यो. हवे आ-त्मानो मूलधर्म भासन थयो तेथी हवे ते कार्यनी सिद्धि करवी. एम निधार करी तद्तुगत चेतना वीर्यथी स्वस्वरुप कार्यनी-पजावे मथम तो अंशथी आत्मा कर्त्ता थाय. पश्चात् आत्मिक गुणोनी आविर्भावता थतां संपूर्ण कर्त्तापणुं पामीने परमात्मरुप कार्य नीपज्ञाने. एवी सिद्धतानुं उपादान कारण पोतानी स-त्तागत ज्ञान दर्शन चारित्र वीर्यादिक अनंतागुण छे. तेज उपा दान कारणपणे जाणवा. उपादान कारणरुप जे ज्ञानदर्शन चारित्र अने वीर्यछेते कार्यथी भिन्न नथी, अने तेज कार्यरूप परिणामछे. माटे तेने उपादान कार्य कहेछे, आत्मानाधर्म छे तेमां पण ज्ञानदर्शन चारित्रनी मुख्यता जाणवी.

शिष्य--हे गुरुनी असाधारण कारण कोण समजवुं.

सुग्रह-उपादान कारणथी जे अभेद स्वरूपेछे. अने जे कार्यपणुं पामतुं नथी एटले कार्य संपूर्ण उत्पन्न थतां जे रहेतुं नथी तेने असाधारण कारण कहे छे. घटरूप कार्यनुं उपादानका मृत्तिका छे. मृत्तिका छे. तेज घटरूपे थायछे, तेता वाचकने लक्ष्यमां आव्युं हशे हवे असाधारण कारणनुं दृष्टांत कहे छे. जेमके घटरूप कार्य थतां स्थास, कोस, कुसलाकारजे थायछे. ते मृत्तिका पिंडरूप कारणथी अभेदछे परंतु घटरूप कार्य थतां ते असाधारण कारणस्थास कोस कुसलाकार इप रहेतुं नथी. कहुं छे के प्रमाण निश्चयेन उपादानस्य कार्यत्वाप्राप्तस्य अवांतरावस्था असाधारणमिति.

ह्वे परमात्मरूप कार्यमां असाधारण कारण घटावेछे. सिद्धता रूप कार्यमितिमथम मनवचनं कायानायोग तेहने स्वगुण रमणमां अरागी अद्वेषीपणे प्रवर्ताववा. चोथा गुणठाणाथी मांडीने सिद्धतारूप कार्य पर्येत गुणनी दृद्धि करवी. उपशमभाव क्षयोपशमभाव श्रेणी-गतध्यान, विधिसहित आचरणा, पूजा भक्ति, गुणिनुं वहुमान, ज्ञान क्रियारूप साधक अवस्थानी तरतमता ते सर्व असाधारण कारणजा-णवं. आत्मानुं ध्यान करवं. क्षणेक्षणे आत्मोपयोगमां स्थिरपणे वर्तवं साधुवत. श्रावकवत पाळवां इत्यादि सर्व असाधारण कारणजाणवं. भेदज्ञान विना असाधारण कारणनी माप्ति थती नथी.

शिष्य--हे सुगुरो आत्मा सिद्धतारुप कार्यनीपजावे तेमां निमित्त कारण कोण ?

सुग्रह-देव अरिहंत, गुरु, अने सिद्धांत ते निमित्त कारण जाणवं.
निमित्त कारण विना जीव उंची स्थित ए चढी शकतो नथी.
धर्मनी प्राप्तिमां निमित्त कारण वलवान रहेळे. देवगुरु सिद्धांत
ए मुक्तिरुप महेलमां चढतां निसरणी समानळे. देवगुरुनी भिक्त
वहुमान करवाथी कार्य सिद्धि थशे. तेम सिद्धांतनुं वहुमान
विनयआदि करवाथी गुण प्रगट थशे. मुगुरुनो विनय विश्वास
श्रद्धाभिक्त जेम घणी तेम निमित्त कारणनी पुछता जाणवी,
सुगुरुनुं आलंबन मोडुंळे. अज्ञानरुप अंधकारनो नाश सुगुरु
महाराज करेळे.

शिष्य-देननी भक्ति वहुमान शी रीते करबुं.

सुग्रह-श्री अईन्नी पूजा करवी, अईन्ना गुणोनुं स्तवन, कीर्त्तन, करवं, अईन्नी आज्ञा मानवी, इत्यादिथी पूजा भक्ति जाणवी. शिष्य - अईन्ननुं पूजन शी रीते करवं, अरिहंत साक्षात् तोहाल नथी, तेनो खुलासो आपो.

सुग्रर-अष्ठ प्रकारी पूजा विगेरेथी प्रभुनी पूजा करवी. अरिहंत भगवान साक्षात जोके विद्यमान नथी तोपण जिनना अभावे जिन मितमानुं पूजन करवुं. जिन मितमामां जिनेश्वरनो आ-रोप करी मानतां-पूजतां समिकतनी पुष्टि अने निर्जरानुं का-रण जिन मितमा थायछे.

**इि। ७य--**श्री जिन प्रतिमानुं कथन सूत्रमां छे के नहि ?

सुग्रह-हा जिन मितमानुं कथन मभुना पवित्र सूत्रोमां छे.

शिष्य- हे सुगुरुजी, कृपा करीने सूत्रनो एक पाठ कहा के जेथी

जिन प्रतिमानी साबीती थायः सुग्ररु-हे भन्य सांभळ—मूत्रपाठः

तेणं कालेणं, तेणं समएणं, जावतुंगीयाए नयरीए, वहवे समणो वासगा परिवसंति, संखे, सयगे, सिलप्पवाले, रिसद्ते,दमगे,पोख्खली,तिविह,सुपयहे, भाणुद्ते,सामिले, नर-वम्मे, आणंदा, इणोअजे अन्नथ्ध परिवसंति, से अहा, दिना, बुळ्नि विपुलवाहणा,जाव लध्धठा,गहिअहा,अठमी,चाउहिसी, पुन्न मासिणी, सुपडिपुन्नं पोसहं पालेमाणा, निग्गंथाणं निग्गंधीणं, फासुएसणिज्जेणं,असण, पाण, खाइम, साइमेणं, जाव पडिलाभेमाणा, चेइआलएस तिसं गंध पुष्क वथ्धाइएहिं अच्चणं कुणमाणा जावविहरंति, सेतेणठेणं गोयमा, जेजिण पडिमं पूएइ, सोसम्मदिठी अनोपुणि हिंहिहि, मिन्छादिहिस्स नोनाणं, नोचरणं, नोमोख्ख इत्ति सम्मदिठिस्स नाणं,चरणं, मोख्ख, इतिसेतेणठेणं गोयमा, अवस्सजिणपिडिमाण गधपुष्फवश्या-इएहिं पूयाकायन्वा-श्रीपंचकल्प सूत्रे पूजालापक.

भावार्थ-तुंगीया नगरीमां रहेनारा सूत्रोक्त वार श्रावको पो-पधत्रतनुं आठम चडदस पूर्णिमा अमावाज्याए आराधत करता हता, पोषधपारीने साधु साध्वीओने निरवध आहार पाणी वहोरावता हता. अने चैत्यालयमां ह र प्रतिमानी पुष्पादिकथी पूजा करता, हता, माटे गृहस्थ श्रावक जिन मितमानी अवश्य पूजा करे. इत्या-दि अधिकार समजी छेवो.

## द्वितीय सुत्रपाठ.

तएणं सा दोवइ रायवरकन्ना, जेणेव मञ्जणघरे तेणेव उवागच्छइ. उवा० मञ्जणघरं अणुपविसइ, अणुर ण्हाया कय विलकम्मा कयकोउअ मंगलपायिछित्ता सुध्धप्पा वेसाइं, मंगलाइं, वध्थाइं,
पवरपरिहिया मञ्जणघराओ पिडिनिरकमइ, पिडिर जेणेव जिणघरे
तेणेव उवागच्छइ उवार जिणघरं अणु पिवसइ जिणपिडिमाणं
आलोए, पणामंकरेइ, लोमहध्धगं गिन्हइ.' तार जिणपिडिमाओ पमजजेइ, ता सुरिमणा गंधोदएणं ण्हावेइ, तार सुरिमए गंधकासाइए
गत्ताइं छहेइ, तार सुरसिईं मल्लेहिअ अच्वेइ जहा सुरियाभो जिण पिडिमाओ अच्वेइ अच्वेइता तहेव भाणिअव्वं जाव धूवं दहइ, दहइत्ता, वामं जाणुं अंचइ, अंचइत्ता, दाहिणं जाणुं धरिणअलंमि कट्टतिखुत्तो-इत्यादिपाटः

भावार्ध-राजकन्या द्रौपदी स्नान करवा मज्जनगृहमां जाय अने त्यांथी जिनेश्वरना देरासरमां जाय. मसुनी प्रतिमाने देखी प्रणाम करे. रुडा लोम हस्तकथी जिन प्रतिमानुं प्रजार्जन करे. सुरिम गंधिमिश्रितजलथी पसुनी प्रतिमानुं स्नान करे पश्चात् अंगलुंहन करे, पश्चात् गंधादिकनुं विलेपन करे—इत्यादि घणा पाट छे तेथी सिद्ध थायछे के—पसुनी पडिमा एटले प्रतिमा छे. महानिशीथमां पण प्रसुनी प्रतिमा विषे पाठले—माटे जिन प्रतिमामां जिनेश्वरनो आरोप करी मानतां पूजतां आत्महित थायछे.

वळी ज्यारे श्रीतीर्थकर भगवान् समवसरणमां पूर्वदिशा सन्ध-ख वेसेछे अने दक्षणि, पश्चिम, उत्तरदिशिना द्वारे श्रीअरिहंतना प्रतिविव स्थापेछे, ते त्रण दिशाना स्थापनाजिननो आलंबन पामीने अनेक जन समन्तरणमां समिकतरत्नने पाम्या, बीजी पर्षद् मध्ये जिन से-वनथी समिकतनो लाभ यायछे. ए पण स्थापना निक्षेपानो उपगारछे.

विचरता अरिहंत तथा तेमनी स्थापना ए वे साधक जीवने निमित्त कारण छे पण उपादान नथी. अईन्ने वांदवानुं तथा अ-अईन्नी प्रतिमाने वांदवानुं फल सरखुं जाणबुं. कारण के वेमां पण भावनी ग्रुख्यता अंतर्थी थातां फल थायछे.

वळी दरेक वस्तुना चार निक्षेपा श्रीअनुयोग द्वारमां वर्गव्या छे. नामनिक्षेपो, स्थापनानिक्षेपो, द्रव्यनिक्षेपो, अने भावनिक्षेप. ए चार निक्षेपामां आद्यना त्रण निक्षेपाते भावना कारण छे. उक्तंचभाष्ये.

### गाथा.

# अहवा नाम ठवणा, दव्वाए भाव मंगलंगाए।। पाएण भाव मंगलं, परिणाम निमित्त भावाओ ॥१॥

माटे आद्यना त्रण निक्षेपा कारणछे. ए त्रण निक्षेपा विना भाव निक्षेपो थाय नहीं. अने नाम तथा स्थापना एवं निक्षेपा उपकारी कहाछे. चोवीस तिर्थंकरनां नाम ए नाम निक्षेपोछे. तेमज नमो अरिहंताणं आ अरिहंत भगवाननो नाम निक्षेपोछे. अईन्ती मृतिं ए स्थापना निक्षेपछे, ज्यारे नमो अरिहंताणं ए नाम निक्षेपो कर्नुल करीए छीए अने ते जेम आत्मा मितिनिमित्त कारणछे तेम अरिहंतनी मितामा पण आत्मा मिति निमित्त कारणछे. नाम निक्षेपाथी जेटलो फायदोछे तेटलोज स्थापना निक्षेपाथी फायदो छे. नमो अरिहंताणं ए नाम निक्षेपाथी अरिहंतना गुणोनं स्मरण थान्यछे तेटलंज अरिहंतनी मितामाथी अरिहंतना गुणोनं स्मरण थान्यछे, अरिहंत, सिद्ध, आचार्थ, उपाध्याय, साधु, ए पंच परमेष्टिनां यछे, अरिहंत, सिद्ध, आचार्थ, उपाध्याय, साधु, ए पंच परमेष्टिनां

नाम तथा तेमनी स्थापना वन्ने सरखां फळने उत्पन्न करनारिछे. माटे जे भव्य पुरुष पंच परमेष्टिनां नामनुं आलंबन करेछे तेणे पंच परमेष्टिनी स्थापनानुं पण आलंबन करवुंज जोइए.

शिष्य--वीतरागनी स्थापनाथी आत्माहितछे. एवां तो जरा मात्र संशय नथी, पण प्रभुनी प्रतिवा पूजतां श्रावकने हिंसा थाय तेनुं केष ?

सुग्ररु—हे भव्य तुं सांभळ, जिनेश्वरनी आज्ञा प्रमाण के आपणी मति कल्पना प्रमाण.

शिष्य-पुरुजी, मधुनी आज्ञामधान.

- युरु-त्यारे सांभळ-बीजे गाम जतां वच्चमां नदी आवे ते साधु उ-तरे के नहीं, यादराख-एकपाणिना विंदुमां एटला जीवछे के ते पारेवा जेवडी काया करेतो जंबुद्दीपमां माय नहीं. एवं जलनुं विंदु समजवुं. वळी पाणीमां सेवालरूप बनस्पति पण साधारण वादर निगोदरूपे रहीछे. वळी पुरा प्रमुख सूक्ष्मत्रस जीव पण एवाछे के मनुष्यनी कायाना स्पर्श्वभी हणाइ जाय हवे कहोंके एवी। नदीना जलमां मुनिराज पगमुकी उतरे के नहीं?
  - शिष्य-न्यभु ए सिध्धांतमां हिंसा थतां पण साधुने नदी उतरवा-नी आज्ञा करीछे. कारणके तेथी मुनीश्वरने अन्य भव्यजीवो मतिवोधमां लाभ मळेछे. अने भावदयानी पुष्टि यायछे माटे, आपे एवं मने समजाव्यं हतुं, मतिमाना निषेधको पण आ वात मानेछे.
  - सुगुरु-तेज प्रमाणे सर्वज्ञपश्चए सिध्धांतमां श्रावकने, पश्चनी प्र-तिमा पूजननुं फरमान कर्युंछे. पश्चनी प्रतिमा पूजतां मोटो लाभ थायछे. अत्र प्रभुनी आज्ञाज प्रधान जाणवी, पशु सर्वज्ञ हता. तेमना केवलज्ञान आगळ आपणी मीत कल्पना-

हिसावमां नथी माटे सर्वज्ञ मभुनी आज्ञानुसारे श्रावक मभुनी मतिमानुं पूजन करे. तेथी तेने आत्महित थायछे अने प्रभु-की आज्ञानो आराधक वनेछे, श्रावकतो आहारादिक माटे छकायना जीवनी हिंसा कर्या करेछे माटे ते हिंसाना आरंभ-थी दूर थयो नथी माटे श्रावक प्रभुनी प्रतिमानुं पूजन भक्ति करे तेमां तेने मोटो लाभ छे पश्चनी पतिमाने माने छे ते स-म्यग्दृष्टि जाणवो. पश्चनी पतिमा पूजतां श्रावकने हिंसाना परिणाम नथी-जीवोने मारवानी बुद्धि श्रावकने नथी. तेथी तेने हिंसानो वंध थतो नथी अने तेथी शुभ भाव मगटतां पुण्य वंध अने शुभ भाव प्रगटनां परमानंद पदनी प्राप्ति था-यछे, यद्यपि जोके शुभ भावने पुण्य वंधनो हेतुछे. तोपण ते छताआत्मगुणने स्थिर थवानो तथा नवा प्रगट करवानो हेतुछे. पुण्यानुवंधी पुण्यनो हेतुछे माटे पश्चना उपर रागरूप शुभ भाव पण परंपराए मोक्ष प्राप्तिमां हेतुभूतछे. श्रीहरिभद्र-मृरिए पंचवस्तु ग्रंथमां कह्युं छे केः-

गाथा.

गुणरूड मूलं एयं, तेणं गुणविहि हेनअं भणिअं ॥ जह एलाइयुत्तो, पसथ्य रागेण गुणपत्तो ॥ १॥

माटे प्रभुनी प्रतिमा पूजतां शुभभाव पण उपाद्न कारणनी शुध्यिमां लारणछे, माटे श्रावके प्रभुनी प्रतिमानुं पूजन करवुं जोडण. वळी सूत्रमां कहुंछे के-ज्ञानीने आश्रवनां कारण पण संवर रूपछे अने अज्ञानीने संवरनां कारण पण आश्रव स्वरूपे परिणमेछे.

वळी सर्व विरितपटने धारण करनारा मुनीश्वर ज्यारे त़डी जतरेछे ते पण ज्यारे लाभने माटे छे त्यारे श्रावक मभुनी प्रतिपानुं पूजन करे ते केम लाभने माटे न होय. अलवत पश्चनी आज्ञाए वर्तवुं ते श्रावक तथा साधुने लाभकारी छे. आज्ञा ए धर्म जांगवी

श्री आनंदघनजी महाराज पण नवमा स्रविधिनाथना स्तवनमां प्रभ्रनी प्रतिमानुं पूजन करवुं एम उपदेशेछे, माटे जिनेश्वर वीतराग्नी स्थापनारूप प्रतिमानी वहुमानता, रोवना, पूजा, अवश्य करवी जोइए. एक सामान्य उत्तम ग्रुणवंतनी छवी जोइने केटलो आनंद थायछे. त्यारे त्रण जगत्ना पदार्थने जाणनार सर्वे अतिशय उपगारी तीर्थकरनी प्रतिमाने देखी जीवने आनंद थाय वहुमानता प्रगटे, तेमां शुं कहेबुं-निमित्त कारणरूप देव तथा तेमनी प्रतिमानुं अवलंवन भव्यजीवोने करवा लायकछे. प्रभुनी प्रतिमा संबंधी घणुं विवेचन करवानुं धार्यु किंतु ग्रंथ गौरवना भयथी संक्षेपमां प्रसंगे वर्णन कर्यु.

शिष्य-हे सुगुरो ! आपे कृपा करी निमित्त कारण कोण अने तेनुं स्वरूप समजाव्युं हवे कृपा करी अपेक्षा कारण कोणछे ते समजावयों-

सुग्ररु-जे कारण कार्यथी भिन्न छे अने जे कारण माटे कर्ताने प्र-यास करवो पडतो नथी, अने कार्यनी सिद्धिमां निश्चयथी ते जोइए. अने जे वीजा कार्योमां पण कारणछे. तेने अपेक्षा कारण कहे छे.

यथा पृथ्वी, आकाश, काल, ए विना घटादिक कार्यनी निष्पत्ति थती नथी. भूमी, आकाश, काल, जेम घटनी निष्पत्ति प्रति कारणछे तेम अन्य कार्योना प्रति पण कारणछे. कर्त्ता जेम उपादान तथा नि-मित्त कारणनो व्यापार करेंछे. तेम एनो प्रवर्तन करतो नथी. ते अपेक्षा कारणनुं तत्त्वार्थादिक ग्रंथोमां कह्युंछे. यथा.

# घटस्य जत्पत्तो अपेक्षा कारणं व्योमादि अपेक्षते तेनविना तद्भावाभावात् निर्व्यापारं अपेक्षाकारणं इति तत्त्वार्थवृत्तो

हवे आत्मा कर्मक्षय करी मुक्तिपद पामे तेमां अवेक्षा कारण दर्शांवे छे.

मनुष्यगति प्रथम वज्ररूपभनाराच संघयण, पंचेंद्रियपणुं इत्यादि सिद्धिरूप कार्यनुं अपेक्षाकारण जाणवुं.

निमित्त कारणनी प्राप्ति विना अपेक्षाकारण लेखे आवतुं नथी। जे भव्यजीवे निमित्तकारण आचर्यु नथी तेनी मनुष्यगति अपेक्षा-कारणमां गणाती नथी। श्रीदेवगुरुना पुष्ट निमित्ते उपादानकारणने तरतमयोगे प्रगटावतो असाधारण कारणताए चढतो मनुष्यादिक अपेक्षा कारणपणे करी तत्वानंदरुप कार्यनो कर्ता आत्मा थाय.

उपादानादिक त्रणनी कारणता निमित्तना अवलंबनणी मगटे छे माटे भव्यप्राणी निर्दोषपणे शुद्ध निमित्तकारणने सेवे. अने शुद्ध निमित्त कारणीभूत शुद्ध देव, तथा सुगुरूना सेवनथी कर्त्ती-पणुं स्मरे, अने कर्त्तापणुं स्मरण करी स्वकार्य करे.

श्री आप्तमीमांसामां त्रण कारण कथ्यांछे.

समवायासमवायि निमित्तभेदात्.

समवायी कारण ते अपेक्षाए उपादानकारण जाण हुं. अने असम वायि कारण ते नामांतर असाधारण कारण कहेवाय छे तथा निमित्त कारणना वे भेद जाणवा. एक निमित्तकारण वी छं अपेक्षाकारण-वळी कारणना है भेद शासमां कथा छे. एक उपादानकारण. वी छं निमित्तकारण जाप छुं. घट दृष्टांतमां घट रूप भिन्न कार्यनो कर्ता छंभकार घट थी भिन्न छे, तेम सिद्धतारूप अभिन्न कार्यनो कर्ता आत्मा पण कार्यथी अभिन्न छे. ज्ञाननो कर्ता आत्मा छे नेम संपूर्ण सिद्धतारूप कार्यनो कर्ता पण आत्माछे. कर्ता आत्मा ज्यारे कारणनीयोगवाइ पामे त्यारे कार्यनी सिद्धि नीपजावे. एकलो कर्ता कारण सामग्री विना कार्य करी शके नहीं एवी स्वभावता जाणवी.

उपर प्रमाणे आत्मा परमात्मपट पामे तेमां जे जे कारणो जो-इए. तेनुं यत्किंचित् स्वरूप दर्शाव्युं.

शिष्य--हे सुगुरो ! पूर्वोक्त कारणोमांथी व्यवहार धर्मरूप केटलां कारण जाणवां.

सुग्रर-हे शिष्य स्वस्थ चित्तथी सांभळ-जे कारणी कार्य सिध्धि थतां रहेतां नथी. अने कार्य सिद्धिमां अवज्य कारणी भूत छे, ते कारणोनी प्राप्तिने ज्यवहार धर्म कहे छे. निमित्त कारणनी सेवना तथा असाधारण कारणनी प्रवर्तना पण ज्यवहार धर्म कथायछे. नीचेना गुणस्थानक छं छोड छं अने उपरना गुणस्थानक छं आदर छं ते शुद्ध ज्यवहार धर्म जाणवो. वळी साधुधर्म वा श्रावकधर्म पणव्यवहार नयथी धर्म कथायछे. ज्यवहार धर्म कारण छे, अने निश्रय धर्म कार्य छे कारण अने क छे अने कार्य एक छे. माटे असंख्ययोग जिनेश्वर भगवाने कथ्याछे. तेमां पण नवपदनी मुख्यता जाणवी. जेने अंशे निरूपिधपणुं तेते अंशे धर्मनी प्राप्ति जाणवी.

शिष्य-मनुष्यगति विना आत्मा सिद्धतारूप कार्य अन्य गतिमां प्राप्त करी शके के नहीं.

खुर-मनुष्यगित विना सिद्धतारूप कार्यनी सिद्धि थती नथी। प्रथमतो एकेंद्रियमां अपेक्षाकारणक्प नरगित प्रथम संघयण नथी। तथा निमित्त कारण पण नथी। द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, मां अपेक्षा कारण नथी। पंचेंद्रियना चार भेदछे। प्रथम देवता समिकती होयछे तेमने क्षयोपश्चमभावन्नं मितिज्ञान तथा श्रुन- क्षान होयछे. अने तेओ संमिक्तिपणाथी चोधा गुणटाणाना स्वामी जाणवा. एटळे ते अविरित सम्यग् दृष्टि देवता जाणवा. तेओ विरितिपणाने पामे नहीं एवी देवगितनी स्थीति छे माटे तेओ उपरउपरना गुणटाणे चढी शकता नथी. मि-ध्यादिष्टि देवताओतो प्रथम गुणस्थानके वर्षेछे. वेमानीक, भु-वनपात, व्यंतर, अने ज्योतिष एम देवताना चार प्रकारछे.

तिर्थेच पंचेंद्रियना पंचभेदछे जलचर, थलचर, खेचर, उरपरि

तिंधेच समिकत पामी शकेछे. कृष्णमहाराजना भाइ वल्रदेव मुनिश्वरनुं एक हरिणभक्त हतुं. पण त्यां अपेक्षा कारण मथम तो नथी. गुनीदिकनुं निमित्त पामी कदापि पंचम गुणस्थानक पर्यत जाय. पण त्यां असाधारण कारणनी श्रेष्टता नथी. असाधारण कारणनो अंश पामे.

नारकीना जीवोनो पण देवतानी पेठे आधिकार समजी लेवो ए त्रण गतिमां धर्मसामग्रीनी संपूर्ण जोगवाइ नधी.

यतः गाथा

देवा विसय पसत्ता, नेरइया विविद्य दुःख संसत्ता ॥ तिरिया विवेग विगला, मणुआणं धम्म सामग्गी १

देवताओ विषयमां प्रसक्तछे. नारकी जीवो अहर्निंग विविध प्रकारनां दुःखो भोगव्या करेछे, तिर्थेच विवेकथी विकलछे. फक्त गर्भज मनुष्योने धर्मनी सामग्रीछे.

मनुष्यगितमां अपेक्षा कारण, निमित्त कारण, असाधारणकारण, उपादान कारण, ए चार कारणनी सामग्री प्राप्त थायछे वळी अपे-क्षा कारणमां प्रथम संघयण अधुना नथी हाल पंचपारके पण निमित्तादि कारणो पामी आत्मधर्म सा-धन थायछे. मतिज्ञान अने श्रुतज्ञानना क्षयोपशमभावे असाधारण कारणने अवलंवतो जीव शुद्धानुभव पामेछे. अने भव्य, कर्मनां तिक्ष्ण वंधनने छेदवा समर्थ थायछे,

माटे भव्यनीवीए चिंतांमाणिरत्न, कल्पद्वश्रथी पण दुर्रुभ एवी मनुष्यजन्म पामी धर्मसाधन करवुं गयो वखत पश्चात् आवतो नयी. आयुष्य क्षणेक्षणे ओछुं यतुं जायछे. आ दुनीय।मां कोइ अमर रह्यो नथी अने कोइ रहेवानो नथी. कायारूप माटीतुं पूतळुं आत्मातुं कदी थयुं नथी, अने थवानुं नथी. भ्रांतिथी परवस्तुमां सुखबुद्धि कल्पायछे. जेम आकाशमां कमलनी उत्पत्ति खोटीछे. तेम परवस्तुमां मुंबबुद्धिं खोटीछे. जडवस्तुमां आत्ममुख क्यांयी होयः अलवत जडवस्तुथी कदापि सुखनी पाप्ति यती नथीज. वाल्यावस्थामां अ-ज्ञानतायोगे जे सुख धूळना ढगलामां रमकडां रमवाथी मान्धुं हतुं. ते मोटी उपर थतां पोतानी मेळे टळेळे. एटले मोटी उपर थतां ए-मकडां वा धूलमां रमवानुं मन थतुं नथी. ते रमत उपर अरूचि थायछे. तेम विषयभोग आदिमां रूचि वाल जेवा जीवोने थायछे. जेम कागडाए विष्टा चुंथवामां पोतानुं श्रेयः मान्युंछे तेम अज्ञानी बालमनुष्योए विषयभोग आदि परवस्तुमां पोतानुं सुख मान्युं छे पण ते सर्व मिथ्याछे. ज्ञानीनी दृष्टि आगळ एवा बाळजीवो केवल द्या पात्रछे. आत्मामां अखंड परमानंद समायोछे. अनंतसुख आ-त्मामां रहुं छे. शोधसोपावे आत्मयुखनी प्राप्ति अर्थे ज्ञाताओ आ-त्मध्यानमां सद्दाकाळ मन्न रहेळे. परवस्तुमां रागद्वेप द्वांद्व धारण करता नथी। पोताना आत्मस्वरूपमां रमणता करेछे. परभावनो अ-नादर करेंछे. परवस्तुमां आत्मपणुं कंइ मानता नथी. पुद्रल वस्तुथी आत्मा सदा न्यारोछे एम भावेछे। अने सदा अंतर्छक्य राखेरे

परपिएणितनों द्वार रोकेछे. आत्माना गुण पर्यायनुं चिंतवन करेछे. पोताना आत्मामां अनंतरुद्धि शोधे छे. उज्ज्वल ध्यान ध्यावेछे, अने आनीओ मनमां थता अनेक संकल्पविकल्पो दूर करी आत्मस्यभानमां मन्न रहेछे, प्रतिदिन उच्चास्थितिने भोगवेछे. सहज शांतिथी यतुं तान्विक सुख ते प्राप्त करी शकेछे. मननी थती चंचलतानो त्याग करवो. मनसंबंधी प्रथम घणुं कहेवामां आव्युंछे. तथी अत्र विशेष वर्णन करवुं योग्य नथी. तोपण प्रसंगवशात् कहेवानुं के मन चंचल अने आस्थरछे ते ज्यां जाय त्यांथी पाछुं वाळीने आत्मानी साथे वश कर्युं.

मन ज्यां सुधी स्थिर रहे नहीं त्यां सुधी शास्त्रोक्तिया जेटली करीए तेटली सफल थाय नहि. श्रीयशोविजयजी जपा-ध्याय कहेळेके-

श्लोक.

या निश्चयैकलीनानां, किया नातिप्रयोजना ॥ व्यवहार दशास्थानां ताएवाति ग्रणावहाः ॥ १ ॥

भावार्थ-जेनुं मन निश्रयमां लीनछे. तेने कियानुं प्रयोजन नथी. व्यवहार दशावालाने किया आते गुणकारीछे. मन वश करवाथी वंधातां कर्म अटकेछे, ज्ञानी थहने फरता एवा पुरुषोथी पण मन जीतातुं नथी. अभ्यासथी मन जीतायछे, महा अनुभवी योगीओना शिष्यो मन वश करी शकेछे पुस्तक, पोथी, पुराण, वांच्याथी पण जे मन वश थतुं नथी, ते मन मुगुरू महाराजनी गुप्त अर्पेली कुंचीओथी धीरे धीरे वश यायछे. पुस्तक सिद्धांतमां लखेला विषयोने जाणी मुगुरूए परिणामिकी द्वादियी जे अनुभव मेनलच्यो होयछे ते शिष्यो के जे गुरुना सदाने माटे विश्वासी होयछे तेने मुलेछे. माटे सुगुरुनुं शरण करी आत्मिक धर्मनी प्राप्ति करवी.

कर्मनो क्षय करतां आत्मिकधर्मनी आविर्भावता यायछे. काया पुद्गलछे, वचन पुद्गलछे, मनपुद्गलछे, धर्म तो निश्चयथी चेतनगत जाणवो, आत्मामां धर्म रहेछे. ते आत्मिक धर्म आत्मस्व-भावे स्थिर थतां मगटेछे. निश्चयथी आत्मा अरूपीछे, अने आत्मामां रहेलो धर्म पण अरूपीछे. असंख्य मदेश आत्माना छे, मित-मदेशे अनंत अनंत धर्म व्यापी रह्योछे, तान्विक आत्मिक धर्मथी अनंत स्थवनी माप्ति थायछे. कर्मनो क्षय करी जे भव्यो सिद्धिपद पाम्याछे तेमने शुद्ध आविर्भावे आत्मिक धर्म मगट्योछे, जे जीवो कर्म सहीतछे तेमने तिरोभावे आत्मिक धर्म जाणवो. जे वस्तु मूळमां वस्तुतः सत्पणे नथी. तेनी उत्पत्ति थती नथी. कारण के-

## नासतो वियतेभावो

सारांश के-असत्तुं उत्पन्न थवापणुं नथी.

शिष्य—जेम असत्नुं उत्पन्न थवापणुं नथी. तेम सत् जे वस्तु त्रिकालमां वर्तती होय तेनी उत्पत्ति कहेबी ए पण अयुक्त छे. कारण के—जे वस्तुनो उत्पाद थाय ते वस्तु प्रथम होय नहीं. यथा पट तेनो उत्पाद थयो तो ते प्रथम नहोतो. तेम जो आत्माना धर्मने सत् मानवामां आवे तो ते त्रिकालमां विय-मानपणाथी तेनी उत्पत्ति थइ एम कहेबुं असत्य ठरेछे अने जो आत्माना शुद्ध धर्मने असत् कहेबामां आवे तो तेनी उत्पत्ति असत्य ठरेछे माटे हे सुगुरो कृपा करी यथार्थ स्व-रूप समजावशो.

सुगुरू-हे शिष्य ! एकाग्र चित्तयी श्रवण कर. असत् पदार्थनी तो त्रिकालमां पण उत्पत्ति धती नथी, इवे सत्वस्तुनो विचार करीए,

### गाधा.

भावस्स णित्थ णासो, णित्य अभावस्स चेवजपादो, ग्रण पज्जयेस भावा, जपाद वए पक्रव्वंति ॥ १॥

भावार्ध-भावनो एटले सत्रूप पदार्थनो नाश नथी, अने निश्चयथी अभाव एटले असत्नो उत्पाद नथी, गुणपर्यायोमां भावो . उत्पाद व्ययने करेले.

सारांश के-द्रव्यार्थिकनयथी सत् पट्पदार्थी उपजता नथी, तेम विजाशताने पण पामता नथी.

अने जे त्रिकाल अविनाशी सत्पदार्थोमां उत्पाद व्यय थाय छे ते पर्यायार्थिक नयनी अपेक्षाथी गुणपर्यायोमां जाणवा.

हवे आत्मधर्मना सत्पणा संबंधी विचार करतां समजाशे के आ-तिमक शुद्ध धर्मतुं सत्पणुं द्रव्याधिकनयनी अपेक्षाए अनादि सत्पणेछे. जो के कर्मावरणयी आत्मिक शुद्धधर्मनुं आच्छादन धयुंछे तोपण आत्मधर्भन्नं द्रव्यार्थिकनयथी जोतां सत्पणुं टळ्युं नथी. अनादि कालथी कर्मावरणथी आत्मिक धर्म आच्छादनताने पाम्योछे एटले ते तिरोभावे सत्पणे वर्तेछे, आत्मिक शुद्ध धर्मनुं सत्पणुं वे प्रकारे छे. संसारद्शामां तिरोभावे सत्पणुं अने सिद्धावस्थामां आविर्भावे सत्पणुं एम प्रकारे जाणवुं. अनादि कालथी जीवनी साये कर्मनो संवंधछे अने ते कर्मना संवंधे आत्मिक शुद्ध धर्म ढंकायोछे. ते ज्यारे कर्मनो नाश थायछे त्यारे आत्मिक श्रुद्ध धर्म प्रगटपणे प्रकाशे छे, हवे सत्स्वरूप आत्मिक धर्मनो उत्पाद केवी रीते थायछे ते सम-जावेछे. तिरोभावपणे वर्ततो आत्मिक धर्म छे तेनो आविर्भाव थयो. तेनी अपेक्षाए उत्पत्ति समजवी सारांश के-सत्स्वरूप जे आ-त्मिक शुद्ध धर्मनो कर्मावरणथी निरोभाव थयो हतो. ते सत्स्वरूप आत्मिक शुद्ध धर्मनो कर्मनाशयी आविर्भाव थयो-निरोभावनो जे

आविर्भाव तेनी अपेक्षाए शुद्धधर्मनी आत्मामां उत्पत्ति जाणवी सत्त पणुं तो प्रथम पण विद्यमान हतुं. हवे ते उपरथी स्पष्ट समजाशे के सत्स्वरूप आत्मिक धर्म द्रव्यार्थिकनयनी अपेक्षाए सदात्रिकाल सत्पणे जाणवो

तिरोभावे ढंकाएलो धर्म आविर्भावनी अपेक्षाए प्रगटपणे वर्तातो नथी माटे असत् अने तिरोभावनो नाश थतां आविर्भावपणे प्रकाशतां सत्स्वरूप जाणवो.

आविर्भावपणे आत्मिकशुद्धधर्म मगट थतां आत्मा परमात्म स्त्ररूप थइ जायछे अने ते अनंत सुखनो भोगी थायछे. पश्चात् कंइ कर्त्तव्य वाकी रहेतुं नथी. सिद्ध स्वरूप थतां पण आत्मामां पर्याया-धिंकनयनी अपेक्षाए पर्यायनो उत्पाद व्यय समये समये वन्या करे छे, सिद्धस्वरूपी आत्मामां अक्रियपणुं जाणवुं. गमनागमन पण सिद्धात्माने नथी. रागद्वेषरूप मलनो सर्वथा क्षय थवाथी सदाकाल स्वस्वभाव रमगतागुण पगटपणे वर्तेछे, ज्ञानावरणीय अने दर्शना वरणीय कर्मनो सर्वथा समूलतः क्षय थवाथी अनंत ज्ञान अने अनंत दर्शन आत्मामां पगटपणे प्रकाशेछे एम अष्टकर्म क्षयथी अष्टगुण आदि अनंत गुण आत्मामां आविर्भावताए प्रगटेछे.

एम अनंत धंर्ममय आत्मा जाणवो, सत्य धर्म आत्मामां रहेछे, शुःध आत्मिक धर्म मगटाववाना हेतुओने व्यवहार धर्म कथायछे, माटे व्यवहार धर्म अने निश्चय धर्म ए वेनुं अवलंबन करबुं.

श्री सिद्धसेनाचार्य कहेछे के-

श्लोक.

निश्चयव्यवहारी द्री, सूर्यचंद्रमसाविव ॥ इहामुत्र दिवारात्री, सदोद्योताय जाग्रतः ॥ दे ॥

अंतस्तत्त्वं मनः शुद्धि, वीहिस्तत्त्वंच संयमः ॥ कैवल्यं द्रयसंयोगे, तस्माद् द्वितयभाग्भव ॥ २ ॥ नैकचकोरथो याति, नैकपक्षो विद्रंगमः॥ नैवमेकातमार्गस्थो, नरो निर्वाण मृच्छति ॥ ३ ॥ परस्परं कोऽपियोगः, क्रिया ज्ञान विशेषयोः ॥ स्त्रीपुंसयोरिवानंदं, प्रसूते परमात्मजं ॥ ४ ॥ भाग्यं पंगूपमं पुसां, व्यवसायोंऽ धसंनिभः ॥ यथा सिद्धिस्तयोयोंगे, तथा ज्ञानचरित्रयोः ॥ ५ ॥ खङ्गखटकवङ्जाने, चारित्र द्वितयंवहन् ॥ वीरो दर्शन सन्नाहः कलेःपारं प्रयातिवै ॥ ६ ॥ एकांते नतु लीयंते, तुच्छेऽनेकांतसंपदः नदरिद्रगृहे मांति, सार्वभौमसमृद्धयः ॥ ७ ॥

भावार्थः निश्चयनय अने न्यवहारनय आ जगत्मां स्रवंद्रनी पेठे प्रकाश करता जागताछे. स्र्यं अने चंद्रनी उपमामां विशेष गंभीर भावार्थ समायोछे. स्र्यं अने चंद्रना मकाशमां घणुं समजवानुं छे. पूर्वोक्त श्लोकोना भावार्थ स्पष्टछे. तेनुं तेथी अत्र विवरण कर्युं नथी. तुच्छ एकांत मार्गमां अनेकांत संपदाओं लीन यती नथी. आ वाक्य आपणने केटछं समजावेछे, तेनी केटली वथी महत्त्वताछे. वली कहेछे के—द्रिना घरमां सार्वभौमनी समृद्धि माती नथी. माटे भव्यात्माओए आयित सर्व शाश्वत सुख संतित मदायक व्यवहार निश्चय धर्मनुं अवलंबन करी उत्तम पुरुषोना पंथने अनुसरतुं तेमां हित समायछुंछे. अज्ञान मार्गनी अंध श्रद्धाथी एकांत मार्गनुं सेवन

करनारा मत कदाग्रही जीवो-व्यवहार अने निश्चयनयना ज्ञान विना वस्तु स्वरूप ओळखी शकता नथी. अने तेथी कर्तव्य कार्य सन्मुख थता नथी. सातनयोना ज्ञान विना जगत्मां मतोनी उत्पत्ति थइछे, परस्परनयोनी निरपेक्षताए वस्तु स्वरूप यथार्थ कथातुं नथी. श्री यशोविजयजी उपाध्याय कहेछे के-

एवे.कनयना हठथी मतोत्पत्ति.

### श्लोकः

बौद्धाना मृजुसृत्रतो मतमभू देदांतिनांसंग्रहात ॥ सांख्यानां ततएव नैगमनयाद् योगश्ववैशेषिकः ॥ शब्दब्रह्मविदोपि शब्दनयतः सर्वैर्नयैर्शिफेता ॥ जैनीदृष्टिरितीह सारतरता प्रत्यक्षमुद्वीक्षते ॥ १ ॥

भावार्थ-रुजुसूत्रनयथी वौधमत मगटयो, अने संग्रहनयथी वेदांतिनो मत मगटयो तथा सांख्यमत पण नैगमनयथी तथा योग मत अने वैशेषिक मत पण ते नयथी मगटयो शब्दनयथी मीमांसक दर्शन उत्पन्न थयुं. अने जैन दर्शन एटले स्याद्वाद दर्शन तो सर्वनयथी गुंफितछे. माटे अनेकांत जैन दर्शनमां सारमां सारपणुं सदा मत्यक्ष-पणे देखीए छीए-जैन सर्व दर्शनीछे. अने वीजां दर्शन ते जैनना एकएक अंशछे.

श्री आनंद्घनजी महाराज कहेछे के. जिनवरमां सघळां दर्शनछे, दर्शने जिनवर भजनारे; सागरमां सघळी तटिनी सही, तटीनीमां सागर भजनारे. पड्दर्शन जिन अंग भणीजे.

जिनदर्शमां सर्व दर्शनछे माटे अन्य दर्शन जिनेश्वर दर्शन अंग-भूतछे. अने एवे का दर्शनमां सर्वोशे सप्तनय परिपूर्ण जैन दर्शननी माप्ति थाय नहीं. कारण के तेमां जैन दर्शननी भजना है. एक अंगनय पक्षयी पामीए पण सर्वांगे माप्ति थाय नहीं. जेम सघळी नदीओ
सम्प्रमां होय पण नदीओमां समुद्रनी भजना जाणवी. सारांश के—
जे नदी समुद्रमां मळी तेमां समुद्रनी भरतीओट गुं पाणी आवे. एवी
रीते नदीओमां समुद्र एक देशे संभवे छे. तेवी रीते समुद्रनी उपमाने
धारण करनार जिनवरनां ए पह्दर्शन ते अंग जाणवां. एकांते
नय गुं कथन करतां. मिथ्यात्व लागे—क हुं छे के—

## एगंते होइ मिच्छतं.

एकांते मिथ्यात्वपणुं होय-माटे हितिशक्षा निग्रंथ प्रवचन कर्ये छे के-एकांतपक्ष आत्म हितकारक नथी. व्यवहारनय अने निश्चयनय अवलंवी आत्म धर्मरूप साध्यना साधक वनद्यं. साध्यनी सिद्धि करवी मुक्केलछे. वातो करवी सहजछे माटे आत्मिक हितेच्छुओए प्रमाद त्याग करवो अने व्यवहार निश्चयधर्मनुं साधन करद्यं. सप्तनय सप्तभंगी चारनिक्षेपा पड्द्रव्य, गुणपर्याय-उत्सर्ग अपवादधी परिपूर्ण स्याद्वादमतने कोइ वीरला भव्य पुरुषो सम्यग् रीत्या जाणी शक्छे. केटलाक विचित्रमार्गनी भ्रमणाओमांगोधां खायछे केटलाक ज्ञान ज्ञान पोकारीज्ञानी नामधरावी शुद्ध धर्मरूप क्रियातरफ अरुचि मार्ग दर्शावे छे अने क्रियानुं उध्धापन करेछे, तथी स्वआत्मानो उद्धार करी शकता नथी. सप्तनयोथी परिपूर्ण वीतराग धर्मने सत्गुरू अने सत्श्रद्धा विना अवगाहवो मुक्केलछे माटे भव्य पुरुषो प्रभुना धर्मनो मार्ग समजी निश्चयहि हृद्यमां धारण करी व्यवहार मार्गे चालेछे.

## श्रीयशोविजयजी वचनामृत.

निश्चय दृष्टि चित्त धरीजी-चाछे जे व्यवहार-इत्यादिः श्री यशोविजयजी उपाध्याय महा विद्वान् हताः संवत् १७४० नी लगभग विद्यमान हता, आत्मिक ग्रंथो दरेक दर्शनना वांच्या हता. अध्यात्मज्ञानदृष्टि पण धरावता हता, जेमणे शास्त्रवार्ता समु-चय आदि शतग्रंथ वनाच्या. ते महा पुरुष पण निश्चय दृष्टि हृद्यमां धारण करी व्यवहार मार्गे चालवानी खास भलामण करेछे. शुं हालमां अध्यात्मनी किंचित् वात सांभळी व्यवहार मार्गथी विरुद्ध चाली डोळघाळ अध्यात्मी वनी जनाराओ करतां विशेष ज्ञानी नहोता. एम केम कहेवाय ? ना तेओ महा ज्ञानी हता. माटे व्यवहार धर्म मार्गन्नं यथाविधि यथाशक्ति आराधन करता हता—

भगवान् सर्वज्ञानी कहे छे के-

जइ जिणमयं पवज्जह, तामा ववहारिनध्थए मुयहः ववहारनओ छछेए, तिध्थुच्छेओ जओ भणिओ १

जो तुं जिनदर्शनने अंगीकार करे तो व्यवहार अने निश्चयने मूकीश नहीं. कारण के-व्यवहार नयनो उच्छेद कर्याथी तीर्थनो उच्छेद कर्यो कहेवायछे, माटे महात्मा थवानी इच्छा होय तो प्रश्चनी शिक्षा धारवी. मानवी,

केटलाक ज्ञाननी आकांक्षा विना अंध श्रद्धावाननी पेठे क्रिया करेळे. ते क्रिया जड जाणवी तेमनो धर्मव्यवहार फोनोग्राफवत् जाणवी.

कोइ एम कहेशे के-वरावर वस्तुनुं खरूप समजीने अमे क्रिया करीशुं-ज्यां सुधी ज्ञान नथीत्यां सुधी क्रिया ज्ञाकामनी ? प्रत्युत्तरमां समजवानुं-एम वोलवामां पण समजवानी घणी तारतम्यता समाइछे. प्रथम विकल्प थशे के क्या ज्ञाननी माप्तिथी क्रिया करवी. मति-श्रुतज्ञाननी माप्तिथी वा केवलज्ञाननी माप्तिथी.

मतिश्रुतज्ञान थया वाद क्रिया करवी एम कहेतां पण विचा-रवानुं के—गणधरोना जेवुं मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, तेवुं ज्ञान हाळना वखतमां नथी त्यारे कहों के चडदपूर्वी वा दशपूर्वधारी जेवुं मित ज्ञान तेवुं ज्ञान पण हाळना वखतमां नथी त्यारे हाळमां मतिज्ञान श्रुतझान तरतमताए थोई अपेक्षाए कहेवाय. हवे झाननेज माननारा कहो के, केंद्र झान थयाथी क्रिया करशो, ते वतावो, वा कहो के, ज्यां मितझान अने भुनझान होय त्यां क्रिया होय के नहीं. अने वळी विचारो के मितिझानी अने श्रुतझानी क्रिया विना शुं करे. माटे क्रियानो स्वीकार करवो योग्यछे. क्रिया विना एकछं झान थुं करे. क्रिया झानिनी पासे होयछे शास्त्रमां पण-

### ज्ञान क्रियाभ्यां मोक्षः

क्रान अने क्रियाथी मोसछे, ज्ञानाभ्यासरूपिक्रया विना क्राननो पण क्षयोपश्रम थतो नथी। त्यां पण क्रियानी जरूरछे। कोइ एम कहेशे के, मित वा श्रुतक्रान थयुं एम मत्यक्ष जणाशे एटले क्रिया करीथुं। तेना उत्तरमां समजवानुं केवलक्रान मत्यक्षज्ञानछे, मितज्ञान अने श्रुतक्रान परोक्षज्ञानछे। मित वा श्रुत छे के नहीं ते अनुमानथी जाणी शकाय। केवलज्ञानी कंइ कहेवातो कोइ आवनाना नथी। माटे भव्य जीवोए ज्ञान श्रद्धाथी जाणी धर्मध्यानादि कारक क्रियामां मवर्तवुं—

श्रादेखक-कोइ स्थळ ज्ञाननी विशेषता वा क्रियानी न्युनता लखे तोषण ते कोइना आदरभणीया कोइना निषेध भणी नथी किं तु बनेना स्वीकार माटेछे एम समजवुं. एकज स्थळे सर्वनुं स्वरूप एकज वखते वर्णवी शकातुं नथी। तथी जेजे स्थळे जेनुं जेनुं स्वरूप वर्णन करवामां आवे ते नयनी सापक्षताए ते ग्रहण करवुं. व्यवहार धर्म अने निश्चयधम सदा जयवंता वर्तेछे. सद्गुरूपासेथी एनुं स्वरूप समजवुं. मित मंदताथी शंकादि उत्पन्न थायतो पण सर्वन्न वी-रना वचनमां सत्यता भराछे। मितदोष काढी सत्शाखनो गुरूगः मता, पूर्वक अभ्यास करवो। केटलीक वानोमां तो अद्धान राखनी पडेछे, केवळकानथी जाणेला पदार्थोनुं स्वरूप तेने अल्पमित ज्ञानी

जीव वरावर शी रीते समजी शके, माटे जिनवचनमां जरा मात्र शंकानो अवकाश नथी. एम श्रद्धा करवी मोक्षार्थी जीवने घटेछे.

उपर ममाणे यथा मितलेशयी व्यवहार निश्चयधर्म वा धर्म क्यां रहेळे ते दर्शाव्युं.

### सप्तम विषय.

हुं संसारमां जन्म मरण पामुं हुं तेनुं शुं कारण ?

- प्रत्युत्तर-कर्म, कर्म ए आत्मा नथी. आत्माथी भिन्न द्रव्यछे. आ-त्मानी साथे अनादिकालथी लाग्युंके जेनी आदिनथी तेनो अनादिकाल समजवी-
- प्रश्न-क्रम आत्मानी साथे पोते पोतानी मेळे लाग्यांछे वा कोइए लगाड्यांछे
- उत्तर-कर्म पुट्गल स्कंप स्वरूपके. जडके. खरवा मि अवा रूपिकिया करेले, अनादिकालथी आत्मानी अशुद्धि परिणितयोगे कर्म ग्रहायले, परमात्मा आत्मानी साथे कर्म लगाडतो नथी. अर्थात् आत्मा पोते अशुद्ध भावथी कर्मने ग्रहेके. अशुद्ध परिणाति आत्माथी न्यारी नथी तथी आत्माज पोते कर्मनो कर्त्ता तथा भोक्ता कहे रायले.

आत्मानी साथे अन्य कोइ कर्प लगाडतुं नथी. केटलाक जीवो इश्वर भीवनी साथे कर्म लगाडे छे एम माने छे पण ते युक्तिहीन तथा सर्वज्ञनामत विरूद्ध वात छे. कारण के परमेश्वरने शुं मयोजन छे के ते जीवोनी साथे कर्म लगावे. अलवत रागद्वेप रहीत मभुने कंइपण मयोजन नथी के ते जीवोनी साथे कर्म लगाडी शके. वली परमेश्वर कहे। के परमात्मा सिद्ध, ते मोए कर्मनो नाश कर्यो छे, कर्मनो सर्वथा मकारे नाश थतां सिद्ध परमात्मा कहेवाय छे, त्यारे समजवानुं के, जे सिद्ध, परमेश्वर कर्मातीत छे अक्रिय छे को इपण प्र-कारनी क्रिया करता नथी. ते वीजाने कर्म छगाडवानी क्रिया करे ते शशशृंगवत् असत्यवात ठरे छे.

प्रश्न-त्यारे शुं सिध्ध परमात्मा कोइपण मकारनी क्रिया नथी करता.

प्रस्तर-ना, पौद्गलिक कोइपण प्रकारनी क्रिया सिध्ध परमे-श्र करता नथीं, पोताना श्रध्यस्त्रभावे तेमनी सदाकाळ स्थितिछे. कर्मछे ते तो पौद्गलिकछे. पौद्गलिक भावधी भिन्न पश्चपाने सिध्धछे. भिन्न पुद्गलद्रव्यनी कियाने पश्च परमेश्वर करता नथीं, पश्चतो अरूपीछे एवा प्रश्चरी कर्म जीवोने लगावबुं त्रिकालमां पण बनेज नहीं.

सिध्य परमात्मा शुध्य स्वस्वभावे सिक्रयछे एटले स्वभाव रमणतारूपवा पड्गुणगुणहानिदृध्यिरूपिक्रयाना कर्त्ता सिध्यात्माछे. प्रश्न-सिध्य परमेश्वर, जीवो कर्म सारां वा नटारां कर्म करेछे.

तेनो इन्साफ आपेछे के नहीं.

- प्रत्युत्तर-सिध्ध परमात्मा वा जेने निरंजन निराकार ब्रह्म वा इश्वर कहें छे ते कर्म प्रपंचधी अत्यंत भिन्न छे. ने तेथी ते जी-वोने कर्या कर्म प्रमाणे इन्साफ (न्याय) करी सुखहु: ख आपता नथी. सारांशे जीवोए जे कर्म कर्या छे तदनुसारे सुख दु:ख भोगाववा जीवोने सारा खोटा उंच पथु, पंखी, माणस, अंधादिना अवतार परमेश्वर आपता नथी.
- प्रश्न-त्यारे जीवो सागं वा खोटां कर्म करे. ते पोतानी मेळे शी रीते भोगवे.
- उत्तर-जे क्रियानो कर्ता जीव पोतेछे ते क्रियानुं फल भोगवनार पण जीव पोते जाणवो, जेम कोइ मनुष्य तालपुट विष भक्ष-

णनी किया पोत करे तो ते कियाथी माणनाशरूप थतुं फल पण पोते भोगवेछे. हवे कहो के तेमां न्याय कर्त्ता कोण इश्वर वा कियानो कर्ता, इश्वरे मनुष्यना माणनो नाश कर्यो वा तालपुट विषे माणनो नाश कर्यो. अलवत कहेवुं पडशे के विषमांज एवी शक्ति रहीछे के ते माणनो नाश करेछे, मत्यक्ष ते सिध्य वातछे. इश्वर न्याय करेछे एम मानवुं ते केवल मृपा, प्रमाणविरूध्य कल्पना मात्रछे, निरंजन निराकार इश्वर सिध्यात्माने शुं मयोजन छे के कर्मना फलोदयने भोगवावे.

वळी ते उपर वे विकल्प करीएछीए के कर्म पोते फल आ-पवामां स्वतंत्रछे के परतंत्र प्रथम पक्षमां कर्म पोतेज सारू वा खोटुं आपवामां स्वतंत्रछे. एम स्वीकारतां इश्वर जीवोने कर्यांकर्म प्रमाणे न्याय आपेछे ते वात खोटी आकाश कुसुमवत् टरी. कर्ममां ज सारूं वा नठारुं फल आपवानी शाक्ति रही छे तो ते प्रमाणे कर्मधी मुख दु:ख फल मलशे. पोतानी मेले जेम पुरूपनुं वीर्य अने स्नानुं रेतस् ए वेन ।संयोगमांगर्भ उत्पन्न करवानी शक्ति रहीछे तथा जेम आप्रिमां स्वाभाविक दाइकशाक्ति रहीछे तेथी अप्रिनो अंगारो हाथमां लइएतो पोतानी मेळे हाथ वले, हाथने वाळवामां दाहकत्त्वरूप न्याय पोते करेछे. तेमां इश्वर कंड़ न्याय करतो नथी. तेम कर्म पोते स्वतंत्र रीत्या फल आपवा समर्थछे. त्यां इश्वरने न्याय कत्ती मा-नवो केवल भ्रमणा अने अज्ञान अने मिथ्यात्व समजवुं. कर्ममांज शातावा अशातारूप फल आपवानी शक्ति छे एम सत्य छे, ज्ञान दृष्टिथी देखायछे. सर्वज्ञने बदवानुं कंइ कारण नथी हवे वीजो पक्ष छइए, कर्म फळ आप-वामां परतंत्र छे एटले ते इश्वरना तावामांछे. इश्वरनी इच्छा प्रमाणे कर्म फल आपी शकेछे एम मानीएनो इश्वर अन्यायी प्रपंची द्या-द्यीन ठरेछे.

(१५४) कर्म स्वयभेव सुख दुख आपेछे.

**श्राइांका** तेम करतां इश्वर अन्यायी द्याहीन प्रपंची शीरीते ठरे बाह? समाधान-कर्म फल आपवामां परतंत्रके. तेम लागवामां पण पर-तंत्र, जे परतंत्र होय ते सदाय फलोदयमां तथा लागवामां परंतंत्रन रहेछे, जेम तरवार वीजाने लागवामां तथा तेनो माण लेवामां सदाय परतंत्र रहीने कार्य करेले. मनुष्य हाथमां तरवार ग्रहीने अन्यने मारे त्यारे तेना प्राणनो नाश थायछे, तरवार पोतानी मेळे उंची थइ मारवानी क्रिया करी शकती नथी, कारण के ते कत्ताथी प्रवर्तेछे माटे प्रतंत्रछे. तेम कर्म इश्वरना तावामां रही मवर्ततां होय तो मथम जीवोने इश्वरे कर्म लगाडयां एम कहीएतो पहेला जीव कर्मरहीत हता. त्यारे तेमने ज्ञा माटे कर्म लगाड्यां ? कंइपण अपराध विना कर्भ लगाड्याथी इश्वर अन्यायी पातकी ठरे. वळी कर्मरहीत पहें छा जीवो हता तेओने कर्म लगाइवाथी इश्वर मभुनुं शुं कल्याण थवानुं हतुं अलवत कंइ नही, वळी इश्वरनामां जीवोने फर्म लगावानी शक्ति नित्यछे के अनित्यछे, जोते कर्म लगाडवानी शक्तिने नित्य मानीए तो सदाय इश्वरजीवोने कर्म लगाडया करशे. जीशे कदी कर्मरहीत थशे नहीं. तो मधुने भजवुं इ यादि सर्व व्यर्थ कल्पना मात्र थइ १ डे. वळी इश्वरमां कर्म लगाडवानी शक्ति अनित्यले एम कहीए तो अनित्य शक्तिनो आधारी भूत इश्वरपण अनित्य ठरेछे, निराकार साकार इश्वर मानवामां को इपमाण नथी. निराकार इश्वर सिध्यने मान गां निराकार इ वरने को इपग जातनी इच्छा नथी तेथी ते कर्म लगाडवानी उपाधिमां केम पडे. वळी निराकार इश्वाने जो इच्छा कहीए तो उच्छा अधुराने होयछे, पग पूर्णने होती नथी. इच्छा मानवाथी इश्वरनी पूर्णतानो

नाश थायछे. वळी समजवातुं के-इच्छा राग विना होती नथी अने ज्यां राग होयछे त्यां सदाय द्वेष रह्योछे. रागी द्वेषी होयते कर्म स- हीत होय अने कर्म सहीत होयते संसारी कहेवायछे, संसारी थवाथी इश्वरपणुं नष्ट थयुं, कर्म कलंक नाश करी निरंजन निराकार पद् पामवाथी इश्वरताछे— कर्म ए कंइ वोलवा मात्र शब्द नथी, कर्म पुद्गल परमाणुओनो स्कंधथी वनेकुंछे. अने ते रूपीछे. कर्म लागवाथी आत्माना गुणो ढंकायाछे. हवे कहो के-कर्मथी रहीत एवा इश्वरमां कर्म लगाडवानी शक्ति मानवी ए केटली भूलनी वातछे, जो पोते कर्म रहीत थयाछे ते बीजाने केम कर्म लगाडे, कर्म लगाडवानी शक्ति इश्वरमां कर्म्यवी ते आकाश कुमुमवत् असत्य कल्पना मात्रछे. तेमज इश्वरनामां मुख दुःख भोगाववानी शक्ति मानवी ते पण कल्पना मात्र शश शृंगवत् वातछे.

कर्म पोतानी मेळे लाग्यां एम मानतां इश्वर कर्ता हर्ता नथी एम सिध्ध थयुं. हवे जीवने कर्म पोतानी मेळे लाग्यां एम मानतां तर्क थक्षेके—कर्म लगाडया विना पोतानी मेळे क्षी रीते लाग्यां अने ते क्यारथी लाग्यां—तेतुं समाधान सूक्ष्म विचारथी थक्षेके—कर्म अनादि काल्यी जीवने लाग्यांछे. जीव अनादि काल्यीछे. जेनी आदि होय उत्पन्न थवापणे ते वस्तुनो अंत पण होयछे, जे वस्तुनो आदि अने अंतछे. ते अनित्य होयछे अने जे अनित्य होयछे ते कार्यछे अने जे कार्य पणे वस्तुछे ते विनाशीछे जेम घट उत्पन्न थयानी आदिछे तो तेनो अंत एटले नाश होयले, आत्मा कहो के चेतन वा जीव तेनी उत्पन्न थवानी आदि नथी अर्थात् आत्मा द्रव्याधिकनयापेक्षाए कोइनाथी उत्पन्न थयो नथी, अने जे वस्तु उत्पन्न थइ नथी तेआनादि काल्यीछे, जेम आकाश. जे वस्तु अनादि काल्यीछे तेनो अंत पण नथी, माटे जीव पण अनादि अनंतछे. आत्माना असंख्यान

मदेशमय व्यक्ति द्रव्यार्थिक नयनी अपेक्षाए अनादि अनंतछे, कोइ पण कालमां आत्माना असंख्यात मदेश पैकी एक मदेश पण खर-वानो नथी. आत्मा कहो के जीव ते त्रिकालमां पोताना रूपे सत्छे अने जे वस्तु सत्छे ते नित्यछे, आत्मा सत्छे माटे ते नित्यछे,

### पागभावापतियोगित्वं नित्यत्वं

प्राण्यावतुं जे अप्रतियोगी होयते नित्य जेटला कार्य रूप पदार्थी घट पट दंडादिकछे ते पर्यायार्थिक नयनी अपेक्षाए अनित्य जाणवा—कारणके घटपटादिक पदार्थी पाग्भावना प्रतियोगीले. आत्मा वा चेतन पाग्भावनो अप्रतियोगीले माटे आत्मा नित्य जाणवो—द्रव्यार्थिक नय द्रव्यत्व पणाने ग्रहेले माटे द्रव्यार्थिक नयनी अपेक्षाए आत्मा नित्यरूप जाणवो. संसारमां चार गितमां परिभ्रमण करनारा अनंत आत्माओतुं द्रव्यपणुं त्रिकाल एक स्वरूपले माटे ते द्रव्यार्थिक नयनी अपेक्षाए नित्य जाणवा, हवे आत्मा अनादिकालयी कर्म लाग्यांले ते वातनुं विवेचन करायले. आत्मा अनादिकालयी कर्म लाग्यांले ते वातनुं विवेचन करायले. आत्मा अनादिकालयी के एम सर्वज्ञ श्री वीरमञ्जना वचनथी जाण्युं तेम कर्म पण अनादिकालयी लाल्या आत्माने लाग्युंले. एम सर्वज्ञ श्री महावीरना वचनथी जणायुं, वीर प्रभु सर्वज्ञ अने रागदेपथी सर्वथा रहित हता माटे तेमना वचननो पूर्ण विश्वास भव्यजीवने थाय एमां कंड आश्चर्य नथी,

### आप्तोक्तं वाक्यं प्रमाणं

श्री वीरमभ्र त्रिकाल सर्वज्ञानी आप्त इता. माटे तेमनुं वाक्य प्रमाणीभूत जाणवुं. कर्म अनादिकालथी जीवने लाग्यां एमां आग्म प्रमाण पण सिध्ध टर्यु. कोइ जीव राजा थायछे, कोइ रंक था-यछे, कोइ जन्मथी अंधा विषर अवतरेले कोइ-रोगीनो कोइ-भोगी इत्यादि सर्व पुण्यपापनुं फल मत्यक्ष देखवामां आवेले माटे तेमां

परियक्ष प्रमाण पण सिध्य करेछे. (भोगायतनं शरीरं ) सुख दुःख भोगववानुं स्थान शरीरछे, अने ते ममाणे दरेक जीव क्षणिक सुख त्यां दुःख शरीरादिकथी भोगवेछे एम मत्यक्ष जोवामां आवेछे. तो ते सुख दु:खनुं कारण कर्म-पुण्य पापरूप आत्मानी साथे लाग्युं छे एम अनुमान थायछे. जेम कोइ शहरपासे नदीछे तेमा जलनी रेल आवीछे. शहेरनी आसपासतो मेघ वरस्यो नथी. ते उपरथी एम अनुमान थायछे के-ज्यां त्यां अत्यंत मेघनी दृष्टि थवी जोइए. कारणके नदीमां रेल रूप कार्य देखायछे ते मेघनी दृष्टि विना होय नहीं अहीं तो मेघनी दृष्टि थइ नथी. तेथी अनुमान थायछे के पर्व-तमां दूरे खूव मेघ दृष्टि थड़ हरो, तेम कर्मनी वावतमां पण अनुमान थायछे के- भोग रोग सुख दुःख रूप कार्य'फलतो मह्यक्ष देखवामां आवेछे माटे तेनुं कारण कर्म होवुं जोइए. पुण्य पाप विना शाता तथा अशाता वेदनीय होय नहीं, ए अनुभव सिध्ध वातछे, वळी कहेछे के-जेम कोइ द्वक्षना कोटरमां अग्नि सळगेछे अंटरना भागमां अग्नि बळे छे बाहिर देखाती नथी वाहिरतो फक्त धृम देखायछे. ते उपरथी अनुमान थायछे के-

## यत्रयत्र धूम स्तत्रतत्र वन्हिः

ज्यां ज्यां धूम होयछे त्यां त्यां अग्नि होयछे, द्वक्ष अंदरथी धूम विहर निकळतो देखायछे माटे द्वक्षना कोटरमां अग्निछे एम अनुमान थी सिद्धि थायछे. तेम सुख,पूर्णेन्छा,भोग, रोग,गोक,वियोग,अंथत्व, विधरत्व, द्रित्वरूप,कार्यरूप, फळ देखायछे माटे तेनुं कारण पुण्य पापरूप कर्म आत्मानी साथे छाग्युंछे एम सिद्ध थायछे, सर्व विद्वा-नो कर्मनुं अस्तित्व स्विकारेछे तेम कर्म ग्रंथमां कर्मनुं स्वरूप विस्ता-रथी हानीए वर्णव्युंछे तेमन कम्मपयडी, भगवतीसूत्र, पत्रवणासूत्र, विपाकसूत्र विगेरे सूत्रो तथा ग्रंथोथी कर्मनुं यथानक्ष्य स्वरूप सम्- जायछे अने ते अनुभवमां आवेछे. कर्मनी मकृतिनुं स्वरूप निम्नंथ मत्रचनमां स्क्ष्मपणे वर्णन कर्युंछेः तेवुंवर्णन अन्य दर्शनमां ते ममाणे परिपूर्णपण नथी. कोइ कर्मने किस्मत कहेछे, कोइ कर्मने मकृति कहेछे, पण कर्मनुं अस्तित्व मान्याविना छूटको थतो नथी.—

श्लोक.

कृतकर्मक्षयोनास्ति, कल्पकोटीशतैरिप ॥ अवश्यमेव भोक्तव्यं, कृतं कर्म शुभाशुभं ॥ १ ॥

कृतकर्मनो क्षय नथी. कोटीकल्पशतोए पण कर्म अवश्य शुभा-शुभ भोगवं पढेछे, जन्मजरा अने मृत्यु पण कर्मथी थायछे. चो-राशी लाख जीवयोनिगां अवतरत्रं पण कर्मथी थायछे. एकेंद्रिय, द्वींद्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिंन्द्रिय, पंचेंद्रियना अवतार पण कर्मथी थायछे, कर्म अनेक मकारेछे. कर्मना मूळ आठ भेदछे. तेनी उत्तर मकृति एकशतअठावनछे. देवगति, मनुष्यगति, तिर्थचगति, नारकगति, ए चार गतिमां अवतार पण शुभाशुभ कर्मथी छे कहुं छे के-

गाथा,

जंजेण कयंकम्मं, पुव्वभवे इहभवे वसंतेणं॥ तं तेण वेइअव्वं, निमित्तमित्तो परो होइ॥१॥

जे जीवे पूर्वभवमां तथा आभवमां वसतां जे कर्म कर्यां छे. ते कर्म ते जीवे भोगववा योग्यछे. मुखदु: खमां परजीव तो निमित्त मात्रछे. कर्मनो कर्त्ता पण जीवछे तेम कर्मनो भोक्ता पण जीवछे. देखो सुयडांगमूत्र—सम्मितितर्कमां परभावमां रमतो जीव परनो कर्ता तथा भोक्ता वनेलोछे—वेटलांक कर्म भोगवीने खेरवेछे. अने जीव वेटलांक कर्म नवां ग्रहण करेछे—एम अनादि कालथी जीव कर्मने ग्रहण करतो तथा कर्मने छंडतो वर्तेछे, मातानुं रूपिर अने पुरुषना,

वीर्य संयोगे गर्भमां जीवतं उत्पन्न थवं अने प्रतिदिन इदि पा इत्यादि सर्व कर्मनो प्रपंचछे गर्भमां पण जीव ओजाहार प्र प्रेश्न-गर्भमां जीव शावडे आहार ग्रहण करेंछे.

प्रत्युत्तर-आहार त्रण प्रकारनाछे. १ ओजाहार, २ लोमाह

(रोमाहार) कवलाहर-पूप एटले मालपूआने ज्यारे र्घ तलेखे त्यारे मालपुओ सर्वथी घीनी साथे परिणमी जाय तेम गर्भमां जीव आहारने खेंची शरीररूपे परिणम शरीरनी दृद्धि करेखे. रोमथकी जे आहारने ग्रहण करवी रोमाहार कहेवायले. हवानुं ग्रहण शरीरमां रोमथी थाय मुखथकी जे आहारनुं ग्रहण करवुं. ते कवलाहार कहेवाय मनुष्य पशु पंखी जलचरने कवलाहार मत्यक्ष देखवामां अ छे, एम गर्भमां ओजाहारनुं ग्रहण छे.

प्रश्न-केटलाक भोळा लोको अज्ञानताथी एम माने छे के-गर्भम वाहिर नीकळ्या वाद-जीव शरीरमां मवेशे छे. अने पश्च छठा दीवसनी रात्रीए सरस्वति वाळकनुं भविष्य कपाल लखे छे अने कहे छे के-छठीना लेख लख्या मटे नहीं तेनुं वे प्रस्युत्तर-गर्भमांज जीव उत्पन्न थाय छे. ते माटे प्रवचन सारो छ

नवतत्त्व विगेरे ग्रंथो जोवा छटीना छेख सरस्वति छखेछे।
मानवुं पण मिथ्या कल्पनामात्रछे—कर्म साये वंध पामेलो ज
गर्भमां उत्पन्न थायछे, अने त्यां दृद्धि पामी नव मास थ
वाद वाहिर नीकळेछे, कोइ गर्भमांन मरण पामेछे. इत्या
सर्व कर्मनुं फळछे.

कर्मनो सर्वथा प्रकारे क्षय धवाधी जन्मजरा मरणनी मा

प्रश्त-कर्मनो क्षय थवाथी मुक्तिपद मळेछे त्यारे जेटला जीव कर्मनो क्षय करेछे ते प्रमेश्वर कहेवाय के नहीं.

प्रत्यत्तर-हा, जेटला जीव, कर्मनो क्षय करें हे तेटला जीव परमा-त्मा सिद्ध, बुद्ध, कहेवाय छे, कर्मथकी सर्वथा प्रकारे रहीत थंबुं. तेनुं नाम मोक्ष कहेवाय छे.

प्रश्न-कर्म सहित जीव मोक्षमां जाय के नहीं ?

प्रत्यत्तर-कर्मसहित कोइ जीव मोक्षमां गयो नथी अने जशे पण नहीं. शिष्य-हे सद्गुरो-कोइ मित अज्ञानीयोए नवीन कल्पना उत्पन्न करी एम कहे छे के मुक्तिमां केटलांक वर्ष मुधी जीव रही पश्चात् संसारमां आवे छे. आ वावत शुं समजवुं.

सद्ग्रह-मुक्तिमां गया वाद जीव पुनर्संसारमां पाछो आवतो नथी. जीवने एक स्थानथी अन्यत्र लेड् जनार कर्मछे. अने ते कर्मनो संपूर्ण नाश थाय त्यारे मुक्ति स्थानमां जीव सिद्ध रूपे वीराजेछे. त्यांथी संसारमां आवी शकातुंज नथी. कारण के जीवनी साथे कर्म संवंध छतां गमनागमनछे. कर्मना अभावे मुक्ति स्थित मुक्तात्मानुं गमनागमन थतुं नथी, श्री वीरमभु एम सर्वज्ञ दृष्टिथी वदेछे—चकलाचकलीनी पेठे मुक्तिना जीवो गमनागमन करना नथी—मुक्त जीवो अक्रियांवंतछे. माटे ते गमं नागमननी क्रिया करता नथी.

प्रश्न-मुक्त आत्मामां सर्वशक्तिमानपणुं छेके नहीं,

उत्तर-हा मुक्तात्मामां पोताना स्वरूपथी सर्व शक्तिपणुं रहां छे. पण पुद्गल द्रव्यनी शक्तिथी मुक्तात्मानी शक्ति भिन्न छे. आकाश द्रव्य अरूपीछे. आकाश जेम अनंत प्रदेशीछे अने ते जेम स्व-स्वरूपे स्थिर वर्ते छे. तेम सिद्ध परमात्मा स्वस्वरूपे शुद्ध यया छता स्थिर वर्ते छे. स्थिरवर्तनाथी आत्मिक सर्व शक्तिपणुं जरा मात्र घटतुं नथी. गमनागमन परमाणुओतुंछे. परमाणुओना संवंधथी थएला पुद्गल स्कंधो कर्मरूप परिणमी आत्माना मदेशोनी साथे लाग्याछे ते ज्यारे कर्म नाश थायछे. त्यारे मुक्तात्मा सिद्धबुद्ध कहेवायछे. मुक्तात्मानी सर्व शक्ति आत्माना असंख्य मदेशोनी व्यापीने रहीछे. मुक्तात्मानी शक्ति खद्रव्य वाहिर जती नथी. माटे आत्मस्वभावे सर्व शक्तिपणुं सदा वनी रहांछे, सिद्ध अक्रिय होवाथी गमनागमननी क्रिया करे नहीं.

- प्रश्न-कोइ एम कहे छे के-इश्वर अवतार छेइ दैत्योंनो नाश करे छे ए वात खरी के खोटी-
- उत्तर-कर्म रहीत निर्मल परमात्माने इश्वर कहेवामां आवेछे ते परमात्मा अवतार ग्रहण करता नथी कारणके कर्मातीतने अव-तरत्तुं आदि उपाधि नथी-पण कर्म सहित जे संसारी जीवछे ते अवतार ग्रहण करेछे अने जन्म जरा मरणनां दुःख पामेछे.

प्रश्न-त्यारे इश्वरनां लक्षण कहो.

प्रत्यंत्तर—जेनामां रागद्देष सर्वथा होतो नथी तेने इत्थर कहे छे' वळी इत्थरना चार प्रकार छे-नाम इत्थर, स्थापना इत्थर, द्रव्य इत्थर, अने भावइत्थर इत्थर एवं गुणी वा निर्गुणीनं इत्थर एवं नाम स्थापवं ते नाम इत्थर, तथा कोइ पण वस्तुमां इत्थरनो आरोप करवो ते स्थापना इत्थर—जे जीवमां इत्थरपणं आविर्भावे वर्ते नहीं ते द्रव्येत्थर—जे जीवमां रागद्वेपना क्षयथी इत्थरत्व आविर्भावे वर्ते छे ते भावेत्थर, ए चार भेद इत्थरना छे. तेमांथी पूर्वोक्त जे इत्थर भावइत्थर तरी के कथाय छे. ते इत्थर नं संसारमां पुन-रजन्म वं थतं नथी. जीव ते पण इत्थर सत्ता ए छे. इत्थरपणं कर्मा च्छादितपणे होवाथी कर्म सहीन संसारी जीव संसारमां जन्म जरा मरण करे छे अने चतुरशीति लक्ष जीवयोनिमां पुनः पुनः परि-

भ्रमण करेंछे-जीव पोते कर्प करेंछे अने तेनो भोका पण पोते एकलोंछे. कहुंछे के-

गाथा.

एको करेइ कम्मं,फलमानि तम्मिकं संमण्यहरू एको जायइ मरइय, परलोयं एकर्डजाइ॥१॥

भावार्थ सुगम होवाथी लख्या नथी, व्यवहारनये जीव कर्मनो कत्तीछे-शुद्धनिश्रयथी स्वस्वरूपे रमतो जीव परनो एटले द्रव्यकर्म तथा भावकर्मनो कर्त्ता नथी.

ज्ञानी शुद्ध आत्मस्वरूपमां रमतो कर्मनो नाश करेछे-जे आ-श्रवना हेतुओ छे ते ज्ञानीने संवररूपे परिणमेछे. कहाँछे के-श्लोक.

यथा प्रकारा यावंतः संसारावेश हेतवः तावंतस्तद्विपर्यासाः निर्वाणावेशहेतवः

कर्मना वे भेद् छे. एक शुभाश्रव वीनो अशुभाश्रव. मथम शुभाश्रवने पुण्य कहे छे, अने अशुभाश्रवने श्रीजिनेंद्रदेव पाप तरीके कथे छे. पुण्यनी वेतालीस मक्ति छे अने तेम पापकर्मनी ८२ व्यासी मक्ति छे. आत्माना शुभ परिणामथी पुण्य तथा अशुभ परिणामथी पापकर्म वंधाय छे. रागद्वेपने भावकर्म कथे छे. रागद्वेपनो जय करवो ए शुरा पुरूष कुत्य छे. रागद्वेप जीत्या विना देवपणुं कथातुं नथी. चतुर्दश रज्ज्वात्मक लोकमां सर्व संसारी जीवोमां रागद्वेप व्यापी रह्यों छे. महादेव विश्वीसीमां कहुं छे के-

श्लोक.

रागदेषी महामछो, दुर्जितौ येन निर्जिती; महादेवं तु तं मन्ये; शेषा वै नामधारकाः अा संसारमां दुर्जय रागद्देषरूप महामछछे. तेवा महामछोने जेणे जीत्याछे तेने महादेव मानुंछं, वाकीना तो नामना महादेवछे. रागदेपने जीतवाथी वीतरागता मगटेछे, सत्यताचिक सुख वीत-रागवस्थामांछे. रागदशाथी दुःखछे अने वीतरागदशाथी सुखछे. एम सर्वज्ञ वीरपरमात्मा सारमां सार कथेछे. श्रीवीरमञ्जूष ध्याननी तीक्ष्णताथी रागद्देपनो क्षय कथींछे. श्रीमसञ्चंद्र राजर्षिए रागद्देप शत्रुनो आत्मध्यानथी क्षय कथींछे. श्रीमसञ्चंद्र राजर्षिए रागद्देप शत्रुनो आत्मध्यानथी क्षय कथीं. रागद्देपज संसारनुं मूळछे. ज्ञान दर्शन अने चारित्रगुणनी क्षायिकभावे माप्ति रागद्देपना क्षय विना नथी. देष करतां पण रागनी सत्ता विशेषतः मवर्तेछे. कारण के जह वस्तुपर पण रागदशाथी ममत्वभाव उत्पन्न थायछे. आ-तिमक ज्ञानयोगे मोहनीय कर्मनो उपशमभाव वा क्षयोपशमभाव वा क्षायिकभाव मगटेछे. क्षानावरणीय कर्मना, क्षयोपशमभाव वा क्षायिकभाव मगदेभीवने मोहनीय कर्म अटकावेछे.

कर्भवंधमां पण रागद्वेपनी प्राधान्यता समयमां वर्णवीछे. चार धातीकर्भमां पण मोहनीय कर्मनी सत्ता प्रवल्पणे प्रवर्तेछे. देवगुरु धर्मनी श्रद्धा सम्यक्त्व पण मोहनीय कर्मना, उपश्चम, क्षयोपश्चम तथा क्षायिकभावथी थायछे, मोहनीय कर्म पण दिधा प्रवर्तेछे. दर्शन मोहनीयना क्षयथी दर्शन मगटेछे अने चारित्र मोहनीयना क्षयथी चारित्र प्रगटेछे. वेदनीयकर्म, आयुष्यकर्म, गोत्रकर्भ अने नामकर्म एह चार कर्म अधातीयांछे, ए चार कर्ममां औद्धिकभाव फक्त प्रवर्तेछे. औद्धिकभावे अधातियां चार कर्म भोगवीने आत्मा खेरवेछे. प्रत्येक भवमां द्रव्य, क्षेत्र, काळ, भावथी औद्धिकभावनी जीव जीव प्रति भिन्नता वर्तेछे. इंद्रिय, गतिकायनी अपेक्षाए औ-द्धिकभावमां जीव जीव प्रति असंख्यभेदे भिन्नतानी तारतम्यता प्रवर्तेछे. औद्धिकभावे चार अधातीयां कर्मनी कर्मवंधनमां निमित्त

कारणता वर्तेछे. प्राध्यानता रागद्वेषंनी कर्मवंधनमांछे. माहनीय कर्मनी वंधस्थीति उत्कृष्टी सित्तेर कोडाकोडी सागरोपमनी जा-णवी. मोहनीय कर्म मदिरा समानछे. जेम मदिरापानथी मत्त थएल मनुष्य अविवेकी वनी कृत्याकृत्य जाणी शकतो नथी. तेम मोहना उदयथी मूढ थएल मनुष्य कृत्याकृत्यने संमनी शकतो' नथी. भक्ष्याभक्ष्यमां मवर्तेछे, परभावमां मदोन्मत्तपणे मवर्तेछे अने पापकर्मयोगे आत्माने कर्मदलिकथी भारे करेछे. मोहोदयथी कोइनी हितशिक्षा श्रवणे सुणतो नथी. युवावस्थामां तो मोहोदयता अति-शय वर्तेछे. मोहनीय फर्मरूप वाजीगर-संसारी जीवोने पूतळांनी माफक नचावेछे अने जन्म, जरामरण, रोगशोक, तृपा, धुधा, छे-दनभेदननां दु:ख आपेछे. छतां जीवा मृहताथी संसारमां सार मानी रागदशामां मस्तान थइ वर्तेछे. अहो केटली अज्ञानता. क्ष-णिक सुखमां चिंतामणि रतन समान मनुष्यभव जीव हारी जायछे। अने पुनः पुनः संसारमां परिश्रमण करेले. कर्मराजा संसाररूप नगरमांथी जीवने जरा मात्र खसवा देती नथी. अनंत शक्तिधारी आत्मा पण कर्म पिंजरमां रह्योछे क्यां पुट्गलनी शक्ति अते क्यां. आत्मानी शक्ति तेनो तो हे भव्यो विचार करो-प्रश्न-हे गुरु महाराज कर्म ए पुर्गल द्रव्य छे के पुर्गल द्रव्यना पर्यायछे.

उत्तर-कर्म एह पुर्गल परमाणु द्रव्यना पर्यायरूप स्कंधोछे अने ते आत्म मदेशोनी साथे भीरनीरनी पठे परिंणमेछे-पुर्गल द्रव्यनो स्कंध रूप पर्याय कर्भ जाणबं-कर्भ जडछे. पण तेनाथी आ-रमाना गुणो ढंकायछे तेथी आत्मा दुःख पामेछे.

प्रश्न-अनादिकालथी जे कर्म आत्मानी साथे लाग्युं हे तेना की

उत्तर-कर्म वंधननी मूळ सत्ता जे रागद्देषछे तेनो क्षय करवाथी कर्मनो अंत आवेछे. मितश्रुतज्ञानना क्षयोपश्चमभावे कोइक भव्यजीव षड्द्रव्यने जाणी जीवद्रव्यने अन्य पंचद्रव्यथी भिन्न जाणीसम्यक् शुद्ध वोधथी आत्मध्यानमां मवर्ते. अने रागदशाना हेतुओने त्यागी संयम आदरी निश्चयथी स्वस्वभाव स्वगुण स्थिरतारूप चारित्रमां उपयोगथी वर्ते तो जीव कर्मनो क्षय करेछे. अने तीर्थकरोक्त परमपदनी माप्ति करेछे. अनंत जीवो कर्मनो संक्षय करी परमपद पाम्या अने पामशे. एम श्री मवचन वदेछे.

जे भन्यो वीतरागना पंथने चाहेछे ते भन्यो रागद्वेषनो क्षय करी ते पदने पामेछे अने पामशे. कर्मनो ग्रहण कर्ता पण जीवछे अने तेनो नाशकर्त्ता पण जीवछे.

परमां रागद्देपनी परिणितिथी कर्मवंधन अने स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल अने स्वभावथी आत्मगुणमां प्रवृत्ति करवाथी क-र्मनो नाश थापछे. मिथ्यात्व, अविरित, कषाय अने योगथी कर्म- बंधन थायछे. अनािद कालथी जीव संसारमां परिश्रमण करें छे तेतुं कारण कर्म जाणवुं. भेदज्ञान थवाथी आत्मा अने परनो भेद थायछे. अने भेदज्ञानथी समिकित मगटेले. ज्ञानभाव विना मोहो- स्यतानो नाश थतो नथी. कहां छे के,

श्लोकः

ज्ञानेन भिद्यते कर्म, छिद्यंते सर्व संशयाः आत्मीयध्यानतो मुक्ति, रित्येवं कथितं जिनेशाशा

ज्ञानथी कर्मनो नाज थायछे अने सर्व संज्ञयो छेदायछे अने आत्मध्यान पण ज्ञान विना थतुं नथी माटे ज्ञानथी आत्मध्यान करतां मुक्तिनी पाप्ति श्रीजिनेश्वरोए कथीछे ज्ञानथी वैरण्य थायछे अने वैराग्यथी चारित्र जीव आदरेखे, अने तेथी जीवकर्मनो सम्य करी मोक्षमां जायछे. माटे मुक्तिमार्गमां ज्ञाननी तथा तेनी साथे वैराग्यनी पण मुख्यताछे. शास्त्रमां कहुं छे के-

श्लोक.

ज्ञानस्यैविह सामर्थ्यं, वैराग्यस्यैव वा किलः युकोऽपि कर्मभिः कर्म भुंजानोऽपि न वध्यते, १

हाननुं एवं सामर्थ्य छे के वा वैराग्यनुं खरेखर एवं सामर्थ्य छे के जेथी कोइपण कर्भीवडे कर्म भोगवतो छतो पण कर्मयी वं-धातो नथी. तात्पर्य के ज्ञान अने वैराग्यधी कर्म भोगवतां पण कर्मवंध थतो नथी.

माटे कहेछे के-

ज्ञानीको भोग सावि निर्जराको हेतु हे.

ज्ञानीनो सर्वभोग निर्जरार्थछे. औद्यिकभावे प्राप्त थएला पंचेंद्रिय विषयभोगोने भोगवता पण ज्ञानी कर्मनी निर्जरा करेछे, अने अज्ञानी उलटा वंधायछे. हुं ज्ञानीछुं एम मानी वेसवाथी कंड ज्ञानीपणुं आवतुं नथी. वा कोइ एम कहेशे के आ ज्ञानी नथी एम कथवाथी ज्ञानीपणुं टळतुं नथी. ज्ञानीपणुं ज्ञानीगम्य वा ज्ञानीना अनुभवमां समजायछे.

ज्ञानना पण घणा भेद्छे. आत्मज्ञान विना कर्भ कलंक टलतुं नथी. ज्ञाननो महिमा अनंतछे.

कृष्ण अर्जुनने कहेछे के-

ज्ञानागिः सर्वकर्माणि भस्मसात् कुरुतेऽर्जुन.

हे अर्जुन ! ज्ञानरूप अग्नि सर्व कर्मने वाळी भस्म करेछे. ज्ञान विना चारित्र नथी अने चारित्र विना मुक्ति नथी. क्रिया पण ज्ञानिनी पासेछे. ज्ञान विना शंतप, शंकिया माटे आत्मत्त्वनुं ज्ञान करेंचुं श्रेयस्करछे. आत्मज्ञान विना कोई तयी नथी अने तरको पण नहीं, राजा, करोडाधिपति, आदि सर्व करतां ज्ञानीनी महत्वतांचे कानी सूर्य करतां पण मोटोछे कारण के सूर्य वाह्य मकाश करेंचे किंतु अंतर्मकाश करी शकतो नथी. अने ज्ञानी तो अंतर्मकाश करे छे ज्ञानीनी सर्व क्रिया, वर्तन सापेक्षपणे वर्ते छे. अने अज्ञानीनुं वर्तन निरंपेक्षतया वर्ते छे. ज्ञानी अवश्य चोथाठाणे गणे तो होयछे अने अज्ञानी वी. ए. एछ. एछ. ची. आदि पद्विओधी दुनीयादारीमां महा विद्वान कहेवातो होय तो पण समिकत विना पहेले गुणठाणे वर्ते छे. ज्ञानावरणीय कर्मना क्षयोपश्यभावथी वा क्षायिकभावथी ज्ञाननो आविभीव यायछे. सम्यक्तत्त्व श्रद्धान विना ज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपश्यभाव पण मिथ्यात्वरूपे परिणमेछे. एम श्रीवीर मश्रनं कथनछे.

ज्ञानावरणीय कर्म पंचमकारेछे-मितज्ञानावरणीय कर्म १, श्वतज्ञानावरणीय कर्म २, अविध ज्ञानावरणीय कर्म २, मनःपर्यव ज्ञानावरणीय कर्म ४, केवल ज्ञानावरणीय कर्म ५.

ज्ञानावरणीय कर्ममां उपशम भाव नथी. ज्ञानावरणीय कर्मनो औदियकभावछे ज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपशम विचित्र असंख्य भकारे तरतमयोगथी वर्तेछे. द्वादशांगीनुं गुंथन गणधरजी क्षयोप-शमभावे करेछे.

मतिर्ज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञानमां क्षयोपश्चम भाव लाभेळे. केवलझान क्षायिकभावे उत्पन्न थायळे. ज्ञानावरणीय कर्म अष्टे कर्ममां प्रथम के. तेनुं कारण के विशेषतः ज्ञानावरणीय कर्म आत्मानुं भान भूलवेळे. ज्ञान विना तत्त्वनुं भान थतुं नथी. माद प्रथम तेनो निक्षेष कर्योळे. ज्ञान विना जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव, सवर; निर्जरा, वंप अने मोक्षनुं स्वरूप जणातुं नथी. पड्द्रव्य, सातनय, सप्तभंगी, प्रमाण निश्चेषनुं यथातथ्य स्वरूप ज्ञान विना समजातुं नथी. ज्ञान विना धर्म अधर्मनुं स्वरूप जणातुं नयी. ज्ञान विना चारित्र शुं छे तेनुं पण भान थतुं नथी.

मित ज्ञानावरणीय अने श्रुत ज्ञानावरणीय कर्मनो स्योपश्चम सर्व जीवोमां सरखो लागतो नथी. कोइएक वस्तुनुं स्वरूप विशेष समजे कोइ समजतुं नथी. त्यां पित ज्ञानावरणीयकर्मनी क्षयो-पश्चमताज कारणीभूत छे. पूर्वभवमां जे मकारे मितिज्ञान अने श्रुत ज्ञाननुं आराधन कर्यु होयछे. ते ममाणे आ भवमां मनुष्य जन्म पामी शरीरनी रचना, मगजनी रचना ज्ञानतंतुनी मवलता आदि सामग्रीसाधन मितिज्ञानावरणीय कर्मना क्षयोपश्चमभावमां माप्त थायछे अने ते साधनोद्वारा उद्यम करवाथी मितिज्ञाननी दृद्धि थायछे.

मितज्ञानना अष्टाविंशति अने २४० त्रणसो चालीश भेद नंदिस्त्रमां मरुप्याछे. ज्ञाननी ब्राह्मी लीपी जे श्रुतज्ञान अक्षरस्व-रूपेछे तेनी आशातना करवाथी ज्ञानावरणीय कर्म वंधायछे. आ-शातनाना हजारो भेदछे. ते गीतार्थने विनयथी पूछी समजण लेवी.

सुवर्णना प्यालामां जलनां जेटलां विंदु पडेछे तेटलां कायम रहेछे. तेम योग्य संस्कारी जीव जेटलुं ग्रस्ट्वारा श्रुतज्ञान मेळवेछे तेटलुं तेने शुद्धरूपे परिणमेछे अने तेनुं स्मरण रहेछे.

जेम तपावेला लोहना गोला उपर जलविंदु त्रण चार दश बार पढे तो कंइ तेनुं जोर चालतुं नथी तेम मृह अज्ञानी जीवना हृद्यमां सद्गुरु वचनामृतनो वास थतो नथी उलटो तेनो नाश थायछे.

एक शिक्षक शिष्योने एकज वखते सर्ग्वी रीते कोड विषयनो वोध आपेछे तेमां कोड विद्यार्थिने तो विलकुल नेनी याटी रहेती नथी. कोड्ने यत्किंचित् ग्हेंछे. कोड्ने पूर्ण याटी रहेछे न्यां श्रुत झानावरणीय कर्मनी क्षयोपश्यताज कारणीभृतछे, कोड् एक श्लोक भणीने स्मरणमां राखेछे. कोइ एक कलाकमां पांच श्लोक भणेछे. कोइ पचीश स्त्रोक कोइ शतस्त्रोक कोइ सहस्रस्त्रोक एक कलाकमां याद करेछे कोइ आखा दीवसनो एक श्लोक पण याद करी शकतो नथी. त्यां श्रुतज्ञानावरणीयकर्मनी क्षयोपश्चनताज कारणीभूतछे. हा-लना समयमां कोइ शतावधानी कोइ द्विशतावधानी देखवामां आवे छे. तेनुं पण कारण मित अने श्रुतज्ञानावरणीय कर्मनी क्षयोपशम-तानी विचित्रताछे. अने ते प्रमाणे मगजनी रचना ज्ञानतंतुनी प्रव-लता अने अमवलतानी तारतम्यताए घटना थायछे. अने ते ममाणे द्रन्य क्षेत्र काळभावथी पवल अपवल साधनोनी पाप्ति थायछे. श्रुत-ज्ञानना अभ्यासथी तथा श्रुतज्ञानीनो विनय भक्ति वहुमान करवाथी श्रुतज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपशम थायछे. श्रुत अने श्रुतज्ञानीनी आशानना करवाथी तथा उत्स्त्रभाषण करवाथी श्रुतज्ञाना-वरणीय कर्पनो वंध थायछे. माटे भन्य जीवोए क्रोध लोभ मान पूजा स्वार्थादिक आवेशथी उत्स्त्र भाषण करवुं नहीं। उत्स्त्र भाषणथी जमाली तथा मरीचिनी पेठे भवपरंपरानी प्राप्ति थायछे. अल्पज्ञानयोगे उत्स्त्र भाषण थयुं होय तो ज्ञान थतां मिथ्या दुष्कृत देवुं. पण मान पूजा लज्जादिकथी मिश्यादुप्कृत देतां प्रमाद करवो नहि. भवभीरु भाग्यवंत जीव अनेकांत पंथने समजी प्राणांते पण मिथ्यामरूपणा करतो नथी. उत्सूत्र भाषण समान कोइ पाप नथी. माटे कटी अल्पजपणाथी उत्स्त्र मरूपणा करवी नहि, कलियुगमां सूत्रोनी परूपणामां गुरुगम विरह, मान, पूजा, स्वार्थ, मतांधपणाथी, उत्स्वभा-पण करी अज्ञानी जीवो अनेक प्रकारना मत उठावेछे अने कुगति कुश्रुतयोगे कुतर्क करी भिन्न भिन्न पंथनी काळी दृष्टि रागी जीवोने समजावीने वीरमभुनां सत्य वचननो लोप करी आत्माना अजाण-पणाथी भवषरंपरानी दृद्धि करी जन्मजरा मरणनां दुःख विविध योनिमां अवनार ग्रही भोगववा पयत्न करेछे.

परमात्मद्रश्नेन.

स्त्रीमां कोइ वचन तो उत्सर्ग मार्गनां छे. कोई वचन अपवाद मार्ग वोधकछे. कोइ भय वचनछे. कोइक तो व्यवहार मार्गने वोधेछे. कोइक तो निश्चयनय मार्गने वोधेछे. एवो सूत्र सिद्धांतरूपी श्रुत सागरनो सार-महाश्रुतज्ञानी विना कोण पामी शके. अलवत ज्ञानी पामी शके-कहुंछे के-

#### गाथामूत्र.

विहिज्जम वन्नय भय, उसरग ववाय तहुभय गयाई; सुत्ताई वहुविहाई, समई गंभीर भावाई ॥ १॥ एसिं विसयविभागं, अमुणंतो नाण चरणकम्मुदया; मुझइ जीवोतत्ता, सपरिस मसरगहं कुणइ ॥ २॥

जैनम्त्रो उत्सर्ग अपवादथी परिपूर्ण सदाकाल विजयवंत वर्ते छे. सप्तनयोनुं यथार्थ स्वरूप जाण्या विना धर्मोपदेश सम्यग् रीत्या देड शकतो नथी. केटलांक म्त्रो उद्यमकथकछे, माटे अपेक्षा समज्या विना प्ररूपणा करवी निष्ठ. भाग्यवंत जीबोए गीतार्थनुं शरण अंगी-कार करवुं योग्यछे. दुःपम समयछे. माटे गीतार्थन्नारा अनेकांत मार्ग समजवो. श्रुतज्ञानिनी तथा श्रुतज्ञाननी आञातना करवाथी नरकादि गतिमां घणा जीबो गया अने घणा जशे.

#### णमो वंभलीवीए.

आ मृत्रनो सम्यग् अर्थ गुरु परंपरया केवी रीते थायछे. अने तेंगां श्रुतज्ञाननो विनय वहुमान भक्तिनुं केटलुं रहस्य समायुंछे. हवे तेंनो कुतर्कनी स्वच्छंद्रताए विपरीत अर्थ करवामां केटली विरुद्धता वर्तेछे. ते विद्वज्जनो माध्यस्थदृष्टियी विचार करशे तो समजाशे. श्री यक्तोविजयजी उपाध्याय पोताना रचेला स्तवनमां सम्माण् अनु-भव सहित शुद्ध व्याकरण दोपरहित सम्यग् अर्थ दर्शविष्टे. तेनो सम्ज लोको विचार करी असत् आलंबन परिहरी सदालंबन अंगी-कार करहो. शतज्ञानीनो एकमत अने शत अज्ञानिना शतमत व्य-वहारमां मसिद्ध छे.

जगत्मां सक्ष्मगंभीरअर्थपरिपूर्ण धर्मतत्त्वना समजनारा भव्यो अल्प होयछे, अने तेमां पण भावार्थ समजी धर्मतत्त्वनो आदर कर-नारा अल्प होयछे, अने तेमां पण अनुभवी तो अल्पमां अल्प होयछे.

हाल पंचमकाळछे, पंचिवष भेगां थयांछे. मायः वहु पापी जीवोत्तं अत्र उत्पन्न थवुं थायछे. वली तेमां मिथ्याती अने पापातुः वंधी प्रापवाला घणा जीवोनी उत्पत्तिनो समयछे. एवा पंचमकालमां धर्मी जीवो करतां पापी मिथ्याती जीवोनो मोटो भाग होय तेमां शी नवाइ!!! अहा दुःषमकाल त्हारो केवो प्रभाव ?

त्यारे हवे शुं करवुं ? धर्म कर्या विना वेसी रहेवुं ? ना तेम करवुं योग्य नथी. भगवान् तुं शासन दुः पसहसूरि सुधी चालशे. धर्म पण त्यां सुधी छे केटलाक मितहीन प्रमादी जीवो हालमां मुक्ति नथी एम समजी धर्मकरणी करता नथी. आ विपरीत समजवुं तेमतुं भूल भरेळुंछे. हाल पण अप्रमादयोगे सातमा गुणटाणानुं स्पर्शन भाग्य-वंतो करे तेमां सप्रमाण हेतुछे. जेटली जेटली कर्म मक्रतिथी मूकावुं ते ते अंशे मुक्तपणुं अने धर्म समजवो. कुंछुंछे के-

जे जे अंशेरे निरुपाधिकपणुं, ते ते अंशे धर्म ॥ सम्यग् दृष्टिरे ग्रुणगणाथकी, जीव लड्डे शिवशर्म ॥

श्री यशोविजय उपाध्याय भेद ज्ञान थतां समिकतनी प्राप्ति थतां उपशमभावे वा भयोपशमभावे वा भायिकभावे धर्मनी साध्यता सिद्धि भतावे छे, चोथा गुणठाणाथी मत्येक गुणठाणे पर्गुण हानि दृद्धि असं-ख्यात भेदे मत्येक जीवोने रही छे. ए वान गीतार्थीना अनुभवमां सत्य छे, धर्म श्रवणथी भेदज्ञान थायछे अन तथी स्वपरनो विभाग क-रतां सम्यक्त्वनी प्राप्ति थाशछे. तेमां श्रुतज्ञाननो महा उपकार स-मजवो, त्रिकाल सर्वज्ञ वीरमभुए केवलज्ञानथी सर्व पदार्थीने जोया अने वाणीथी ते पदार्थीनुं स्वरूप कथ्युं. ते भगवान्नी स्वपर प-काशक वाणीनेज श्रुतज्ञान मृत्रसिद्धांतरूप कथेछे हालपण भगवान्नी वाणी जयवंती वर्तेछे.

आसन्नभन्यी भगवद्वाणीरूपगंगा मवाहमां स्नान करी सं-सारना तापथी शांति पामेछे अने पामशे.

महाविदेह क्षेत्रमां अनादिकाळथी समिकतश्चत अने मिथ्याश्चत वर्ते छे.

मुश्रुतनो हे भन्यो आदर करो वखत वही जायछे, वखत अमूल्यछे. गयो वखत पश्चात् आवनार नथी. भन्य जीवोए वारंवार श्रुतज्ञाननो अभ्यास करवो.

अवधिज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपश्चम थवाथी अवधिज्ञान उत्पन्न थायछे. अवधिज्ञानना पड्मेदछे. अने वळी असंख्यात मेदे मवर्तेछे. मनःपर्यवज्ञानावरणीय कर्मना क्षयोपश्चमथी मनःपर्यवज्ञान उत्पन्न थायछे, मनपर्यवज्ञान वे मकारेछे.

केवलज्ञान क्षायिकभावे उत्पन्न थायछे. शुक्रध्यानना वीजो पायो ध्यावतां वारमे गुणठाणे केवलज्ञानावरणीयकर्मनो सत्ताथी पण सर्वथा क्षय थाय छे.

मतिज्ञान अने श्रुतज्ञान परोक्षछे. अवधिज्ञान अने मनःपर्यव-ज्ञान देश पत्यक्षछे. केवलज्ञान सर्वथी प्रत्यक्षछे.

आ प्रमाणे ज्ञाननी प्राप्ति थतां आत्मा परमात्मस्वरूप वने छे. ज्ञाननी प्राप्ति थतां दर्शनावरणीयादि कर्मनो सर्वथा अय वायछे. जे जे केर्ममकृतिनो जे जे गुणठाणे अय थवानो होयछे ते ते गुण- टाणे तेना क्षय थायछे. ज्ञानम्ब्ल्पणा नंदिस्त्रमां हेतु न्याय पूर्वक द्र्शाविछे. माटे आत्माथि जीवोए त्यांथी विशेष अधिकार समजवो अहाज्ञाननी केवी शक्ति!!! चक्षुद्धारादेखेला पदार्थोंनो मनमां केवो विचार थायछे. वीजानामनना विचार पण ज्ञानथी जाणी शकाय छे. ज्ञाननी एकनी एकथी वीजा जीवमां विशेषता देखवामां आवेछे. केवलज्ञानमां सर्वज्ञाननो समावेश थायछे. संभितकाळे ज्ञाननी क्षीणताछे. अने तेथी मतभेद घणा थया अने थशे जेम ज्ञाननी अल्पता तेम मतमतांतर विशेष अने ज्ञाननी दृष्धि तेम मतमतांतर अल्प जाणवां. यतभेदना कटाग्रह विना जे जे वांचवं. सांभळवु. मनन करवं ते सफळछे.

क्षयोपश्रमभावे अधुना मितज्ञान अने श्रुतज्ञान समिक्ति जी-वोने वर्तेछे. एम कथवुं अनुभवगम्य सम्माणछे, मित अज्ञानी अने श्रुत अज्ञानी जीवो आ क्षेत्रमां विशेषछे. मित अने श्रुत ज्ञानी जीवो अल्प अने तेमां पण विरित पाम्या जीवो अल्प अनुभवगम्य सिद्धांतानुसारछे.

हे भव्य मित ज्ञान अने श्रुतज्ञाननो गहन विषयछे. अल्पज्ञ-पणाथी सूक्ष्म तत्त्वरूवरूप निगोद स्वरूप समजी ज्ञान नहीं तो तेमां ज्ञानावरणीय कर्मनो दोप समज. ग्रंथकर्त्ताने दोप आपीश नहीं सूक्ष्म तीक्ष्ण मित ज्ञान विना मूक्ष्म वातनो वोध थतो नथी. एम कहेवुं सममाणछे. केवलज्ञान अने वेवल द्र्शनथी जे पदार्थ स्वरूप जाणवा देखवामां आवे तेनुं स्वरूप मित्ज्ञानथी यथार्थ साक्षात् कंदी जाणी ज्ञाय नहि. एम अनुभवथी ज्ञानीओ कथेछे. माटे शंका मनमां लावीश नहिं. जिन पवचनपर आस्था राख. जिनेश्वरें जे वचनो कथ्यां ने अन्यथा नथी. एम श्रद्धा कर. अने ऑत्मा-नुभव सद्गुरुद्धारा कर के जेथी मुक्तिमार्गनो अधिकारी थाय. पूर्वी-

क्त मोहनीय अने ज्ञानावरणीय कर्मनुं स्वरूप तथा तेना नाशयी आत्मगुणोनो लाभ देखाडी हवे पस्तुत कर्मविषयनुंज वर्णन कर-वामां आदे छे. कर्म संबंधी सामान्य वर्णन कर्युं. कर्म जडछे अने ते आत्माना गुणोनो घातकत्तां छे. सर्व जीव कर्मासक्त छे. कर्मनो नाश करवो एज कर्तव्य छे. कर्मनुं स्वरुप समज्या विना कर्मनो नाश थतो नथी. श्रीवीरमभुए घोर परिसह सहन करी कर्मनो क्षय कर्यो तो तेमनी वाणीना आधारे आपणे पण ज्ञान दर्शन चारिन त्रतुं आराधन करवुं, लक्ष्यमां राखवुं. मोक्ष मार्ग विकट छे. प्रमाद घणो, उपयोग अल्प, आयुष्य अल्प, दुःपमसमय, सत्समागम अ-ल्प, धर्म साधनो अल्प, कर्मसाधनो विशेष, अहो बे.बी दुर्दशा, क र्मनुं जोर विशेष, धर्मध्याननुं जोर अल्प. आ शुं थयुं, शुं करतुं. हे वीरमञ्ज तारी वाणीनुं शरण, जगत्मां तमारो केटलो उपकार! ता-रो आधार, तारो विश्वास. कर्मनी दुःखपद्विचित्रमकृतियोनो नाज्ञ करवा केवा प्रकारनुं लक्ष्य जोड्ए ? अधमता अने प्रमाद्धी जीवो क्यांथी स्वस्वरूप पामे ? धर्म उद्यम अल्प छे. कर्मोपार्जन उग्रम अहर्निश चाल्या करेछे. तपासोतो खरा ! रागनुं जोर तमा-रामां विशेष छे वा वैराग्यनुं, जोर विशेष छे, कर्मनी कठीन ग्रंथीनो भेद आत्मार्थी पुरुष पुरुषार्थयो करेछे. कर्मनुं क्षेत्र चतुर्देश रज्वात्म-क प्रमाण छे, अर्थात् कर्मनी राजधानी चडद राजलोकमां छे. ता पण कर्मथी डरवानुं नथी कर्म नाम थवानुं नथी एम स्वममां पण विचारतुं निह, कारणके तेम मानी वेसवाधी उलटं कर्मनीन दृद्धि थायछे. माराथी राग छटवानो नथी वा मारा कर्ममां लख्युं हको ते प्रमाणे थहो. एम प्रमादनी दृद्धि अर्थे वा सरागद्ञानी दृद्धि अर्थे वचन बढ्शो नहि. अनुग्रमनां वचनो जे योलवामां आवेछे ते चा-, रित्र मोहनी आदिना उदयथी समजवं, जरा सृक्ष्मदृष्टिथी विचारों के

उग्रमथी कयुं कार्य सिद्ध थतुं नथी ? अलवत उग्रमथी सर्व कार्य सिद्ध थाय ते. इवे ते कर्म संवंधी विशेष विवेचन करीए छीए.

- १ कर्मराजा
- २ कर्मराजानो प्रधान मोह
- ३ संसारनगर
- ४ कर्मराजानो पुत्र अज्ञान
- ५ कर्मराजानी पुत्री निंदा

कर्मराजाना सुभटो—मिथ्यात्व, अविरति, क्रोध, मान, माया, लोभ, हास्य, रति, अरति, कलह, भय, अभ्याख्यान, अथुभयोग, आर्तध्यान, रीद्रध्यान, इर्घ्या विगेरे कर्मनुं कार्य ए छे के दरेक सं-सारी जीवो उपर सत्ता चलाववी. इवे एक दीवस कर्मराजा पोते संसारनगर तरफ ध्यान आपी जुएछे के संसारी जीवो हाल केवी हालतमां छे अने ते आपगी आज्ञामां छे के नहीं ? जोतां जोतां कर्मराजाने माछम पड्युं के, अरे हाय वीतरागना भक्तो तथा ते-मनी वाणीरूप आगमोथी घणा जीवोए मारु स्वरूप जाणी लीधुं. अने ते जीवो मने ते शत्रु तरीके छेखवी मारी नगरीमांथी नीकळ-वानो उपाय श्रीवीतरागना भक्तोने पुछेछे अने मोक्ष नगरी के जे धर्मराजानी राजधानी त्यां जवा इच्छेछे. वे.टलाके मोक्ष नगरी त-रफ जवा सारु प्रयाण शरु कर्युछे. अरे मारा नगरमांथी जीवो वे.टलाक काळे सर्वे जता रहेगे. वे.म करु, एम उंडा विचारमां गुम थड़ वेठो छे. त्यारे तेनी पासे मोहम्थान आवी पुछेछे के, हे कर्मराजा तमे वे.म उटास थड वेठा छो ? मारा जेवो प्रधान छतां तमने शी मोटी चिंता आबी पडीछे ते कृपा करीने कहो.

### कर्मनृपतिभाषण

कर्मराजा मोहभधानने कहेछे के, अरे हवे मारा राज्यमांधी

( २७६ )

कर्मराजा अने धर्मराजानुं युद्ध.

दिनमतिदिन जीवो मोक्ष नगरीमां चाल्या जायछे.

धर्म राजाना सुभटो आपणी नगरीना जीवोने समजावी पोतानी नगरीमां खेंची जायछे. मुख्यताए तेमां मोटो भाग जीवोने
मोक्ष नगरीमां छइ जनार तीर्थकरोनोछे. अने तेमना कायदा ममाणे
वर्तनार साधुओ एवा तो कावेछछे के—ते साधुओनी आगळ आपणा क्रोधादिक शत्रुओनुं कंइ चाळतुं नथी. आपणा सुभटोने पण
हरावी जीवोने पोते मोध नगरीनो मार्ग जणावी आपणी नगरी
खाळी करेछे. हाय, हवे शुं करुं. अरे ओ मोह प्रधान तुं जळदी
आपणा सुभटोने तथा मारा पुत्रने वोळाव, अने अविवेक सभामां
कचेरी भर, मोहमधान कर्मराजानुं वचन अंगीकार करी सर्व सुभटोने वोळावी सभानी वेटक करी. कर्मराजा सभामां आवी ममता
सिंहासन उपर विराजमान थया. हवे कर्मराजा पोगाना सर्व सुभटोने तथा पुत्रुश्रीओने नीचे मुजव वचनो कहेछे के—

अरे मारा मोह प्रधान तुं मारो प्रिय प्रधानछे. हिंसातो मारी वेनछे. निंद्रा मारी पुत्रीछे, अज्ञान मारो पुत्रछे, चडदराज लोकतुं राज्य आपणा तावामांछे. आपणुं राज्य अनादिकाळथी संसार न-गरमां चाळेछे. सर्व जीवोने आपणे पोताना वशमां राग्वी धर्म राजानी मोक्ष नगरीमां छेइ जवा देवा निह. ते तमारी मुख्य फरजछे. आपणुं राज्य घटे निह ते तमारे ध्यानमां लेवुं जोइए.

मारा मुभटो सांभळो ! आपणो मोटो शत्रु धर्म राजाछे. ज्ञान दर्शन चारित्र ए त्रण एना पुत्रछे. धर्म राजानो उपयोग रूप मधान छे, क्षांति,आर्जव,मार्जव,मुक्ति,संयम,सत्य, शोच, आर्किचन, ए दश धर्म राजाना अत्यंत वळवान सुभटोछे, समिक्षत रूप धर्म राजानो पुत्र एवो तो वळवानछे के जेनाथी आपणो मिळ्यात्व सुभट रण संग्राममां भागी जायछे, पंच महाद्वत रूप जोद्धाओ एवातो वळवा-

नछे के अविरति नामना आपणा योद्धाने थरथरावेछे. आपणा नगरनो भंग करनार श्री चोत्रीस तीर्धकरो तथा तेमनाथी उत्पन्न थयेला १साधु २साध्वी ३श्रावक ४श्रावीका रूप चतुर्विध संघ करना भक्तो, साधु महाराजाओ, आपणा संसार नगरमां रहेनार संसारी जीवोने एवातो उपदेश आपेछे के-ते उपदेश सांभळ्या पछी आपणा नगरमां ते जीवो रहेता नथी, अने संसारने ते स्म-शान सरखो गणेले, आपणी मायाना अने कुटुंव परिवारने वंधन समान गणेछे, मायाना पास त्रोडी वैराग्य रूप वरूतर धारण करी संसारनो त्याग करेछे, अनादिकालथी आ प्रमाणे आपणा नगरमांथी जीवो मोक्ष नगरमां चाल्या जायछे. ते जोइ मने अत्यंत चिंता थायछे. धर्म राजानुं मोक्ष नगर आपणा संसार नगर करतां नातुंछे ते चौद राज लोकने अंते आवेलुंछे ते नगरमां रहेनारा जीवो अत्वंत सुक्षी होयछे मोञ्ज नगरीमां गयेला जीवोनो आपणाथी कशो भय रहेतो नथी.

मोक्ष नगरमां गया जीवो पाठा आपणा नगरमां आवी शकता नथी आपणुं तेमना उपर कथुं जोर चालतुं नथी. अरे मारी नग-रीनी खराव अवस्था थइ गइ! तमो आटला वधा सुभटो छतां मारी आवी दशा थई, हवे मारे थुं करबुं,कोनी आगळ जइ पोकार करवो.

आ प्रमाणे कर्म राजानां वचनो सांभली मोह प्रधान आस्वा-

हे कर्म राजा तमो केम चिंता करोड़ो, कर्म राजाजी तमारुं नगर कदी खाली थड़ शकवानुं नथी. अनादिकाळथी तमारी एवी सत्ता पेठेलीछे के मायः कोडक जीव मोक्ष नगरीमां जड़ शक, आ-पनो हुं प्रधान तथा अज्ञान नामनो पुत्र, एटली तो संसारी जीवो उपर सत्ता चलावे छे के, विचारा जीवने संसार एज सार मान्या विना छुटको थतो नथी. कर्म राजाजी अमारां ट्रेकनां पराक्रम नीचे गुजवछे ते सांमळो.

हुं मोह प्रधान अनादि काळथी आपनी कृपाद्रष्टि तळे हाजरछुं, परभावरूपी झाळ्मां ढरेक संसारी जीवोने में फसावी दीधा छे. एकेंद्रिय जीवो उपर पण मारी सत्ता व्यापेली छे, दीन्द्रिय जीवो उपर पण मारी सत्ता व्यापेलीछे, त्रीन्द्रिय जीवो उपर पण हुं सत्ता चलाबुंछं चतुरिन्द्रि जीवोपर पण मारा वशमां छे, पंचेंद्री जीवो चार प्रकारनां छे १ देवता २मनुष्य २तीर्थेच ४नारकी ए चार प्रकारना जीवो पण मारा आधीनछे, देवताओ पण देवीओ उपर मोहना पासयी आज्ञक्त रहेछे. आ मारी देवी, आ वीजानी देवी,एवी मोह धवा करावनारछुं. मारी उत्कृष्टि स्थीति मोहनीय, कर्मनी सित्तेर कोडाकोडी सागरीपमनीछे, नानं वालक तेनामां पग हुं व्यापिछुं. युवाव स्थावाला जुवान पु-रुपोमां तो हुं निर्भय पणे व्याप्त छुं जो मोउना होय तो दरेक मनु-प्यो संसारमां सार मानेन हीं, रात्री अने दीवस हूं दरेक जीवोनी साये व्याप्तछुं, मोह महयी वेला थयेला जीवो जाणी शकता नथी के अमो मोहना पा नमां छपडायाछीए-एवी मारी सत्ताछे जोगी जती, संन्यासी, गोसाइ, अतीत, फकीर विगेरे कहे छेके मोह खराबछे, मोह करना नहि एम बीजाने उपदेश आपेछे तेवा पुरुषोने पण हुं गारी मोह झाळमां फसावी दउंछुं.

फकीर फकीराइ लेट बेटा होयछे नोषण धन खीनामां हुं मबे-श करी तेने ल टचाबी संसारमां पाइंटुं राजाओं के जे अ्रवीरो कहेवाय दे तेने पग खी, धन, पुत्र, राज्य, विगेरेना मोहमां फसाबी देउछुं. जे राजाओं। सिंह समान शृग होयछे, अने जे रणसंग्राममां हजारों मनुष्योंने कापी नाखें छे. तेवाने पण हुं पुत्र मोहमां फसाबी रोवर. बुं हुं. सिंहसमानश्र्रा राजाओने पण मोहमां फंसावी स्त्रीओना पगे लगाइं हुं. हजारो सुभटोनां वाण वागतां पण जेनी चश्चमांथी अश्च आव्यां नथी। एवा राजाओनी चश्चमांथी स्त्रीना मरणथी अश्च कहाबुं हुं. जो हुं राजाओमां व्यापी निह रहुं तो तेओ आ संसार मांजीवनी हिंसा विगेरे केम कुकर्म करें १ पृथ्वीना लोभथी परस्पर राजाओने हुं लहाबुं हुं, स्त्रीना मोहथी परस्पर राजाओने लहाबनार अने दुनीआमां जीवोनो नाश करनार हुं मोह प्रधान हुं. ज्यां मारो संचार होयछे त्यां कोधादिक सुभटो पण वास करें छे. मोल नगरीमां जतां अगीयारमा गुणठाणा सुधी मारु पवल जोरछे. कोई विरलो जीव माराथी वची जायछे. अरे तमो तीर्धकरना भक्तो साधुओने पूलोके तमो कोनाथी विशेष हरो छो. पत्युत्तर मळशे के—मोहथी अमो हरीए छीए. जुओ चक्छो, चक्छी, मोर, पोपट, कचुनर, सिंह, शृंगाल, विगेरे तिर्थेच जीवो पण मोहावेशथी केवी स्थित प्राप्त करें छे.

चकलो, चकली,पोतानां इंडांपर केवो मोहधारण करेले. मयूर मयुरीनो विरह थतां केवं आकंद करेले. गाँ महिषी पोतानां वचांने जुभो मोहना आवेशयी केवां चाटेजे: कृती कुरकुरीयांने पोतानां मानी केवं हेतधारण करेले. वळी धनना मोहथी माणीओ मरी परभवमां मूपक सर्प विगेरेना अवतार धारण करेले. पुत्रना मरणथी मातिपताने अत्यंत रूदन करावनार हुं छुं. स्त्रीना मरणधी तेना पतिने शोक करावनार हुं छुं. सत्यनेपण असत्य तरीके हे-खाउनार हुं छुं. मारा वशमां आवेला जीवोने चोराशीलाख जिन् वायोनिमां भटकावनार हुं छुं. मारा वशमां पतित माणीओ हिंसा करेले. असत्य वदेले. चोरी करेले. परस्ती सेवन करेले. इत्यादि सर्व मारी सत्ताधी थायले. पृथुगिन स्नीना मोहथी जयचंद्र साथे भारे क्रेश कर्यो. पृथु-राज उपर शाहबुद्दीन घोरी चढी आव्यो, तेमां अंते मृत्यु पाम्यो कर्णघेलाए स्नीना मोहथीराज्य खोयुं,मनुष्यपरदेश भ्रमण करेले.जलमां मवेशेले, इत्यादि सर्व मारुं कार्यले. अनंत जीवने हुं संसारमां अनादिकाल्थी भटकावुं छुं. अने भटकावीश. धर्मर जानो विवेक रूपी योद्धो पण माराथी वीवेले. कया जीवमां हुं व्यापीरह्यो नथी।

वीतरागदेवना साधुओने लाग साधी मारा फंदमां फसावी दुउछुं. जुओ मारी केवी शक्ति!जीवोने संसारमां सार देखाडी चा रित्र लेवरावतो नथी. सर्व जीवोने संसार्मा अनादिकालथी फेर्बुं छुं अने वळी फेरवीश अधर्मी वनाबुंछुं. अनेक मकारनो वेपो करी जीवोनो हुं माराफंदमां फसाबुं छुं. को इनामां व्यक्तपणेतो को इनामां अव्यक्तपणे हुं वसुं छुं,सर्व संसारी जीवोने हुं पूतळांनी माफक नचा छुं छुं, मारी घेनमां सर्व जीवो मुंझाणाळे. ज्यां त्यां हुं मोह ज्यापी रहाो छुं मोह घाटीनुं भेदन कर्धु महा दुष्करछे. एम दरेक महात्माओ पुः स्तकमां लखेळे. ट्रेक जीवतुं भान भूलावन.र अने परस्वभावमां रमण करावनार हुं मोह जीवोमां पेटो के ते बीचारा परवश थइ जायछे मारा आगळ सर्व जीवो कीटक समानछे, मारी शक्तिथी ज्ञानीओ पण गभरायछे, हुं सदाकाल चोराशी लाख जीवयोनिमां रहेला जीवोनी पासे रहुंछुं. महादेव सरखाने पण पार्वतीना मोहमां फसावनार मारा विना बीजा कोण! देशाभिम नथी दुनीयानी म-जाने परस्पर वैर करावनार मारा विना वीजो कोइ नथी. मोह गर्भित वैराग्यमां पण मारु अस्तिन्वछे, मतमतांतर मिथ्यात्वतदिनी द्वेद मारायी थायछे. जुओ मारी शक्ति. !!!

आवां मोह सचिवनां वचन सांभळी कर्पराजाए मोह प्रयानने शावाशी आपी कहुं के धन्यछे मारा श्रा मोह प्रधान मारे नारा जेवो वीजो कोइ पिय नथी.

हवे कर्मनृपतिनो पुत्र अज्ञान स्वकीय स्वरूप सभा समक्ष कथेछे. अरे हुं मोहराजानो पुत्रछं. अज्ञान मारूं नामछे, पंडित लोक मारा वैरीछे. चउद राजलोक मारू स्थानछे. सर्व जीवोने में अंध कर्याछे. ज्ञानावरणीय कर्मे करी हुं सर्व जीवोमां वसुंछुं, धर्मराजा तथा मोक्षनगरीनुं भान हुं थवा देतो नथी. सत्यासत्यनुं स्वरूप जीवोने जाणवा देतो नथी, सत्यदेव गुरूधर्मनुं ज्ञान मारी सत्ताथी जीवो करी शकता नथी.

तीर्थंकरनां सूत्रो तथा तेमनी आज्ञा प्रमाणे मोक्ष नगरी प्रति-गमन करनार मुनिवरो पण मारा वश्नमां रहेला जीवोने समजावी शकता नथी, जे समजुळे तेने साधुओ समजावी शके, पण हुं ज्यां वसुं खुं त्यां तेओ गमे तेटलो उपदेश आपे तोपण उखरभूमां वर्षी-नीपेठे निष्फळ जायळे. चारगतिना जीवो मारा वश्नमांळे. पथुपंखी आदिजीवोनी में केवी अवस्था करीळे; माटे हे कर्मनृपति मारा जेवा पुत्रो छतां आपने चिंता करवी योग्य नथी.

अज्ञान पुत्र आ ममाणे कहीने मौन रह्यो, त्यारे कर्मनृपतिनी निंदा नामनी पुत्री सभासमक्ष कहेवा लागी के—

# निंदाभाषण.

े हे पिताजी ! हुं आपनी निंदा नामनी पुत्री छतां आप केम खदास थाओछो सर्व जीवोने हुं वश करुछुं अदेखाइ नामनी मारी माताए जन्म आप्योछे सर्व जीवोना गुणोने हुं तेमां पेसतां भस्म करुछुं ज्यां माता अदेखाइनो प्रवेश ययो. त्यां हुं त्वरित हाजरी आपी प्रवेश करुछुं.

मुनियो पंडितो के जे अमृत सरखां बचन बंदेछे तेना मुख-मांथी खराब बचनोरूपी विष्ठा कढाबुंछुं. जे मनुष्यो परपुरुपना गुणनी मशंसारुप जळथी पोताना आत्माने पवित्र करेछे. ते पुरुषो मारा वशमां थवाथी परंनिंदारुप कर्मकादवथी तेओने मलीन करुं छुं. निंदा चतुर्थ चंडालछे एम सर्व लोको जाणेछे छतां निंदा कर्या विना छूटको थतो नथी.

सामासामी एक बीजानी निंदा करावी परस्पर वैर कराबुं छुं, लडाबुं छुं, अने नरक निगोदमां जीवोने घसडी लेइ जाउछुं. लोको सर्वना करतां मने विशेष बळवान गणे छे, कारण के परस्पर एक बीजानी निंदा करवाथी एक बीजानां मस्तकोने पण दडानी मा-फक मनुष्यो उडावी दे छे, माटे हे कमराजाजी!!! तमारी पुत्री छतां तमो केम चिंता करो छो.

आवां निंदानां वचन सांभळी अदेखाइ नामनी कर्मराजानी स्त्रीनो पुत्र कुसंप नामनो हतो ते बोळवा ळाग्यो के—हे पिताजी मारा जेवो आपणा सुभटो छतां धर्मराजाना सुभटो हुं कंइ चाळ-वातुं नथी. चार गतिना जीवोमां हुं व्यापी रह्या हुं, मारा सरखुं कोइ हुं बळ नथी, वकीळ वकीळने कुसंप, राजाराजाने कुसंप, सुनि सुनिन कुसंप, वेक्या वेक्याने कुसंप, भीखारी भीखारीने कुसंप, वेपारी वेपारीने कुसंप, कृतरा कृतराओंने कुसंप. एम सर्व जीवोने मांहोमांहे कुसुंप करावनार हुं छुं, हे कर्मराजाजी हुं कुसंप नामनो महायोद्धो हिंदुस्तानना रहेवाशीओमां पेटो त्यारथी हिंदु-स्तानना छोकनी दुर्दशा थइ गइछे.

जयचंद्र अने पृथुराजने लडावी मारनार पण हुं हुं. मुसल मानोए दिल्लीनी गादी लीधी ते पण मारा प्रतापयी कारण के ज्यारे हिंदुस्तानना राजाओने मांहोमांहे कुसंप थयो त्यारे मुनल मानोए हिंदु राज्य सर कर्यु मोक्षमार्गनां चालनार साधुओनो पण कुसंप करावी कुमार्ग चलावनार हुं छं ज्यां पेठो कुसंप त्यां

जरा नहि जंप, ए वचन हुं सत्य करुंछुं. कुसंपथकी मांहोमाहे मनु--प्य लहे छे एक बीजानां मस्तक छेदे छे, एक बीजानी निंदा करे छे, क्रोध, मान, माया अने लोभ पण ज्यां हुं कुसंपछुं त्यां वासो करे छे, चोरासी ल्र.ख जीवयोनीना जीवोने हुं अनादिकाळथी मारा वशमां राखुं छुं. हाल हिंदुस्तान देशनी नवळी स्थीति करनार पण हुं छुं. ज्यां में प्रवेश कर्यों त्यांथी संप नामनो योद्धो पण पोवारा गणी जायछे, कोइ वखन कोइ देशमां वधारे रहुंछुं अने कोइ वखन कोइ देशमां थोडो रहुंछुं, जीवो विचारा संप करवाने घणी महेनत करे, कोन्करन्स भरेछे, सभाओं स्थापेछे अने वीजाओने कहेछे, के भाइओ संप करो पग मारुं मूळ काढबुं घणुं मुञ्केलछे, ज्यांथी कु-संप काढवानी तैयारी संप योद्धाओनी होय त्यां तो कुसंप भय-रहीत रहेछे. मोटा मोटा मुनिराजो भाषगो आपीने थाक्या पण मारुं मूल कोइ उखेडी शक्युं नहि. वखते मुनिओमां पण हुं लाग जोड़ने पेसी जाउंछुं अने मुनि मंडळमां पग क्रसंपनी सत्ता चलावुं छुं, जे जीवो मारा वशमां छे तेमने काष्ट्रनी पूनळीनी पेठे चारगातिमां नचाबुंछं, मारी अटेखाइ माता विना हुं एकलो रही शकतो नधी.

अमेरिका इंग्लांड बगरमां कुसंप नथी तो ते लोको मुली छे पण ज्यारे हुं त्यां पगलां भरीश त्यारे ते लोकोना वार बगाडीश, संपीने जीवो वर्ते ते मने सारुं लागतुं नथी। नवला मनना माणस उपर हुं विशेष मत्ता चलाबुं छुं. विशेष थुं. पर्वन उपर, रणमां, अप्नि विगरेमां हुं जीवोने प्रवेश कराबुं छुं. हे कर्मराजाजी मारा जेवो पुत्र उतां आम केम चिंता करो छो.

आवं कुमंपनुंचचन सांभजी अदेखाइ नामनी तेनी माना सभा स-मक्ष भाषण करता लागी के, हे माग्र नागिय नयो साग छनां केम चिंता करोछो. अदेखाइ परस्पर कराववी ए मारो धर्मछे. गुणीना गुण देखी माणसो अदेखाइ करेछे. चारगतिना जीवोमां हुं आविभीवे वा तिरोभावे वसुंछुं.

वेपारी वेपारीने, राजा राजाने, वकील वकीलने, साधु सा-धुने हुं मांहोमांहे अदेखाइथी कर्मवंध फळ प्राप्त कराबुंछुं.

मारा वश थएला जीनो नरक निगोदमां जइ दारुण भोगने छे इत्यादि अदेखाइना वचन सांभली कर्मराजा खुशी थयो. तेनामां सभामां विराजमान मिध्यात्व नामनो कर्मराजानो योद्धो बोली उठयो के, हे कर्मराजाजी मारा छतां आप केम चिंता करोछो. हुं मिध्यात्व नामनो योद्धो संसारमां मख्यात छुं, कर्म वंध जीनोने करावनार मुख्यताए हुं छुं, मारी सत्ता संसारी जीनोपर सारी रीते वेठेली छे. मारु मुख्य काम ए छे के, भव्य जीनोने शुद्ध देन शुद्ध गुरु अने शुद्ध धर्मनी श्रद्धा थना देनी नहीं, कोइ निरला पाणीं तीर्थ करनो कहेलो सत्य मार्ग जाणी शक्ते छे, जुओ में केटला जीनवोनी एनी ता बुद्धि करी नाखी छे के ते विचारा पंच महाभूत स्त्र जीन छे ते थकी अन्य आत्मा नथी एनं निचारा मानी चार्नी किमत रूप राक्षसना मुखमां प्रनेश करे छे

में केटलाक जीवोने एवा तो फसाव्या के के ने ते पामरं जीवो जीव अनीव पुण्य पापने स्वीकारता नथी, मोक्ष मानता नथी. खावुं पीवुं, हरवुं, फरवुं इत्यादि कार्यमां धर्म माने छे नकेट लाक जीवोने एवा तो में फसाव्या के के नजहानपणामां मुख माने छे. अने ते भो अज्ञानवादी भ्रभावे छे के नजहानमां सुख छे ज्ञानथी राग देव उत्पन्न थाय छे. एम मानी पामर चतुर्गित संसारमां अनंतशः परिश्रमण करे छे.

वळी में केटलाक जीवोने एवातो फसाव्याछे के- बौध धर्म

स्त्रीकारी पोताने सुखी मानेछे अने ते पामर प्राणी मारा पासमां थी छूटी शकवाना नथी.

वळी में केटलाक जीव ने एवी रीते फसाव्याछे के ते इशुए चढावेळा इथुस्त्रीस्न धर्मरुप अन्याय क्रूपमां गाडरीया प्रवाहनी पेठे टपोटप कूदी पडेंड अने त्यां अत्यंत दुःख भोगवता सदा काळ जीवन गुनारेछे. वळी में केटलाक जीवोन एवा तो मुंझाच्याछे के वीचारा धनना, सीना, पुत्रना लोभमां तत्त्व माने छे अने ते पोताना आत्मानं हित साधी शकता नथी। वळी में केटलाक जी-वोने एवा तो फसाव्याछे के-सत्य जैनधर्य पास्या छतां पण तेमां शंकादिक करी आपगी सत्तामां वर्षेक्टे. वळी हुं तत्त्व समज्या जी-वोने पण मिथ्यात्वमां घेरु हुं. जेटला संसारमां मतमतांतर उत्पन्न थ।य के ते मारी सत्ताथीन याय के. संसारी सर्व जीवोने हुं मारा वशमां राखुंछुं. मारायी छड़की कोइ वीरपुरुष मुक्तिमां जह शकेछे. हुं सर्व जीवोमां व्यापीने रह्यों छुं. इत्यादि मिथ्यात्व योद्धानां वचन सांभळी कर्मराजा हर्ष पाम्यो. तेवामां अविराति नामना मोहराजाना योद्धाए भाषण कर्यु के अरे सभाजनो हुं कोने संसारमां भटका-वतो नयी. चोया गुगठागा सुवी तो मारु स्वतंत्र राज्यछे देवता-ओ तथा नारकी जीवो तथा निर्यंच जीवो मायः सर्वे मारा वशमां वर्ते छे. मनुष्योगां पग आर्यजनो कोई मारा अपाटामां यी वची गया हरो. आवं अविरतिनुं वोलवं सांभळी कपाय नामनी योद्धी छाती ठोकीने वोली उठयो के, अरे ज्यां मुधी कपाय एवं मारुं नाम दुनियामां वित्रमान छे त्यां सुधी कोइनो भय राखवी नहीं, मारुं रहेठाण चौद राजलोकमां हे, हुं कोइ जीवने मुक्तिनगरीमां जवा देतो नयी, सर्व जीवो कपायना वश धइ पोनानुं आत्महिन् करवुं चुकेळे. सामासामी जीवोने हुं लडावी मारुं हुं एक वीनानां मस्तक

कपावुंछुं. सामासामी वेर करावुंछुं, माता, पुत्र, की विगरनो निकट संबंध करावी आपनार हुंछुं संसारी जीवोने उपरना गुणठाणे घ-ढवा देतो नथी. संसारक्षी दृक्षनुं वीज हुंछुं. हुं अनादिकाळथी संसारमां वसुंछुं. कोइपण काळ संसारमांथी मारुं रहेठाण दूर थवानुं नथी. आ प्रमाणे कषाय स्वभटनां वचन सांभळी कर्मराजा खुशी थयो. त्यारे योग नामनो सुभट बोल्यो के मारुं पराक्रम कोण नथी जाणतुं. हुं सर्व जीवोने पाप वंधावी चोराशी लाख जीवयोनिमां भटकावुंछुं हुं सूक्ष्म रीते दरेक जीवोने व्यापीने रहुंछुं हुं आत्मानी परमात्मादशा थतां विख्टो पहुंछुं, माटे हे कर्मराजाजी तमो जरा मात्र पण भय पामशो नहि. इत्यादि सुभटोनुं बोलवुं सांभळी कर्मराजाने जुस्सो चढयो. हिंपत आवी.

सर्व सुभटोने कर्म राजाए हुकम कर्यों के तमो हवे सर्व सं-सारी जीवोने वशमां राखों के जेथी धर्मराजाना सुभटोनुं कंइ पण चाली शके निह. अने सर्व जीवोमां व्यापी संसारी जीवोने धर्म करतां अटकावो.

आवां कर्भराजानां वचन सांभळी सर्व ग्रुभटो जुस्साभेर पोत पोतानुं कार्य वजाववुं तत्पर थया.

इवे आ वखते धर्म शुं करेछे ते कीचे गुजबः-

# धर्मराजा

विवेकसभा, द्यामाता, धैर्यपिता, श्रांतिस्त्री, उपयोगमंत्री, सम-कितसेनापति, क्षमापुत्री, ब्रह्मचर्यपुत्र, क्षमादिधर्मनृपतिनासुभटो, स्रुक्तिनगरी

एकदीवस धर्मराजा विचार करेछे के-अहो हुं सर्व जीवोने मुक्तिनगरीमां क्यारे छेइ जइशा अनादिकाळथी हुं संसारी जीवोने मुक्तिपुरीमां छेइ जाउंछुं। तोपण अद्यापि पर्यंत पार आवतो नथी। कर्मराजाना सुभटो जीवोने एवातो सपडावेछे के-भाग्ये जावो मारा नगरमां आवी शके-सर्व जीवोमां कर्मराजाना सुभटो व्यापी रह्याछे. कर्म सुभटोए संसारी जीवोने एवी रीते अंध कर्याछे के-ते जीवो सुक्तिनगरीमां आववा इन्छा पण करता नथी. अरे हवे केम करवं. आम धर्मराजा उंडो विचार करी चिंता करेछे.

त्यारे उपयोगमंत्रीए इंगिताकारथी जाणीने पूच्छयुं के-हे पभो आज आप मोटी चिंतामां पडया होय तेम देखाओछो. ते चिंता शीछे ते कृपा करीने कहो—

एम उपयोग मंत्रीनी पार्थनाथी धर्म नृपतिए सर्व इकीकत कही संभळाची—

त्यारे उपयोग मंत्री वोल्यो के-हे मभो मारा छतां आपने चिंता करवी घटे निह. विवेकसभा भरावी धर्मराजा निस्वृह सिंहा-सन उपर विराजमान थया. मुख्य उद्देशथी धर्म राजाए वातचर्ची अने कतां के-हे सुभटो तमो आळसु थइ देम वेशी रह्याछो. कर्म राजाना मुभटो सर्व जीवोने भमावी चारगितमां परिभ्रमण करावे छे. सत्यमोक्षमार्गनी समजण पडवा देता नथी. तमो मारा खरा सुभटो होय तो कर्मराजानो नाश करी भव्यजीवोने मुक्तिपुरीमां छेइ जाओ. आ मारी सभा समक्ष हितशिक्षाछे. आवां नीतियुक्त मिष्ट वचनामृ-तनं अवण करी धर्मराजानो अनादिकाळनो उपयोग मंत्री गंभीर वाणीधी सभा समक्ष कहेवा लाग्या के-

हे धर्मनृपति, हुं निरंतर आपनी सेवामां हाजरछुं. ज्यां आप धर्मराजा त्यां हुं उपयोग अवञ्य.

आपनो सर्व कारभार हं करुंछुं. माटे कहेवायछे के-उपयोगे धर्म-उपयोगविना आप धर्मवृपति नयी. एम अनुवाद प्रसिद्धछे. हुं आविर्भीवे नथा तिरोभावे आपनी साथे सदाकाळ जीवोमां वसुंछुं.

मारी शक्ति मगट थतां मोहादि शत्रुओ नाश पामेछे. जीवने क्षपक श्रेणि उपर हुं चढावुंछुं क्षपकश्रेणि चढतां कर्मशत्रुनो नाश थायछे. मोक्षपुरीमां पण प्रत्येक आत्मानी साये भिन्नाभिन्न स्वरूपे हुं वसुंहुं. माराथी दरेक आत्माओ स्वपरने जाणी शकेछे मारो नाश कोइथी थतो नथी. माटे हे धर्मराजाजी आप जरामात्र चिंता करशो नहि. आवां उपयोग मंत्रीनां वचनो सांभळी धर्मराजा खुशी थयो, त्यारे धर्मराजानीमाता दया सभा समक्ष बोलवा लागी के-हुं ज्यां सुधी विद्यमानछुं. त्यां सुधी कोइनुं कंइ चालनार नथी. हुं सर्व जीवोमां मथम वासकरुंछुं. हुं ज्यां छुं त्यां तारी हयातीछे. द्रव्य अने भावथी मारु वे प्रकारे वसवुं थायछे. दया, धर्मनी माता जगत्मां कहेवायछे. तुं मारो पुत्रछे हुं ज्यां छुं त्यां त्हारी हयाती कहेवायछे, माराथी हिंसा विगेरे कर्म राजानो परिवार दूर नाशेछे, सर्व पाणीयोमां थाडी घणी स्थीति करुंछुं, अने मोक्षपुरी जीवो न पमाइछुं, माटे हे पुत्र सुखेथी राज्यधुरा धारणकरोः इत्यादि दयाना वचनो श्रवण करी धर्मराजाना मनमां चैर्य स्फुर्चु. तेवामां धैर्य पिता धर्म पुत्र उपर स्नेहदृष्टि वर्षावतां वचनामृतनो वरसाद वरसाववा लाग्यो हे धर्मपुत्र धैर्यथी तारी उत्पत्ति छतां तमे देम अधीरा वनोछो. कर्मशत्रुओ साये हुं हिंमतथी लडी जीवोने क्षपकश्रेणि पाप्त करावी आपुंछुं. हे धर्म तारा सुभटोने धैर्य आपुंछुं अने रणसंग्राममां कर्मनो पराजय करुंछुं, कर्मराजानी साथे युद्ध थायछे, अने तेना नगरमांथी अनेक जीवोने मुक्तिनगरीमां लेइ जइए छीए. माटे धैर्य धारण करो. त्यारवाद शांति स्त्री पोताना स्वामी धर्मराजाने नम्रतापूर्वक विनयथी कहेवा लागी के-हे स्वामिनाथ आप चिंता केम करोछो, मारो हुं धर्म सदाकाळ वजावुंछुं, हुं सर्व जोबोने मोक्ष नगरी तरफ खेचुछुँ, सर्व जीव कर्पना आधीन थया छे तोपण मारी संगत करवा चाहेछे. हुं तेमने शांति मेळववा लल-

चावी कर्म प्रपंचथी दृर रहेवा वारंवार मनोद्वारा कहुं छुं जे जीवो संसारनी हवाथी दूर रहेछे अने संसारने वळता अग्नि समान गणेछे ते जीवोमां हुं वास कहंडुं अने ते जीवोने शाश्वतपद पाप्त करवामां स्हायी वतुंछुं. घगा जीवो मारी स्हायथी मुक्तिनगरीमां. गयां जायछे अने जर्शे. माटे आप निश्चित रही. त्यारवाद सकल धर्भ सेनानो उपरी " सम्यक्त सेनापित " धर्मराजाजीने नमन करि मधुरवाणीयी सभाजनने आश्चर्य पमाडतो कहेवा लाग्यो के हे धर्मराजानी आपनी सेनानो हुं उपरीद्धं. मारो वास सकळ भव्या-त्माओमांछे. मारा विना कर्पना राजा योद्धाओ रणभूमिमांथी पाछा हडता नथी, सक्तळकर्म सैन्यनो हुं नाश कर्रुंडु. जे आत्मामां हुं उत्पन्न थाउंछुं त्यांथी पिथ्याल योद्धो नाशी जायछे. पछी भन्यात्मा सरळ-ताए गमन करतो छतो मुक्ति नगरीयां पहोचेछे. मिथ्यालनो करवो एन मारुं मुख्य कामछे. जे जीवो मिश्यातना जोरे दुनीया परमेश्वरे वनावीछे, पाछो प्रलयकालमां दुनीयानो नाज्ञ थायछे पर-मेश्वर जीवोने मुख दुःग्व आषेछे एम मानी चारगतिमां भटकनारा जीवोने मुखदुःख आपेछे ते जीवोनो हुं उद्धार करुंछुं, हुं ते जीवोगां वास करी तेमनी सारी चुिंद करुं उपमेश्वर जगत्नो वनावनार नथी, जगत् अनादिकाळयीछे जीवो सर्व परमात्मा सहश्रछे, कर्मना-योगे जुदी जुदी गतिमां भमेछे जीवोने कर्म अनादिकालथी लाखंछे. जीवो अनंतछे अनादिकाळथीछे कर्ष नाग थनां जीवनी मुक्ति थायछे. आ प्रमाणे जीवोनी सारी वुद्धि करी मिय्यालनो संग दृर करावी मोजनगरीतरक गमन कराबुंदुं. केटलाक जीवो मिय्याल योद्धाना संसर्गे ब्रह्म ब्रह्म स्वीकारी अन्यने माया तरीके कर्यी भवबद्धांडमां भटके हैं। तेमने हुं शुद्धश्रद्धा अपि श्रात्महिनार्थे आत्मा अने तेने

भटकावनार कर्मछे एवी श्रद्धा करावी कर्म नाश करवा तरफ ते जीवोनी द्वति लक्षुं छुं. वळी हुं इग्र-परमेश्वरनी दीकरोछे तेने सेवो ते तारशे इत्यादि भ्रमपाशमां फसाएला जीवोने विवेकचक्षु मोक्षमार्ग देखाडी आत्मतत्त्वनुं भान करावी बुद्धिथी परमात्मपद माप्त करे तेम योजुं हुं, वळी हुं केटलाक जीवोने आत्मा क्षणिकछे. क्षणमां क्षणमां जुरो जुरो आत्मा जलक व्यायछे. एम माननारा जीवोत्तुं मिथ्यात्व संहरी सत्यमित अपी आत्मा क्षणिक नथी. आत्मरूप व्यक्तिनो नाश थतो नथी श्रेयना पलटवे झानतुं पलटावबुं थायछे तेथी आत्मामां थतो उत्पाद् न्यय तेनी अपेक्षाए पर्या-यार्थिक नयमते आत्मा अनित्यछे एम सम्यक्वोध जीवने अर्पुछं अने द्रव्यार्थिक नयनी अपेक्षाए आत्मा नित्यछे एम शुद्धवोध समर्पी भव्य जीवोने मुक्ति नगरी दुःपाप्या पाप्त कराबुंछुं. वळी हुं केटलाक जीवो **दि**र्घात्व सुभटनो संग पामी पंचभूत विना व्यतिरिक्त आत्मा नथी एम स्वीकारीछे तेवा जनोने शुद्ध श्रद्धा सद्गुरु संगे करावी आ-त्मा पंचभूत थकी न्यारोछे सुब दुःख भोक्ताछे कर्पनो कर्ताछे एम सम्यक्त्व रत्न अर्पी मोक्ष मार्ग वाही करुंछुं. वळी जे जीवो नित्य एकांन आत्मतत्व मानी आत्माने कर्मवंध स्वीकारता नथी आत्माकर्मनो कर्ता नथी अने भोक्ता नथी इत्यादि वक्ताओने पण अपेक्षाए सत्य समजावुं छुं कर्मनो कर्त्ता अने भोक्ता आत्माछ, आत्मा एकांत नित्य नथी एकांत नित्य वम्तु आत्मा जो होय तो पछी नाना विध शरीरमां वशनारा जीवो सुखी दुःखी अवस्थावाळा देखायळे ते केम वनी शके, माटे आत्मा एकांत नित्य नथी, जो एकांत नित्य आत्मा मानीए तो पञ्जी शिर्षमुंडन व्रतारोप विगेरे पण शा कारणथी करवुं जोइए. माटे आत्मा स्वव्यक्तियी नित्यछे

पर्यायना पलटने करी अनित्य छे नित् अने अनित्य एवं भर्मवालो आत्माछे तेने कर्म लागे छे कर्मण मिथ्यात्व अविरित्त कपाययोगे करी लागे छे ए कर्मनो नाश बतां आत्मा परमात्मपद माप्त करे छे ए आदि शुद्ध हान अपी साध्य मुक्तपदार्थे जीवोने मे हर्छुं. अने स्वस्व हपने पाप्त करा खुं छुं के टलाक जीव स्वी पुत्र धन आदिथी पोताने मुखी माने छे ते जीवोनी दृश्य क्षणित पदार्थीमांथी मुखनी मुद्धि दृर करी अदृश्य आत्मतत्त्वमांन मुखले प शुद्ध बोध देइ आ क्षणिक पदार्थीमां मिथ्या भन थतो दृर करा कुं अने काम क्रोध लोग भय हास्य शोक विगेरेथी जीवोने पृथक परी स्वस्व हुपे निष्ठा करा बुं छुं.

अहितमां हितनुद्धि अने हितमां अहित नुद्धिस ने मिध्याम् तेनो हुं नाश करुं दरेक जीवोने हुं सम्यक्शान अपूर्ट एन अनंता जीवोर्नु भूतकाले मुक्ति मित लक्ष दोर्ग की वर्तमानहाळे लक्ष दोस्छुं अने भविष्काले ने त हुं दर जीवन्यक्तियां, वसुछुं मिध्यात सैन्य माराथी नाग्रथाम करेछे जे पूर्वनो उद्य थतां अंधकारनी नाश धायछे अने ने अंधकार नवां गाया किया यता मालूम पडती नथी तेन स्पेसन मारा मकाशधी मियान भागी जायछे हुं भव्य जीवामां सदा वगुंछुं. सम्यक्त्व विना कीई नुजस मुक्ति पापी शकतो नथी कर्पराजानुं सैन्य माराथी दूर नासेछे पर हे धर्मराजाजी! तमो मुखेथी निश्चित रही आ ममाणे सम्यक्त्व से-नापति वद्या बाद् धर्मराजानी क्षमा नामनी पुत्री सविनय पिता-जीने नमन करी मधुर भाषाए कहेवा लागी के-हे धर्मियताजी इं एक आपनी नानी पुत्रीछुं आपनी पवित्र सेवा हुं दरेफ आत्माओमां स्थिति करती वजाबुंदुं. हुं बनारिकाळथी भव्य जीवोमां वद्वांदुं. हुं पामेछे हुं पोतानो पण पोतानी मेळे पकाश करूछुं माटे लोको सुर्यनी उपमा मने आपेछे, कर्म रिष्ठ सकळ सैन्यनो हुं करणांत काल
वायुनी पेठे क्षणमां नाश कर्छुं. में अनंता जीवोने मुक्ति नगरी
माप्त करावी, कराबुंछु, ने कराबीश, माटे हे पिताजी! मारा बेठा
आप चिंता करो ते अनुचितछे, आ ममाणे ज्ञानपुत्रे भाषण कर्युं.
न्यारवाद ब्रह्मचर्यनामनो धर्मराजीनो पुत्र महा पराक्रमी मल्याति
पामेच सिवनय पिताजीने नमन कर्ण गंभीर वाणीथी बोल्यो के आ
दुनियोमां ब्रह्मचर्य नामे करी हुं सिद्धताने पाम्यो छुं.

परस्तर मैथुन संवंधनो हुं लाग करावुंछुं. हुं अनादिकाळथी निवामां वास कर्छुं ज्यां मारो दिनि नामनो नेता वसेछे तेनी सादे पण वसुछुं. ज्ञान तथा वैरुग्य मित्र मने साहाय्य आपेछे. नवविध ब्रह्मचर्च गुप्ति धारक जीवोकामनो पलकमां पराजय करे छे. मारा वासयी मत्वेक मनुष्योना गरीरनी आरोग्यता छिंद पामेछे, धर्म कृत्यमां धर्यता प्रेरक उन्तं पर्व व्योमां समुद्रनी उपमाने हुं धारण करुछुं. मारा वासर्थ मनुष्यो वचन सिद्धि क्रांतिमान अष्ट सिद्धि आदि माप्त कर्छे. मोहादि शत्रुओ पराङ्मुख थापके. आसन्न भव्य जीवोमां हं विशेषतः वास करुछुं, मार अक्लंबन करी अनंत जीवो मुक्ति गर्या जायछे. अने जशे, माटे हे पिताजी! आप चितात्यागी धर्य धारण करो अने सर्व मुभटोने धर्य आपो.

आम ब्रह्मचर्यना कथन पश्चात् संवरसंज्ञक महारिय योध शीर्य बाणीथी सभा समक्ष बोल्यो के हे धर्म राजाजी! हुं सत्तावन रूप करी कर्मारिनो समूलतः नाश करुछुं जे छिद्र द्वारा कर्म सैन्य जीवोमां मवेशेछे ते छिद्रोनो हुं रोध करुछुं, तेथी कर्म सैन्यनुं कंड चालतुं नथी, मन वचन अने कायाना न्यापारो जे अशुद्ध परिण-तिमां परिणम्याछे तेनो हुं नाश करुछुं.

मारी हयानीमां पाप अने पुण्य आत्माने लागी शकतां नथी. कर्मनो पराजय करी धपक श्रेणि उपर चढावी त्रयोदशम गुणस्था नक माप्त करावी मुक्ति नगरमां भवेश कराबुं इं मारो वास पंचेंद्रिय गर्भज मनुष्योमां विशेषतः आविर्भावेछे. क्रोध, मान, माया, लोभ, अने हास्यपद्कनो त्वरित नाश करुं हुं आर्वध्यान अने रौद्रध्यान रूप योद्धाओनो हुं क्षणमां नाश कहंछुं. कृष्ण छेड्या, कापोन छेड्या, नील लेक्या, विगेरेनो समूलतः नाश कहंछुं, आत्मानो हुं शुद्ध स्व-भाव अर्दुछं, कर्न रहीत करी जीवोने शिवस्थान पति मीकलवातुं हुं कार्य वजाबुं हुं, मारा अवलंबनथी अनंतजीबो मुक्तिपद पाम्या अने पामशे, पण अभव्य जीवोने हुं मुक्तिपद पमाडी शकतो नथी. निरु-पाधिमय मारो स्वनावछे, मारायी कर्भशत्रु थरथर धुजेछे. ज्यां मारो मवेश त्यां उपशप विवेक विनय शांनि विगेरेनो मचार थायछे, इ-त्यादि वाणी वदी संवरयोडो तुष्णीभाव पाम्यो त्यारे निर्जरानामनो महायोद्धो विनयपूर्वक धर्मराजाने नमन करी वोख्या के-हे धर्मरा-जाजी! आप सेवकनी वाणी पसत्रचित्तथी सांभळो. हुं आपनो योद्रोछुं

हुं आपनुं कार्य सदाकाल वजावुं छुं, वाह्य अने आभ्यंतर एवे रूपां-तरने हुं पामुं छुं अनंतकर्मनो नाश हुं क्षणमां करुं छुं. निकाचित कर्म पण माराथी क्षय पामे छे आत्माओमां मारुं रहेवा नुं स्थान छे. काष्ट्रस-मूहने जेम अपि वाली भस्म करे छे तेम कर्म रूप काष्ट्रसमूहने पण हुं बाली भस्म करुं छुं. तद्भव मुक्ति पामनार तीर्थकरो पण मारो आश्रय करी कर्म नाश करे छे. नरमुरपद्दीओनां मुख पण मारा आलं-यनथी पमाय छे, माराथी मनुष्यो अष्ट्रसिद्धि अने नवनिधि माम करे छे. पण याद राखवुं के जे जीवो मने सेवेछे. तेओनां क्रोध, छिद्र देख्या करेछे. अकाम अने सकाम ए वे भेदे मारु प्रवर्तनछे. चार हत्या- कारक जीवोनो पण माराथी उद्धार थायछे. अनंताजीवो कर्म क्षपावी मित्तपद पाम्या अने पामशे तेमां मारो प्रभाव जाणवो. माटे हे धर्म- राजाजी! आप खक्ष्य थाओ. आपणुं सैन्य एवंतो वळवान छे के त्यां कर्मराजानुं वांइ चाळवानुं नथी.

आ प्रमाणे धर्मराजाना सुभटोए पोतपोतानुं पराक्रम वर्णव्युं. त्यारे धर्मराजा अत्यंत हर्षायमान थयो अने मनमां समज्यो के मारु सैन्य प्रवलके.

आ प्रमाणे अत्र धर्मतृपनी सभामां द्वतांत चाले हो त्यारे कर्म-राजानी सभामां ते प्रमाणे धामधूम चाली रही हो. मिथ्या चेतना नामनी कर्म राजानी दासीए कर्मने धर्मनी सभामां बनेली सर्व ह-कीकत कही. त्यारे सम्यक् चेतना दासी धर्मनी अग्रे कर्म तृप सभा-मां बनेली सर्व हकीकत कही. परस्पर युद्ध कार्यनी सर्व सामग्रीओ तैयार थवा लागी. धर्मतृपे पोताना सुभटोने कहां के—मारा िषय सुभ-टो ! तमो शत्रु सैन्यनो पराजय करो, मारुनाम अमर राखशो, वलीत-मारा जेवा श्र्रा सुभटोनं पराक्रम रण संग्राममां मालुम पडशे. माटे चतुराइथी युद्ध करनं

ते प्रमाणे कर्म राजाए पण सर्व सुभटोने वीर रसनां वाक्यों कथी शूर चढाव्युं. सुभटो पण परस्पर पराक्रम वताववा आतुर थइ रह्या-परस्पर युद्ध चाल्युं तेमां श्रद्धा रूपी सुभटे मिथ्यात्व रूपी योद्धाने हराव्यों. समिकित रिनापित मोह प्रधाननी शिक्तिनों नाश कर्यों, क्षमा पुत्रीए क्रोधनो नाश कर्यों, जीव चोथा गुणटाणा आदि गुणस्थानक चढवा लाग्यों. विरतिए अविरतिनी शिक्त नाश करीं.

ज्ञाने अज्ञाननो नाश कर्यो. द्याए हिंसानो नाश कर्यो, सं-तिथी तृष्णा नाश पामी. कर्म राजानुं सेन्य नाश पामतुं पाछुं हठवा -लाग्युं, ब्रह्मचर्य पुत्रे अब्रह्मचर्यनो सर्वथा नाश कर्यो-परगुण प्रशंसाएः निंदानो नाश कर्यो , शाने कपायनो पण स्थिर परिणामने साहाय्य आपी नाश कराच्यो. धर्म ध्यान रूप योद्धाए आर्तध्यान अने रौद्र ध्याननो नाश कर्यो। संतोषे तृष्णानो नाश कर्यो, शायिक सम-कित पामी जीव स्वस्वभाव शक्ति पामी आत्म रूप प्रकाशवा लाग्यो. हास्य, रति, अरति, भय, शोक, दुगंछा, श्लीवेद, पुरुपवेद, नपुंसक, वेद रूप कर्म सैन्यनो नाज्ञ अप्रमाद तथा ध्यान योद्धाए कर्यो. पंच. मकारनी निदानो तथा चशु दर्शनावरणी आदिचारनो तथा ज्ञाना वरणोय कर्मनो तथा अंतरायनो नाश उपयोग मंत्रीनी साहाय्यथी. शुक्रध्याने कर्यो. आत्मा तेरमे गुणटाणे जइ अनंत चतुष्टयथी शो-भवा लाग्यो. अंते अघाती कर्मनी पकृतिनो पण नाश करी मुक्ति पुरीमां गयो. एम धर्म राजानो जय जयकार थयो अने कर्म राजानुं सैन्य नाश पाम्युं. आत्मा परमात्म दशा पामी निर्भय थयो. अनंत जीवो एम कर्मनो नाश करी मुक्तिमां गया अने अनागत काले अ-नंत जीव मुक्तिमां जशे. कर्मनो नाश उपयोग दशाए अनंता जीवो करेछे अने करशे. जीव कर्मनो नाश करतो क्षायिक भावनी नव-लव्धियो पामेछे.

क्षायिक भावनी नव लिव्ययोनां,नाम.

१ - क्षायिकसमिकत, २ क्षायिकचारित्र, ३ अनंतन्नान, ४ अनंत दर्शन, दान, लाभ, भोग, उपभोग अने वीर्य ए रीते नवल-विधयोनी माप्ति गुणठाणानी इट प्रमाणे छे.

हवे संबंध दर्शावनां कथायछे के-उग्रमथी कर्मनों सय थायछे. उपशमभाव समोपनमभाव अने क्षायीकभावनी प्राप्ति पण उग्रमथी

थायछे. शास्त्राभ्यासनो उद्यम करतां पंचमकारे स्वाध्याय करतां क्रानावरणीयकर्पनो क्षयोपशम थायछे. तेम प्रत्येक घातीकर्पनो नाश उद्यमथीछे. धर्मध्यान अने शुक्रध्यानरूप उद्यमथी ज्ञानीओ कुत्स्न कर्पनो क्षय करेछे. चारित्रनो खप करतां चारित्र मोहनीयनो पण नाश थायछे. माटे पंचनकाळमां पण भन्यजीवोए पुरुषार्थ क-रवो. पुरुषार्थना पण अनेक भेदछे. माटे सत्यपुरुषार्थ ग्रहवो जोइंए. समिकतनी पाप्ति विना सबळी परिणति थती नथी. अने समिकत विना पुरुषार्थ निष्फल जाणवो. समिकत मोक्षनगरनुं द्वारछे. सम-कितविना कोइ जीव मोक्षमां गयो नथी. अने जवानो नथी. सम-कित विना ज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपशम पण अज्ञान तरीके छे-खायछे. एटले मतिज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपशम मति अज्ञान तरीके गणायछे. श्रुतज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपशम श्रुतअज्ञान त-रीके लेखायले. अने अवधिज्ञानावरणीय कर्मनोर्क्षयोपशम विभंग ज्ञान तरीके गणायछे. अने ज्यारे समिकतनी पाप्ति थायछे त्यारे तेनो भ्रयोपशम सवळो परिणमेछे. अने ते मतिश्वान श्रुतश्वान अव-धि ज्ञान तरीके गणायछे. समिकत विना अभन्य जीव मुक्ति पामतो नथी. बाह्य चारित्र पाळीने अभव्य जीव नवग्रैवेयक पर्यंत जायछे किंतु समिकतिवना भावचारित्र पामी शकतो नथी अने तेयी ते चतुर्गतिमां पुनः पुनः परिश्रमण करेछे, समिकतनो महिमा अपूर्वछे, पंच प्रकारना मिथ्यालनो नाश थवाथी समिकतनी उत्पत्ति थायछे. पंच प्रकारना मिथ्यालनो नाश जिनागम सांभळवाथी थायछे, सद्-गुरुनी श्रद्धा भक्तिथी उपदेश श्रवण करतां मिथ्यात नाश पामेछे, समिकतनी पाप्ति माटे आगळ षट्स्थानक कहेवामां आवशे. समिक-तना पंचमकारछे.

? उपश्रम समिकित, २ क्षयोपश्रमसमिकत, ३ क्षायिकसमिकत,

४ वेदसमिकत, ५ सास्वादनसमिकत, अनंतानुवंधी क्रोध, मान, माया अने लोभ तेमज समिकत मोइनीय मिश्र मोइनीय, मिध्यात्व, मोइनीय ए सात प्रकृति सर्वधा क्षय थतां क्षायिक समिकतनी माप्ति थायछे.

श्री जिन वचनज तत्त्वरूपछे नीतराग होवाथी एम सामान्य रूचिनाळा जीव ने द्रव्य सम्यक्त्व पणुं स्फुट थायछे. अने नय निक्षेप ममाणना विचारथी तत्त्व श्रद्धावाळा जीवने भाव सम्यक्त्व पणुं स्फुट थायछे आहें द्रव्य शब्दार्थ कारणता अने भाव शब्दार्थ कार्यता रूप जाणवो एम श्री हरिभद्रसूरि कहेछे.

श्री उत्तराध्ययन सूत्रानुंसारे दशविध सम्यक्त्व कहेछे.

- १ सत्य अर्थनी साथे संपितविं जीवाजीवादि नव पदार्थ संबंधी जे रुचि ते निसर्ग रुचि जाणवी.
- २ परोपदेशवडे प्रयुक्त जीवाजीवादि पदार्थ विषयनी जे श्रदा ते उपदेशरुचि कहेवायछे.
- २ रागद्वेष रहित एवा पुरुपने आज्ञा वढे धर्मानुष्टानमां रुचि थाय तेने आज्ञारुचि समिकत कहेवायछे.
- ४ सूत्रना अध्ययन तथा अभ्यासधी उत्पन्न थएला विशेष ज्ञान बढे जीताजीतादि पदार्थना विषयमां रुचि याय तेने सूत्र रूचि समितित कहेले.

सूत्र रूचि उपर गोविंदाचार्यनुं दर्शत जाणवुं.

- 4 एकपद वहे अनेकपद्तथा तेना अर्थना अनुसंधान द्वारा जलमां तेलना विंदुनी जेम रुचि मसरि जाय तेनीनहिं सम्यक्त्व कहेवायछे.
- भ जेने सर्व मृत्रना अर्थनुं ज्ञान उत्पन्न थाय ते अभिगम रुचि सम्पक्त कहेवायके. त्यारे अत्र शंका यशे के अभिगम रुचि

अने सूत्रमां शोफेर-पत्युत्तरमां समजवातुं के-आ अभिगम रू चि अर्थ सहित सूत्रना विषयमां आवेछे. अने ते सूत्रक्वि केवळ सूत्रना विषयमांज आवेछे एटलो ते वन्नेमां भेदछे. केव-ल सूत्र मूल कथायछे.

नाह्य सर्व प्रमाण तथा सर्व नयथी उत्पन्न थएल सर्व द्रव्य अने असर्व भावना विषयनी रुचिने विस्तार रुचि सम्यक्त्व कहेवा-अस्छे तेथी विशेष लाभ प्राप्ति थायछे।

'८ ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप अने विनय वैयादृत्य आदिना आच-रण संवंधी रुचि ते क्रियारुचि कहेवायछे.

९ जेणे कुद्धिनो अभिग्रह कर्यो ना होय अने जे प्रवचनमां प्रवीण
न होय तेवा पुरुषने मात्र निर्वाण पद संवंधी रुचि ते संक्षेप
रुचि जाणवी जेम उपशम संवर अने विवेक आ त्रण पदनी
किति चिलाती पुत्रने थइ हती तेम समजवुं.

१० धर्मपद श्रवणथी उत्पन्न थएली जे धर्मपदवाच्य संवंधी रुचि ते धर्मरुचि कहेवायले.

समाकितरत्ननी माप्ति दुर्लभछे-समाकित पाम्या पश्चात् संसार समग्रद चुलक ममाण समजवो. आ संसारचक्रमां अनंतशः परिश्व-अमण करी अनंतवार अनंतदुःख पाम्योः अनेक देहो धारण कर्योः प्रत्येक भवमां अनेक दुःख भोगव्यां. जन्म जरा मरणादि दुःखो-नो भोक्ता घणीवार थयोः पण पार आव्यो निहः जीव पुनः पुनः प्रस्वभावमां रमण करी कर्म ग्रहेले. आत्मस्वभावमां रमण करवाः श्वी कर्म नाश पामेले कम्मपयडी आदि ग्रंथोमांथी विशेष स्वरूप जाणवं. कर्मनो नाश करी मोक्षनगरमां जवानी इच्ला होय तो अनुभव क्षाननो खप करोः मतिश्रुत ज्ञाननुं उत्तर भावी अने के-श्विकक्षाननु पूर्वभावी अनुभवज्ञानले. दृष्टांत जेम सूर्य-केवलज्ञानले अने स्पेरिय थतां प्राक्त जे अरुणोद्य छे ते हिष्टांते अनुभवहान जाणवं. अनुभवहान साक्षात् परमात्मपदनी प्राप्ति करावेछे. भव्यजीवो अनुभवहानथी जाणेछे. अनुभवहान साक्षात् गूर्य समान छे.
शास्त्री जुं अध्ययन करतां, ध्यान करतां अनुभवहाननी प्राप्ति थाय
छे. अनुभवहानीओ उपयोग पोताना आत्माना असंख्यात पदेशे
स्थापी पुद्गळवस्तुमां उंघेछे. मारो शुद्ध आत्मस्त्रभाव तेज मार्ह
धनछे. वाकी आ वाह्य देखातुं धन मार्ह नथी. एम भिन्नता-पाडी
शुद्ध गुणमां परिणमेछे अनुभवहानी सिद्धांतनो साररूप मकरंद
पीवेछे. अनुभवहानी समता भवनमां मदा मुखमां महालेखे. अरूपी
आहमाने दृष्टिगोचर करवानुं स्थान अनुभवहानछे माटे सम्यग्
ज्ञानना अर्थी जीवोए पुनः पुनः सत्शास्त्र अने सद्गुरूनो-परिचय
करी अंतरृदृत्ति करी वाह्यदृत्तिनो त्याग करवो.

#### कहांुं छे के-

वाग्रष्टत्तिए गुणठाणे चढवुं, ते तो जडना भांमा; संयमश्रेणि शिखरे चढावे, अंतरंग परिणामारे. लोका भी-जवीया मत भूलो. १

ए उपरथी सार लेवानो के-वाह्य हिन नाम चिह्रात्मद्शाथी
-गुणस्थानके चहवुं एम तो जड़ जीवोनी भ्रमणा छे, अंतरंग परिणाम रूप
अंतर्हित्त संयमश्रेणिना शिखरे चहावे छे. माटे भव्य लोको भोळ त्रीया
तमे भूलो नहीं सत्य तत्त्वमां रूपण करो. अने ध्याननी इच्छा करो।
-आत्मगुणनी विचारणा करो। आत्माना स्वभावमां ज्ञान, दर्भन,
चारित्र, वीर्यादि अनंतगुण छे, वळी गुण गुण मित्र भिन्न भिन्न
-स्वभाव आत्मामां रह्या छे, ज्ञाननो जाणवा रूप स्वभाव दर्शननो हेखवा रूप स्वभाव, चारित्रनो स्थिरना रूप अने वीर्यनो स्प्रुरणा
- शक्ति रूप स्वभाव एम अनंतगुणी आत्मामां तिरो नांव रह्या छे। पण

शक्तिभावयी आत्मानुं कार्य सरे निहं, जेम अरिण काष्ट्रमां शक्ति-भावे रहीछे पण अरिणना काष्ट्रने बाथ भीडवाथी टाढ नाश पामे निहं ते दृष्टांतना अनुसारे धक्तिभावे रहेलो आत्मानो धर्म ज्ञानथी जा-णी विर्यथी मगट करीए तो चतुर्गीतनां अनंतशः जन्म जरा मरण टळी जाय. आत्माना गुण पर्यायनुं व्यक्तिरूपे मगटनुं तेज स्वभाव लाभ जाणवो.

प्रश्न-घातीकर्मनो नाज्ञ ज्ञावहे त्वरित थाय.

उत्तर-ज्ञान अने ध्यानथी प्रमादना त्यागपूर्वक आत्मोपयोगे स्थिरताथी कर्मनो नाश थायछे. पर्वतनी गुफामां निविड अंधकार होयछे तेनो नाश दीपकथी थायछे तेम अज्ञान तथा कर्मनो नाश पण आत्मज्ञानथी थायछे. मोटी तणनी गंजी पण अग्निना स्वल्प कणीयाथी नाश क्षणमां पामेछे तेम अनंत भवोपार्जित घातीकर्मनो नाश पण आत्मज्ञानथी स्वल्पकाळमां यायछे. श्रीपाळना रासमां देशनानी ढाळमां कर्षु छे के-

श्री यशो विजय उपाध्याय.

क्षण अर्धे जे अघटछे, तेन टळे भवनी कोडीरे, तपत्रया करतां अतिघणी, नहीं ज्ञान तणीछे जोडीरे.

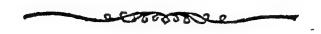
ज्ञानी पुरुष अर्धक्षणमां जे पापनो नाज्ञ करेछे ते कोटी भव पर्यत कठीन विचित्र छठ अठम मास वे मास विगेरेनी तपश्चर्या क-रतां टळे नहीं. माटे ज्ञाननी कोइ जोडी एटले ते समान कोइ नथी माटे आत्मज्ञाननी माप्ति करवा मयत्न करवो. ज्ञान रूपी अग्नि सर्व कर्मने वाली भस्म करेछे. पह्द्रच्य सात नय तथा निक्षेप द्रव्या-दिकना ज्ञानथी स्वपर विभाग थायछे अने पोताना घरमां भवेश करेछे अर्थात् असंख्य प्रदेशरूप जे घर तेमां आत्माउपयोगपणे परिणमी अशुद्धतानो परिद्वार करेछे, पोताना घरमां आवतां आ- त्माए अनुभवदृश्चिमी सर्व सिध्धि जोइ त्यारे विचार्यु के-अहो में अमंत भवचक काळ अज्ञान रूप निद्रामां निर्णमाव्योः मारी भूले हुं जन्म जरा मरणनां दुःख पाम्यो हवे भ्रांति भागी आ शरीररूप नगरीमां असंख्य पदेशी आत्मानी मतीति थइ, असंख्य पदेशीरूप आत्मा हुं अरुपी छुं. श्वेत, पीत, रक्त, कृष्ण, ए पुद्गलनुं रूप छे पण हुं तो पुद्गलथी भिन्नछुं माटे रूपातीतछुं, मारामां गंध स्पर्शनथीः शब्द्यी मारु ज्ञान थाय छे पण हुं शब्द्थी न्यारो छुं मारु कोइ नाम नथी. तेथी हुं अनामी कहेवाउछुं.

हुं कीर्ति वा अपकीर्तिवाळो नथी-कारण के वहिरात्मदशामां कीर्तिनी वासना जीवने रहेछे अने तेथी ते अनेक पकारता कीर्ति माटे उद्यमो करेछे. पण तेथी कंइ कल्याण थतुं नथी. जेम वंध्याने स्वमानी अंदर पुत्रनो मनव थयो. अने ते पुत्रने मोटां थतां परणा-व्यो. वंध्या बहु आनंद पामी एवामां वंध्यानो पुत्र मरण पाम्यो त्यारे वंध्या रोवा पीटवा लागी. केश तोडवा लागी. वंध्यानी आं-ख उघडी गइ अने जुवे छे तो कंइ नधी. मिथ्याभास थयो एम जाण्युं तेम अज्ञानी जीव साधु वा गृहस्थना वा कोइपण अवस्थामां कीर्तिनी वासनाथी अनेक कार्यों करेछे. किंतु आंख मींचाया बाद कंइ पण तेमां तुं देखातुं नथी. माटे ज्ञानयोगी आत्मा कोइ कीति करे वा कोड़ अपकीतिं करे तोपण समभावे रहे छे. कारण के-ज्ञान योगी आत्मा जाणेछे के कीर्तिनाम कर्मना वंधनथी जगत्मां कीर्ति मसरेछे. अने अपकीर्तिनाम कर्मीद्ययी अपकीर्ति मसरे छे-माटे ते कीर्ति अने अपकीर्ति वन्ने पौद्गलिकछे. कीइनी कीर्ति मस-रवाथी ते धर्मी कहेवातो नथी. तेम अपकीतिं. मसरवाथी ते अधर्मी कही शकातो नथी. अंतरंग शुद्धात्म द्वतिथी धर्मी कहेवायहे. अने अंतरंग अशुद्धात्म हत्तिथी अधर्मी जाणवो. मान पूत्रा आदि वाम-

नाओथी पण आत्मा भिन्नछे. कारण के मान अने अपमान एह वहिरात्मा दशावाळाने एटले जेणे दुनीयादारीमां सुखदुःखनी बुद्धि धारण करीछे तेवा जीवने वर्तेछे, पण जेणे शरीरथी भिन्न आत्मा निराकार ज्योतिमय जाण्योछे तेवा अंतरात्म दशावाळा जीवने माननी वासना रहेती नथी. शुद्धात्मा सदा मानवंतछे. पुद्गलरूपः देह कंइ मान्य योग्य नथी. वळी कोइ अपमान करे तो समजे के-देहनुं अपमान के तेनी अंदर रहेला आत्मानुं अपमान नथी देह तो जडछे अने आत्मा तो अदृश्यछे, तेथी तेनुं अपमान थइ शकतुं नथी. माटे ज्ञानयोगी महात्माने मान अपमान बे सरखांछे वळी ज्ञान योगीनी कोइ निंदा करे. वा कोइ वंदन करे तोपण ते समभावमां वर्ते छे. कारणके ज्ञानी जाणे छे के-मारो आत्मा अलक्ष्यछे. पोताना स्वभावे शुद्ध निर्लेपछे. एम उपयोगमां वर्ततो कोइना उपर राग वा कोइना उपर द्वेष करतो नथी। कनक अने पाषाणने पण ज्ञानी आत्मा सरखा जाणेछे, कनक अने पाषाण पृथ्वीकायनां दळीयां पौद्गलिकछे. अने ते कनक पाषाणरूप अचित्त पुद्गल . स्कंथरूपीछे. अने हुं आत्मा तो अरूपीछुं. कनक पापाण पुद्गल स्कंध जडछे अने हुं आत्मा तो ज्ञान गुणमयछं, मारी अने एनी भिन्न जातिछे. वळी कनक पावाणमां सुख नथी तो ते उपर केम दृष्टि आपुं ? एम समजी ज्ञानी आत्मार्थी समभावमां रहे छे. अने शुद्धा-तम स्वरूपमां जपयोग दृष्टि आपेछे.

संसारना संसर्गमां आवतो पण ज्ञानी आत्मा जलमां कमलनी पेटे भिन्नपण वर्ते छे, हर्प शोक धारण करतो नथी. एम प्रमादस्थान हुं निवारण करतो विरतिव्रत अंगीकार करतो अंतर्थी द्रव्यक्षेत्र का-लभावथी आत्म स्वरूप विचारतो अने तेम आत्माना गुणपर्यायने भिन्नाभिन्नपणे विचारतो मति अने श्रुतज्ञानना क्षयोपशमे वीर्य श-- क्ति फोरवतो संयम श्रेणि आरोहण करतो घातीकर्मनो क्षय करी यावत् अघातीकर्मनो क्षय करी पंचम गति जे मुक्तिस्थान तेर्मा सादि अनंतमा भांगं विराजे छे. त्यां मुक्तिस्थानमां शरीरनो त्रीजो भाग टाळी वे भागनी अवगाहना रहेछे. मुक्तियाँ खामी सेवकभाव नथी, मृक्तिमां गएल आत्मा पश्चात्. संसारमां आवतो नथी; अने तेथी जन्म जरा मरणनां दुःख पामतो नथी, आ प्रमाणे कर्पना नाशें मुंक्ति पासेनी पासेछे किंतु आत्मध्यानरूप पुरुषार्थमां प्रमाद थवाथी पुनः पुनः संसारमां परिश्रमण करवुं पडेछे मन, वचन अने कायाना योगो स्थिर करी आत्म स्वरूपमां स्थिर थवुं अने वाह्य मार्गमां द्वात्त देतां आगळ वध्या करवुं. तेम करवाधी आनंदनी खुमारी प्रगट यशे अने स्थिरता योगे चारित्र मोइनीयनो नाश थशे, अने आत्मा मतिज्ञान अने श्रुतज्ञानना क्षयोपशमये गे मत्यक गुण स्थानकनी हदे विचित्र अनुभव मगट करतो देखाशे अने आत्मतत्त्वनो निर्धार भास थशे. आ अचळ सिद्ध।तनी श्रद्धा तथा तेनो आदर जे आत्मा अल्पभवमां मुक्ति जवानो छे तेने माप्त थाय छे. अने परमपद माप्तिनी तीत्रेच्छा मगट थया विना तेना उपर लक्ष्य लागतुं नथी अने ते मति लक्ष्य ला-ग्या विना आत्म कल्याण नथीज. जे भव्यने जे वस्तुनी इच्छा होयछे ते मति तनो उद्यम वर्तेछे. सर्व करतां शुद्ध स्वरूपनी इच्छा श्रेष्ट गुणावहा जाणवी. हवे ते आत्मगुणनी माप्तिकरवा मन शुद्ध करवुं जोइए. मननी शुद्धता थया विना सिचिदानंद प्रति वलण यतुं नधी, प्रथमती मन इंद्रियोना विषयमां भटकतुं, होयछे तेने पाछुं वाळबुं अने आत्मरमणमां जोडबुं एम धवायी ताग द्वेपादिक श-तुओ तेनी मेळे नाश पामशे. आम वर्तन करवाधी एणोनी माप्ति -थायछे कोइ भ्रव्यो वोलवामां एवं बोले के-नाणे महा तत्त्वहान :

माप्त थयुं पण अंतरमां कंइ होतुं नथी, माटे वर्तन आत्म स्वभावमां थयुं जोइए, एम करवाथी अनुक्रमे आत्मा कमीष्टकनो नाश करी मुक्तिपद पामेछे. अतीत काळे अनंत जीवो मुक्ति गया जायछे अने जशे इति सप्तम विषय संपूर्ण.



# **७** अष्टर्मविषयः

# संसारमां आत्मा क्यारथीछे-- ?

संसारमां आत्मा अनादिकाळ्थीछे. जेनी आदि होयछे ते उप्रात्तिमान पदार्थ होयछे. अने जे उत्पत्तिमान होयछे ते कार्यरूप कहेवायछे, अने जे पदार्थ कार्यरूप होय ते समवाय निमित्तआदि कारणोनी सामग्रीद्वारा उत्पन्न थायछे अने तेथी ते कार्यरूप पदार्थ अनित्य कहेवायछे. अने जे पदार्थ अनित्य होयछे ते विनाश पामे छे. आत्माने कोइए उत्पन्न कर्यो नथी अने तेथी ते अनादि कहेवायछे.

ज पदार्थनी आदि नथी तेनो अंतपण नथी. ते ममाणे आत्मा अनादि छे अने अनंत छे. जे वस्तुनो कोइ वनावनार नथी ते वस्तु नित्य कहेवाय छे. तेम आत्मा तेनो वनावनार कोइ नथी तथी आत्मा नित्य कहेवाय छे. जे नित्य वस्तु होय छे ते जण कालमां नाश पामती नथी. तेम आत्मा पण नित्य छे तथी जणे कालमां नाश पामतो नथी, जे वस्तु उत्पन्न थाय छे ते कारण पूर्वक होय छे, जेम घटवस्तु मृत्तिका दंड चक्र कुला छादि पूर्वक छे. अने जे वस्तुनो कोइ उत्पन्न कर्त्ता नथी. ते कारण विना स्वयं सिद्ध होय छे जेम आकाश ते ममाणे आत्मा पण कारण विनानो छे. अ-र्थात् ते कोइनाथी वन्यो नथी.

ई परवादी-सर्व जीवोने इश्वरे बनाव्याछे तो जीवोनो कर्ता इश्वर कारणी भूत मानवो जोइए.

तत्त्ववादी-जीवोनो कत्ती इत्यर नथी, इत्यर अरूपीछे. रागद्देष र-हीतछे, संसारनी खटपट रहीतछे. तेवा इत्यरने जीवो बना-ववानुं शुं प्रयोजन ते वतावो अने ज्यारे इत्यर जीवो नहोता वनाव्या ते पूर्वे इत्यर शुं करतो हतो वळी वतावो के जी-वोनुं उपादान कारण कोण अने जीवरूप कार्यनुं निमित्त कारण कोण ?

प्रथम सामान्य माध्यस्य बुद्धिथी विचारतां ५ण मालुम पहेछे के रागद्वेप रहीत एवा मभु वा जे ईश्वर सिद्ध तेमने जीवो बनाव-वातुं कंइ प्रयोजन नथी, एकने सुखी बनाववो अने एकजी-वने दुः ली वनाववी एवं अन्यायनुं कार्य ईश्वर करती नयी. जीनो वनाच्या विना पूर्वे ईश्वरने गमतुं नहोतुं ते पण कंइ कही श्वकातुं नथी, अने जीवो वनाव्या पूर्वे ईश्वर कतृत्व शक्ति रहीत हतो के कैम ते कही शकातुं नथी। कर्तृच्य शक्ति ईश्वरनी अना।देनी मानो तो जीवो पण अनादि ठर्याः त्यारे वदतोव्याघातदूषण माप्त धयुं. कतृत्व शक्ति ईश्वरनी जो अनादि न मानो तो शक्तिनी आनित्यताए ईश्वर पण अनित्य ठर्थी। वजी जीवोनी पूर्वे ईश्वर छे ते पण सिद थतुं नयी. वळी जीवोनुं उपादान कारण पण ईश्वर कही शकातो नयी, कारणके उपादान कारणयी कार्य भिन्न नथी। यथा तंतवः पटस्य जेम पटनुं उपादान कारण तंतु ते पटरूपज छे तेम जो जीवोनुं उपादान कारण ईश्वर मानीए तो सर्व जीवोथी आभिन्न ईश्वर ठर्यी. अने ज्यारे सर्व जीवनय ईश्वर ठर्यी त्यारे राजा पण ईश्वर पापी पण ईश्वर चोर पण ईश्वर विडाल पण ईश्वर सर्व पण ईश्वर पोतानी मेळे ईश्वर उपाधिमय बन्यो फोझं भजन करबं. कोतं

मंथन, कोनी मुद्धित, ते पण असत्य ठर्युं, तप जप दान क्रिया सर्व असत्य ठरीं. माटे जीवोतुं उपादान कारण ईश्वर सिद्ध थतो नयीं. तेम निमित्त कारण पण ईश्वर कही शकातो नथीं, कथा कथा म-साला लावीने ईश्वरे जीव बनाव्यों. जो कहेशों के पंचभूतरूप मसालायी जीव बनाव्यों तो ते बात पण आकाश कुमुमबत् अस-त्य ठरेछें कारण के पंचभूततो जड़ छे. अने आत्मा तो ज्ञान गुणी छे माटे ते पंचभूतनुं कार्य नथीं. माटे जीवनुं उपादान कारण पंच-भूत कदी ठरतां नथीं. अने निमित्त कारण जीविशे ईश्वर ठरतो नथीं. माटे जीव अकारण होवाथी नित्य सिद्ध ठ रें. अने तथीं ते अनादिकाल्यों छे एम सिद्ध ठर्यों. श्री केवलज्ञानी वीरमभुए जीवो अनादिकाल्यों छे एम सिद्ध ठर्यों. श्री केवलज्ञानी वीरमभुए जीवो अनादिकाल्या छे एम सत्य कथ्युं छे. हवे ब्रह्ममांथी जीवोनी उत्प-

रिष्य — हें सद्ग्रगे कोइ एम कहे छेके आत्मा वा इदमेक एवाप्र आसीत् अर्थ आ दुनीयामां मथम ब्रह्म एकज हतुं अने तेमां थी आ सर्व मपंच वन्यो छे आ बातमां थुं सत्य समाधुं छे. ते कृपा करीने कहेशों ?

सद्ग्रह-हे सौम्य अवग कर. ब्रह्ममांथी जीवो माया विगेरे सर्व प्रयंच बन्यो एम मानवुं युक्तिहीन छे. ते नीचे मुजव. ब्रह्मथी दुवीयानो प्रयंच भिन्न मानशो तो एकांत भिन्न प्रयंचरूप बस्तु ब्रह्मथकी उत्पन्न थाय छे तेम मानवुं मंडूक जटावत अस-त्य ठरेछे, कारण के जेम घट यकी एकांत भिन्न पटनी उत्प-ित्त जोवामां आवती नथी. एम प्रत्यक्ष विरोध आवे छे, वळी ब्रह्मयकी एकांत अभिन्न जगत्रू प्रयंच मानशो तो ते पण युक्ति विकल आकाश कुमुमवत असत्य ठरेछे.

ब्रह्मथी एकांत अभिन्न जगत् प्रपंच ब्रह्मस्वरूप ठर्यो, त्यारे माता, स्त्री, पुत्र, सर्प, सिंह, आदि सर्व ब्रह्मरूप ठर्धु, त्यारे तेना-थी भिन्न वा तथी मुक्त थवाशेज नहि, वळी अमो ब्रह्मवादीने पुछी ए छीए के-ब्रह्म जे ते जगत् प्रपंचतुं उपाशन कारणछे के निमित्त कारण ? मथम पक्षमां जो ब्रह्मने उपादान कारण गानवामां आवे तो कारण जेवुं होय तेवुं कार्य थाय जेम पटनुं उपादान कारण तंतु रकत होय तो पट पण रकत था।छे. तेम जो ब्रह्म सत्छे अने उपादान कारणछे नो उत्पन्न थनार जगत् प्रपंचरूप कार्य सत् थवुं जोइए. अने ते कदी नाश पण पामे नहि, पण जगत् म-पंच सत् नथी एम मत्यक्ष विरोधापत्ति माप्त थती देखायछे वजी ब्रह्मने रूपी वा अरूपी मानतां विरोध द्शीवेछे. प्रथम पक्ष ब्रह्मने रूति मानतां आगम विरोध आवेछे. द्वितीय विकल्पमां ब्रह्मने अ-रूपी मानतां ब्रह्मयी उत्पन्न थनार जगत् मपंच रूप कार्य अरूपी थवुं जोइए. पग घटपटादि वस्तुरूपी देखापछे ए ५ण महाविरोध आवेछे. वळी ब्रह्मने नित्यमान तां ब्रह्मथी उत्पन्न धनार जगत प्रपंच पण नित्यपमे उपछव्य थत्रो जोइए पम जगत् मपंच तेथी उलटो विनाश पामतो देखाय है, तेथी तेम मानतां पण विरोध माप्त थायछे, माटे जगत् उपादान कारणपणे माने छं ब्रह्म नित्यपणे पण कहीशकार्तुं नथी. ब्रह्मते अनित्य मानतां आगम विरोध आवेछे वळी ब्रह्मने एक अने ते सर्वत्र व्यापक्र एप मानशोगी जीवोनो वंध मोक्ष मानवो असत् ठरे छे. तेम सुख दुःख पण असत् ठरशे. इत्यादि विकल्पोयी ब्रह्मनी सिद्धि पग थनी नथी. तो वळी ब्रह्म-मांधी जीवो उत्पन्न थया तेम मानवुं ते तो सर्वया असत्य टरेछं. अश्व-आनंदं ब्रह्मगो विद्वान् निवेभेति कुनश्वन-ब्रह्मना आनंदने जाणनार पुरुष कशाथी भा पामतो नथी. एम दृहद आर-

ण्यक तथा तैत्तिरीय श्लातिमां कहुंछे तेनुं केम ?

उत्तर-ब्रह्म शब्दार्थनुं सम्यग् ज्ञान न थवाथी तत्त्वनी प्राप्ति थती नथी. केटलाक वादिओ ब्रह्म विषे सर्व जीवोनो लय थायले. अने वली ब्रह्ममांथी सर्व जीवो उत्पन्न थायले एम समजी तत्त्व पामी शकता नथी कारणके—सम्यग् ज्ञान विना सम्यग् क्रिया थइ शकती नथी. अने ते विना भवांत थतो नथी. अर्थात् कर्मनो नाश करी मुक्तिपद पमातुं नथी. पण आत्मारूप ब्रह्मनो भावार्थ ज्ञानथी सम्यक समजनार क-शाथी भय पामतो नथी. माटे सम्यग्दृष्टिपणुं प्राप्त थतां ए-कांत हठ दलेले.

प्रश्न-श्लोक भिद्यते हृदयग्रंथीः छिद्यंते सर्व शंसयाः

क्षीयंते चास्य कर्माणि, तस्मिन् दृष्टे परावरे. १

ब्रह्मने साक्षात्कार ज़ाणवाथी हृदय ग्रंथी भेदायछे. अने सर्व संज्ञयो छेदायछे. कर्मो नाज पामेछे. ते ब्रह्मने देखतां-आम ग्रंडको पिषद् विगेरेथी जणायछे तोब्रह्मने असत्य केम कहेवाय?

उत्तर-हेभव्यजीव हजी अमारु कथन तमाराथी समजायुंनथी—
ब्रह्मशब्दना अर्थ ज्ञानवान् आत्मा अनेते ज्ञानीजीव मित्रारीर
भिन्नभिन्न-तेमज कर्मरहीत ज्ञानीजीवा—व्यक्तिथी भिन्नभिन्नछे
तेवारुपे अमा ब्रह्मने सत्य मानीएछीए—पणजे एक
ब्रह्म अने तेमांथी जगत् पेदाथवुं तेवा ब्रह्मशब्दना अर्थने
अमा सत्यरुपे मानतानथी. तेनासंवंधे अत्रसंभापण थायछे
—अत्रसमजवानुंके—सर्वत्र ब्रह्मछे, ब्रह्मथकीअन्य केाइपदार्थ नथी
एम मानवुं ते ज्ञानिवरुद्धछे-अने एम केाइमानेता तेमां अन्यनुं
जोरनथी—पण समजवानुंके—उपरना क्ष्रोकथी द्वैतपणानी
एदछे वे तत्त्व—जीव अने अजीव तेनी सिद्धि थायछे—अस्य

कर्माणि क्षीयंते—आनां कर्म नाशपोमेछे. आनां एटले आत्माना आत्मानी साथे ज्ञानावरणीयादी अप्टकर्म अनादिकालयी क्षीर नीरवत् लाग्यांछे. ते कर्म, आत्मानुं स्वरूप स्याद्वादपणे देखी आत्म स्वभावमां रमवाथी नाशपामेछे. आत्मा अने कर्म एम वे वस्तुनी सिद्धि थइ, एक आत्मद्रव्यनी द्वितीय कर्मरूप पुद्गल द्रव्यनी अनायासे सिद्धि थइ, कर्मजड अने, अजीवछे, तेथी जीवतत्त्व एम वे तत्त्वज्ञानी मभुश्रीमहावीरस्वामीए कथ्यां छे तेनी सिद्धि थइ कदापि सामो मक्ष एम करवामां आवे के कर्म पण बन् ह्यथी भिन्न नथी अने ते ब्रह्मस्वरूप छे. तो उत्तर तरीके कहेवामां आवशे के कर्म ज्यारे ब्रह्मस्वरूप छें. त्यारे कर्मनो नाश थतां

वळी विचारोके कर्म छे ते ब्रह्मथकी भिन्न छे आभिन? प्रथम पक्षमां ब्रह्मथकी कर्मएकांत भिन्न मानतां पटथी एकांत भिन्न घटनी पेठे वे पदार्थ ब्रह्म अने कर्म भिन्न छे तेनी सिद्धि थइ, द्वितीयपक्षमां ब्रह्मथी कर्म अभिन्न छे एम मानतां ब्रह्म अने कर्म एक स्वरूप थइ जशे अने कर्मनो नाश पण थशे नाहि.

वळी विचारों के कर्मसत् छे के असत् छे. कर्मअसत् मानवामां आवे तो सत्ब्रह्म अने असत् कर्मनों संयोग थाय निह, कारण के सत्नी साथे जे वस्तुरूपे ना होय तेनों संयोग घटे निह. अने वेनों संयोग मानवामां आवशे तो वे पदार्थ भिन्न स्वभाववाळा भिन्न ठर्या, त्यारे एक एव ब्रह्म आवाक्यनों नाश थयों एम अवव्य सिद्ध ठरेछे. स्याद्वादणाथी तो ते सर्व जिन दर्शनमां यथार्थ घटेछे अने आत्मानी सिद्धि यायछे अने कर्मनी सिद्धि था पछे. आत्मा ज्ञानादिके करी सत्छे अने कर्मल्य पुद्र छनी अपेक्षाए असत् छे. पग पुद्र गळ द्र्य पोताना स्वरूपे सत्छे. आत्मा अने कर्मनों संयोग अनादिका-

ळ्थी छे. आत्मा अंने कर्म वे श्लीरनीरवत् परिणामीछे, आंत्मा र्जपारे स्वस्वभावमां रमण करेछे. त्यारे कर्मरूप पुद्गलो आत्माना मंदेशोथी विखरेछे, अने आत्मामां रहेछुं अनंतज्ञान आविभीवे र्भकाशे छें. अने आत्मा परमपद पामतां अचल थायछे. जन्म जरा र्मृत्युनो नाश करी अजरामर पद पामेछे तेषां नपुनराष्ट्रितः शिव अ-र्थात् मोक्ष पामेला जीवो संसारमां पाला आवी जन्म घारण करता नंथी. वळी सर्व जीवो ब्रह्मना अंशछे एम मानीएतो पुण्य पाप बंध मोक्ष आदि घटी शकतुं नथी कारण के-सर्वस्य ब्रह्मस्वरूपत्वात् सर्व पदार्थने ब्रह्मस्वरूप मान्याथी धर्म अधर्म मुक्ति विगेरे असत्य ठ-रेछे. तेषां आ वाक्य प्रयोग पष्टीना वहु वचननोछे, तेथी आत्मा अनंतछे एम प्रतिपादन कर्युछे. ने फरीथी संसारमां आवता नथी। एम कहेवाथी प्रलय काळ थया वाद केटलाक मुक्तिमांथी संसारमां जीव पाछा आवेछे तथा दयानंद सरस्वति जे आर्य समाजनो प्रकाशकछे ते स्वकल्पनाथी एम मानेछेके मुक्तिमांथी जीव संसारमां पाछो आवे छे. एम ते वादियोनुं मानवुं असत्य ठरेछे. अने ते मिथ्या ज्ञानछे एम सिद्ध कर्युः वळी नी-चेनी वेदश्रुतियो पण सम्यग्ज्ञान विना असमंजस भासेछे.

तथाच

इदं सर्वे यदयमात्मा, सर्वे खल्विदं त्रह्म ॥ अयमात्मा त्रह्म, अहं त्रह्मास्मि ॥

इत्यादि वेद श्रुतियोपण सम्यग्ज्ञान विना प्रमाणीभूत नथी। सर्व एटले सर्व खड़ एटले निश्चयथी आ ब्रह्मले. घट, पट, दंड, चक्र, द्रक्ष, सर्प, जगत् सर्व ब्रह्मले तो सिद्ध थयुं के स्वी पण ब्रह्म स्वरूप. माता पण ब्रह्मस्वरूप. पुत्री पण ब्रह्मस्वरूप.पोते वक्ता पण ब्रह्मस्वरूप त्यारे कोने नमस्कार करवो ? कोनुं स्मरण करवुं? अने धळी स्मरण करवानुं थुं प्रयोजन ? तेनी सिद्धि टरती नथी। श्वा पण ब्रह्मस्वरूप, अने विष्णु पण ब्रह्मस्वरूप. सर्प पण ब्रह्मतो पत्येकने नमस्कार करवो जोइए. पण ब्रह्मवादी पण सर्वने ब्रह्मस्वरूप मानी भेदभाव राखेछे ते आकाश जेवडी मूल गणाय, माटे ब्रह्मने एक मानतां पूर्वोक्त दृषण प्राप्त थायछे. सम्यग्दृष्टि तेवोज अर्थ सम्य-ग्पणे ग्रहण करेछे. आ सर्व जगत् अनंतजीवोथी परिपूर्ण व्याप्तछे, अने जे आ शरीरमां छे ते आत्माछे, अने आत्मा ज्ञानमयछे. दुनीयानी सर्व वस्तुओ ज्ञानमां विषयीभूत थायछे. अनंतज्ञेयनो ज्ञाता अनंत ज्ञानमय आत्माछे तेने ब्रह्म कहो वा चैतन्य कहो. वा परमा-त्मा कहो, नामभेद पण अर्थतो एकनो एकछे-सिद्ध परमात्माओ सदश शरीरमां रहेलो आत्मा पण सर्व रूद्धिमयछे पण कर्मावरणथी सर्व रुद्धि तिरोभावेछे-आत्मा अज्ञछे अविनाशीछे. अनादि अनंत, अक्षय, अक्षर, अनक्षर, अचल, अटल, अमल, अगम्य, अरूपी, अकर्मा, अवंधक, अनुद्य, अनुद्गीक, अयोगी, अभोगी, अरोगी, अभेदी, अवेदी, अछेदी, अलेपी, अखेदी, अकपाइ, अलेशी, अशरीरी, अणाहारी, अन्यावाध, अनवगाही, अगुरूछघुपरिणामी, अप्राणी, अयोनि, असंसारी, अमर, अपर, अपरंपर, ज्ञानगुणापे-क्षाए व्यापक अनाश्रित, अकंप, अनाश्रव, अशोकी, असंगी अनाहारी लोकालोक ज्ञायक, अनंन मुख्यमय, आदि गुणोथी विराजमान प्रत्येक शरीरमां रहेला आत्माओ छे. किंतु कर्मनायोगे सर्व रुद्धि ढंकाणी छे, आ शरीरमां पण कर्मथी वंधाएल हे आत्मातुंछे. जेवा सिद्ध भगवान् छे तेवो तुं छे एम सम्यण् अर्थ ग्रही भयत्र करायतो मु-क्तिपद पामी शकाय. पण सम्यग्ज्ञान विना संसारी जीवो मोहमा-यामां मस्तान थइ संसारमां परिश्रमण करेछे. माटे सत्य तत्त्वनी माप्ति करबी. एज मोलमार्ग जाणनो. श्री सर्वत मगुए धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय, जीव द्रव्य अने काळ आ पड्ड्च्य कथन क्यांछे. केवलज्ञानमां जेवं जाण्यं तथा केवल दर्शनमां जेवं सामान्योपयोगथी देख्यं. ते प्रमाणे पदा-थीतुं प्रतिपादन कर्युंछे. तेतुं ज्ञान थवाथी सत्य आत्मतत्त्वनी प्राप्ति थायछे. मिथ्याज्ञानथी मिथ्यात्वनी दृद्धि थायछे.-यत उक्तं

श्लोक.

निमध्यात्वसमः शतुः निमध्यात्वसमंविषं ॥ निमध्यात्वसमोरोगोः, निमध्यात्वसमंतमः ॥ १ ॥ द्विषद्विषतमो रोगैः, ईःखमेकत्र दीयते ॥ मिध्यात्वेन दुरंतेनः, जंतोर्जन्मनिजन्मनि ॥ २ ॥ वरं ज्वालाकुले क्षिप्तोः, देहिनात्मा हुताशने ॥ नतु मिध्यात्वसंयुक्तं, जीवितव्यं कदावन ॥ ३ ॥

मिध्यात्व समान कोइ शत्रु नथी. कारणके मनुष्यरूप शत्रुओ बाह्यरिद्ध वा वाह्यपाणनो नाश करेछे. अने मिध्यात्वरूप शत्रु तो आत्मानी अनंतिरूढिनो नाश करेछे. अने मिध्यात्व समान कोइ मोढं विष नथी. अने मिध्यात्व समान कोइ रोग नथी. अने पिध्यात्व मर्खु ते सारू किंतु मिध्यात्व पणाथी जीव वुं सारू नथी. वळी उपरना वीजा श्लोकमां जणाव्युं के—शत्रु विपरोग तथी तो एकवार दुः ल पमायछे अने दुः ले करी जेनो नाश थायछे एवा मिध्यात्वथी तो भवोभव दुः लनी परंपरा भाप्त थायछे, माटे सम्यग् झानशी प्राप्ति माटे प्रयत्न करवो, श्रीवीरमञ्जूण जीवो अनादिकाळनाछे एम केवळ- झानथी जाणी मरूपणा करीछे ते सत्य मानवी. श्रद्धा करवी.

## ९ नवमविषय.

## आत्मा निर्मलपद (मोक्ष) द्यार्थी पामे;

ज्ञान दर्शन चारित्राणि मोत्रमार्गः ज्ञान दर्शन अने चारित्र मोत्रनो मार्गछे. श्रीतचार्थस्त्रमां ज्ञान दर्शन चारित्रतुं विशेषतः मितपादन कर्युछे. त्यांथी जिज्ञास्रजनोए तेतुं स्वरूप गुरुगमद्वारा धारवुं. अत्र ए त्रणनो विशेष विस्तार करवाथी ग्रंथ गौरवता दृद्धि पामे माटे कर्यो नथी. पूर्वे ज्ञानतुं सामान्यतः वर्णन कर्युछे. दर्शनतुं पण वर्णन कर्युछे. चारित्रतुं पण सामान्य स्वरूप आगळ कहेवाशे. अष्टकर्पना समूहनो जे नाश करे तेने चारित्र कहेछे. चारित्रना वे मकारछे. व्यवहार चारित्र द्वितीय निश्रय चारित्र तेमां व्यवहार चारित्रना वे भेदछे. १ देशविरतिरूप-द्वितीय सई विरतिरूप.

तेमां श्रावकनां वारवत अंगीकार करवां. तथा तेनुं पालन करवुं तेने देशविरित चारित्र कहेछे.

सर्वथी पंचमहावतनो शाख्राज्ञापूर्वक स्वीकार करवो अने चीनराग आज्ञा प्रमाणे वर्तन करवुं तेने सर्वथी चारित्र कहेछे-सर्व विरितिरूप भागवती टीक्षाथी कर्मनो नाश थायछे-शाख्रोमां टीक्षातुं वहु माहात्म्यछे कहुं के ने-नथाच

श्रोक.

सर्वेषामिष पाषानां, प्रव्रज्या शुद्धिकारिका ॥ जिनोदिता तनः सेव, कर्तव्या शुद्धिमिच्छता ॥१॥ ददित ब्राह्मगादिभ्य, एके पाष विशुद्धये ॥ गोदानं स्वर्गदानंत्र, सृसिद्दानान्यनेकथा ॥ २॥

आत्मश्रुद्धवर्षमेवान्ये, कारयंति वतानिष ॥ जुह्रसभी पश्रंस्तत्र, अश्वादीश्च सद्ध्रशः ॥ ३॥ अमेध्यभुग् गवामेके, पृष्ठमागं स्पृशंतिच ॥ गवां मुत्रं पिवंत्यन्ये, अन्ये पंचगवं तथा ॥ ४ ॥ शुद्धयर्थं स्नांति तीर्थेषु, प्रविशंत्यन्ये हुताशने ॥ तथापि नेवशुध्यंति, विनादीक्षां जिनोदितां ॥५॥ ाकिंच शोचं विनाशुद्धिं, जीयते न कदाचन ॥ सत्त्वाहिंसीदिकं तच, यतः प्राहुमनीपिणः ॥ ६॥ सर्वजीवद्याशीचं, शौचं सत्यप्रभाषणं ॥ अचौर्य ब्रह्मचर्यच, शौचं संतोष एवच ॥ ७॥ क्पायनिग्रहः शोचं, शोचमिंद्रियानिग्रहः ॥ प्रमादवर्जनं शौचं, ध्यानं शौचं तथोत्तमं ॥ ८॥ दुष्टयोगजयः शौचं, शौचं वरविवेकिता ॥ ्तपो द्वादशधाचैवं, शौचमाहुर्मनीषणः ॥ ९॥ सर्वज्ञाक्तदीक्षायां, एतत् सर्वदयादिकं ॥ शौचं संपूर्ण मेवास्ति, सदांतरात्मशुद्धिकृत्।।१०।। भावार्थ-सर्व पापोनी शुद्धिकारिका दीक्षाछे. माटे जिनेश्वरे ुक्षेली दीक्षा आत्मशुद्धि इच्छनारे अंगीकार करवी. दीक्षा अंगीकार

के चित् जीवो ब्राह्मण विगेरेने स्वर्णदान गोदान भूमीदान वि-गेरे आपेछे अने केटलाक आत्मानी शुद्धिने माटे ब्रतो करेछे अने

करवाथी सर्वथा पकारे कर्मनो नाश थायछे.

करावेछे. अने होममां पशुओने होमेछे. वे.टलाक आत्मकल्याण माटे गायनुं अमेध्य भक्षण करेछे, तथा तेना पृष्ट भागने स्पर्शेछे अने वली गायनुं मृत्र पीवेछे, तथा पंचगंवनुं भक्षण करेछे. वे.टलाक आत्मशुद्धि माटे गंगा यमुना आदि तीर्थोमां स्नान करेछे. वे.टलाक अप्रिमां पवेश करेछे, तोपण ते अज्ञानपणाथी आत्मशुद्धि माप्त करता नथी. पण ज्यारे वीतराग सर्वज्ञे कथेली भागवती दीक्षा अंगीकार करवामां आवेछे त्यारे आत्मा निर्मल थाय छे.

वळी ते भागवतीदीक्षामां शौचिवना शुद्धि थती नथी. हवे ते शौच दर्शावेछे. सर्वजीवदयाशौचं-सर्व जीवोनी दया करवी तेने शौच कहेछे. दया विना धर्म होतो नथी. अहिंसा परमोधर्मः अहिंसा मोटो धर्मछे. अने शास्त्रमां पण कहुंछे के-

नय तिहुअणेवि पावं, अत्रं पाणाइवायओ गरूयं ॥ जं सव्वविय जीवा, सहिसिणो दुरकभीरूय ॥ १ ॥ त्रणलोकमां हिंसा करतां मोद्धं कोइ पाप नथी. सर्वे जीव सुख इच्छेळे. अने दुःख्यी वीवेळे.

श्लोक.

नसादीक्षा नसाभीक्षा, नतद् दानं नतत्तपः ॥ नतत् नतत् नतत् नतत्वानं नतद्ध्यानं, दयायत्र न विद्यते ॥ १ ॥ भावार्थ-एवी कोइ दीक्षा, भिष्मा, दान, नप के ध्यान नथी के-जेमां द्या नहीं होय.

श्होक.

अहिंसेव मता मुख्या, स्वर्गमोक्ष प्रसायनी ॥ अस्याः संरक्षणार्थेच, न्याय्यं सत्यादिपालनं रंग् /

स्वर्ग अने मोक्ष आपनारी दयाज ( अहिंसा ) दयाज मुख्य-पणे मनायलीके. अने एने राखवा माटेज सत्यादिकनुं पालन व्याजवी गणायके. वळी आचारांग सूत्रमां कहुं के ने तथाच पाटः

सेवेमि जेअइया जेय पहुपना जे आगमिस्सा अरहंता भग-वंतो ते सब्वे एव माइख्खंति, एवंभासंति, एवंपन्नवंति, एवंपरूवंति, सब्वेपाणा, सब्वेभूया, सब्वेजीवा, सब्वेसता, नहंतब्बा, नअज्ञावेय-ब्बा, नपरितावेयब्बा, नउहवेयब्बा, एमयम्मे सुद्रे निइए सामए समिचलोयं खेयन्नेहिं पवेइयं.

### आचारांगस्त्र भावार्थ

हुं कहुं छुं के जे तीर्थिकर भगवान थड़ गया अने जे हाल वर्ते छे, अने जे आवता कालमां थशे ते सर्व आ रीते कहे छे जणावे छे तथा वर्णवे छे के सर्वभाण, सर्वभूत, सर्वजीव, अने सर्व सत्त्वने हणवा निह, तेमना उपर हकुमत चलाववी निह. तेमने क-वजे करवा निह, तेओने मारी नाखवा निह, अने तेओने हेरान करवा निह, आवो पवित्र अने नित्य धर्म लोकोना दुःखने जाणनार भगवाने वताव्यो छे.

अने वळी कहां छे के.-

जयंचरे जयंचिठे, जयमासे जयंसए ॥

जयं भुजंतो भासंतो, पावं कम्मं न बंधइ ॥ १॥

श्री शय्यंशमस्रि कहेछे के यतनाथी चालवुं, जीवनी दया सचवाय तेम उभा रहेवुं, यतनाथी वेसवुं, अने यतनाथी स्रुं, अने यतनाथी वोजवुं, एम करतां पाप कर्म वंधाशे निह, वळो कगुंछे के-

गाथा-

मल मइल पंक मइला. धूली मइला न ते नरा मइला

जे पावपंक मइला, ते मइला जीवलोयांमि ॥ १ ॥ खणिमत्तं सलिलेहिं, सरीरदेसस्स शुक्किजणगंजं कामंगंति निसिद्धं, महिसिणंतं नणु सिणाणं ॥२॥

भावाथी=मलथी मेला, कादवथी मेला थएला, अने धूलथी मेला थएला माणसो मेला निह गणाय. पण जे पापरूप वंकथी मेला थएल होय ते जीवो आ लोकमां मेला जाणवा—

वळी स्नानमां जलवहे क्षणभर शरीरना वहिर्भागनी शुद्धि थायछे, अने जे जल स्नान कामनुं अंग गणायछे ते जलथी मह-पियोने स्नान करवानो निषेधछे—

उक्तंच श्लोक.

स्नानं मदद्र्पकरं, कामांगं प्रथमं स्मृतं ॥ तस्मात् कामं परित्यज्य, नैव स्नांति दमे रताः १

स्नान ए मट अने विषयाभिलापनुं कारण होवाथी कामनुं पर् हेलुं अंग गणायले. माटे कामने त्याग करनार अमे इंद्रियोने दमवा तत्मर धएला यतिजनो वीलक्कल स्नान नथी करता. केटलाक लोको समज्या विना एम वोले छे के जैनना मुनियो स्नान करता नथी. तेमने कहेवानुं के जैनना साधु शास्त्राज्ञा मुजब वर्षे छे तथी विषया-भिलापजनक स्नाननुं तेमने कंड मयोजन नथी. ब्रह्मचारो सदामुचिः ब्रह्मचारी पुरुष सदा पवित्र छे. तेने दानण स्नाननी कंड जरूर नथी वली श्रीकृष्ण, पांड पुत्रने नीचे मुजब उपदेश आपे छे.

श्रोक.

आत्मानदी संयमतोयपूर्णी, सत्यावहा शीलतटा द्योमिः तत्रामिपेकं कुरु पांडुपुत्र, नवारिणा शुद्ध यति त्रांतरात्मार भावार्थ-आत्मारूपी नदी छे तेमां संयमरूपी पाणीपरिपूर्ण भरे-ल छे, त्यां सत्यरूप शील रूप तेना तट्छे, त्यां दयारूप तरंगो छे माटे हे पांडुपुत्र तेमां स्नान कर. कारण के शरीरनी अंदर रहेलो अरूपी आत्मा कंइ पाणीथी शुद्ध थतो नथी हवे त्यारे पवित्र कोण कहेवाय ते जणावे छे.

#### गाथा.

अखंडिय वयनियमा, गुत्ता गुत्तिंदिया जियकसायाः अइशुद्ध बंभचेरा, सुइणो इसिणो सयानेया

भावार्थ-अंगीकार करेलां व्रत अने नियमने अखंडित राख-नारा अने जेणे पोतानी इन्द्रियो वश करी छे तथा वळी क्रोध, मान, माया, लोभ, ए चार कषायोने जीतनारा तथा निर्मल ब्रह्मचर्य पाळ-नार मुनियो (ऋषियो) सदा पवित्र जाणवा.

तथा वळी कहुं छे के ---

श्लोक.

नोदकक्किन्नगात्रोऽपि, स्नात इत्यभिधीयतेः स स्नातो योदमस्नातः स वाह्याभ्यंतरः शुचिः १

भावार्थ-पाणीथी भींजायल शरीरवालो कंइ न्हाएलो निह कहेवाय. किंतु जे पोतानी पांच इंद्रियोनो वश करनारो घइ अभ्यं-तर अने वाह्यथी पवित्र होय तेज न्हाएलो कहेवाय. वली कहुंछेके-

श्लोक.

नित्तमंतर्गतं दुष्टं, तीर्थस्नानैर्न शुद्धचितः शतशोऽपिजलैधेतिः, सुराभांडमिवाशुचिः

भावार्थ-अंतरनुं दुष्ट चित्त कंइ तीर्थ स्नानधी शुद्ध थतुं नथी केमके मदिरानुं वासण सेंकडो पाणीथी घोइए तोपण ते अपवित्र ज रहेके. माटे सारांश के-जलधी मात्र स्नान कर्याधी पवित्रता माप्त थती नथी. परंतु द्यारूप शौचथी पवित्रपणुं माप्त थायछे. माटे दीक्षा अंगीकार करी प्रथम अहिंसा त्रतनुं पालन करवुं जो-इए. कोइ पण जीवनी हिंसा करवी नहि मुनिने वीस वशानी द्या होयछे. अने आवकने सवावशानी द्या होयछे. मांसतुं भक्षण करनार, मांस वेचनार, जीवो, पापी जाणवा संसारनो त्याग करनारा मुनी वरो अहिंसा त्रतनुं पालन करी शिव पाम्या अने पामशे. जीवनी हिंसा करवाथी थएल दारुण दुःख यशोधर चरि-त्रथी जाणबुं. हवे दीक्षा अंगीकार करी वीजुं सत्य वोलबुं, मृपा-वाद एटळे जुठुं करी बोलवुं नहिं. तदूप सत्यवतनुं परिपालन क-रवुं. त्रीजुं महात्रत अंगीकार करी कोइनी नजीवी वस्तु पण कहा विना छेवी नहीं. पोतानी वा पारकी सर्व स्त्री वर्गनो त्याग करवो. मनमां पण भोग भोगववानी इच्छा करवी नहीं. स्त्रीना साम्रं स-राग दृष्टिथी जोवुं नहि. नव पकारे ब्रह्मचर्य व्रतनी गुप्ति पाळवी अने मेथुननो सर्वथा त्याग करवो तेने चोथुं ब्रह्मचर्यव्रत कहेछे. सर्व त्रतो नदीओ समान छे अने ब्रह्मचर्यत्रत समुद्र समानछे, ब्र-हमचारी पुरुपोनी कीर्ति वधेछे. ज्यां जायछे त्यां तेने मान मळेछे. देवताओ पण ब्रह्मचारी पुरुपोने साहाय्य करेंछे. मंत्रनी सिद्धि पण शीलवत पाळनारने तुरत फळेळे. देवताओ, यक्षो, राक्षसो पण ब्रह्मचारी मुनिने नगस्कार करेछे. ब्रह्मचारी मुनीश्वरने बचन सिद्धि संगप्त थावछे, ब्रह्मचारी पुरूपनो संकल्प सिद्ध थायछे. कोइ मनुष्य गुवर्णनां मोटां देशसर करात्रे अने कोइ ब्रह्मचर्यव्रत अंगीकार करे तो पण ब्रह्मचारी शुरूपनी वरोवर सुवर्णनां देशसर

करावनारने फल थतुं नथी। चारित्रनुं मूळ ब्रह्मचर्यव्रतछे ज्यां ब्रह्मचर्यवत नथी त्यां चारित्रनी शुद्धि क्यांथी अथीत् ब्रह्मचर्यविना चारित्र नथी. ग्रहस्थ पुरूष पण पोतानी स्त्री विना अन्य स्त्रीनो त्याग करेके. ब्रह्मचर्यमां घणा गुण समायाक्रे, सुदर्शनशेठने श्की पण सिंहासनरूपे थइ तेमां ब्रह्मचर्यनुं माहात्स्य जाणनुं. नवनारद ब्रह्मचर्यना प्रतापथी सत्य सुखलीला पाम्याः वली पारकी स्त्रीना उपर राग करनार रावणने छक्ष्मणे मार्यो, अने रावण मरीनरकमां गयो. अने सीता संतीनो यश जगत्मां गवायो. विषय छंपटी जीवो सदाकाल आकुल, व्याकुल दुःखी रहेके. लंपटी जीवो आ भवमां पण दुःख पामेछे. अने परभवमां पण दुःख पामेछे. छंपटी जीवोनी जगत्मां अपकीर्तिथायछे अने विषयछंपटी जीवो पकडाय छे तो सरकार तेनो मोटो दंड करेछे. अने जगत्मां तेनुं अपमान थायछे. विषय लंपटी जींबो एवा तो आंधळा होयछे के-तेमने धर्म वा अधर्मनी समजण पडती नथी. माटे भव्य जीवोए ब्रह्मच-र्यत्रततुं सम्यक् परिपालन करवं. वारंवार मनुष्य जन्म मळनार नथी. स्तीतुं शरीर सात धातुथी भरेछंछे तेना गरीरमां लोही मांस, हाडकां, भेद, मन्जा, मूत्र, विष्टा भरेलीछे, नाकमांथी लींट वह्या करेछे. आंखमां पीयाना थोक वानेछे. केनमां जुओ, लीखो-ना समूह पड्या करेछे. शरीरद्वारोधी अशुचि वहा करेछे. वळी जुवान अवस्था उतर्या वाद रहावस्था थायछे. त्यारे शरीर खराव लागेले. शरीरनो रंग उत्री जायले. अलवत तेना साम्रं पण जोवानुं मन यतुं नथी एवी खीना शरीरमां शो सारछे के तेना उपर राग थाय. वळी ही जाति कपटथी भरेलीछे. भतु-हरि जेवा राजाने मूकी तेनी राणी चाकरनी साथे संवंधवाळी थइ हती. ते वात ज्यारे भर्तुहरिराजाए जाणी त्यारे मनमां घणो

खेद थयो अने विचारवा लाग्यो के–अहो जे पिंगलाने हुं पटराणी तरीके मानतो इतो अने जे मारी पाणामिया इती. अने हुं जेना उपर पूर्ण विश्वास राखनो हतो ते पिंगलाराणी पण अंते मारी थइ नहि. अने तेणीए कामना आवेशथी नीचनी साथे संवंध कर्यो माटे तेने धिकार थाओ. अहो जगत्ना जीवो कामावेशथी पुण्य पाप गणता नथी. एवा कामने पण धिकार पड़ो अने आ संसा-रमां हुं जेने सारभूत मानतो हतो एवी पिंगळा पण मारी थइ नहि. अहो ज्ञानीओए संसारने असार कहाछि तेमां जरा मात्रपण असत्य नथी. एव चिंतवी तापसी दीक्षा अंगीकार करी पर्वतनी ग्रकामां चारुयो गयो, अने तेमणे भर्त्वहरि शतकनी रचना करी. माटे सं रारमां सारभूत धर्म विना अन्य कशुं जणातुं नथी. माटे भन्यजीवोए पण सांसारिक मोहमायाथी दृर रही आत्मिक धर्मा-राधनमां तत्पर थइ धर्माराधन करचुं, अने स्वीविपयाभिलापनो त्याग करवो. शास्त्रमां विषयने विषनी उपमा आपीछे त्यारे वळी एक महात्मा कहे छे के, विषयने विषनी उपमा आपवी ते योग्य नथी. कारण के, विप तो एक भवमां भक्षतां प्राण हरी दुःख आपेंछ अने विषयो तो अनेक भव पर्यंत परिभ्रमण करावी दुःख आंपछे. माटे विषना करतां पण गोटी उपमा आपवी जोइए. विष-यथी थतुं सुख स्वमसुख समान मिथ्या कल्पना मात्रछे.

नथाच श्लोक.

स्वप्ने दृष्टं यथापुंसः क्षणमात्रं खेलायते । प्रबुद्धस्य नतत् किंचित् एवं विषयजं खुलं. १

स्वममां देखेलो पदार्घ पुरुपने क्षणमात्र सुख आपेडे अने ज्यारे ते मनुष्य जागेछे त्यारे फंडपण देखानुं नयी ए ममाणे विप- पतुं सुख क्षणमात्र आभास मात्रछे अते वस्तुतः विचारतां कंइ सुख नथी वळी विषयी पुरूषोनी केवी स्थिति थायछे ते जणावेछे.

श्लोक.

विषयेषु विषीदंतो, न पश्यंति हिताहितं शृण्वंति न हितं वाक्यं, अंध विधरसंनिभाः

विषयोमां विषाद पामेला जीवो हित वा अहितने देखता नथी. तेम वली हितवाक्य कोइ कहे तो ते सांभळता नथी. खरे खरविषयलालचु जीवो अंध अने वहेरा सरखाले. अने वली कहेलेके,

श्लोक.

विषयेषु रतोजीवः, कर्म बध्नाति दारुणं तेनासो क्वेशमाप्ताति, आम्यन् भीमे भवोदरे २ विषयोगां आसक्त थएल जीव दारूण कर्म वांधेछे अने तेथी ते जीवो भयंकर संसारमां परिभ्रमण करतो क्वेश पामेछे। वळी विषयमां मोह पामेला जीवो शुं करेछे ते कहेछे.

श्लोक.

अहो मोइस्य माइात्म्यं, विद्वांसोऽिपयतो नराः सुद्यंति धर्मकृत्येषु. रताः कामार्थयोर्द्दं

अहो मोहनुं प्रावल्य केवुं छे के जे विद्वान मनुष्यो पण काम अने अर्थमां आसक्त थया छता धर्मकृत्यमां मुंझायछे. आवुं मोहनुं जोर तोडी श्रीजंबुकुमार कोटी धन, स्त्री, परिवारनो त्याग करी दीक्षा अंगीकार करी. तेमज धन्नाकुमार तथा बाळीभद्रे मोहनो नाग कर्यो. श्री स्थुलीभद्र के जे पाटलीपुरमां शकटाल मंत्रीना पुत्र हता अने जे वार वर्ष वेज्याना घर रहा हता. तेमणे स्नीनो त्याग करी दीक्षा अंगीकार करी. अने वेज्याने ग्रेह चातुमीस कर्युं, त्यां वेज्याए पोतानुं श्रश्त देखाय अने विषयाभिलाप थाय तेम नाच कर्यों, कामोत्पादक अनेक प्रकारनां गायनो गायां. तो पण मुनिवर्यश्री स्थुलीभद्र जरा चलायमान थया नहीं अने विषयमां रागी एवी वेज्याने पण वैरागी वनावी. अने ते वेज्याने श्रान्यकां वार व्रत उच्चराव्यां. अहो आश्रियंनी वात छे के, कामनों नाश करवा महामुनियों पर्वतनी गुफाओमां तथा एकांत जग्याओं मां गया, केमके त्यां काम आबी शके नहि माठे. त्यारे स्थुलिभद्र मुनिवर तो कामना गृहमां मवेशी कामनो नाश कर्यों. अहो केटलुं नेमनुं सामर्थ्य ? एवी रीते भव्यजीवोए उत्तम चरित्र श्रवण करी विषय, काम, मोहनो नाश करवों. अने ते मित जरा मात्र पण इच्छा करवी नहीं अने मन, वचन, कायायी शुद्ध ब्रह्मचर्य व्रत पालवुं.

हवे पांचमुं सर्वतः परिग्रह परिमाण विरमण त्रत कहे छे. श्री
मिन्यर महाराजा धनधान्यादिक नव विध परिग्रहनो त्याग करे
छे, कारण के विकल्प संकल्पनुं कारण परिग्रह छे. परिग्रह थी कोध,
मान, माया, लोभनी उप्तित्ति थाय छे. जेम वहाण अतिशय भारथी
समुद्रमां बुडे छे परिग्रहनी दृद्धिथी राग हेपनी दृद्धि थाय छे. परिग्रहथी दुनीयामां मनुष्य एट ली वधी गुंचवणमां आवी पडे छे के
तेने जरामात्र पण शांति मळती नधी. वळी धनधान्यादिक नी दृद्धिः
थी मोटाइ वधे छे. मनमां मान आवे छे. वळी अदेखाइ पण
मगट थाय छे. वळी परिग्रहनी प्राप्तिना कारण थी माणातिपात, असत्य, चोरी, आदि पापस्थान को नुं सेवन करी कर्मार्जन करी जीव
अधोगातिमां अवतरी त्यां छे दन मेटन ताइन तर्जन शोक, वियोग
क्षत्रा, तुरा. आदि विविध दुःग्वो भोगवे छे. वळी परिग्रह थी अहानी जीव धर्म मान करी जित्रतो नथी परिग्रह मेळवनामां के वळ

दुःखज समायुंछे. वळी परिग्रह धन उपर ममता भाव राखी मनु-ष्य मरण पामी सर्प, उंदर, गीरोलीना अवतार पामेले. वळी परि-ग्रहनी ममताथी मातिपता भाइ परस्पर लडी मरेले. वली परिग्रह ्धनरूप दृद्धि पामेछे त्यारे तेने साचववानी पण चिंता रहेछे। रखेने चोर विगेरे छइ जाय एवी चिंता तेना मनमां रहेवाथी सुखे करी उंघपण आवती नथी, परिग्रहथी आरंभ, समारंभ करी कर्मीपार्जन जीव करेछे. परिग्रहधारी खरेखर जडवस्तुने पोतानी मानी छेतरायछे. माटे वैरागी आत्मार्थी जीवो परिग्रहनो त्याग करी दीक्षा ग्रही पंचमहात्रत अंगीकार करेछे. अने पुत्र स्त्री मातिपता विगेरे संसारी कुंडुंवनो संवंध छोडेछे अने स्वस्थ चित्ते हुं एकलो छुं. आत्माथी अन्य मारू नथी अने हुं कोइनो नथी एम अदीन मना थइ आत्माने शिखामण आपेछे. सद्गुरूने धारण करेछे. संयमनी रक्षा अर्थे वस्त, पात्र, पुस्तक, रजोहरण, मुखविस्तका, धारण करेछे. संयमनां उपकरण राखवाथी परिग्रह कहेवातो नथी कहुंछे के मुच्छापरिग्गहोबुत्तो, नायपुत्तेण ताइणाः

श्री ज्ञानपुत्र वीरप्रश्रुए मूच्छीने परिग्रह ग्रह्मोछे माटे हट कदाग्रह करवो नहीं. एम ग्रुनीश्वर परिग्रहनो त्याग करी निर्विकल्प
मन करी आत्मज्ञानमां मग्न रहेछे, अने ग्रुनिश्वर विचार के आ
वाह्य परिग्रह त्यागी ग्रुनि आत्मानी रूद्धि तरफ लक्ष आपी जुवेछे
तो त्यां अनंतज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत चारित्र, आदि रूद्धि भरेली
छे अने ते रूद्धि अविनाशीछे. पोतानाधी कदी जुदी पडवानी
नथी अने ए रूध्धि प्राप्त थवाथी सहज शांति अनुभवायछे, एम
आत्मा ए जाण्युं त्यारे आ वाह्य जड रूध्धिरूप परिग्रहनो त्याग
कर्यो. अने आत्मिक रूध्धि मेळववा प्रयत्न करवा लाग्या, ध्यानादिक्तनो अभ्यास करवा लाग्या, ए पांचमुं परिग्रह विरमणत्रत दी-

क्षा अंगीकार करी मुनिवर्यो मनवचन अने कायाथी परिग्रह धा-रण करवो नहीं परिग्रह धारण कराववो नहीं. अने परिग्रह धारण करता होय तेनी अनुमोदना करवी नहीं.

छद्धं रात्रीभोजन विरमणवत कहे छे. रात्रीना समयमां मुनीवर अज्ञनपान, खादिम अने स्वादिम ए चार प्रकारना आहा-रनो त्याग करेछे. श्रीवीरप्रभुए रात्रीभोजनमां महा कथ्योछे, माटे आत्मार्थी जीव रात्रीभोजन करे नहि. योग शास्त्र, वर्धमान देशना, आदि ग्रंथोमां तथा सूत्रोमां रात्रीभोजन करवाथी महादोप वताच्याछे. वळी अन्य दर्शनीओना शास्त्रमां पण रात्रीमोजन करवाथी दोप वताव्याछे. माटे मुनिवर्यो दीक्षा ग्रही रात्रीभोजननो त्याग करेछे. ए रीते पंच महाव्रत अने छठुं रात्रीभोजन विरमणत्रतनुं अत्रतो संक्षेपथी स्वरूप प्रसंगोपात देखाइयुं. आ प्रमाणे मूल व्रत अंगीकार करे, अने चरण सित्तरी करण सित्तरीरूप उत्तर भेदनुं आराधन निर्मेध मुनिवर्य करे. श्रीसिद्धसेन दिवाकरसूरिकृत भवचन सारोद्धारमां चारित्रना मूळ भेद उत्तरभेदनुं तथा चारित्रना उपकरणोनुं विशेषतः वर्णन कर्युछे त्यांथी जिज्ञासुए विशेष अधिकार जाणवो. इवे दीक्षा अंगीकार करी कपायना निग्रहरूप गौच मुनीश्वर धारण करेछे. क्षमाधी क्रोधनो पराजय करेछे. अने नम्रताभावधी माननो पराजय करेछे अने सरलताथी मायानो नाश करेछे. अने संतोपथी लोभनो नाश करेले. वली पांच इंद्रियोना विषयो जीतवारूप शौच मुनी-भर धारण करेछे. प्रमादनो त्याग करवो ते रूपशौचन दीक्षा अंगीकार करी धारण करेंछे.प्रमाद्धकी चौद पूर्वी पण संसारमां पड्या माटे आलस्य, निदा, विकथा, पारकी निदा आदि प्रमादनी नाश करी मुनीश्वर अमगत्तपणे रहेछे. वळी मुनीश्वर ध्यानरूप शीच जे

सर्व शौचोमां उत्तमछे तेने धारण करेछे. धर्मध्यान अने शुक्रध्यान ए वे ध्यान आत्मकल्याणकारी छे. तेमां शुक्रध्यान मित प्रदाता छे. मन वचन अने कायाना दुष्ट योगनो जय करवो तेने शौच कहे छे वळी हेय, श्रेय अने उपादेयनो विवेक तेने उत्तम विवेक कहे छे. ते शौचने दीक्षा अंगीकार करी मितवर्यो धारण करे छे. वार प्रकारे तप करवो ते पण शौच जाणवो, श्री सर्वश्च कथित दीक्षामां द्यादिक सर्व कृत्य शौचरूप शरीरनी अंदर रहे छा आत्मानी शुद्धि करनार छे. निश्चय चारित्र आत्मस्वभावमय छे एट छे आत्माथी भिन्न नथी ते चारित्रनी प्राप्ति माटे व्यवहाँ चारित्रकारणी भूत छे.

आ संसारमां केटलाक जीवो धर्मनुं नाम पण जाणता नथी अने तद्मुकूल प्रयत्न पण करता नथी. संसारमां मोटा कहेवाणा एटले पोताने धन्य मानेछे. पण पोते जीवादिक तत्त्व जाणता नथी अने सांस।रिक कार्योमां अहर्निज्ञ ग्रंथाया रहेछे, पण धर्मा-राधन परायण थता नथी. धर्मनुं आराधन करी आत्माने कर्मवं-धनथी छोडाववो एज उत्तम पुरूषोतुं लक्षण छे. वाकी धन, पुत्र, लक्ष्मीनी दृष्धियी पोतानी दृष्धि मानी अहंभावमां वर्तवुं ते तो अधम पुरूपोनं लक्षणछे. श्री भरतराजा, राम, पांडवो विगेरेए अंते आ संसारने असार समजी आत्माहितमां मद्दत्ति करी नेम भव्य जीवोए पण अधुना सारमां सार दीक्षानुं अवलंबन करनुं जोइए. दीक्षा ग्रह्मा विना आश्रवमार्गनो रोध थनो नथी. आ सं-सारने ज्ञानी पुरूपोए वलता अग्नि समान कहाछे, वाजीगरनी वाजी जेवुं आ संसाम्नुं स्वरूप जाणी विवेकी मनुष्य चारित्रमार्ग ग्रहण करेहे. मारु मारु मानता एवा अनेक जीवो मायाना वश ज्ञानलक्ष्य सत्य आत्मस्वरूप भूली यमराज वज्ञ थया अने थायहे. जेम समुद्रमां पाणीना अनेक तरंगो उत्पन्न थायछे अने पश्चात् विलय

पामेछे तेनी पेठे अनादिकालधी आसंसारसमुद्रमां देव मनुष्य तिर्यचः अने नारकीतरंगे करी जीव अनेकशः शरीर छोडतो अने अनेकशः शरीर धारण करतो वर्तेछे. पण अज्ञान दशाधी पामर जीवनी मुनित थइ नहीं. पण ज्यारे आत्मानुं स्वरूप जाणवामां आवेछे त्यारे आत्मा संयमपार्गयोगे धर्मना आविर्माव अर्थे पयत्न करेछे, ज्यारे चारित्रमोहनीय प्रकृतिनो क्षय थायछे त्यारे चारित्र आत्मामां मगटे छे. कोइ जीव चारित्र मोहनीयने उपश्चमावेछे. कोइ चारित्र मोहनीयने शे श्रयोपश्चम करेछे. कोइ जीव शायिकसमिकतयोगे आठमा गुणटाणाथी क्षपकश्चेणि आरोहण करी चारित्र मोहनीयनो क्षायिक भाव करेछे. कोइ जीव उपश्चम श्रेणि चढी चारित्र मोहनीयकर्पनी प्रकृतिने अगीयारमा गुणटाणे उपश्चमावेछे अने त्यांथी पाछा पडे छे. अने यावत् मिथ्यात्व गुणटाणा गुधी आवेछे.

कोइ उपशम समिकत पामी आठमागुणटाणाथी उपशमश्रेणिए चढेछे अने कोइ क्षायिक समिकत पामी आठमा गुणटाणाथी उपशम श्रेणि चढी अगीयारमे गुणटाणे जइ मरे तो अनुत्तर विमान्तमां जायछे. अने कोइ उतरता गुणटाणे पण मरण पामेछे. अनं सानुवंधी क्रोध, मान, माया अने लोभ तेमज समिकत मोहनीय अने मिश्रमोहनीय अने मिथ्यालमोहनीयनो क्षायिकभाव कर्या पूर्वे आवता भवनुं आयु वांधी पाछळ्यी क्षायिक समिकत पाम्यो होय ते जीवने वहायुक्षायिक समिकत जाणनुं. आयुष्य वंधनी अपेक्षाए आनुं क्षायिक समिकत कर्णुं हे, तत्त्ववान बहुश्रुतवा केवळी जाणे. ते अथुद्ध क्षायिक समिकत कर्णुं हे, तत्त्ववान बहुश्रुतवा केवळी जाणे. ते अथुद्ध क्षायिक समिकती जीव उपशम श्रेणि करे एम कहेच वायछे. क्षायिक समिकत जीव दशमा गुणटाणे यथाक्यात चारित्र पामी वारमा गुणटाणे ज्ञानावरणीय,दर्शनावरणीय,अने अंतरायकर्मनो क्षायिकभाव करी अनंतज्ञान,अनंनटर्शन,अनंनवीर्यअने क्षायिकभावना

पंचलिय पामेछे. ते नीचे मुजव, अनंतदानलिय, अनंतलाभलिय, अनंतभोगलिय, अनंतरपभोगलिय अने अनंतवीर्यलिय संपाप्त थायछे. अंतरायकर्म क्षय थयुंछे एवा परमपरमेश्वर पुरुष सदा सुखी छे. मुख्यपणे तो ते लिययोनी माप्ति आत्मस्वभावेछे. केमके तेनी आत्मस्वभावे छे. केमके तेनी आत्मस्वभावे छे. केमके तेनी आत्मस्वभावे छे. केमके तेनी आत्मस्वभावे छे. अने जो अनंत सामर्थ्य आत्मामां अनादिथी शक्तिक्षे हतुं ते व्यक्तिक्षे थइ मकाशेछे, अने आत्माना अनंतगुणोनो आविर्भावतेक्ष्य दान, आत्मा पोते पोताने आप्युं ते दानलिय जाणवी. तेमज अनंत आत्म सामर्थ्यनी संमाप्तिमां किंचित् मात्र वियोगनुं कारण रहुं नथी. तेथी अनंतलाभ लिय कहेवायछे.

वळी अनंत आत्मसामर्थ्यनी संप्राप्ति संपूर्णपणे परमानंद स्वरूपे अनुभवायछे. तेमां किंचित् मात्रपणे वियोगनुं कारण रहुं नथी तेथी अनंतभोगलब्धि जाणवी.

तथा अनंत आत्म सामर्थ्य संपूर्णपणे परमानंद स्वरूपे समये समये परिणमेछे तोपण तेमां किंचित् मात्र पण वियोगनुं कारण रहुं नथी. तेथी अनंत उपभोगलिध कहेवा योग्यछे. तेमज अनंत आत्मसामर्थ्यनी माप्ति संपूर्णपणे थया छतां ते आत्मसामर्थ्यना योगयी आत्मशक्ति थाके के तेनुं सामर्थ्य न झीली शके, वहन न करी शके, एम छेज नहीं. सदाकाल ते सामर्थ्य तेमां जरा मात्र पण न्यूनाधिकपणुं थवानुं नथी. एवी जे वीर्य शक्ति त्रिकाल संपूर्णपणे वर्तेछे ते अनंतवीर्यलिध कहेवा योग्यछे.

क्षायिकभावनी दृष्टियी जातां उपर कहा ममाणे ते लिब्धनो परमपुरुषने उपयोग होयछे. वली ए पांचलिब्ध हेतु विशेषथी सम-जावा अर्थे जुदी पाडीछे नहीं तो अनंतवीर्यलिब्धमां पण ते पांचेनो समावेश थइ शकेछे. एम तेरमा गुणठाणे क्षायिकभावनी नवलिब्ध भोगवतो परमपुरुष शैलेशीकरण करी चउट्मा गुणठाणे अधा- तीकर्मनी ते गुणटाणे खवाववा योग्य जे मकृतियो वाकी रही रती ते चडदमा गुणटाणे खपावी सिद्धशिलानी उपर एक योजनना चो-वीश भाग करीए तेना त्रेवीस भाग नीचे मूंकी चोवीसमा भागे अवगाहनाए संयुक्त ते मोक्षस्थानमां आदिअनंतमे भांगे विराजमान थायछे, चारित्रथी पूर्वीक्त मोक्षस्थाननी माप्ति थायछे.

### अथ दुरामविषय.

### १० कर्मने। कर्ता तथा भोक्ता आत्मा, कर्मने। नाश शीरीते करे ?

अत्युत्तर-आत्मा स्वरूपमां रमग करे तो कर्मनो नाश थायछे,

परस्वभावमां रमण करतो आत्मा कर्म वांत्रेछे अने, स्वस्वभावमां रमण करतो कर्मनो नाश करेछे, अनंतजीवोए भूतकाळमां कर्मनो नाश कर्यो अने अनंतजीवो भविष्यकाळे करशे, जीव वे मकारनाछे. १ भन्यजीव २ अभन्यजीव.

जेनामां मोक्ष जवानी योग्यताछे तेने भन्यजीव कहेछे. अने जेनामां विलक्षल मोक्ष जवानी योग्यता नथी तेने अभव्यजीव कहेछे. अभव्य जीव कदी मोक्ष पामी शकतो नथी.

आत्मा कर्मनो नाश शी रीते करे तेनुं घणुंत्वहं विवेचन पूर्वे प्रायः कथ्युंछे तेथी अत्र स्थळे विशेष विवेचन कर्युं नथी. हवे वि-चारोके-मोक्षतन्त्र वंधविना संभवे नहीं. अने जेवढे वंध ते कर्ष एम आत्मा अने कर्मनो संवंध जेवो जिनद्र्शनमां घटेछे. तेवो अन्यत्र घटतो नथी. कर्मथी मुक्त आत्मा सिद्धस्थानमां सादि अनंतभंगीए रहे छे, त्यां परमात्मपणे समये समये अनंतमुखनो भोक्ता आत्मा वनेछे. कोइ द्र्शनी दु:खात्यंताभावरूप मुक्तिमानेछे पण तेम नथी. आत्माने कर्मनायोगे दु:ख थायछे. ते विभाविकछे

एटले विभाविक वस्तु स्वरूप जे दुःख ते आत्माथी दूर धायछे. अने आत्मामां भुखछे ते स्वभाविकछे. स्वभाविक वस्तु कदी टलती नथीः तेम आत्मामां जे सुखछे ते स्वभाविकछे एटले आत्मानो सुख शुंद्धगुणछे अने आत्मागुणीछे. माटे तेनाथी दूर थतो नथी. कोइ षादी जडस्वरूप मुक्ति मानेछे मुक्तदशामां आत्माने कोइपण वस्तुंनुं भान नथी. आम ते वादीनुं मानवुं छे ते अज्ञान विशिष्ठ हे. कारणके-जडस्बरूप मुक्ति होत तो कीइ मुक्ति पामवानी जरामात्र पण इच्छा करे नहीं. परंतु स्याद्वाद सत्यहिंटथी समजो के मुक्तिपद पामेलो आत्मा केवलज्ञानंथी दरेक पदार्थने जाणे हे. समस्त वस्तुनुं ज्ञान सिद्धारमामां समये समये पवर्ते छे, वळी सामान्य उपयोगरूप, केंवलदर्शनथी सिद्धात्मा सर्वजगत्ने देखेले. अने मुक्तात्मा अन्या-बाधगुणथी अनंत सुख भोगवे हे, माटे जडस्वरूप मुक्ति नथी. ज्ञान स्वरूप जे आत्मा ते जडरूप वनी जाय तो ते मुक्ति कहेवाय नहीं,-वळी आत्मा ज्ञानगुणथी भिन्न थाय नहिं. कारणके-आत्मानो स्व-भाविक ज्ञानगुण्छे. ते ज्ञानगुण आत्माथी त्रिकाले पण जुदो पढे नहीं.

वादी जो मुक्तिमां आत्माने ज्ञानगुणवाळो मानीए तो मुक्तात्मा ज्ञानथी सर्व जगत्जीवोने थतुं दुःख जाणे, त्यारे ते दुःख मुक्तात्माने थाय, माटे ज्ञानगुण मुक्तिमां मानवो अयुक्त है.

सुग्रह-हे सत्य तत्त्वाकांशी भव्य-जरा विचार करशो तो मालुम पडशे के-मुक्तात्माने अनंतज्ञानथी तेमां किंचित विरोध आवतो नथी. जेम दृष्टांत-कोइ मनुष्य कोइस्थाने पढेलुं तालपु-दृविष जाणे अने तेने देखे तेथी तेने कंइ दुःख थतुं नथी, तेम सिद्धपरमात्मा केवली भगवानने पण जगतना जोवोने इःखी जाणवाथी ते दुःख पोताने लागतुं नथी. तेम जगतना जीवोमां सातावेदनी जोराधीत शातावेदनीय कंइ सिद्धमन्तना आत्माने लागती नथी-कारणके वस्तुओ थकी पोतानो आत्मा न्यारोछे, तेथी ते विरोध सिद्धभगवान्मां घटतो नथी.

आरंका-सिद्धातमाओं अनंत मुख समये समये भोगवेछे ते केवल क्षानथी के, केवलदर्शन गुणथी-

समाधान-सिद्धातमाओ केवलज्ञानथी सर्व वस्तु जाणेछे अने केवलद्र्शनथी सर्व पडार्थीने देखेछे. अने सिद्धातमाओ सुख भोगवेछे ते अन्यावाध नामना गुणथी भोगवेछे तेथी पूर्वोक्त विरोधनो सर्वथा नाश थायछे.

ते उपरथी सिध्ध स्पष्ट भासेछे के जडस्वरूप मुक्ति नथी परंतु शुद्ध चैतन्य स्वरूप मुक्तिछे.

कोइबादी आकाशनी पेठे सर्वत्र व्यापिनी मुक्ति मानेछे ते पण यथार्थ घटना विहर् छे. कारण क, मुक्तआत्मा आकाशनी पेठे सर्वत्रव्यापक नथी. सर्वत्रव्यापक आत्माने मानतां वंध मोक्ष व्यवस्था घटती नथी. जेम आकाश अर्वत्र व्यापक छे तो ते कोइनाथी वंधाय पण नहीं अने वंधावाना अभावे मोक्ष पण घटे नहीं. तेम आत्माने कर्मपण सर्वत्र व्यापक मानवाथी वंधाय नहीं अने वंधानभावे मोक्ष पण कहेवाय निह एम दोष स्पष्ट भासेछे, माटे सर्वत्र व्यापिनी मुक्ति सिद्ध टरती नथी. सर्वव्यापिनी मुक्ति मानतां प्रथम सर्वत्रव्यापक आत्मा मानवो पडके. अने सर्वत्रव्यापक एवा आत्माने वंध मोक्ष घटतो नथी. चळी सर्वत्रव्यापिनी मुक्ति मानवामां अनेक विरोध आवेछे, माटे त्रिक्त हो त्रमाणे मानवामां कोट झानतां विरोध आवेतो नथी.

वळी कोड् मनवादी मुनितमां स्वामी सेवक भाव स्वीकारेछे ते पण सुनितहीनछे, कर्म खप्यांनी सर्व आत्माओ मुनितमां सराना छे. सर्व आत्माओ पोतपोताना स्वरूपे परमानंद सुखिवलासी छे. सर्व सिद्धात्माओमां केवलज्ञान अने केवलदर्शन छे. कोइ नातुं मोढुं नथी. अष्टकर्म खप्याथी अष्टगुण सिद्धना जीवोमां प्रगटचा छे. पोताना गुणना कर्त्ता पत्येक सिद्ध भगवान छे. विभावदशाथी रहित स्वस्वभावभोगी थयाछे माटे परनुं कर्त्तापणुं लेश मात्र नथी। वली सिद्धना जीवोने शरीर नथी, लेश्या नथी, मन नथी, काया नथी, एक पुद्गल परमाणु सरखो पण सिद्धना जीवोमां रह्यो नथी अले लेशी, अशरीरी, अचल, सिद्धना जीवोछे.

एम मानेछे के, मुक्तिमां केटलाक वर्ष पर्यंत रहीने जीव पाछो संसारमां आवेछे. पण ते योग्य नथी. कारणके कर्मनो नाश थतां सिद्ध स्वरुपता मगटे छे ते अवस्था सादि अनंतमें भांगेछे. एटले सिद्धमां गयानी आदि छे पण अनंत नथी अर्थात् सिद्ध थया पछी संसारमां आवता नंथी. संसारमां आववानुं कारण कर्म छे ते कर्मनोतो पथमथीज करी मुक्ति गयाछे माटे संसारमां अवतार लेवानुं काम विलक्तल नथी. वळी कोइ कहेशेके, सिद्धना आत्माओने नवां कर्म लागे ते पण ज्ञानहीन वचनछे कारणके, कर्म लागवानुं कारण आत्माने राग अने द्वेप छे अने रागद्वेपनो सर्वथा नाश करी सिद्धात्मा थया छे माटे नवां कर्म पण सिद्ध परमात्माने लागतां नथी. सदाकाल शुद्ध स्वरूपे निज भोगवेछे, तेथी सिद्धना आत्माओ कदापि काले संसारमां पाछा जन्म धारण करता नथी. सिद्धना जीव अनवतारी हो, कोइ एम कहेशेके. ज्यारे ते परमात्मा थया अने सिद्ध शिला-नी उपर सिद्ध क्षेत्रमां रह्याछे अने त्यांथी पाछा दुनीयामां आववा-ना नथी. अने जगत्ना लोकोने दुःखमांथी वचावता नथी त्यारे तेमणे शो परोपकार कर्यों कहेवायः तेना उत्तरमां समजवानं के,

मुनतात्मा वे मकारनाछे. एक केवलज्ञान संपादन करी आयुष्य विशेषे रहेला अने वीजा चउद्मुं गुणस्थानक स्पर्शी सिद्ध स्थानकमां
गयेला. हवे तेरमा गुणस्थाककवर्ती वे.वलज्ञानी महात्माओ भाषा
घर्गणाना पुद्गलयोगे उपदेश आपी तत्त्वस्वरूप समजावी जगज्जीवोत्तुं कल्याण करेले. अने सिद्धमां गया वाद सिद्धस्वरूपे थतां:
जगत् जीवो सिद्धनुं ध्यान करी स्वस्वरूप मगटावेले एटले तेमां
पण कल्याण प्राप्तिमां जगज्जीवोप्रति सिध्ध परमात्मा निमित्त कारणीभृत छे, ते विना द्रव्यद्यारूप उपकार करवा अर्थे ते सिध्ध परमात्मानी स्वाभाविक शक्ति नथी कारणके ते वीनराग थयाले,
सर्वजीवना कल्याणमां उपादान कारणनी अपेक्षाएतो पोतेज
कारणले. अन्य तो तेमां निमित्त कारण छे. आ वात सुक्षमदृष्टिधी
सद्गुक्त पासे समजतां यथातथ्य समजारे.

कोई जीवं तो इंद्र आदि देवतारूपे थवं तेनेज मुक्ति माने छे. कारण के तेनाथी आगळ सूक्ष्म ज्ञानदृष्टिथी जोवायं निह तेज कारण छे, जेम के इश्र्यास्त आदि मतवाळा एम माने छे के परमेश्वर मुन्वर्णना सिंहासन उपर वेठो छे अने तेना मस्तके मुकुट विगेरे छे एम कहेवाथी समजाय छे के ते देवयोनि पैकी कोई देवने परमेश्वर मानी विश्वासयोगे एममाने छे. कारण के पूर्व भवनो रागी अने संबंधी कोई देव आ प्रमाण करी शके अने तेथी भ्रांतिमां फसा छं पढे. एम खीस्ति धर्ममां होय तो ते अप्रमाण कही शकाय नहीं, माटे सर्वोशे परिपूर्ण अनुभवगम्य जिनदर्शनमां जे मुक्तिस्वरूप छे ते सत्य छे.

मुक्तिमां अनंत सिद्धोनी अवगाहना भेगी होयछे. शिष्य-हे गुरो ! अवगाहनाचुं शुं स्वरूपछे अने ते अवगाहनाह वी छे के अरुपी ? गुरू-हे विनेयशिष्य ! आत्मा ज्यारे शरीर त्यागीने मुक्तिमां जाय छ त्यारे शरीरना त्रण भाग करीए तेनांथी एक भाग त्यागीए. अपमाणमान जाकाशप्रदेशमां आत्मा असंख्य प्रदेशथी व्या-पाने रहेछे ते अवगाहना जाणत्री. अने ते अवगाहना अरूपीछे.

शिष्य-एक सिद्धक्षेत्रमां अनंत आत्माओं केम करी समाय ? गुरू-एक ओरडामां एक दीपक करीए छीए तो पण तेनी ज्योति समायछे. तेम हनारों दीपक कर्यो होय तो ते दीपकोनी ज्योति (प्रकाश) पण सम यछे. तेमां कंइ हरकत पडती नथी. वळी दीपकना प्रकाशनां पुद्गलरूपीछे तो पण समाइ जायछे तो अरूपी एवा अनत आत्माओं सिद्धक्षेत्रमां समाय तेमां किंचित् पण विरोध जणातों नथी.

शिष्य-त्थारे सिद्धात्मा त्यांथी अलोकमां केम जइ शकतो नथी;— गुरू-सिद्धात्मा अक्रियछे. गमनागमन क्रियाथी विराम पाम्याछे तथी उपर जइ शकता नथी. कारण के अक्रियपणुंछे अने अलोकमां धर्मास्तिकाय पण नथी. म'टे सिद्ध तमा जइ शकता नथी. धर्मास्तिकाय तो फक्त गमनमां मर्वेतला पदार्थीने सान् हाय्य आपी शकेंछे.

शिष्य-त्यारे आ आधिन्याविष्णाधिमय जगतमां श्रं सारछे. शाथी अनंत दुःख नाश पामे ?

गुरू-शिवपद आराध्य, जगत्मां समजवं. अने तेज साध्य करवा लायकछे. ते पटनी संपाप्तिथीज सर्व अखंड शायत सुखनी प्राप्ति थायछे. श्री गुणस्थानक क्रमारोहमां कहुं छे. यथा श्रीक.

- यदाराध्यं चयत्साध्यं, यद्धवेयं यचदुर्लभं; चिदानंदमयं तत्तः संप्राप्तं परमं पदं. भावार्थ-ने शिवपद अत्राध्य, साध्य, ध्येय, दुर्रुभछे, ते पद ने ज्ञानीओए शुक्रध्यानथी प्राप्त कर्युंछे.

आत्मा तेज ब्रह्मस्वरूपछे. आत्माज शिवस्वरूपछे, आत्माज परमात्मरूपछे. सिद्धत्वपणुं आत्मानो शुद्ध पर्यायछे, सम्यग् मोक्ष स्वरूप वीतराग वचनोथी प्रतीत थायछे, ज्यारे वंधतत्वनो नाश थायछे. त्यारे मोक्षतत्त्वनी उत्पत्ति धायछे. मोक्षतत्त्वथी आत्मा भिन्न नथी। मोक्षमयी आत्माछे. ज्ञान, दर्शन अने चारित्रथी मोक्ष प्राप्तिछे. ज्ञान, दर्शन अने चारित्रथी मोक्ष प्राप्तिछे. ज्ञान, दर्शन अने चारित्र श्राप्ति श्राप्तिछे.

अज्ञानी जीव आत्मानो शुद्ध स्वभाव नहीं जाणतो छतो राग द्वेपादि करेछे, त्यारे ज्ञानी जीव आत्मस्वभाव जाणतो छतो राग द्वेपनो त्याग करी कर्मथी रहीत थइ मोक्षपद माप्त करेछे. ज्ञानी आत्माना स्वरूपमां सदाकाल रमण करी अखंडानंदानुभव माप्त करेछे. जेम इंसने मान सरोवरमां रितछे तेम आत्मज्ञानीने आत्मस्वरूपमां रित होयछे. जेम चकोर चंद्रमांज भीति धारण करेछे. तेम आत्म-ज्ञानी आत्मस्वभावरमणतामां मीति धारण करेछे. तेम आत्म-ज्ञानी आत्मस्वभावरमणतामां मीति धारण करेछे. सीतानी जेम राममां मीति तेम आत्मार्थीनी आत्मस्वरूपमां मीति रमणता भासनता वर्तेछे. आत्मज्ञानीने कास्मक्ती श्रमण करेछे. श्रीआनंद्यनजी महाराज पण कहेछे के—

आतमज्ञानी श्रमणकहावे, वीजा तो द्रव्यालिंगीरे. वळी श्रीयशोविजयजी उपाध्याय कहेछेके, समाधिशतकर्मां-यथा

केवल आतम वोधहे, परमारथ शिवःपंथ तामे जिनकुं मगनता, सोहि भाव निग्रंथः

परमार्थ शिवनो पंथ केवल आत्मज्ञान छे तेमां जे भन्यात्माने मन्नताछे ते भाव निर्मेथ जाणवाः निक्षेप भेड्यी निर्मेथ चार पर कारनाछे. १ नाम निर्श्रथ. २ स्थापना निर्श्रथ. ३ द्रव्य निर्श्रथ. ४ भावनिर्श्रथ. पूर्वोक्त चार निर्श्रथमां भाव निर्श्रथसर्वतः मोक्षसाधक जाणवाः कारणके, भावनिर्श्रथपणानी प्राप्ति विना कदापि काळे मोक्षपदनी प्राप्ति थती नथीः सर्वपर वस्तु विषयोधी मनने खेंखी आत्मस्वरूपना ध्यानमां मनने दिश्यर करेः श्वासोश्वासे आत्मातुं स्मरण करी भव्य जीवो कर्म खपावी परमात्मपद प्राप्त करेछे. ज्ञानी प्रुरुष आत्ममांज स्थिरता करें. अने आत्मभावना सदाकालः भावी अनंत सुखमय पोताने छेखे नीचे प्रमाणे आत्मभावना भावे।

#### गाथा.

## एगो मे सासर् अपा, नाण दंसणं संजुओ, सेसामे वाहिराभावा, सब्वे संजोग लखणा,

भावार्थ-एक मारो आत्मा शाश्वत छे. त्रिकालमां पण आ-त्मानो नाश थतो नथी. वळी आत्मातुं स्वरूप दर्शावेछे. ज्ञानदर्शन संयुत: ज्ञान अने दर्शनादि अनंतगुणमय आत्माछे.

आत्माथी दश्यमान सर्व पदार्थी भिन्नछे. सर्व पौद्गलिक पदा-थीं संयोग विनाशी धर्मवाळाछे. ते पौद्गलिक पदार्थमां मारापण्डं कंइ नथी. रूपीपदार्थथी भिन्न हुं आत्मा शुद्धचैतन्यमय लक्षण ल-क्षितळुं. आत्मानोभकाश करवाने अन्य पदार्थनी जरूर नथी. आत्मा पोतानी मेळे पोताना स्वरूपनो भकाश करेछे. कंचुकना त्यागथी जेम सर्प नष्ट थतो नथी. तेम शरीर नाशथी आत्मा नष्ट थतो नथी. त्रिकालमां आत्मा पोताना शुद्ध स्वरूपथी श्रष्ट थतो नथी.

मूर्ख मृह मनुष्य शक्तिमां रजतनी आंति धारण करी जेम मिध्यामयास धारण करेछे तेम वहिरात्मा, परपुद्गलवस्तुमां आ-त्मत बुद्धिधी आंति धारण करी मिध्या चतुर्गति अमणरूप होश भात्र बनेछे।

सहज स्वाभाविक आत्मिक गुणानंतनी आविभीवतारूम सिद्ध-तानुं हेतु सम्यग्ज्ञानछे. सम्यग्ज्ञाननी प्राप्ति विना भवसंतितनो उच्छेद थतो नथी. तेम सम्यग्दर्शननी प्राप्ति विना सम्यग्ज्ञान कही शकाहुं नथी. अनेकांत स्याद्वाद सत्तामय आत्मखरूपादि पदार्थोतुं यथार्थ भासनपणुं, श्रद्धानपणुं धाय त्यारे समिकत कथायछे अने समिकत पूर्वक जे जाणपणुं ते सम्यग्ज्ञान कहेवायछे. सम्यग्ज्ञाननी प्राप्ति रूपसूर्य जे भन्यजनना हृद्यमां मगटचोछे तेने मिथ्यातरूप अंधकार आच्छादन करी शकतुं नथी. ज्ञानरूप सूर्योदयथी सर्व पदार्थीनो भास थायछे त्यारे मोक्षमय आत्मा स्वयमेव प्रकाशेछे. अने कर्पनी नाश थायछे. नवतत्त्वमां जीवतत्त्व आदेयछे, संवर निर्जरा मोक्ष ए त्रण तत्त्व उपादेयछे, पुद्गल द्रन्य अजीवछे. पुण्य पाप पुद्गल स्कंधोछे. ते पुद्गल स्कंधोने आत्मा पोताना खरूपमां रमतो दूर करेछे. ज्यारे आत्माना असंख्यमदेशोनी साये कर्भरूप पुद्गल स्कंधोनो एक परमाणु सरखो पण रहेतो नथी. त्यारे आत्मा निरा-वरण निर्ममपद प्राप्त करी सादि अनंत स्थिति पामेछे. एक समयमां गुणस्थानातीत धएल आत्मा आकाश मदेशनी समश्रेणिए अन्यम-देशोने स्पर्ध्याविना सिद्धिस्थानमां विराजेछे. त्यां सिद्धमां किंचित् दुःख नथी. दुःग्व सर्व पुद्गलना संयोगथीछे. निर्मल परमात्माने परमाणु मात्रनो संबंध नथीं तेथी त्यां छेश पण दुःख नथीं. आधि व्याधि अने उपाधि ए त्रण मकारनां दुःखथी रहित आत्मा अनंत स्रुतमय वर्तेहे. सर्वथा प्रकारे दुःखनो अभाव स्रुक्तिस्थानमां छे. अनंत सिद्धजीवो लोकना अग्रभागे विराज्याछे. अने तेओ सदा-काल आत्मस्वभावमां रमण करेछे. अनंत ज्ञानदर्शन चारित्ररूप: रत्नत्रयीनी लहेरमां स्वगुण भोगवेछे, त्यांथी कदापिकाळे संसारमां पाछा आवी जन्म मरण धारण करता नथी. सर्व जगत्ने शान्धी

जाणेछे पण तेथी ते सिद्धना जीवो सदाकाल न्यारा प्रवर्तेछे. अश्व-सिद्ध भगवान् कोइ दुःखीने देखी दया मनमां लावे के नहीं ? उत्तर—सिद्ध भगवानने मन नथी. दुःखी मनुष्यादि सर्वने जाणेछे पण तेओ कर्भथी रहीत थवाथी अक्रिय थयाछे. तेथी फंइ पण कार्य करता नथी. अने दुःखी मनुष्य<u>न</u>ुं दुःख दूर करवा संसारमां आवता नथी. सर्व जीव पोताना करेलां ग्रुभाग्रुभ कर्मथी सुखी दुःखी थायछे, कोइन्नुं दुःख दूर करवा कोइ समर्थ नथी. करेलां कर्म पोतानेज भोगववां ज पडेछे. केटलाएक मतवादी एम कहेछे के, सिद्ध परमात्मा अन्य जीवोनां दुःख द्रकरवा संसारमां अवतार छेछे एम तेमतुं कथनछे. निरंजन निराकार परमात्मा गमनागमननी क्रिया रहित थयाछे कर्मनो नाश करवाथी. माटे परमात्मा अवतार ग्रहण करेछे एम जे कोइ कहेछे ते अज्ञानी जाणवो. सिद्धना जीवो पीतानी अवगाहना छेइ सदाकाल अनंत सुखमां मन्न रहेछे, निश्चय चारित्र सिद्धना जीवोमां स्थिरतारूप समये समये अनंत छे. सिद्धता विना सांसारिक दशामां परस्वभावमां रमणता करवाथी किंचित् पण मुख नथी कहुंछेके-

हुं एनो ए माहरो, ए हुं एणी बुद्धिः चैतन जडता अनुभवे, न विमासे शुद्धिः आतम॥१॥

सांसारिकभाव एज हुं छुं, अने ते माराछे. आ वाह्य पदार्थों तेज हुं एवी बुध्धिथी चेतन जड़नो संगी थइ जड़ता अनुभवेछे अने पोताना आत्मानी शुद्धि विमासतो नथी. एवी संसार दशामां राग, देष, कछह, ममतानो संगी थएलो जीव कंइ पण सुख पा-मी शकतो नथी. कोइपण जीव वाह्य पदार्थोथी सुख पाम्यो नथी. अने पामवानो नथी, आ ममाणे आत्मार्थी पुरुषो समजी इह नि. श्रयथी आत्मध्यान स्थिरतारूप समाधिमां छीन थायछे. कोइ यो-गी ध्यानारूढ थतां तेना ध्यानमांथी एन भटकी जइ आई अवछं चाल्युं जायछे छे तेने शिक्षा आपतां योगी कहेछेकं-

श्लोक.

मनः क्रत्रोद्योगः सपदि वदमेगम्यपदवीं ॥ नेखा नार्योवा गमनमुभयत्राप्यनुचितम् ॥ यतस्ते क्वीवत्वं प्रतिपदमहो हास्यजनकं ॥ जनस्तोमं मागा स्त्वमनुसरिह ब्रह्मपदवीम् ॥ १ ॥

हे मन तारी क्यां जवानी इच्छाछे. तारे ज्यां जवानुं होय ते मने कथन कर. नरमां जवुं छे के नारी विषयमां जवुंछे. नर वा नारी ए वे ठेकाणे जवुं पण अयोग्यछे. कारण के तारु हीवत्वपणुं छे माटे पद्पद्मित नर वा नारीना विषयमां तारु गमन हास्य एत्पन्न करावनारछे. पुष्टिंग वा खी जातिमां तुं नपुंसक थइने जाय छे ते योग्य नथी माटे मनुष्यना समूहमां मा भटक, तुं नपुंसक तेवुं ब्रह्म पण नपुंसकछे माटे तुं ब्रह्मपदने अनुसर अथवा ब्रह्मपदमां लीन था. वळीपरमात्मतत्त्व रमणतामां योगी लीन थइ समाधिभावने पामेछे, परभात्मतत्त्व आनंदरूपछे ते द्र्श्वचिछे. परमानंद पंवविंशत्यां

श्होक.

आनंदरूपं परमात्मतत्त्वं, समस्तसंकल्पविकल्पमुक्तं; स्वभावलीना निवसंतिनित्यं,जानाति योगी स्वयमेवतत्त्वं परमाल्हाद संपन्नं, रागद्वेपाववर्जितम् ॥ सोऽहंतुदेहमध्येऽस्मिन्, योजानातिसपंदितः ॥ २॥ भावार्थ-परमात्मतत्त्व स्वाभाविक सदाकाल आनंदरूपछे.
वली शुद्ध निश्चयनयथी जोतां परमात्मतत्त्व केवा मकारनुंछे ते जणावे छे के-समस्त मकारना संकल्प अने विकल्पथी रहितछे,
एवा परमात्मतत्त्वमां सहज स्वरुपमां लीन थएला भव्यो सदाकाल
वसेछे, एवं परमात्मतत्त्व योगी पोतानी मेळे अनायासे जाणेछे.
उत्कृष्ट आल्हादथी संपन्न अने रागदेपरित आत्मा आ शरीरमां
वस्योछे तेज हुं परमात्मालुं एम जे जाणेछे ते पंडित जाणवो. परमात्मस्वरूप एवो आत्मा संसारमां परिश्रमण करेछे तेनुं शुं कारण
छे ते दर्शावेछे.

#### गाथा.

## आया नाणसहावी, दंसणसीलोविसदसहरूवो ॥ सो संसारे भमइ, एसो दोसो ख मोहस्स १

आत्मा ज्ञानस्वभावी अने अनंत दर्शनगुणमयछे वळी ते निश्रयधी विशुध्य तथा अनंत सुखवान् छतां संसारमां परिभ्रमण
करेछे तेमां मोहनो दोषळे. माटे आत्मार्थी भन्य जीव मोहनो जय
करे. मनमां विचारे के आ दुनीयागंनी सर्व जड वस्तुओ मारी
नथी अने हुं तेनो नथी एम भावतां मोहरिपुनो जय करी शकाय
छे. त्यारे हवे मारु शुं एम जिज्ञामा शिष्यने थनां गुरू महाराज
कहे छे के-

### श्लोक.

शुद्धात्मद्रव्यमेवाहं, शुद्धज्ञानग्रणो मम नान्योऽहंसिद्धबुद्धोऽहं, निर्लेपोनिष्कियः सदा ॥१॥

सकल पुद्गलना आश्लेषथी रहीत ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्य, अन्यावाधादि अनंत गुणपर्यापुमयअसंख्य प्रदेशीशुष्य आत्मद्रव्य हुं छुं. सूर्य चंद्रादिक्रनी सहाय विना मारे। शुध्ध ज्ञान-रूप प्रकाश समये समये वर्ते छे. त्रण लोकना-पदार्धनी उत्पाद्व्यय श्रीव्यतानी अनंतता मारा शुध्धज्ञानमां ज्ञेय स्त्ररूपे परिणभी समये समये भासे छे, ते ज्ञानगुण मारो छे. हुं ज्ञाननुं पात्र छुं. धर्मास्ति-कायादिकथी हुं भिन्न छुं. तनु-धनादिक पदार्थी माराथी भिन्न छे. स्त्रद्व्यादिकथी युक्त रत्नत्रयीनो स्त्रामी आत्मा तेज हुं छुं. आनुं भेद ज्ञानरूप अस्त्र मोहनो नाश करे छे माटे सर्व परभावथी भिन्न एवा आत्मामां रमणता करवी. वली जे भेदज्ञानी छे ते औदियक भावमां लेपातो नथी. जेम आकाश कादवधी लेत्रातुं नथी तेम अत्र समज्तुं.

वळी अध्यातम विंदु ग्रंथमां कहां छे के-श्लोक.

स्वत्वेनस्वं परमापिषर त्वेनजानन्समस्ता न्यद्रव्येभ्यो विरमणिमिति चिन्मयत्वं प्रपन्नः स्वात्मन्येवाभिरतिमुपनयन् स्वात्मशीली स्वदशीं॥ त्येवंकर्ता कथमपिभवेत् कर्मणो नैपजीवः॥ १॥ -

जेणे आत्मामां आत्मपणुं जाण्युंछे. अने पुर्गलादिकमां पर-पणुं जाणी समस्त अन्य पदार्थोधी विराम पाम्योछे अने ज्ञानमय-पणाने पाम्योछे. पोताना आत्मामां आनंद पामी स्वस्वरूपनो द्शीं थयोछे एवा आत्मा शी रीते कर्मनो कर्जा वनी शके? अधीत एवी अध्यात्मद्शामां रमण करनार जीव कर्मनो कर्जा वनतो नथी. पण पोताना आत्मस्वभावनो कर्जा थायछे. आत्माना स्वरूपमां रमण करनार योगीधरने जे सुख थायछे ते अनविध मुख जाणवुं. पर-स्वभावधी रहित एवा सुनीधरने प्रमत् तृणवद् गाणवुं. अर्थात् मुनीश्वरने जगत् निस्सार लागेछे. अने आत्मस्वरूपमांज सार ला-गेछे. कहुं छे के-ज्ञानसारमां देवचंद्रकृत टीकामां

गाथा.

तिणसंथारानिसिन्नो, मुणिवरो भठरागमयमोहो ॥ जंपावइ मुत्तिसुहं, कत्तो तं चकवट्टीवि ॥ १॥

भावार्थ-नष्ट पाम्याछे राग, द्वेप, मद, मोह, ते जेना एवा
मुनिवर्य तृणना संथारमां वेटा छता जे मुख पामेछे ते मुख चक्रवर्तिने पण क्यांथी होय, अर्थात् मुनिवर्यने आत्मस्वभावे रमण
करतां जे मुख थायछे ते मुखनो छेश मात्र चक्रवर्तिने नथी। परभावमां रमण करनार चक्रवर्ति मुरपतिने आत्मिक मुख माप्त थतुं
नथी। कहां छे के-ज्ञानसारमां देवचंद्रकृत टीकामां.

गाथा.

जेपरभावे रत्ता, मत्ताविसयेसपाव बहुलेस ॥ आसापासनिबद्धा, भमंति चनगइ महारन्ने ॥

जे भत्यो परभावमां मग्न पंचेंद्रियना विषयोगं जे मत्त थया छे, अने आशापाशथी जे वंधायाछे ते चतुर्गतिरूप महाअरण्यमां परिभ्रमण करेंछे, परभावमां आसक्त जीवो समये समये सात वा आठ कर्म ग्रहण करी पुनः पुनः पुनर्जन्म धारण करेंछे. माटे पर-भावमां रमवुं ते आत्माने योग्य नथी. जडवस्तुमां किंचित् पण सुख नथी. परमां थतो रागभाव तेने परिहरी पोताना आत्मामां जे खोज करेंछे ते परम सुख पामछे. यथा समाधिशतक-

रागादिकजबपरिहरी, करे सहजग्रणखोजः , घटमें भी प्रगटे तदा, चिदानंदकी मोज '' १॥ वळी भव्यपुरुषोए समजदं के—अहं अने ममपणं पोताना आत्मामां नथी. ज्ञान, दर्शन, चारित्ररूप रत्नत्रयीनो स्वामी हुं छं अन्य किंचित् वस्तु मारी नथी. आत्मिक धन तेज मारुछे. अन्य मारु नथी. आत्मस्वरूप जडमां कल्पे तो जन्मनी हृष्टिंघ थायछे. अने आत्मस्वरूप आत्मामांज धारी निश्चय करे, स्वस्वभावमां रमे तो मोक्षनी माप्ति थायछे. यथा समाधिशतक— आपभावना देहमें, देहंतरगति हेत ॥ आपखें जो आपमें, सोविदेहपददेत ॥ १ ॥

भावार्थ-सारमां सार के-आत्मना स्वद्रव्यादिक चतुष्ट्यमां आत्मलपणुं धारण करी एक चित्तथी आत्मध्यान करे ते संसार चक्रमांथी छूटेके. आत्मा पोतेज परमात्मरूप वनेके. ते वतावेके.

समाधिशतक.

भविशिवपददे आपक्कं, आपिह सन्मुखहोइ ॥ तातेंग्ररुहे आतमा, अपना ओर न कोइ ॥ १ ॥

आत्मा पोते पोताना सन्मुख यायछे, त्यारे पोते पोताने शि-वपद आपेछे. ते माटे निश्चय नयथी जोतां आत्मा पोते पोतानो गुरू छे, आत्मानो अन्य कोइ गुरू नथी. निश्चयनयथी पोतानो गुरू आत्मा छे, पण तेष्ठं समजीने व्यवहारथी परमोपकारक सद्-गुरूनुं आलंबन मृकवुं नहि. पोतानी साध्यदशामां सद्गुरूनुं आ-लंबन पृष्टिनिमित्त कारणछे. सद्गुरूना आलंबनयी आत्मानी शुध्यपरिणित थायछे. राग द्वेपमां परिणमचुं ने परपरिणित छे. बहि-रात्मा परपरिणितने पोनानी करी मानेछे. संयम अंगीकार करीने पण जे भिक्ष रागद्वेप परिणामयुन परपरिणितमां राचेछे, मानेछे ते द्रव्यसाधु जाणबो. कर्गु छेके- परपरिणतिपोतानीमाने, कियागर्वे गहेलो । जनकं जिनकहो केम कहीए, सो मूरखमे पहेलो--परम जैनभावे ज्ञाने सबमांहि, शिवसाधन सहहीए; नाम भेखसं काम न सीजे, भाव जदासी रहीए--परम ज्ञान सकलनय साधन साधो, किया ज्ञानकी दासी; किया करत धरत हे ममता, आइ गलमे फांसी--परम

इत्यादि समजी स्वस्वभावमां रमण करबं. एज सारमां सार आत्महित कर्तव्यनी पराकाष्ठा जाणवी. सर्व पुद्गलभावमांथी पीति हठावी एक आत्मामां पीति जोडवी. सर्व जगत् प्रपंच दुःखमय छे एम आत्माथींए सतत अंतःकरणमां भावना भाववी. पथम वाल जीवने वाह्य वस्तुमां सुख ज्यां त्यां लागेछे अने अंतर्मां उतरबं ते महा दुःख लागेछे, पण ज्यारे द्रव्यानुयोगनुं ज्ञान थायछे अने आ-त्मतत्त्वनी सम्यक् श्रध्धा थायछे त्यारे अंतरमां एटले आत्मस्वरूप-मां सुख लागेछे अने वाह्य जगत्मां दुःख भासेछे. अमृतरस भो-जनना करतां पण ज्ञानीने आत्मस्वभावमां अनंतगुणु विशेष सुख लागेछे. अमृतरसभोजननुं सुख क्षणिक छे अने आत्मसुख तो नित्यछे माटे ते अनुपमेय छे. आत्मसुखनुं वर्णन करोडो जिहाथी लाखो वर्ष सुधी वर्णन थतां पण कदापि पुरु थतुं नथी. आत्मिक सुख अवर्ण्य छे.

अनुभवज्ञाननी ज्यारे पाप्ति थायछे त्यारे आत्मिकमुखनी सत्य निश्चय प्रतीति थायछे. अनुभवज्ञान विना सत्य मुखनी प्र-तीति थती नथी श्री चिटानंदजी महाराज पण अनुभवज्ञान विषे आनंदमां आवी पदद्वारा विवेचन करेछे. यथा पद.

अवधु पियो अनुभवरसप्याला, कहत प्रेममितवाला अ० अंतर सप्त धातरस भेदी, परमेप्रम लपजावे प्रवभाव अवस्था प्रगटी, अजवरूप दर्शावे. अ० नखिशख रहत खुमारीजाकी, सजल सघनघन जेंसी; जिण ए प्याला पिये तिणकुं, और वात हे केंसी. अ० अमृत होय हलाहल जाकुं, रोगशोगनवी व्यापे; रहत सदा घरगाय नशासें, बंधन ममता कापे. अ० सत संतोष हैयामां धारे, जनमनां काज सुधारे; दीनभाव हीरदे नहि आणे, अपनो विरुद संभारे अ० भावदया रणयंभ रोपके, अनहद तुर वजावे; निदानंद अतुली वलराजा, जीतअरि घर आवे. अ०

वळी तेमन श्री आनंद्यनमी महाराज पग कहे छेके— आतम पियाला पीओ मतवाला, चिन्ही अध्यातम वासा; आनंदघन चेतन व्हे खेले, देखे लोक लोक तमासा• आशा आरनकी क्या कीजे.

अनुभवगम्य एवं आत्मिक सुख वार्षेद्रियथी कदी जणातुं नधी. विहरातमी प्राणीओ आत्मिकसुखनो गंध पण अनुभवी श-कता नथी. साकरनो स्वाद जेम विपनो कीडो जाणी शकतो नधी तेम अज्ञानी जीव आत्मिकसुखनो लेश पण जाणी शकतो नधी. शाश्वत एवं आत्मिक सुख साध्य जाणी तेनी प्राप्ति अर्थे सदाका-ल चारित्र धर्मनी आराधना ज्ञानी मुनिवर्थो एकाम चित्रथी क- रेछे, ज्यांसुधी वाह्य पौद्गालिकसुखनी इच्छा हृद्यमां प्रगटेछे त्यां सुधी समाकितनी प्राप्ति थती नथी. ज्ञानीओ वाह्यभावने स्वप्रवत् अांति समान जाणी सत्यआत्मिकसुखने माटे प्रयत्न करेछे. प्रपुद्गलवस्तुमां आत्मिकधर्म नथी. स्वस्वरूपमां रमणता करवी तेमांज लयलीनता करवी, मनवचन अने कायाना योगनी प्रष्टित् प्रवस्तुमां थायछे ते निवारवी, अने वहिवीचा अने अंतर्वीचानो त्याग करी भव्यो सुक्ति पामे माटे आत्मिकधर्मनुं स्वरूप प्राप्त करवुं जोइए. ज्ञानथी आत्मिकधर्मनो पूर्ण राग प्रगटेछे ते संबंधी कहेछे.

#### ॥ दुहा. ॥

# लाग्यो चोल मजीठनो, रंग ते कबु न जाय; धर्म रंग लाग्यो थको, कदी न दूरे थाय ॥ १३९ ॥ १

भावार्थ-ज्ञानदर्शन चारित्र सहित आत्मानुं स्वरूप समजतां परपुद्गल वस्तु उपरथी राग उतरी जायछे, अने आत्माना स्व-रूपपर राग थायछे. आत्मा विना कोइपण वस्तु मिय लागती नथी. आत्माना गुण पर्यायमांज रंगावानो राग थायछे. एम आत्मानी ज्ञानदृष्टि स्वस्वरूपने योग्य गणेछे ने परवस्तुने हेय गणेछे. आवी द्शा थतां आत्मा पग्वस्तुओमां अहंममत्व भावथी छुटेछे. विराति सन्मुख थएछो आत्मा गुणस्थानकपर चढेछे. दशमा गुणटाणाए राग पण छुटी जायछे अने तरमा गुणटाणाए केवलज्ञान दर्शन चारित्रनो भोगी वनेछे अने तरमा गुणटाणाए केवलज्ञान दर्शन चारित्रनो भोगी वनेछ अने अन्ते सिद्धगुद्ध वनेछे. आवी परमात्मद्शानुं स्वरूप देखाडनार सद्गुरू महाराजछे. माटे सर्व उपकारीमां मुख्य एवा गुरूना उपर मीति धारण करवी जोइम ते दर्शावेछे.

" दुहा. "

पत्र पत्रीदारा चैंकी, अधिको ग्रह्म प्यार;
प्राणाधिक ग्रह्मेम जास, ते भवजल तरनार ॥१४०॥
एकज देव ग्रह्म पिता, तेमां नहीं संदेह;
धर्मग्रह्म ते एकछे, अन्य मुनि ग्रणगेहम् ॥१४१॥
धर्मग्रह्मी चाहना, धर्मग्रह्मी भक्ति;
धर्मग्रह्म हृदय वदो, सेवो निजनिज शक्ति ॥१५२॥
सेवे शाश्वव संपदा, देखे दळदर दूर ॥
वंदे वंद्यपणुं वरे, गिरूआ, ग्रह्म जहरूम् ॥१४३॥

भावार्थः—पुत्र पुत्री अने स्त्री उपर मनुष्यने घणो प्यार होयछे तेना करतां पण अत्यंतराग सद्गुरूपर थवो जोइए. पोताना माण करतां पण सद्गुरू उपर अत्यंत भेमधारण करे. हद्यमां गुरू शब्द स्मरणनो मंत्र जाप करे. गुरूनी आज्ञा ज्ञापिपर धारण करे. एवो भव्यजीव जन्म जरा मरणधी पूर्ण समुद्र तरी शक्छे. अने मुक्ति पुरी माप्त करेछे. भव्यजीवोए समजवानुं के पिता एक होयछे सद्देव पण एक होयछे, तथा समाकितमद्धमांचार्य सद्गुरू पण एक होयछे, तथा समाकितमद्धमांचार्य सद्गुरू पण एक होयछे. समाकितमद्धमांचार्य मुनिनो जे उपगार छे तेना तुल्य अन्य मुनिओनो उपगार नथी. अन्य मुनिओनो यथायोग्य भक्ति विनय साचवत्रोः धर्म गुरूना सित्राय आचार्य उपाध्याय पण आत्याना मुख्य उपगारी नथी, माटे धर्मगुरू उपर विशेषतः भक्ति मीति धारवी. अने तेमनुं बहुमान करवृं. स्वकीय शक्तिनः धर्मगुरूनुं आराधन करवृं. धर्मगुरूनी सेवाधी त्वरित शास्त शिवसंपदानी माप्ति धारये. सद्गुरूने देखवाधी द्यादि

दूर थायछे. सद्गुरूने वांदवाधी आत्मामां वंद्यपणुं मगटेछे. गुरूनी गुरूता अलौकिकछे. गुरूनी गुरूता वणीं शकाय तेम नथी। भन्य जीवो गुरूनी सेवा करतां गुरूनी गुरूता माप्त करेछे. श्री सद्गुरू कथित अनंतगुणधामभूत चेतनमां सदाकाल रमवुं ते दर्शावेछे।

दुहा.

अज अविनाशी जीवछे, अखंड आनंद पूर;
अंतर्दृष्टि देखतां, चेतन नहींछ दूर ।११४४॥
चेतनगत तुज धर्म देख, वाहिर क्यां कर ख्याळ;
बाहिर्दृष्टि देखतां, भवनी अरहट्ट माळ. ॥१४५॥
ध्यान धारणा धाँरीने, देखे। आत्मस्वरूप;
बहिरूपाधि त्यागतां, शिवशाश्वतिचदूप ॥१५६॥
मृद्ध बन्यो मानव कहे, ओ जाणे जगमूद ॥
आतम ज्ञानी सुख लहे, ए अंतरनुं गूद ॥१४७॥
रागद्देष परिणामनी, श्रंथि त्यां छेदाय ॥
शून्यदशा पुद्रगलतणी, सहेजे शांति पाय. ॥१४८॥

भावार्य-अज अने अविनाशी एवो आत्माछे आत्मा अनादि कालथीछे माटे ते अज कहेवायछे. अने अनंतछे माटे अविनाशी कहेवायछे. अवंड अने आनंदथी परिपूर्ण आत्माछे यत्र आनंदछे तत्र आत्माछे. आनंदनो जाता तथा आनंदनो भोक्ता आत्माजछे. अंतर्दिष्टिरूप ज्ञानदर्शनथी देखतां आत्मा शरीरमांज रहेलोछे. पोतानाथी दूर नथी आत्मानी शोधखोळ माटे परदेश जवा जरुर नथी। शरीरमांज व्यापी रहेलो आत्मा ज्ञानदृष्टियी शोधतां जणायछे. वाह्यदृष्टिथी देखतां जडवस्तु जणायछे. अने जड-वस्तुमां आत्मपणुं नथी. जडवस्तुथी भिन्न अरूपी आत्मानो निर्धार करी स्वस्वभावमां रमबुं योग्यछे. जडवस्तुनो धर्म परिहरीने आ-रमानो धर्म देखवो जोइए. मनवाणी अने कायाना वेपारमां आत्म धर्म नथी। आत्मानो धर्म त्रियोगनी क्रियाथी तथा लेक्याथी पण भिन्नछे. धारणा तथा ध्यानरूप संयम अवलंबीने हे भव्यजीव आ-त्मानुं स्वरूप देख. संयममां विश्वभूत वहिरुपाधि परिहरीने स्वस्व-रूपमां रमतां शाश्वतकल्याण ज्ञानमय आत्मा थायछे. आत्मज्ञानी आत्मामां रंगायछे त्यारे तेन वाह्यवस्तु भ्रांतिमय लागेछे. तेथी तेने वाह्य वा वेपारमां आचारमां प्रेम रहेतो नथी तेथी जगत् लोको आत्मज्ञानीने ( उन्मत्त ) गांडो वनी गयो एम जाणेछे, त्यारे आ-त्मज्ञानी एम जाणेछे के जगत्ना लोको आंधळाछे. पोतानी रूदि आत्मामां नहीं देखतां जडवस्तुमां राचीमाची रहेछे. अरे तेवा अ॰ ज्ञानी जीवो जन्मजरा मरणनां दुःख पामे तेमां शुं आश्चर्य ? एवं ज्ञानीने अज्ञानीनी दृष्टिमां भेद पडेछे, अने एक बीजाने भिन्न दृष्टि-थी देखेंछे. आत्मज्ञानी अनंत ज्ञान दर्शन चारित्रनो धामभूत आ-त्माने मानतो आत्मामांज स्थिरउपयोगर्था रमणता करी क्षणेक्षणे अनंतानंद भोगवेछे. आत्री शुद्धदशामां रागद्वेपना परिणामनी प्रंथी छेदायछे, अने रागद्वेपना अभावे शृन्यपणुं वर्तायछे. अने आत्मानी सहजशांति मगट थायछे, ज्ञानीने आची सहन शांतिदशामां जे भान वर्तेछे ते जणावेछे:-

" दुहा. "

भासे एकज आतमा, सोऽइं सोऽइं ध्यानः तत्त्वमसि आकारमां, चिदानंद भगवान् ॥१४९॥ आत्मदशा तेवी थइ, थिरता निज ग्रणमाहिः वश वर्स्य मन मांकडं, दुःख देखे नहि क्यांहि.१५०

भावार्थः-उत्कृष्टनिर्मलध्यानदशामां शुद्ध आत्मस्वरूप भासे छे, सोऽहं शब्दथी आत्मध्यान करायछे. आत्मा तेज हुं इत्येवंसोऽहं ्शब्दनो परमार्थछे ते ज्ञानदर्शन चारित्रमय तेज तुं आत्माछे. बीजो नथी. एम तत्त्वमिस शब्दनो परमार्थछे. सोंऽहं अने तत्त्वमिस वा-वयथी अनेकांतधर्ममय चेतनतुं ध्यान धरतां आत्मा केवलज्ञान, अने क्षायिक सुख प्रगटावेछे, अने त्रण जगतमां पूज्य थायछे. सोऽहं अने तत्त्वमसिना ध्यानमां पोतानो आत्माज चिदानंद भग-'वान्रूप भासेछे. निर्मलध्यानमां शुद्ध आत्मदशा थतां आत्माना गुणोंमां स्थिरता थायछे अने मनमर्कटनी चंचलतारूप संकल्पवि-कल्प बंध पडेछे. अर्थात् मन वशमां थायछे. तादशीध्यानदश्वामां दु:खना ओघ विंलय पामेछे. कोइ ठेकाणे तेने ते काले दु:ख दे-खातुं नथी. भव्यजीवोए निर्मलध्यानदशामां स्वजीवन गाळ्बुं जोइए. अंतर्देष्टि थया विना जे जीवो वाह्य आचारमां धर्म मानेछे अने आत्माना धर्म तरफ लक्ष राखता नथी ते पोते धर्म पामी शर कता नथी, ने वीजाने धर्म पमाडी शकता नथी।

रागे वाह्या जीवडा, आप मतीला मुंड; धूते ढोंगी पापीया, लेइ साधुनुं झूंड. १५१ खानुं पीनुं पहेरनुं, वेशे माने धर्म; सत्य धर्म निव दाखवे, बांधे उल्हटां कर्म. १५२ सत्य देव निव ओळखे, दे मिध्या उपदेश; पेटभरु कदाग्रही, कुग्ररू पामे क्रेश. १५३ मनमाया मूके नहीं, पहरे त्यागी वेषः भगवा वस्त्रे भोळवे, लोको देशो देशः १५५ धननी आशा राखता, उगे उगारा लोकः टीलां टपके धर्म क्यां, आत्म विना सह फोकः १५५

भावार्थ-अहंगमत्वमां तल्लीन वनेला केटलाक, आत्मा अने परमात्मानुं स्वरूप नाहि जाणनार ढोंगी पापिजीवो साधुनुं नृहन्द लेइ गामोगाम फरी धन उघरावी दुनियाने ठगेछे, पण वस्तुतः जीतां विचारा ते टगायछे. 'केटलाकतो खावामां; पीवामां' अने वस्रवेपमांज एकांते व्यवहार निश्रयनय अववोध्या विना धर्म माने छे. धर्भनुं शुं स्वरुप छे ते सापेक्षद्रष्टिथी पाति जाणी शकता नधी तो अन्यने शी रीते जणावी शके. धर्मना नामे होंग करी मिध्या उपदेश आपी पोते चुडेछे. अने अन्य जनोने पण संसारान्धिमां चुंडाडेछे. अष्टादश दोपरहित सत्य देवने ते जाणी शकता नृष्टी. सत्यज्ञानना अभावे स्वच्छंदताथी मनमां जेम आवे तेम मिथ्या उपदेश आपेछे. एतादश उद्रेप्तिस्वार्थसाधक अज्ञान, कुगुरूओ र्वाईरात्मभावंषी भवपरंपरा ब्रही क्रेश पामेळेः मनमां रहेलुं मिथ्या वस्तुओतुं ममत्व मृके नाहि अने त्यागीनो वेष पहेर्यो तेथी धुं थयुं. याद्यत्याग अने अन्तर् त्याग ए वे त्यागनी जरुछे. उपरना फक्त वाध त्यागथी त्यागीपणुं कहेवातुं नथी. तेषज ज्ञानगभितवैराग्य विना वे.टलाक परिग्रहादिक उपाधिमां रक्त होय छतां चाहत्यागनो अनाद्र करी अन्तर त्यागी केहरावे ते पण अनेकान्तनय विरूद छे. माटे बाराधी फक्त देखाना त्यागी भगवां वस पहेंगी कुपंथनी जालमां लोकोने फसावेछे. धननी आजा धारक कुछरूओं अलोकि-क हम जाणवा. आत्मज्ञान थया विना उपरनां टीलांटपकां मामाग्री

करव।मां आवेतो तेथी कंइ आत्मानी रूद्धि माप्त थती नथी, तेमज जन्मजरा मरणना वंधनमांथी छृटातुं नथी. सग्तनय अने चारनिक्षेप पूर्वक आत्मक्कान थायतो मिथ्याल देवगुरू धर्मना असद् विचारोतो नाम थाय. संत्यक्कान थतां आत्मक्कानिनी कवी दक्का थायछे ते जणावेछे.

" दोहा. "

फोफ करीने लेखवे, सघळो दुनिया खेल; योगाभ्यासी थइ खरे, टाळे सघळो मेल. रेळे कर्मनो मेल सहु, करतां निजयण खोजः निजघटमा प्रगट तदा, चिदानन्दनी मोज. १५७ अन्तर ऋदि ज्ञानथी, प्रगटपणे निरखायः बाहिर रुद्धि वापडा, भोळा जन भरमाय . तनु धन योवन कारमुं, विद्युत्ना चमकारः परभव साथ न आवतुं, मोह्या मृद गमार. रुप९ राची रूदि कारणे, जीव हणे केइ लाख; जीवन तेनुं धूळसम,:जाणो छेवट राख. १६० भावार्थ-आत्महानिसन्त सांसारिक मोहक पदार्थोनी रचनानें

मिध्या जाणेछे. मोहक जड पदार्थीमां आत्मत्व छेश मात्र नथी. एवं सत्य निश्चय करी योगाभ्यासमां मद्दत्त थायछे. यम, नियम, आसन, भाणायाम, मत्याहार, धारणा, ध्यान अने समाधिथी अ-ष्टकर्मरूप मिलनतानो नाश करेछे, ध्यान अने समाधिद्वारा शोध करतां आत्मा पोतेज परमात्मा बनेछे, परमात्मा बनतां अनन्तगुण अ।विभीन धायछे, केवलज्ञानधी सर्व रूदि मलक्ष देखावछे एम आत्मक्कानिमां परिपूर्ण निश्चय थायछे. आत्मज्ञानी विचारेछे के अ-ज्ञानि पामर जीवोज उपाधिमय सुवर्णादिक वाग्यरुद्धिमां आसक्त होयछे. एवं सत्य अने असत्यतो ज्ञानी निर्णय करेछे. सम्यक्त्व जडवस्तुओ जेवीके तनु धन यौवनपणुं आदिने विद्युत्ना चमका-रानी पेठे क्षणिक गणेछे, परभव तेमां बुं कंइ साये आवतुं नथी. अहो मोहमग्रमूर्खजीवो ! जडवस्तुओमां राची रहेछे. जे वस्तुओपर राग धारण करेछे ते वस्तुओ मृत्युवाद कटी साथे आवती नधी. ज्यारे आ प्रमाणे छे तो आत्मानी रूदिविना वाह्य जड रूदिमां केम मूढनी पेठे राचीमाची रहुं. अलवत तेमां मूर्च्छा धारवी ते योग्य नधो एम ज्ञानी निश्रय करेछे, अज्ञानी पामर जीव वाग लक्ष्मीनी प्राप्ति माटे अनेक प्रकारना हिंसक व्यापारोमां छक्ष जीवोनो नाञ्च करेछे. अज्ञानी जीव मत्स्य, मूकर, पशु, पंखीना जीवोनो आ जी-विका माटे नाश करेछे. तादशअज्ञानिजीवोतुं जीववुं पाप माटे जाणवुं. एतादृश पापी जीवो मृत्यु पामी नरकादि दुर्गतिमां जायछे. तेवा पापी जीवोत्तं जीवन धूळ करतां अनिष्ट पृथ्वीयां भारभूत जा-णवुं. तेवा पापिजीवो उपर करुणादृष्टिथी जोवुं योग्यके. उपदेशा दिकथी पापियोनो उदार करवो जोइए. राखमां पढेछं घृतं यथा नकामुं छे तद्वत् पापिजीबोर्नुं आयुष्य स्वपरापेक्षाए तेवी पापदश्चा वर्ते तावत् पर्यत नकामुं जाणवं. वाग्रमांत्र मुखनी मुद्धि धारण क-रनाराओनी अधुभ महत्ति दर्शावेछे.

" दुहा- "

असत्य वागी वोर्ल.ने, जन वंचे धन हेत; अश्रुभ कर्म पंठी भरी, जन्म जन्म दुःख लेनः १६१ चोरी चाडी चुंगली, परनिन्दा अपमान; ( ३५६ ) अन्धिकारी

स्वार्थिक जन संसारमां, नरक गति मेमान आत्म प्रशंसा दाखवे, करे घणो अभिमानः धर्म मर्म पामें नहीं, पापी जन नादान. र्दर् परापकर्षे चित्तर्डं, परने देवे आळ; पापारंभ करे सुदा, देवे क्रोधे गाळ. १६४ पाप पुण्य समजे नहि, ले नहि सद्गुरु बोधः नास्तिक वादी जीवडा, करे शुं चेतन शोध १६५ मृत एकान्ते जे ग्रहे, ते अज्ञानी जीवः भूमणे करे भवमां अरे, ले नहि शाश्वत शिव. १६६ भावार्थ-अज्ञानी मोही जीव, असत्य वचन वदीने धनादिक मार्ट मनुष्योने छेतरेछे, चोरी, चाडी, चुगली करेछे. पापाचरणो-थीं पापकर्म ग्रहण करेछे, परजीवोनी निन्दा करेछे, परतुं अपूमान करैंछे. स्वार्थिक मनुष्य संसारमां अनेक जन्म दुःख प्रंपरा पासे छे, वाहादेष्टिधारकजीव स्वकीय प्रशंसा करेछे. अज्ञानी वाहा धन सत्तादिकथी मनमां अत्यंताभिमान धारण करेछे, वाह्यदृष्टिजीव जु हर्माज धर्म माने छे तेथी आत्मधर्मनो मर्भ समजतो नथी. मनुष्यजन्म पामी जे आत्मतत्त्वनी शोध करतो नथी अने मोहक पदार्थीमांज अहंममत्व धारण करेछे एवो जीव मोक्षथी पराह्मख रहेछे, आं-रमधर्मनी प्राप्ति दुर्लभछे, नवतत्त्वतुं स्रश्मज्ञान थया विना आत्म ज्ञान थतुं नथी, वाह्यदिनीव अन्यने नीचो पाडवा मयत्र करेछे. तेमज कृत्याकृत्य विवेक पराङ्क्षस्य थइ परजीवने आल चढावेछे. परजंडवस्तुमां ममत्वथीवंधाइ अनेक मकारना पापारंभ करेछे. क्रोधयी परने गाली देखे, अज्ञानी जीव पाप पुण्यमां समजतो नंथी.

तेमजमोहांधवनवाथी सद्गुरूनो उपदेश अवण करतो नथी. सद्गुरूपदेश अवण करनारने अष्ट मानतो नथी, मिध्यात्वमां अंध थएला जीवो आत्मानी शोध करी शकता नथी. नास्तिकवादी एकान्तमत धारण करेछे. एगंतो होइ मिछत्तं, एकांतपणाथी मिध्यात्वछे. मिध्यात्वी (अज्ञानी) मिध्यात्वना योगे भवमां परिश्वमग करेछे, सम्यग्दृष्टि थया त्रिना सम्यक्चारित्रमार्ग प्राप्त थतो नथी. सम्यग्दृष्टिजीव सम्यक् चारित्र पामी शिवसुख संपत्ति पाप्त करेछे. मिध्यात्वीजीव वस्तुने यथार्थपणे जाणतो नथी. ईश्वरने मानेछे तोपण ते विपरीत पणे जाणीने मानेछे ते प्रसंगतः जणावेछे, तेमां कोइक तो ईश्वर जगद्नो वनावनार मानेछे तेनो मत प्रथम दर्शावेछे.

### ॥ दुहा. ॥

### कर्ता ईश्वर मानता, जगमां केइक लोक;

सुखदुःख इश्वर आपतो, ए पण वाणी फोक १६७

भावार्थ-जगत्मां केटलाक मनुष्यो जगत्नो वनावनार ईश्वर माने छे, केटलाक मनुष्यो खुटाने जगत्नो वनावनार मालीक माने छे, त्यारे स्वीस्तियो ते खुटानी मान्यता नहीं स्वीकारतां इथनो परमेश्वर जगत्नो वनावनार छे एम स्वीकारे छे: ग्वीस्तिलोकोनी आबी मान्यताथी विरुद्ध पडी केटलाक हिंदुस्थानना हिंदुओ ब्रह्माने जग-स्नो वनावनार माने छे त्यारे केटलाक ने पक्षथी विरुद्ध विष्णुभग-वान् जगतनो वनावनार छे एम माने छे. त्यारे केटलाक ते पक्षधी विरुद्ध पडी महादेवन जगत्नो रचनार स्वीकार छे: त्यारे के चित् शक्तिथी जगत् वन्युं छे एवं स्वीकार छे. ग्वीस्तियो दुनिया सातह जार वर्ष लगभगनी वने ली माने छे. त्यारे मुसल्मानो तेथी विशेषवर्ष कहे छे. ब्रह्मा जगत्कर्तावादी तेथी भिन्न गीने कहे छे. शक्ति पंथवाला तेथी भिन्नपणुं स्वीकार छे. आर्यसमाजीओ जगत अनादि छे एम

मानीने पुनः जगत्नो वनावनार ईश्वर सर्वथी भिन्नरीत्या कथे छे, खीस्ति मुसल्पान अने हिंदुओ जगत्नो वनावनार भिन्न भिन्न स्वी-कारेके, सर्व पोतपोताचा पक्षने सत्य मानी अन्यपक्षनुं खंडन करेके. म्रुसल्मानो पूनर्जन्म स्वीकारता नथी. पशुपंखीमां खुदानीरु (जीव) छे एम माने छे त्यारे स्त्रीस्तिधर्मवाळाओ तो पुनर्जन्म मानता नथी. तेमज पशुपंखीमां आत्मा नथी एम मानेछे. पशुपंखीने मार्यामां स्त्रीस्तियो दोष मानता नथी. हिंदुधर्म पाळनाराओ पुनर्जन्म मानेछे तेमज पशुपंखीमां आत्मा माने छे अने पशुपंखी मार्यामां पाप गणे छे, जैनधर्म पाळनाराओ पुनर्जन्म मानेछे अने एवे न्द्रियादिक सर्व जी-वोनी दया पाळवी तेने मुख्य धर्म स्वीकारेछे. हिंदुओमां वे.टलाक वेदनो बनावनार ईश्वरछे एम मानेछे. त्यारे वे.टलाक कहेछेके वेदनो वनावनार कोइ नथी एम पौरुषेय अने अपौरुषेयनो विवाद चाली रहोछि. वे.टलाक हिंदुओ कर्मकाण्डने मुख्यधर्मः तरीके गणेछे. त्यारे वेटलाक ज्ञानकाण्डने मुख्य गणेछे. वेदमाननाराओ पैकी वेटलाक जगत् स्वम समान भ्रांतिरूप मानी तेनो कर्ता ईश्वरछे एम मानता नथी. त्यारे वे.टलाक जगत्नो कर्ता ईश्वरछे एम मानेछे. ज्ञानका-ण्डमां पण अद्वेतवाद माननाराओ जगत् अनादि मानेछे. अर्थात् होनी बनावनार फोइ मानता नधी. जे वस्तुनी आदि नथी अर्थात् अनादिछे तेनो वनावनार कोइ नथी। जेनो कोइ वनावनारछे ते वस्तु अनादि कहेवाती नथी. व्यारे जगत् अनादिकालथी छे एम मान्युं तो ईश्वर कर्तृत्ववाद रहेतो नधी. वेद पश्चात् उपनिषदो बनी एम मानवामा भावेछे. पश्चात् व्यासऋषि तेमणे तथा भग-वद्गीता तथा अष्टादश पुराण वनाव्यां एवं केचित् मानेछे. आर्थ-समाजीओ अदार पुराण व्यासजीनां वनावेलां मानता नयी. आधु-निक बनेलां मानेछे. एम पुराणो संबंधी चर्चा चाली रहीछे. सना-

तनपक्षवाळा तथा आर्यसमाजीओने भगवद्गीता मान्यछे. तेमां पण केटलाक श्लोको प्रक्षिप्त भगवद्गीतामां छे एम आर्यसमाजीओ माने छे. भगवद्गीतामां पण ईश्वर जीवोने सुखदु: खनो न्याय आपतो नथी. एवं मान्युंछे. तथा जगत्कर्तीपणुं ईश्वरमां नथी एवं स्वीकार्युं छे. शिष्य हे सद्गुरो भगवद्गीताना कया अध्यायमां तेम दर्शी ह्युं छे

ते जणावशो-सद्ग्ररु-स्वच्छ चित्तथी अवण करः भगवद्गीता अध्याय पंचम १४ चर्तुद्श स्रोक ॥ श्लोकः

न कर्तृत्वं न कर्माणि, लोकस्य सृजित प्रभुः न कर्मफल संयोगं, स्वभावस्तु प्रवर्तते ॥ १४ ॥ नादत्ते कस्यचित् पापं, नचेव सुकृतं विभुः अज्ञानेनाऽऽवृतं ज्ञानं, तेन मुद्यन्ति जंतवः ॥ १५ ॥

मभु, ईश्वर परमात्मा लोकनां कर्मोने बनावता नधी तथा लोकतुं (जगतुंतुं) कर्तृत पण ईश्वरमां नथी. अर्थात् दुनियाने ईश्वर
परमात्मा रचता नथी. तेमज जीवोने पुण्य पापनो संयोग करावनार
ईश्वर नथी. तेमज पुण्यपापनुं फल आपनार पण ईश्वर नथी त्यारे
जगत् कर्म विगेरेनुं शुं समजनुं तेना प्रत्युत्तरमां जणावेछे के जीवोने कर्मना स्वभावथी सुखदुःख थया करेछे. जगन् अनादिकालथी
छे एम तेनो स्वभावछे. जेवां जीवो कर्म करेछे तेवां फल स्वभाव
ममाणे भोगवेछे. ईश्वरने तेमां छेवा देवा नथी. तेम छनां
जीवो ईश्वरने कर्त्ता मानी मुंझायछे. पञ्चरमा श्लोकमां स्पष्ट जणावे
छेके. ईश्वर कोडनां पाप पुण्य ग्रहण करनो नथी कोड जीवे पाप
कर्यु होयनो ने टालवा ममर्थ नथी. उपनिषद्भां कर्नुक्टे के-

श्लोक.

कृतं कर्मक्षयो नास्ति, कल्पकोटीशतैरिषः; अवश्यमेव भोक्तव्यं, कृतं कर्म शुभाश्यमं, ॥ १।

कोटी कल्पशते पण पुण्य पापरूप जे कम वर्याछे ते भोगगव्या विना छुटको नथी. त्यारे ईश्वर जीवो मुं पाप पोते शी रीते
ग्रहण करे, ईश्वर जीवोना पापपुण्य छेतो नथी. जीवो थुम कर्म
अने अथुभ कर्म करी स्वयं कर्मना उदयथी ते मुं फल भोगवे छे,
ईश्वर पेदा करे छे. ईश्वर संहरे छे एम अज्ञानथी आच्छा दित दृष्टिवाळा जीवो मानीने मुंझाय छे, जगत् कर्ता ईश्वर आ ममाणे जोतां
सिद्ध थतो नथी. अन्यत्र पण भगवद्गीतामां ईश्वर अने प्रकृति
(जगत्) अनादिकालथी छे एम कहुं छे ज्यारे वे अनादिकालथी
छे त्यारे प्रकृतिनो कर्ता ईश्वर शी रीते सिद्ध हरे: अर्थात् सिद्ध हरे
रतो नथी. तत् पाटः भगवद्गीता अध्याय १३ त्रयोदश-

श्लोक.

# प्रकृतिं पुरुषं चैव, विद्धयनादी जभावापः; विकाशंश्रयणांश्चेव, विद्धि प्रकृतिसंभवान् ॥ १९॥

पुरुष (परमात्मा) मकृति (जगत् आवे अनादिकाळथीछे एम जाण. सत्व रजो अने तमोगुण नथा विकारो मकृतिज छे एम जाण आ उपरथी पण सिद्ध धायछे के अनादिकाळथी आत्मा अने कमें छे. तेम जगत् पण अनादिकाळथी छे. अहैतवादी ब्रह्मसत्यं जगत् मिथ्या एक अद्वितीय ब्रह्मज माने छे. ते जमत्नो कर्त्ता इश्वर अन्य मानतो नथी आ जगत् देखायछे ते भ्रांति मात्र छे. त्यारे तेनो वनावनार ईश्वर केम कहेवायः एम अद्वेतवादियो माने छे. जैनदर्शन जगत्ने जगत् स्वरूपे सत् माने छे. पण जगत् अनादिथी छे, सत्त्वात्

सत्पणाथी जे वस्तु सत् होयछे ते अनादियी छे. जेम पह्द्रव्यः जिनदर्शनमां पह्द्रव्य सत्छे. हवे मूळ विषय जगत् कर्ता ईश्वर संचिमिताकरणनोछे. वेदांत ग्रंथाधारे जोतां पण वेटलेक स्थाने ईश्वर कर्तृत्व स्वीकार्युछे. अने वेटलेक ठेकाणे जगत्नो वनावनार ईश्वर नथी एम स्वीकार्युछे. अन्य दर्शनपण जिन दर्शनना सिद्धांतनो वेटलाक अंगे अनुसरेछे. हवे जिनदर्शनमां जगत्कर्तृत्व ईश्वर संवंधी केवी मान्यता छे ते वतावेछे.

" दुहा. <sup>"</sup>

ईश्वरना वे भेदछे, जीव सिद्ध वे जाण; कर्चा निज निज कर्मना, जीवी मनमां आण ॥१६८॥ निजने सुखदुःख आपतो, जीवज करी नवकर्मः कर्ता भोक्ता जीवछे, ईश्वर कर्ता मर्म. चेतन ईश्वर जाणीए, नय व्यवहार प्रमाण अशुद्ध नय ईश्वर कथ्यो, सापेक्षा मन आण- ॥१७०॥ कर्त्ता परपरिणामथी, चेतन ईश्वर जोय: शुद्ध निश्चय नयथकी, कर्म करे नहिं सोयः ॥१७१॥ सुख कर्ता निज भावथी, दुःख कर्ता परभाव; परपरिणतिना नादाथी, कर्त्ता निजयण दाव. ॥१७२॥ सापेक्षा समजे नहीं, पक्ष ग्रहे एकातः ईश्वर कर्त्ता मानता, निरपेक्षाथी आन्त, 1190311 कर्म मेल जेने नहीं, निराकार भगवानः कतुं प्रयोजन इशने, कर निश्चयथी ज्ञानः ॥१७२॥

परमश्रभु शिव सिद्धमां, इच्छा नहीं अभिमानः श्रं ते कर्त्ता सृष्टिनो, माने भूली भान-।।१७५॥ श्पादान जेवुं अहो, ताहश कार्य कहाय; निराकार ईश्वरथकी, जडसृष्टि न रचाय. गा१७६॥ उपादान कारणथकी, जाणो कार्य अभेदः उपादान ईश्वर कहों, सृष्टिरूप ते खेद-1180011 निमित्त हेतु इराजो, उत्पत्तिमां होय; ईश्वरशक्ति नित्यके, अनित्यते अवलोय. 1130511 जपादान कारण विना, निमित्तथी शुं थायः उपादान कोने कहो, ज्ञाने सत्य जणाय. ॥१७९॥ कार्य पूर्व तो होयछे, कारणनो सद्भावः **उपादान** कारण विना, बने न एह बनाव. ॥१८०॥ **डपादान**थी भिन्नछे, निमित्त कारण भाइ; भिन्न भिन्न शक्तिंतणी, क्यांथी एक सगाइ- ॥१८१॥ सृष्टिनुं कारण कदा, ईश्वर नहीं कल्पाय; नहि तो रासभ पण कहो, सद्युक्तिधर न्याय ॥१८२॥ पृथ्व्यादिक परमाणुओ, यही सृष्टि निर्माय; ईश्वरमां यदि मानीए, चेतन क्यांथी आय. ॥१८३॥ परमाणु समुदायथी, जडतुं कार्यज थायः चेतन तेथी भिन्नछे, अरणि वन्हि न्याय, ा।१८४॥

( 848 ) प्रमारमद्यान. पुङ्गल द्वय अनादिछे, तथा जीव पण जाणः निश्चयधी वे भिन्नछे, भिन्नशक्ति पण आण ॥१८५॥ जडमां चेतन परिणमे, जाणो नय व्यवहारः अनेकान्तमत ज्ञान वण, लहो न सम्यक्सार.॥१८६॥ काल अनादि द्रव्य पर्, कर्ता ईश्वर केमः ईश्वरशक्ति नित्यवा, अनित्य शुं त्यां एम. ॥१८७॥ कर्तृत्वशक्ति नित्य तो, नित्य जगत् निर्माय, कत्ती शक्ति अनित्य तो. क्षणमां विणशी जाय ॥१८८॥ कर्तृत्वशक्ति याहशी, ताहश कार्यज थायः 1185311 नित्यानित्य विकल्पथी, वे पक्षे दूषाय-ईश्वर साकारी कहो, तोपण दोपित थाय, 1189011 पूर्वीपर विचारतां, दोषो बहुला आय. नेयायिकवादी कहे, कर्ता ईश्वर सत्यः 1189811 एण युक्तिथी लेखतां, लागे तेह असत्य. ईश्वर इच्छाथी कदा, मृष्टि नहीं निर्मायः निमित्त इच्छा जो कहो, केम स्वमाव न थाय. ॥१९२। का विनिगमना त्यां लहो, करो कदाग्रह दूरः स्वभावयुक्तिथी गृहा, तो मिंह दोष जहर उपादान मध्ये रही, तिरोमान जे शक्ति 118 2-10 का निर्माननाः परिपूर्ण निर्माण्यक्तिः

श्रद्धशक्तिछे वस्तुमां, वर्ते काल अनादिः आविर्भाव कराववा, निमित्तहेतु उपाधिः ॥१९५॥ आविर्भाव जे धर्मनो, कार्यरूप ते थाय; घटनुं कारण मृत्तिका, अनन्य कार्य कहाय.॥१९६॥ घटनो नाश कर्याथकी, होय न कारण नाशः कारण नित्यपणे रहे, मृत्तिकारूप खास. काल स्वभावने नियति, कर्म जद्यम ए पञ्चः कीर्य प्रति कारण सदा, धरो न मनमां खंच । । १९८॥ राग दोष जेने नथी, ते ईश्वर कहेवाय: तेने इच्छा जो कहो, तो ईश्वरता जाय-11र९९॥ कृत्य कृत्य ईश्वर थया, तेथी शुं इच्छाय; इच्छा ज्यां त्यां रागद्वेष, रागदोष दुःख पाय. ॥२००॥ रागदोष सहचारिणी, इच्छा भवतुं मलः ईश्वरंने इच्छा कहाँ, हहा मोह प्रतिक्ल. ॥२०१॥ इच्छा नहीं त्यां सुखशुं, कहेशे जन्न जो कोय; शर्म अनंतु समाधिमां, इच्छा त्यां नहि होय. ११०२॥ जडवस्तुज ईश्वरथकी, बने नहि कोइ काल; जंड स्वभाव न इरामां, धर मनमांहि ख्याल ।।२०३॥ ईश्वर शक्ति अनन्तंछे, जडनी शक्तिज लेशः सृष्टि बनेछे इश्थी, युक्ति लहा ए वेश. ॥२०४॥

ईश्वर कर्त्ता वादिनुं, वदवुं युक्ति हीन; जड ईश्वरना धर्म वे, वर्ते निश्चित्न भिन्नः ॥२०५॥ भिन्न धर्म वेना सदा, भिन्नधर्मी पण दोय; निराकार साकार एक, रूपी अरूपी जोयन ॥२०६॥ चेतन शक्ति अनन्त छे, पुद्गलशक्ति अनन्तः चेतनशक्ति ज्ञातृता, जडता पुद्रलतंत-निजस्वभावे शक्ति त्यां, कोइ नही परतंत्रः निश्चयनयथी जाणीए, ज्ञानी एम वदंत. ॥२०८॥ अनन्त शक्ति अस्तिता, निज द्रव्ये वर्ताय; पर अपेक्षाए ग्रही, नास्तिता एम थाय. ॥२०९॥ अनन्त शक्ति अस्तिता, नास्तिताज अवलोयः षड्द्रव्ये व्यापी सदा, निश्चयथी ए जोय. ॥२१णा चेतनथी जड जो वने, तो खरशूंग जणायः स्वप्न खुल्लडी सत्यरूप, सत्य विचारा न्याय.॥२१४॥ अनन्त शक्ति इशनी, ईश्वरमांहि समाय; कूपनी छाया कूपमां, तद्रत् जाणो न्याय ।।२१२॥ जड़नी शक्ति अनन्त छे, पुद्ग्रेश धर्मे जोय: वर्णादिक तेमां रह्या, अन्य न कर्त्ता कोयः ॥२१३॥ आत्मापेक्षायी अहो, जडनी शक्तिज लेशः सापेक्षा अववोधीने, लहो न मनमां क्रेशः ॥२१४॥

तालप्रट विष लेशाथी, इस्ती प्राण हणाय; निजनिजना धर्मे वडुं, अनेकान्तमत्न्याय. ॥२१५॥ ईश्वरथी सृष्टि बने, कदी नहीं कहेवाय; समज समजे सानमां, सद्युक्ति मन लाय. ॥२१६। जीव कहो चेतन कहो, अर्थ एकनो एक; ईश्वरसम छे आतमा, कत्ती इश न टेक ।।११७॥ लक्ष चोराशी योनिमां, अटता जीव अनन्तः कर्माष्टकना योगथी, पामे दुःख अनन्तः । ॥११८॥ काल अनादिथी ग्रही, जीवे कर्मनी राश; वांधे छोडे कर्मने, करतो परनी आश. ॥२१९॥ भवितव्यतायोगथी, थावे कर्म विनाश-अविचल आत्मस्वरूपनो, सहेजे थाय विकास ॥११०॥ इशु विभु परब्रह्म छे, परमेश्वर सुखधाम; सोऽहं सोऽहं पद लह्यं, तेने करुं प्रणामः ॥१२१॥ जीवो कर्म क्षपणथकी, अनन्त ईश्वर थाय; एकाऽनेक सिद्धात्मनी, ज्ञानी कुंची पाय; ॥१२२॥ क्म खप्याथी सारिखा, समज ज्ञानी विवेकः व्यक्ति स्वरूपे भिन्नता, गुणव्यपेक्षा एक. ॥११३॥ रागदांष जेने नथी, नहि रमता परभाव; अनन्त आत्मस्वरूपमा, रमता शुद्ध स्वभाव ॥११४॥

परम प्रभुसम ध्यानथी, स्वकीय चेतन धारः ध्याता ध्याने ध्येयरूप, सिद्ध बुद्ध निर्धार. ॥११५॥ तादक् ईश्वर सिद्धने, वन्दु वार हजारः तेना सम्यग् ज्ञानथी, लिह्ये भवजलपार ॥११६॥ सम्यग् ज्ञानिकयाथकी, मोक्ष न होय परोक्षः आत्मज्ञान ध्यानादिथी, त्वरित पामो मोक्षः ॥११९॥

भावार्थ-ईश्वरना वे भेदछे. अष्टकर्मसहित संसारि जीव ते पण अपेक्षाए ई वरछे, अप्टकर्मनो संपूर्ण नाश करी जे मुक्ति पाम्या ते सिद्ध परमात्मा ईश्वर कहेवायछे, जीवो कर्मरूप छछिना कर्त्ता पर-परिणतियोगे जाणवा, शाता अने अशाता वेदनीय कर्म ग्रही आ-त्मात्र पोताने सुख दुःख आपेछे. कर्मसृष्टिनो कर्त्ता तथा तेनो भोक्ता जीवरूप ईश्वर जाणवो. जीवरूप ईश्वर संसारिकअवस्थामां कर्मसृष्टिनो कर्ता जाणवो. सृष्टिकर्तृत्व जीवरुप ईश्वरने परभाव रमणतानी अपेक्षाए घटेछे एम रहस्य अनुमेक्षा करवा योग्यछे. जीवरूप ईश्वर, कर्षरूप सृष्टिनो कर्त्ता व्यवहारनयथी जाणवी. अश्रद्धनययी जीवरूप ईश्वर परवस्तुनो कर्त्ता निमित्तपणे जाणवो. हे भव्य आवी अपेक्षाधी ईश्वर कर्तृत्वरहस्य हृद्यमां धारण कर. शुद्ध निश्रयनयधी कर्मरूप सृष्टिनो कर्ता ईम्बर नधी. आस्मिक सहज मुखनो कर्ता अग्रद स्वभावधी आत्माछे. दुःखनो कर्त्ता परस्वभावथी आत्माछे. ज्यारे संपूर्ण अशुद्ध परिणति (परपरिणति) नो आत्मध्यानथी नाश धायछे त्यारे आत्माना अनंतगुणनो आ-त्मा स्वयं कर्ता थायले.

जे भव्यो सापेक्षता समजता नथी. अने एकांन पक्ष ग्रहण

करेछे ते शुद्ध परमात्मारूप ईश्वरने जडवस्तुनो कर्त्ता मानी भ्रां-तिभां पडेछे. कर्मरूप मलिनता जेनामां नथी एवा सिद्धबुद्ध परमा-त्माने शुं पयोजनछे के सृष्टिनी रचना करे. हे भव्य पक्षपात त्यजी माध्यस्थ दृष्टिथी अववोध.

परमम्भ, परमब्रह्मरूप ईश्वरमां रजोगुण, तमो गुणादि नथी. इच्छा नथी, अभिमान नथी, वेदांतमां पण कहांछे के न च स पुनरावर्तते मुक्तिमां गएला आत्माओ शुद्रबुद्ध थइ पश्चात् संसा-रमां जन्म लेता नथी. रागद्वेपरहित सिद्ध (ईश्वर) जडस्रष्टिनों कर्त्ता कदा वनी शकतो नथी. जडस्रष्टि रचवानो सिद्धबुद्धमां स्व-भाव नथी ते माटे.

प्रश्न-सिद्ध परमात्मा जडस्रिशना कर्त्ता नथी मानता त्यारे अन्य कोइ स्रिशना कर्त्ता छे के नहीं.

उत्तर-सिद्ध परमात्मा-ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्य, सुख आदि आत्माना अनंत शुद्ध गुणरूप सृष्टिना कर्त्ता छे। क्षायिकभावे आत्माना शुध्धरूप सृष्टिना कर्त्ता सादि अनंतमा भंगेछे. प-रमाणु आदि जडस्रष्टित्व स्वभावना वीलकुल कर्त्ता नथी। जे आत्माना शुध्ध क्षायिक धर्मना कर्त्ती थया ते कर्मरूप सृष्टिना कर्त्ता कर्दा थता नथी.

माटे विवेकद्दिधी भव्यात्मन् सत्यतत्त्व विचार,

यादक् उपादान कारण होयछे तादक् कार्यनी उत्पत्ति थायछे, जेम मृत्तिकारूप उपादान कारण जेवुं होयछे तेवुं घटरूप कार्य यनेछे. उपादान कारण कार्यरूप वनेछे. घटकार्यमां कुंभकार नि-मित्त कारणछे. घटरूप कार्यमां उपादानकारण मृत्तिकाछे. अने निमित्तकारण कुंभकार. दंडचक वगेरेछे. तेम जो कर्मरहित परमा-स्माए जगत् बनाव्युं एम कोइ माने तो तेमां उपादान अने निमित्त कारण कोण? निराकार ईश्वरने जगतनं उपादान कारण मानतां जगत्रू ईश्वर बन्यो. ए पण महादूपण आवेछे. सिध्धान्त एवो छे के निराकारथी साकारनी उत्पत्ति धनी नथी. माटे निराकारथी जङस्रिष्ट रचाती नथी एम सिध्ध टरेछे.

वळी नियम एवोछे के उपादान कारणधी कार्यनो अभेदछे, जेम मृत्तिकारूप उपादानथी घटरूप कार्यनो अभेदछे. मृत्तिकाथी घट भिन्न नथी. तेवीज रीतिथी निराकार ईश्वरथी जड सृष्टि मान-वामां आवे तो जगत्रूपज ईश्वर बन्यो, सृष्टिरूप कार्यथी ईश्वरनो अभेद थयो माट जडमृष्टिरूप ईश्वर मानवामां आवे तो अनेक दु-पणरूप खेदनी माप्ति थायछे,

सृष्टिकार्यमां ईश्वरने निमित्त हेतु मानतां वे किकल्प उत्पन्न थायछे, ईश्वरनी शक्ति नित्यछे के अनित्यछे ? उपादान कारणविना फक्त निमितकारणथी कोइ कार्य वनतुं नथी. कार्यनी पूर्वे उपादान तथा निमित्तनो सङावछे. उपादान विना निमित्तभूत ईश्वरथी सृष्टि-रूप कार्य बनी बके नहीं, ईश्वरनी इच्छा निमित्त हेतु कोइ माने तो ते पण योग्य नथी, कारण के ईश्वरनेड्च्छा होनी नथी. अपूर्णने इच्छा होयछे. कृतकृत्य परमान्माने अंशमात्र पण इच्छा होती नथी. प्रमाण युक्ति अनुभवथी विरुद्ध सृष्टिहेतु ईश्वर कल्पानो नथी. तेम छतां यदि ईश्वर मानवामां आवे तो रासभने केम मानवामां न आवे ? पृथित्रीआदि परमाणुओनुं ग्रहण करीने ईश्वर सृष्टि रचेछे एम जो मानवामां आवे तो जीवो क्यांथी आव्याः जीवो अनादिकालनाछे एम कहेबामां आबे तो मृद्विपण अनादिकालथी हे एवं केम मानता नथी. अनादिकाळना जीवो सृष्टि विना अन्यत्र रही शकता नथी मार्ट रुष्टि पण अनादिकालथी छे एम स्पष्ट भाने छे.परमाणुओना कार्यधी चेतन (आत्मा) भिन्नछे मादे अग्णिमा बन्ति रहेछे तेत्रीरीने आत्मा

पण देहमां रहेछे पण पंचभूतथी भिन्नछे. जड अने चेतन एवे वस्तु आ ममाणे विचारतां अनादिकालथी छे एम सिद्ध थायछे. जीव अने जडनी परस्पर शक्तियो पण भिन्नछे. जडवस्तुमां चेतन कर्मनावशे परिणमेछे ते व्यवहारनयथी जाणवं. निश्चयथी जडमां चेतन परि-णमतो नथी, आ ममाणे अनेकान्तनयज्ञान थया विना तत्त्वनं यथार्थ भासन थतुं नथी।

धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, पुद्रलास्तिकाय, आकाशास्ति-काय, काल अने जीव एम पड्द्रन्यथी जगत् कहेवायछे. अनादि-कालथी पड्द्रन्यछे. ते पड्द्रन्य, द्रन्यार्थिकनयथी नित्यछे अने पर्यायार्थिकनयथी अनित्यछे. ते पड्द्रन्यथी भिन्न कोइ वस्तु नथी। तो पड्द्रन्यनो कर्त्ता ईश्वर केम मानी शकाय. अर्थात् न मानी शकाय. हवे वे विकल्प करवामां आवेछे। जगत्कर्तृत्व शक्ति ईश्वरमां नित्य छे के अनित्यछे ? जगत्कर्तृत्व शक्ति नित्य मानवामां आवे तो ईश्वर सदाकाल जगत् वनान्या करशे। एवं महादोष आवेछे, तेमज ज-गत्कर्तृत्व शक्ति अनित्य मानवामां आवे तो जगत्त्र्वृत्व शक्ति क्षणमां अनित्य होवाथी विणशी जतां सृष्टि पण क्षणमां नाश पामी जाय. पण तेम प्रत्यक्ष अनुभव विरूद्धछे माटे वे पक्षथी ईश्वरशक्ति जगत् कर्तृत्वमां सिद्ध थती नथी। एम नित्यानित्य पक्षथी ईश्वरशक्ति दूर थायछे।

जगत् कर्ता ईश्वरने साकारी मानवामां आवे तो अनेकदोषो उत्पन्न थायछे. साकार ईश्वर एकदेशावस्थित होवाथी सर्वत्र सृष्टि घनावी शके नहीं साकारकुंभकारवत् साकारकुंभकारनी पेठे कर्म विना देह होय नहीं. अने देहवडे ईश्वर साकार देवतानी पेठे कर् हेवाय तो कर्म सहित ठर्यो. सकर्माईश्वर ठरवाथी अन्य जीवोनी पेठे कर्मना परतंत्र रह्यो, अने स्वतंत्र थयो नहीं. न्यारे ते जगत् बनाव- वामां कथं समर्थ धाय.

नैयायिक कहें छे के सृष्टिनो कर्ता ईश्वर सत्य छे पण ते पूर्वी-क्त युक्तिथी विचारतां सत्य नथी. ईश्वरनी इच्छाथी जगत् उत्पन्न थयुं एम मानवागां आवे तो अनादिकाल ी जह अने चेतन वे पदार्थ छे. एम अनादिस्त्रभाव केम न मानवामां आवे, अर्थात् त्यां एकत्र पक्षपातिनी युक्ति कड् छे के अनादिकालनो स्वभाव न मानवामां आवे अने इच्छाज मानवामां आवे. इच्छा मोहरूप छे. ईश्वरने इन्छा कहोतो साधारण मनुष्यनी पेठे ईश्वर पण मोही ठर्यो त्यारे तेनुं ईश्वरपणुं रहेतुं नथी. माटे ईश्वरनामां इच्छा मानवी ते शसश्रंगवत् असत्य छे. आत्मानी परमात्मदशामां ज्ञान, दर्शन, चा-रित्र, बीर्य, मुखादि गुणो जपादान कारणछे. तेनो परिपूर्ण आवि-भीव तेज परमात्मपणुं जाणवुं. अनन्तधर्मनी शुद्धि मगटाववा निमित्त हेतुनी जरूरछे, आत्माना धर्मनो आविर्भाव तेज कार्य जाणतुं. घटनुं कारण जेम मृत्तिका अनन्य कारण कहेवायछे तेम परमात्म दशारूप कार्यमां हान, दर्शन, चारित्ररूप अनन्य कारण उपादानछे. घटनो नाश थवाथी मृतिकानो नाश थतो नधी. अधीत कारण सदाकाल वर्ते छे. अत्र काल, स्वभाव, नियति, कर्भ, अने उग्रम पंच कारणथी कार्योत्पत्ति थायछे. पंच कारणमांथी एक कारणनी उत्या-पना करतां मिथ्याल माप्त थायछे. आ वावतमां छेशमात्र पण शंका करवी योग्य नधी.

राग अने द्वेपनो सर्वथा जेणे धय क्यों छे ते ईश्वर परमान्मा कहेवायछे. एवा शुद्ध परमात्माने जो इच्छा कहेवामां आये तो ईश्वरतानो नाश थायछे. सर्व मकारनी इच्छानो जेणे नाश क्यों छे एवा ईश्वरने जगन् करवानी इच्छा क्यांथी होय. अलवन कदी होय नहीं, रागद्देपसहचारिणी इच्छाज संसारनं मूलछे. अने तेवी इच्छा

ईश्वरने कहेवी ते मोहचेष्टित जाणवं. अहो अज्ञाननी केटली शक्तिः

कोइ एम कहे के-ज्यां इच्छा नथी त्यां शुं सुख ? अलवत कंइ नहीं. आवी रीते वोलनारे समजवुं के योगीन्द्रमहात्मा समाधिमां अनन्त सुख वेदेले, पण ते समये तेने इच्छा नथी माटे इच्छा होय त्यां सुख एवी व्याप्ति घटती नथी.

दस्यजडवस्तु कदापि ईश्वरथी वनी शके नहीं. ईश्वरमां जडस्व-भाव नथी. जडवस्तुनो कत्ती वान्याय आपनार ईश्वर नथी. हे भव्य हृदयमां अवधार.

कोइ एम कहेशे के-ईश्वरनी शक्ति अनन्तछे अने जहपदार्थनी शक्ति अल्पछे माटे ईश्वरथी सृष्टि वनेछे. आ युक्ति पण वेश नथी ते जणावेछे. ईश्वरनी शक्ति चैतन्यभावे अनन्तछे तेम जहनी शक्ति जहभावे अनन्तछे. ईश्वरना धर्म अनन्तछे जेम जहतत्त्वना धर्म पण अनन्तछे. आत्मा अने जह वे तत्त्व भिन्नधर्मीछे. जहपुद्गल द्रव्य साकारछे अने आत्मतत्त्व निराकारछे. प्रत्येक तत्त्व स्वस्व-भावे स्वतंत्रछे. वस्तुतः कोइ द्रव्य परतंत्र नथी. प्रत्येक द्रव्यमां अनन्त अस्तिधर्म अने परनी अपेक्षाए अनन्तनास्तिधर्म रह्योछे. अस्तिधर्म अने नास्तिकधर्मनी अनन्तता पड्द्रव्यमां व्यापी रहीछे. अन्य द्रव्यनो कर्त्ता अन्यद्रव्य वस्तुतः नथी.

चेतनथी जो जडनी उत्पत्ति उपादानपणे थाय तो खरशृंगनी पण उत्पत्ति थायः पण खरने शृंग थतांज नथी ते प्रमाणे ईश्वररूप चेतन्य मूर्तिमांथी जडवस्तु थती नथीः त्यारे ईश्वरमांथी जगत् थयुं एवं प्रलाप करवो ते अंधश्रद्धानी बुद्धि विना अन्य समजातुं नथीः स्वम सुखडीथी पेट भराय तो ईश्वरमांथी जडनी उत्पत्ति थायः

आ प्रमाणे सिद्धांत वदवाथी प्रश्न थशे के अहो ज्यारे परमा-त्माथी जगत्नी उत्पत्ति थती नथी, त्यारे तेमनी अनन्त शक्ति शा कामनी ? तेना पत्युत्तरमां जणावेछे के-ईश्वरनी ज्ञानादिक अनन्त शक्तियो ईश्वरमांज समायछे. ऋपनी छाया ऋपमां समायछे ते प्रमाणे अत्र न्याय समजवो. जडद्रन्योनी अनन्त शक्ति जडमां न्यापी रहीछे. पुहलद्रन्यना वर्णादिकनी शक्ति पुहलद्रन्यने त्यजी अन्यत्र जतीनथी. पुहलद्रन्यनो निश्चयथी अन्यद्रन्य कर्त्ता शीरीते होइ शके,

आत्मद्रव्यनी अपेक्षाए पुद्रलद्रव्यनी शक्ति अल्प गणायछे.
पण वस्तुनः जेम आत्मद्रव्यनी आत्मस्वरूपे अनन्त शक्तिछे तथा
पुद्रलद्रव्यनी शक्ति पण तेना स्वरूपे अनन्तछे. सापेक्षा अववोधतां
कोइपण मकारनी हानि आवती नथी. तालपूटिवपछेशथी हस्तिना
माणनो नाश थायछे, एक लेशमात्र तालपुटिवपथी हस्तिनो माण
नाश थाय त्यारे कहोके पुद्रलनी शक्ति केटलीछेः आत्मानी शक्ति
अपेक्षाए मोटीछे तेमन पुद्रलनी शक्ति पुद्रलनी अपेक्षाए मोटीछे.
आ उपस्थी सिद्ध थायछ के शुद्धसुद्धपरमात्माथी सृष्टि यनी शके
नहीं, माध्यस्थद्दिवाला पुरुषो सहजमां तन्त्व अयवोधी शकेछे.
ईश्वर सर्वत परभावरूप सृष्टिनो कर्त्ता नथी. एवी प्रतिता सुक्तिमनीछे.

चोराशीलक्षजीवयोनियां जीवो परिश्रमण करें छे. अज्ञान राग हेप प्रयोगे जीव संसारमां परिश्रमण करें छे. कर्मथीज संसारमां परि-श्रमण थायछे. कर्यों कर्म प्रमाणे गुल दुःख थायछे त्यारे शामाटे हे ईश्वर तें मने दुःख आप्युं एम असन् वद्युं जोड़ए. अनादिका-त्यी जीवनी साथ कर्मनो संवंबछे. भावकर्म रागद्वेपयोगे जीव द्रव्यकर्मने ग्रम्ण करें छे. तेने भोगवी विखें छे. पश्चकारणनी सामग्री मळे त्यारे कर्मनो नाश थायछे. कर्म नाश थनां अविचल आत्म म्यस्पनो सहेज विकाश भायछे.

इथु, विगु, परमज्ञान, परमेश्वर, मुख्याम ज्ञहानी स्थिति शुद्ध

सत्ताने अंगीकरी, माने अद्भैत एमः संग्रहनय एकान्तथी तरे भवोद्धि केम-१३८ प्रथम विषम दृष्टान्तथी, साध्यसिद्धि शुं थायः प्रतिविम्बरूपितणुं, अरूपि शुं ते पायः २३९ प्रति।वेम्ब पुदुगलतणुं, जल चन्द्रे दृष्टान्तः जीव अरूपी वस्तुमां, प्रतिबिम्ब निह भानतः २४० प्रतिविंबधी जाणशो, प्रतिविंवक छे भिन्नः प्रतिविंवकना भावथी, प्रतिविंव छे खिन्न-इ८१ प्रतिबिंबित चन्द्रनं, भिन्नपणुं त्यां छेकः कथं साध्यनी सिद्धि छे, छे नहीं चेतन एक. २४२ व्यापक आतम एकतुं, अंशपणुं नहीं होयः भिन्न भिन्न जीवांशथी, आतम एक न जीय. २४३ आतम एकथी सर्वने, राम दुःख समकालः सुख दुःख आच्छादक कहो, दैतपणुं त्यां भाळ.२४४ घटाकाश जपाधिथी, श्रहो गगननो भेदः तेवी उपाधि अत्र नहीं, सुल दुःख वारक वेद.२४५ समकाले सुख दुःखनो, जीवोने प्रतिमासः अधिक न्यून प्राप्तितणो, मळे नहीं अवकाशः २६६ मळे नहीं अवकाश तो, तेनुं कारण कोण; भिन्न भिन्न चेतन विना, घटे नहि कंइ और १४७

व्यक्तिथी सहु भिन्न छे, सत्ता ए सहु एकः आत्मतत्त्व अववोधधी, मानो एकाऽनेकः इ४८ सर्वत्रज व्यापक कहो, युक्ति घटे नहि कोइः सम्मतितकें जाणशो, कत्तुं विचारी जोइन २४९ सर्वत्रज व्यापक कहो, पिण्डे किम वंधाय: देहे व्यापी जो कहो, अव्यापक पद पाय. १५० व्यापक नहि वंधाय छे, गगन पङ्कनी पेर; सर्वत्र सुल दुःलनी, प्राप्तितणुं छे झेर-243 सर्वत्र व्यापक कहो, कदा नहीं वंधायः मानो तो छे अज्ञता, सद्युक्ति न जणाय-**१५**१ अव्यापक छे आतमा, तेमां नहीं संदेहः व्याप्यने व्यापक वोधधी, थाशो निःसंदेह. श्पर् शैलेशीकरणे करी, व्यापक आतम लोक: असंख्य शुद्ध प्रदेशथी, जाणी भविजन योक. १५४ अब्यापक ब्यापक लहो, चेतन ग्रणनी खाण: अनेकान्त अववोधथी, पामो शिवपुर ठाण-२५५ सादि आदि भंगे करी, व्यापक चेतन जाणः स्यादाद दृष्टि यकी, साचुं मनमां आण-345

केवलज्ञाने आतमा, व्यापक सहुमां जीयः स्वेपर प्रकाशक आतमा, प्रदीप पेठे होय-र्प७ तिमिरारि प्रगटे तदा, तमने। शो छे भारः ज्ञानदीपक उद्योतथी, रहे नहि अंधकार. १५८ अद्वेत स्वरूपी आतमा, जडधी भिन्न विचार; द्वैतपणुं पण तेहमां. एक अनेकाधार-249 अक्षररूपे आतमा, अनक्षर राणवानः; आत्माऽसङ्ख्य प्रदेशमां, स्थिरता शुद्ध वलाण १६० भास्यो आपोआपमां, टळ्युं महा अज्ञान; अंपूर्व वीर्यज उहस्यं, यदा थयं निज भान-२६१ जह इन्द्रियो शुं करे, तेनाथी हुं भिन्न; जडस्वरूपे तेह छे, क्षणिक नाशी दीन. प्रह्र मन वाणी मारां नहीं, जड़नुं छे ते काज; तेनी संगे राचतां, नहीं रहे मुज लाज. , यह ३ हुसुं रमुं: कोनाथकी, कोनापर ममभाव; मृगजलोपम वस्तुमां, शो ममतानो दाव-व्हर नहीं मारु जड वस्तुमां, राचं शुं संसार;

् शाधी शाने माटे में, लीधो मही अवतार.

रहप

ु फोगट फंदामां पड़यो, जरा न दार्म जणाय; स्वळे पन्थे चालतां, मनमां शुं खमचाय. त्रहह नथी तनु ते तुं सदा, शरीर माटीघाट; पींपळपानपरे खरे, चेत चेत ते माट-थइए सहने देखं ज्ञानथी, सह म्हाराथी दूर; प्रतिबंध कोनो नहीं, सिंह इब हुं शूर. १६८ रागदोष निन्दा कथा, तेवुं भाग्युं जोरः स्वाभिमुख यइ चेतना, प्रगटयो अनुभव तोर १६९ शत्रुथी छेदाउ नहीं, नहि शस्त्रे भेदाउ ? शत्रुमित्र सम भावना, भ्रमणा क्यांथी पाउ? कर्मवशे सह प्राणिया, अमण करे निर्धारः पुत्र मित्र ललनापणे, सगपणनो आचार. 208 सगपण साचुं निह कदी, स्वारिययो संसार; जगमां को केनुं नहीं, संवेगे मनधार-इ७इ सर्व जीव छे सिद्ध सम, निर्मल अविचल देव; त्रिकरण योगे तेइनी, मित्रभावना सेय-१७३ इन्यार्थिकथी नित्य हे, कदीं न होवे नाशः

असंस्यवदेशिव्यक्तिथी, ध्रुव स्वरूपी खास- १७४

पूर्वजन्म अभ्यासथी, जीव नित्यता सिद्धः बाल युवा चृद्धा विषे, ज्ञाता एक प्रसिद्धः १७५ सणे क्षणे बदलायतो, चेतन होय अनेकः पाप पुण्य कोने घटे, तेनो करो विवेकः १७६ श्रीणक वस्तुना ज्ञानथी, क्षणिक वाद सुजाणः

वक्ता क्षणिक नहीं थयो, नित्यक्ष मन आण १७७ कोइक वस्तुनो कदी, केवल नाश न होय. चेतन नाश कह्या थकी, अन्यावस्था जोय. २७८ अन्यावस्था को नहीं, माटे चेतन नित्य.

२७९

२८०

२८१

२८२

२८३

प्रत्यभिज्ञा सहेतुथी, नित्यज जाणो चित्त. पर्याये पलटाय छे, आंतमना पर्याय. अनित्य माटे आतमा, अनेकान्तमतन्याय.

शुभाशुभ आश्रव ग्रही, धरतो नाना देह. शाताशाता भोगवे, नय व्यवहारे एह.

पुण्य पापना नाश्यी, प्रगटे निजगुण भोग. सूर्याच्छादक अभ्रनो, टळे महासंयोग.

कर्मसंग टळवा थकी, पामे जीव शिवडाण.

अगम्य आत्मस्वभावनुं, अवलम्बन करनार. आश्रव त्यागी संवरी, भवोद्धि तरनार. २८४ जेने इच्छे योगिजन, अनन्यसुखनुं धाम. नमं नमं ते आतमा, अनन्तगुण विश्राम. २८५ अवलम्बन शुभ आत्मनुं, करतां नाशे दोप, प्रगटे अनुभव ज्योति त्यां, चेतन वीर्ये पोप. २८६ निजपद जिनपद साम्यता, भेदभावनो नाश. पूर्ण व्यक्तिमय आतमा, राजाने कुण दास. २८७ सर्व सिद्धनी तुल्यता, जीव अनन्ता माय. कोकोने नडता नहीं, अरूपपद महिमाय. २८८ विषमज्वरना जोरथी, होय अरुांचे अन्न. अभव्य आदि जीवने. आत्मरूचि नहिमन. २८९ सम्यग् ज्ञान प्रभावथी, बहिरातम पद नाश. अन्तरात्मगुण भावना. प्रगटे शिवपुर वाय. 290 परप्रवृत्ति हेतुओ. समूळ त्यां छेदाय. अन्तर परमप्रभुपशुं. सहजे उदये आय. २०१ हुं कर्ना परभावनो. धुद्धि भवनुं मूल. अन्तरात्मपद योगथी, थाय तह निर्मेल, २९२

स्वद्रव्य स्वक्षेत्रथी, निजकाले निजभाव: अस्तितत्व बहु भंगथी, निजद्रव्ये चित्त लाव. ३११ जीवादिक नवतत्वमां, प्रथमज अस्तिहिभंगः कदी निह जे वस्तु जग, प्रगटेनिहिधरि अंगः ३१२ धर्माधर्माकाशकाल, पुदुल पंचम जोय; जीवद्रव्य छटुं कह्यं, अस्ति भंग अवलोय. ३१३ भूत भविष्यत् संप्रति, त्रिकाले वर्तीयः षड्दव्योमां जाणिये, अस्तिभंग स्थिरताय-388 समये समये अस्तिता, अनंतराणनी जाणः चेतनद्रव्ये वर्तती, सिद्धान्ते व्याख्यानः 384 द्रव्ये द्रव्ये अस्तिता, भिन्न भिन्न कहेवायः द्रव्यज गुण पर्यायनी, अस्तिताज निजमांय. ३१६ पुद्गलना पर्याय जे, घटपटरूपे लेख; तदाकारछे अस्तिता, सादि सान्तथी देख-३१७ द्रव्याधिक नय जाणिये, अनाद्यनंतज भंगः पुद्गलमां व्यापी रह्यो, सादिसान्त ग्रण चंग. ३१८ स्यात्रास्ति बीजो कहुं, मंग अति सुलकार; पड्दब्योमां ब्यापियो, सापेक्षाये धार. ३१९

परद्रव्य परक्षेत्रथी, परकालज परभावः नास्तिता तेनी सदा, निजमां वर्ते दाव. ३२० प्रही अपेक्षा परतणी, घटे नास्तिता आयः परभावे पड्द्रव्यमां, नास्तित्वं,स्थिरतायः ३२१ परद्रव्योनी अस्तिता, तेज नास्तिता रूपः प्रणमे निजनिज द्रव्यमां, सापेक्षाए अनुपं 345 पूछे पृच्छक अत्र एम, घटे न वे एक ठाम: तमः तेज प्रतिपक्षित्रं, घटे न एकज धाम ३५३ नैकस्मिन् ए सूत्रथी, रहे न वे एकत्रः अस्ति नास्ति एकत्र निह, भाखो सद्युरु अत्र ३१४ सापेक्षाए सहु घटे, तथा सर्व समजाय; पिता पत्रल एकमां, वन्ने धर्म सहाय-३१५ चेतनतं अस्तित्वते, परमां नास्ति स्वरूपः परमां नास्ति नहीं रहे, विघटे वस्तु अनूप ३१६ विना अपेक्षा अस्तिता, नास्तिता नहीं जोयः नैकस्मिन् ऐ सूत्रतो, स्यादादे अवलीय ३१७ जे समयेछे अस्तिता, नास्तिपणुं ते कालः एकसमयमां वर्तना, पर्द्वयोमां भालः ३२८ अस्ति नास्ति त्रीजो कह्यो, भंग समय सिरताज यह्रहयोगां व्यापियो, जिनदर्शन साम्राज्य

अस्ति शब्द उच्चारतां, समयो वहे असंख्यः नास्ति शब्दोचारमां, तथा कहे भगवंत. ३३० एकज समये अवाच्यछे, कदी न कोइ कहंत: अवक्तव्यज भंगछे, चोथो सुत्रे लहंत ३३१ अस्तिधर्म अनन्तछेज, वाणी अगोचर थायः पश्चमभंग ते उपजे, अनेकान्त शोभाय-३३२ नास्तिधर्म अनन्तता, वस्तुमध्ये रहंतः अवाच्य वाणीथी कहाो, छठो भंग कहंत. , ३३३ अस्तिनास्ति वे छे सदा, अवक्तव्य ते होय; सप्तमभंगज सर्वमां, समय समय अवलोय-३३४ यरुगमज्ञानअवाप्तिथी, भंगज सप्त स्वरूपः जाणी आत्मस्वभावमां, अपहरीए भवधूप-३३५ अतिगहनछे तत्त्वबोध, विरलाजन समजंतः सज्जन भवसागर तरे, करी कर्मनो अन्त. ३३६ सप्तभंगीछे सिद्धमां, अनन्तरुणयां जोय; अनेकान्तनय जाणतां, शुद्धं समांकेत होय. ३३७ नवतत्त्व पड्दव्यनुं, सत्यज्ञान जो थायः तो जाणो ज्ञानिपणुं, सहेजे शिवपद पाय , ३३८ समिकतादि मोहिनी, तेनो उपशम भावः श्वयोपशम श्वायिकपणे, प्रगटे समकितदाव.

निजयण स्थिरता चरणथी, थाता यण उद्योतः स्वयंश्रुद्ध परमातमा, प्रगटे निर्मल ज्योतः ३४० यणस्थानक स्पर्शन थतां, सहजे यण प्रगटायः परिपूर्ण निजव्यक्तियी, अविचलपदवी पायः ३४१ पट्स्थानक अववोधथी, समिकत प्रगटे चंगः षट्स्थानक धारो सदा, यण प्रगटे निज अंगः ३४२ अस्ति चेतनद्रव्यनी, चेतनद्रव्य अनन्त संसारीने सिद्ध दोय, ज्ञानी एम चदन्तः ३४३ नित्यज चेतन द्रव्यक्ते कत्ती हत्ती जोयः वर्भथकी मूकाय शिव, तेनां कारण होय. ३४४

#### शिष्य जवाच

नथी हश्य ते हिष्टिथी, स्पर्शे ग्रह्मो न जाय;
आत्मद्रव्यनी अस्तिता, अनुभवे न जणायः ३४५
मानो देहज आतमा, अयवा श्वासोश्वासः
पंचतत्त्वनुं प्रतल्लं, अन्य कयो आभास ? ३४६ व्
घटपट यथा जणायले तथा न चेतनद्रव्य;
माटे चेतन नास्तिता, मिथ्या माने भव्य. ३४७
यदि नथीजो आतमा, तपजप संयम फोक;
पुण्यपापनी कल्पना, भूले भोळा लोकः ३४८

( ३६८ )

शंका माटी जीवनी, टाळो सद्युरुदेव; मंतिहीन हुं जीवछुं, कापो क्रमाति देव-३४९.

सद्गुरुः जवाच उत्शंगुलरूति सजी, ग्रही सुयुक्ति दीप; समजो चेतन अस्तिता, यथाऽस्ति मौक्तिक छीप-३५०

पत्रमृतथी भिन्नछे, अरूप निर्मल शुद्ध देहे व्याप्यो जीवछे. मळ्युं जदकमां दुध-

हुं सुखी हुं दुःखी एम, बुद्धि देहनी नांयः मृत कलेवरमां कदी, जरा न चेष्टा त्यांय-

कठीन शीतत्वादि गुण, पंचभूतना जोय; चैतन्यादि त्यां नहीं, सूक्ष्मपणे अवलोय. अरूप चेतन चक्षुथी, ग्रह्मो कदा निह जाय:

पुद्रगलस्कंधो स्पर्शथी, ब्रह्मा सदा जोवाय. श्वासोश्वास ते स्पर्शथी, सदा अहो ग्रहवाय; बाहिर् जातो आवतो, ते चेतन शुं थाय.

ज्ञातताश्रय जीव छे, पुद्गल नहीं कदाय; नहीं तो घटपट वस्तुमां, ज्ञातृशक्ति ग्रहाय.

मद्यांगे मदशक्तिवत्, पत्रभूत संयोगः;

चैतन्यशक्ति उद्भवे, ते शक्ति पण फोक.

३५१

३५्र ३५३

३५४ ३५५

३५६

३५७

भिन्न भिन्न मद्यांगमां, मदशक्ति अवभासः भूत भूत प्रत्येकमां, ज्ञानतणो निह वास. ३५८ बुद्धयादिक आधार जे, तेहिज चेतन पेखः आदि शब्दथकी प्रहो, स्रख दुःख कार्योक्षेख. ३५९ बुद्धयादिक आश्रित जिहां, त्यां गुणपात्र जणायः रूपादिवत् जाणीए, चेतन सिद्धि चपाय. ३६० गुण निराश्रय नहीं कदा, आश्रय छे घटरूपः बुद्ध्यादिक आश्रय तथा, आनन्दघन चिद्द्प. ३६१ विद्य जवाच.

बुद्धचादिक आधार तो, इन्द्रियो कहेवायः चेतननी शी कल्पना, करवी सद्युरुराय.

३६२

गुरुः ज्याच.

उपहत इन्द्रियो थकी, विषयस्मृति न घटायः आश्रयनाशे स्मृतितणी, उत्पत्ति केम थाय? ३६३ कर्णेन्द्रियना नाश्यी, स्मरणतणो नाहे क्षोदः स्मृत्याश्रय ते आतमा, मानो सत्यज बोध. १६४ अनुभव्युं जे इन्द्रिये, तेनो धातां नाशः स्मृति इन्द्रियो अन्यमां. ते पण भिष्याभाम. ३६५ थातां एमज चेत्रने. यया अनुभव जहः स्मृत्युएति मेत्रनं, घटे न यक्तिज तेहः. ३६६

#### 'शिष्य उवाच.

भले न थावो इन्द्रियो, बुद्धि आश्रय कोइ; बुद्धि आश्रय देह छे, कहुं विचारी जोइ. ३६७ शरीरनाशे बुद्धिनो, नाशज थातां दीठ; मस्मीभृत शरीर तो, चेतन थाय अदीठ. ३६८

## सद्गुरु जवाच.

वाल युवादिक भेद त्रण, तनुना एह प्रसिद्धः; वालदेहथी भोगन्धं, स्मृति ते तेणे लीध. ३६९ तरुण तनुमां तेहनी, स्मृति कदा नाहे थायः; वालशरीर भागन्धं, कथं युवान जणाय. ३७० मृतक शरीरे बुद्धिनी, स्कृति कथं न थायः; माटे बुद्धचाश्रय कहो, चेतन स्मृती आय. ३७१

#### शिष्य ज्याच.

बुद्धवाश्रय नाई देह तो, श्वासोश्वास जणाय; श्वास नहीं त्यां सुख दुःख, कदा न निरख्यं जाय. ३७२ श्वासोश्वासे भिन्नता, नाह ते एक स्वरूप; बुद्धवाश्रय तेने कहो, ए पण जडता रूप. ३७३ एकज श्वासोश्वासथी, कीयो अनुभव जेह; अन्यश्वास स्मर्का नहीं, बुद्धवाश्रय नहि एह, ३७४ बुद्धयाश्रय जो श्वासतो, त्वक्थी ते स्पर्शीयः त्वचा ग्रहेछे श्वासने, केम न बुद्धि ग्रहाय. ३७५ सोऽयं प्रतीतियोगथी, बुद्धयाश्यय जे होयः आत्मतत्त्व ते जाणीए, निह त्यां शंका कीय. ३७६ शिष्य जवाच.

देहादिकथी भिन्न जो, मानो चेतनसय; भिन्न करी देखाडीए, असिम्यानने न्याय. ३७७ गुरु: जवाच.

वायुरूपी पण नेत्रथी, निरूचो कदा न जाय; जीव अरूपी चक्षुथी, कथं अहो निरखाय. ३७८ वौरू जवाच.

श्वाणिकसंतित ज्ञाननी, तेतो चेतन मानः प्रवृत्तिरूप विज्ञाननो, आलय उपादान. ३७९ एकरूप नहीं ज्ञाननुं, क्षणे क्षणे वदलायः ज्ञानसन्तित आतमा, मानो सवलो न्याय. ३८० श्वाणिक सन्तित ज्ञाननी, मानंतां निह दोपः श्वाणिक उत्तर ज्ञानमां, पूर्व ज्ञाननो पोप. ३८१ गुरुः ज्ञाच.

ज्ञान क्षणिकनी सन्तति, चेतन नहि कहेवाय; क्षणिक सन्तिति मानतां, पुण्य पाप कुण पाय ? ३८२

जपादान कारणतणो, कदा विनाश न थाय, आलयनो जो नाराती, वृत्ति क्यां प्रगटाय. ৾৾ঽঽ आलयने ध्रुव मानीए, तो ते चेतनरूपः मानंतां दोषज नथी, करवी समजी चूप-३८४ आलयने प्रवृत्तिमां, मानो जो यदि मेदः **उपादान** कारणतणो, थाशे त्यां विच्छेद. ३८५ बने नहीं घट वस्तुथी, सूत्रतणी समुदायः कारण कार्यज भिन्नता, त्यां शुं कार्यज थाय. ३८६ चैत्रमेत्र इव भेद त्यां, कारण कार्यज भावः स्मृतिभंग त्यां होयछे, घरेशुं युक्ति दाव ? इंद० क्षणिक सन्तिति ज्ञानमां, कारणकार्याभेदः मानो तो क्षणवादनो, थाशे निश्चय छेद. उत्तरज्ञानद्शा विषे, पूर्व ज्ञान जो होय. स्थिरबुद्धि तेथी थइ, बुद्धि नाश क्यां जोय, ३८८ आलयनी जे स्थिरता, तेतो आतम मानः वन्धमोक्ष सह तो घटे, चेतन ग्रणछे ज्ञान-३८९ पूर्वजन्मना स्मरणथी, पुनर्जन्मता सिद्धः पुण्य पाप फल भोगवे, चेतन नित्य प्रसिद्ध. चेतन नित्यज होय तो, कर्म न लागें कोंयः अनित्य माटे आतमा, क्षण क्षण नाशी होय. ३९२

आ क्षणमां जे आतमा, ते क्षण विणशी जायः पुण्य पाप सुल दुःलनी, घटना कहो शी थाय. ३९३ अन्य करेने अन्यने, पुण्य पापनो बन्धः अन्यतणो जो मोक्षतो, ए सहु मिध्यायंघ. ३९४ को कर्त्ता भोक्ता अहा, सहुधी अवळो न्यायः नित्य आतमा मानतां, कर्चा भोक्ता थाय. ३९५ अभ्रसंग द्रे थतां, निर्मलखि प्रकाशः नित्य आतमा मानतां, होवे दोप विनाश. ३९६ जेनी संयोगे करी, उत्पत्ति नहीं याय: नाश होय निहः तेहनो, माटे नित्य सदाय. ३९७ अहंकृतिने क्रोधनी, केशरी फणियरमांयः भासे तस्तमता घणी, पूर्ववासना त्यांय. ३९८ पूर्ववासना योगथी, नित्य आतमा सिक्द; क्षणिकचेतन बुद्धिने, देशवटो एम दीध. ३९९ आशंका शिष्य जवाच. जीव न कर्त्ती कर्मनी, कर्मज कर्त्ती कर्मः चेतन कर्ता कर्मना, धर्म जीवना मर्म-

कर्ताने भोक्तापणुं, भासे प्रकृति घर.

सदा असंगी आतमा, जलपंकजनी पेर. 80%

इंश्वर इच्छा योगथी, कर्मतणोछे धंधः सुख दुःख तेथी संपजे, माटे जीव अबंध. ४०२ सद्गुरुः जवाच-समाधान. काल अनादि परिणम्यां, चेतन पुद्गल दोय; अशुक्रपरिणतियोगथी, कर्त्ती कर्मनो होय. ४०३ जीवप्रेरणा जो नहि, तर्हि ग्रहे को कर्म; जडमां कदी न प्रेरणा, भिन्नपणे वे धर्म-808 माटे चेतनप्रेरणा, थातां कर्म ग्रहायः परभाविक ते प्रेरणा, ग्रहीलचेष्टान्याय. ४०५ कर्त्ता कर्म न कर्मनो, जुओ विचारी चित्तः घटपट करे शुं प्रेरणा, समजो न्याय पवित्र-४०६ माटे कर्त्ता कर्मनो, चेतनछे व्यवहारः शुद्धस्वभाविक धर्मनो, कर्ता चेतन, धार; ८०७ मुलधर्म त्यागे नहीं, एवा जीव स्वभावः अशुद्धपरिणतियोगथी, कत्ती कर्म विभाव. 200 परिणम्यां पयनीरवे, भिन्न करेछे हंस; निजग्रण रमतो इंस त्या, करे कर्मनो ध्वंस. ४०९ चेतनना नहीं जाणीए, जेह विभाविक धर्मः स्वाभाविक निजधर्मछे, जाणो अनुभव मर्म.

880

	<b></b>
And walkall that survey or as	ţ ,
सहजशुद्धनिजधर्मथी, भाषेछे भगवन्त.	888
सदा असंगी आतमा, निश्चयसत्ता धारः	
कत्ती भोक्ताः कर्मना, वर्ते ते व्यवहार-	८३इ
जन्मजरान मृत्युना, इन्पपु पगरण गणा	* *
शाताऽशाता कर्मथी, कर्मजालनी मर्म.	८१३
रंग्युं बीज कपासनुं, लाक्षारस संयोगः;	i
रूमां लागी रक्तता, कर्मफलोनो भाग.	<del>3</del> 88
क्रमीएक नाडो यदा, तो चेतननी श्रांद्धः	•
आत्मस्वभावे आत्मनी, पामे ताचिवक्हाद्धे.	<b>ઝ</b> શ્ <b>પ</b>
शिष्य जवाच, शंकां	•
अनादिकालयी संगति, कर्म जीवनी जोय;	
नाश कहो शुं कर्मनो, कारण त्यांशुं होय-	88६
	•
सद्गुरुः	•
कालअनादि परिणम्यो, चेतन मिध्या भानतः	, ,
च्छेट चेतन खाणमां, रजः कनक दृष्टान्त.	८१७
हिमा इच्छायोगथी, सुल दुःख क्यांयी होय-	* ,
ईश्वरनी जो घेरणा, दोपी ईश्वर जोय;	8\$ट

शाथी ईश्वर घेरणा, ईश्वरना अन्यायः न्यायी अपराधी सहु, ईश्वर पोते थाय.

शिष्य जवाच शंका कर्म करेछे प्राणिया, सामग्री अनुसारः

सुल दुःल ईश्वर आपतो, जीव अकर्तीधार 🔧 ४२०

गुरुः जवाच.

कृत्य करे ते भोगवे, पोते सुखने दुःखः

खावे तेहं धरायछे. प्रभु न भागे भूखः

क्षेपे निजकर वन्हिमां, ज्वलतो देखे हाथ.

स्वयंहि कर्त्ता जीवछे, कथं प्रेरणा नाथः अवळी बुद्धियोगथी, विपमक्षणथी नाशः

प्राणोनो जाणो अहो, ईश्वर न्याय न खास-स्वयमेव ज्यां सुल दुःल, चेतन कमें पाय;

ईश्वर प्रेरण कल्पना, सुख दुःख कर्मे थाय. सदा असंगी आतमा, निश्चय सत्ता लेखः

व्यवहारे सुख दुःखनी, कर्ता चेतन देख-जीव अकर्त्ता कर्मना, नाशे सत्य जणायः

चेतन जाणो नयथकी, शुद्धधर्म प्रगटाय.

ૃષ્ઠદૃદુ

् धश्र

४२१

धरइ

**४२४** 

४२५

४१६

## शिष्य जवाच.

न्याययुक्ति दृष्टांतथी, कर्त्ती कर्मनो जोयः समजे जड थुं कर्मके, फलपरिणामी होय.

প্রর

## उवाच गुरुः.

कर्ता भोक्ता जीवछे, पण तेना निह मोक्षः बीत्या काल अनन्त पण, इज न मुक्ति पोष. ४२९ पुण्यतणुं फल भागवे, मानव स्वर्ग मझारः पापतणुं फल भागवे, दुर्गतिमां अवतार. ४३० पापपुण्य फल भागवे, चतुर्गतिमां जायः समये समये कर्ममंच, कर्मरहित निह क्यांय ४३१

जवाच समाधानं सद्गुरुः

अशुद्धपरिणतियोगथी, फलदं कर्म प्रमाण; तथा निवृत्ति धर्मथी, सिद्ध देरे निर्वाणः काल अनंतो वितीयो, जीवतणो परभाव, आत्मरमणता योगथी, प्रगटे मुक्ति प्रभाव.

४३३

**४३२** 

संयोगे वियोगछेज, देहादिक दृष्टान्तः; कर्मवियोगे आत्मनी, मुक्ति सुखालय कान्त.

अ३्ध

#### शिष्य शंका.

मोक्षतणी जे आस्तिता, तेतो समजी जाय; अनन्तभवनां कर्मनो, ध्वंस न क्यारे थाय. ४३५ भिन्न भिन्न दर्शन कथे, मुक्ति अनेक उपाय; सत्य असत्य तेमां कयुं, निर्णय वित्त न थाय. ४३६ को वेष कइ जातिमां, कया पन्थमां मोक्ष; निश्चय तेनो नाहे बने, तो शी करवी होंश. ४३७ भव प्रथम के मुक्तिवा, प्रथम जीव के सिद्ध; इत्यादिक मन चिंतता, मोक्ष न होय प्रसिद्ध. ४३८

# **उवाच सद्गु**रु:

चोपाइ.

ज्ञानिक्रयां मोक्षोपाय, सूत्रे भां श्री जिनरायः अशिकणाथी, गंजीबळे, तथा ध्यानथी कल्मपटळे. ४३९ जेने लाग्यो जन्मथी रोग, औषधयोगे थाय निरोगः कीधां अनन्तभवनां कर्म, नष्ट थतां प्रगटे शिवशर्म. ४४० अंधारु जग व्यापी जाय, थातां सूर्योदय विणसायः सत्य ज्ञान त्यां शोछे भार, कर्मतणो तुं हृदये धार. ४४१ ज्ञानावरणीयादिक आठ. कर्मतणो छे सूत्रे पाठः मुख्य मोहिनी सहुमां होय, यथा प्रजामां नुपति जोय.

**अ**४९

840

मोहिनी नारो सर्व हणाय, नृप हार्याथी प्रजा पलाय; कर्म टळयाथी शिवसुख गेह, सत्यपंथमां शो संदेह. ४४३ मतदर्शनना असत्यराग, अंधा श्रद्धा ज्ञाने त्याग. जातिलिंगमां माने मोक्ष, तेथीज मुक्ति होयं परोक्ष धधध सत्यतत्त्वनी श्रद्धा थाय, समवायिपंचज प्रगटाय; अरूप चेतन जागे ज्यात, त्रिभुवनमां ज्ञाने ज्यात. ४४५ भवमुक्तिनी नहींछे आदि, प्रवाइथी ते दोय अनादिः अनेकान्त पन्थज समजाय, श्रद्धाथी सहु मळे उपाय. ४४६ केवलज्ञानी वाणी ग्रंथ, ग्रुरुगम सम्जी ल्यो शिवपंथ; एकशब्दनो भावज साच, एम कहे तीर्थकर वाच ४४७ जीव मोक्षादि शब्दज एक, साची मोट करो विवेक; जेनो बंधिह तेनो मोक्ष, जरा निह त्यां लागे दोष ४४५

# शिष्य जवाच.

" दुहा. <sup>))</sup>

आपे पर्स्थानक कह्यां, करुणायी ग्रहदेवः श्रद्धाथी में सहह्यां, रही अनादि कुरेवः आज लगी अज्ञानथीं, यइ न तत्त्व प्रतीतः नमन करुश्री सद्गुरु, कीधो शिष्य पवित्रः धर्मरत आजे शृद्धं, देख्यं परमनिधानः

्रशरण इंगरण त्हारु प्रभु, कोई न तुज्र समान. ् ध्रुष् काल अनादिथी अभयो, पण आब्यो नहीं अन्तः

ध्सम्यक्तत्त्वं जणाविशुं, नमुं प्रभो ग्रणबन्त. ४५६

# शिष्य उवाच शंकां.

अनन्तर्जीवो सिर्क्तां, शिवमां केम समायः निराकरण तेनुं करो. जेथी शङ्का जाय. ४५३

## जवाच गुरुः

सिद्धशिलानी उपरे, शाश्वतछे शिवठाण; कर्म खप्याथी जीव त्यां, थावे श्री भगवान्-**४५४** ' एकदीपकनी ज्योतिमां, अनेकदीपकज्योतः सिद्धअरूपी मावता, दोप न किञ्चित द्योत. , ध्रथ्प -चोपाइ.

विषयवासना विषसम खास, त्यागो वहिरातमपदवास; शाश्वतपद्नी वाञ्छा होय, तो अधिकारी धर्म जोय ४५६ दुःखनो आत्यंतिकविनाश, मुक्ति वैशेपिकनी खासः मनने नित्यज्माने तेहं, मुक्तिमां, जीव साथे तेह. ४५७ बुद्धचादिक नवनो ज्यां नाश, मुक्तिज एवी त्यांशुंआशः चूनदावन जंबुक अवतार, तेथी सारो मानव धार-४५८

वदे वेदान्ती मुक्ति स्वरूप, जाणो जग व्यापक चिद्रगः घटन ब्यापक चेतनराय,त्यां शुं शिवनी आश रखायध्र५९ माने मुक्तिज आर्य समाज, भाडे पाम्यो जीवजराजः मुक्तिथी जीव पाछो परे, मुक्ति एवी शुंदुःख हरे. ४६० कर्म खप्याथी नहि संसार, कथं जीव पामे अवतारः जन्म मरण ज्यां वारंवार, शान्ति तेनी नहीं लगार. ४६१ 'एक कहे छे मुक्ति स्वरूप, मोटो अंधारानो कूप: जावुं जे ईश्वरनी पास, चित्त घरो ईश्वर विश्वास ४६२ त्रिश्वासी ईश्वरना दास, मुक्तिफोजमां भळतां सास; इशु भलो ईश्वरनो पुत्र, ते चलवे हे जगनुं सूत्र. ५६३ शरीरधारी मुक्तिज ज्यांय, जन्म मरणना फेरा त्यांय: मुक्ति तेवीज कदीन होय, साक्षरवादी ग्रहेन कोय-४६४ अंधो वनमां फरतो फरे, पण चाली पहोंचे नाई घरे: ज्ञानचसु हृदये प्रगटाय, मुक्ति पन्थ त्यारे देखाय. ४६५ कोइक राता छे व्यवहार, ज्ञाने राता कोइकथार: प्रकारकतुं खंडन करे, पतापन्नेज लडी मरे. ४६६ एकान्तनयोथी पक्षापक्ष, सत्यज माने वे नय दक्षः नय एकेके दर्शन थयां, मापेक्षे ज्ञानिए ग्रह्मां: ४६७

सरिताओं सागरमां भळे, जिन दर्शनमां सर्वे मळे; दर्शनमांभजनाजिनवाच,अनेकान्त वाणीजगसाच४६८ कर्माष्टकनो थावे नारा, आविभीवे यणनो भासः जन्म मरणना फेरा टळे, चेतन क्षायिक धर्मे मळे. ४६९ समये समये सिद्ध अनन्त, सुख सहेजे विलसे शिवकंत; पूर्वप्रयोगे उंचा जाय, शाश्वत शिवपुरमां विरमाय. ४७० उर्ध्व अधःतिच्छी नहि जाय,िकया रहित माटे स्थिर थायः ताहक् विभुने करु प्रणाम, क्यारे पामुं सुखनुं धाम. ४७१ सादि अनंतिज स्थिति वरी, सिक्रनमुं ते भावज धरीः केवलज्ञाने जाणे सहु, तेवुं पद प्रेमे हुं चहुं ४७२ चेतन परमातममां भेद, व्यवहारे जोतां ए खेदः भेदभावनो ज्यां नहि लेश,निश्चयनयथी जोतां बेश,४७३ उत्तमहिष्ट आसस्त्ररूप, वहेतां प्रगढे सुखिदूषः भणोगणो वांचो सह ग्रन्थ, चेतनदृष्टि शिवपुर पन्ध. ४७ ४ उत्तम दृष्टि कोइक लहे, शिवपुरमांहि सिको वहे; ज्ञानादिक गुण लेखे होय, समभावे निरखे सह कोय४७५ श्तृमित्रमां समता भाव, शुद्धधर्मना प्रगटे दावः देह छतां पण देहातीत, दशा ताहशी त्यां शुं भीत. ४७६

नमुं नमुं ते वरनिर्भय, जेनी दृष्टि शिवपुर पन्य; पामुं एवो सद्युरु संग, तो पामुं निजयणनो रंग४७७ तादज जावे तपतां ताप, साधु संगे दहीए पाप; मारे मानो सद्युरु आण, पामो शाश्वतपद निर्वाण.४७८ धन्य धन्य म्हारो अवतार, ज्यारे लिइशुं शिवपुर सार: दावानळ छे आ संसार, पामुं क्यारे तेनो पार. ४७९ चिंतन एवं चित्ते थशे, दोषो त्यारे अळगा थशे; आत्मध्यानमां जे क्षण जाय, क्षण ते भवमां लेखे थाय४८० देहे दंहे व्यापी रह्यो, महिमा जेनो जाय न कह्यो; नामी अनामी जेने कहुं, तेने ते देखे छे छहुं. ४८१ नहि ज्यां शब्दअने ज्यां गंध देले नहि नास्तिकजनअन्ध लीधां छोडयां केइक देह, पण पोते तो नित्यज तेह ४८२ जेनी आदि नहीं ने नाश, अजरामर माटे ते खास; योंगी पण भोंगी कहेवाय, नमुं नमुं ते वेतनराय.४८३ जेनुं ध्यान धरंतां सुल, जन्म मृत्युनां जावे दुःखः जेना गुण छे अपरंपार, नहि ज्यां जाति लिंग प्रकार, ४८४ रुण पर्यायतणो आधार, एकरूप त्रिकाले धार; क्रमवर्ति जाणो पर्यायः सहभावी ते एण प्रहाय. ४८५

( ४०४ ) भारमीयदि-पट्स्थानक.

पद् द्रव्योमां वर्तन एम, चिंतन करतां लहिये क्षेम; शुक्कध्यान पणतेथी होय,निश्चय शास्त्रे भाष्युं जोय४८६ पड् इन्योमां सर्व समाय, भाषे सूत्रे श्री जिनसय; े सूक्ष्मपण जो थावे ज्ञान, स्वह्पभवे पामे शिव स्थान ४८७ निश्चयदृष्टि चित्ते वहे, व्यवहारे वर्ती ग्रण लहे; एकान्ते चाले व्यवहार, पामे नहीं ते भवनो पार. ४८८ सर्वज्ञ भाष्या नय दोय, होय न जूटो तेमां कोयः <sup>्</sup> निश्चयनो हेतु व्यवहार, कारण कार्यपणुं त्यां धार, ४८९ आवश्यादिक जे व्यवहार, करीये लिह्ये भवजल पार जन मन रंजन किरिया करे, भाव विना ते भवमां फरे. ४९० भाव विना किरिया छे फोक, करीए समजी हरिये शोक; . आडं अवछं मनडं फरे, धर्मक्रिया ते शानी करे. ४९१ चित्त न उरतुं एकज ठाम, माटे किरियाचुं शुं काम; निश्चय एम न करशो कोय, जद्यम अवलंबो सुख होय४९२ निज ग्रण रक्षण साचो धर्म, निजगुण विष्वंसनजअधर्मः आत्म प्रवृत्ति धर्में वळे, निज ऋकि तो निजने मळे. ४९३ किया वाह्यनी चेतन करे, कर्म ग्रही भव फरतो फरे; पाप कियाछे भव. जंजाळ, किया धर्मनी मंगलमाळ ध९४

आर्त्त रीद्र किरियानो त्याग, तेथी नहि शिवसुलनो लाग; मुक्तिपापक मनमा जाण, तकेंतु अमृत सुख खाण । ४९५ आत्मज्ञानथी छे निह देह, चेतनधर्मी ग्रणगणगेह; अरिहंतादिक पदवी जेह, तेनो धर्ती चेतन एह. ४९६ जेजे इच्छे रुचि अनुसार, तेते फळपामे निर्धार: भवाभिनंदी भवमां फरे, आत्मानंदी शर्मज वरे. ४९७ अब्यय निर्मळ चेतनगति, अनुपम मुक्ति स्त्रीनो पति; कर तुं तारो स्वयंत्रकाश, पोतानो धर तुं विश्वास. ४९८ त्हारावण सारो जग कयो, त्हारावण निर्मळ को भयो; निह निह तहारा कोय समान, भर निर्मळ पोतानुं ध्यान ९९ रहारा निर्मळग्रणनो लेश, पामंतां नाशेछे क्लेश; योगीजन तो देखे तहने, मोह न आवे तेनी कने. ५०० योगी देवे आपोआप, तेने क्यांथी लागे पापः ध्यानग्रकामां योगी वास, कर्म न आवे तेनी पास. ५०१ सीथी न्यारो योगी योग, नहि पामे ते मोही लोक; जागे योगीज उंघे सहु, शुं योगीनी वातज कहुं. ५०१ योगी सोहं चेतनशय, वाले देखे ते कहेवाय; परमातमने जीवनी भेद, भागे नाशे भवनी खेद, ५०३

, धन्य धन्य मानुं अवतार, स्वरूप किंचित् भार्युं सार; अकुलगति तुं चेतनदेव, कर पोतानी पोते सेव. ५०४ दानी दे तुं निजयणदान, भानी तुं दे निजयुणभानः ्रहारं सुख छे अव्यावाध, साधनथी तुं तेने साध्य ५०५ समतारसनी हुं भण्डार, आत्म धर्मने हुं धरनारः नाई नाहं तृष्णादास, नाहं नाहं पुद्गलवास. ्५०६ .श्री जिनवरभाषित वे धर्म, हेतु ते छे शाश्वतशर्म; यथाशक्ति तेनो स्वीकार, करिये समजी धर्मप्रकार ५०७ निंदो धर्मीने मा कोय, निंदानां कडवां फल होय; श्रावक थइने तपजप करे, निंदा करतो भवमां फरे. ५०८ समजे नहि अंतरनो मर्भ, टीलां टपके शानो धर्मः शुक्रस्वरूपे निश्चय धार, धन्य धन्य तेनो अवतार ५०९ कुलमां उपन्यो श्रावक नाम, तेथी शुं थावे निजकामः नाममात्रथी कार्यज सरे, धनपति भिक्षा खातो फरे. ५१० श्रावकव्रत नाहि पोते धरे, दे शीलामण साधुधरे;

गुरुनो प्रत्यनीक चंडाल, तेथी जन्म मलो गृगाल ५११ अहा विषम कलिकाले जाय, श्रावकना ग्रणधारी काय; निंदुक मानी मुनियो क्लेश, तेने शुं लागे उपदेश, ५१२

भण्योगण्यो पण श्रावक कोय, ग्रुह्थी अधिको नहि तेहोयः मेरु सरसव समछे फेर, अंतर अजवाळुं अंधेर. उत्तरझयणे तेनी साख, गुणना माटे कर अभिलाप; दृष्टिरागे शानोज धर्म, द्वेषे वाद्यो वांधे कर्म, धर्मग्ररुनीज आज्ञा धार, तरवानुं ते तीर्थ विचारः तेथी पामा मवनो पार, सार सार तेछे सुलकार. ५१५ साधुवतनोछे अभिलाष, माने सद्युरुनो हुं दासः अक्षदादिक गुणनुं नाम, साचुं तेनुं श्रावक नाम.५१६ पंचमहाव्रत पंचाचार, धर्मध्यानमां वर्त्तं सारः भवभ्रमणभय आहा जिन, वर्ते मन जेतुं निशदीन. ५१७ नाह्योपाधि विषवत् त्यजी, सहजसमाधि ज्ञाने भजीः जेने बोध्युं आत्मस्वरूपानमुं नमुं प्रभु ग्रुरु श्री अनुवप्रद पार्श्वमणि संयोगे लोह, भजे कनकता तेह अश्रोहः जेना बोधे टळे सदाय, गुरुनी गुरुता प्राप्ति थाय, ५१९ एवा ग्रुरुने सेवो भाइ, तीर्थ तीर्थ ते जग सुखदाइ; वाणी जेनी वहु गंभीर, चेतन योगी ध्यानी धीर.५२० धर्मगुरु मुज माणाधार, सदा शुद्ध तेनो चपकार; गुरुनी सेवा भक्ति मळे,ती भव कल्मकप सहेजे टले. ५२१

12/35

युरुण कीथों जे उपदेश, पामीने तेनो लवलेश; गुरुनी भक्ति वर्णन करी, लागी गुरुभक्ति मुज खरी. ५२१ भम्थरुओज थया करो, ज्ञानामृतनो वहो झरो; श्रीसंखेश्वर पार्श्वकृपाळ, निशदीन करशो मंगळमाळ ५१३ भरणेन्द्र पद्मावती सहाय, पामी पूरो ग्रंथ कराय; परमात्मदर्शन निर्मळ ग्रंथ, पंचेशती जाणो शिवपंथ. ५१६ गाम लोदराण करी मास, मातस्कृतिथी कर्यो प्रयास: महेसाणामां पूरो थयो, शुद्धस्वभावे चेतन रह्यों ५२५

" दुहा.<sup>,</sup>"

धर्मचन्द स्रत जीवणलाल, स्रतवासी जीवदयाल; सकल संघना माटे कयों, ज्ञाताभवपाथोधि तयों ५२६ श्री सुलसागर एकजी वेश, पामी आनन्द होय हमेश; खुद्धिसागर रचना सार, मंगल सिद्धि जयजयंकार, ५२७ संवत ओगणीश चपरे, साठतणी शुभसाल; अपाड शुकला पंचमी, रचतां मंगलमाल.

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

# परमात्मदर्शन.

## अशुद्धि शुद्धि पत्रकः

पृष्ठ	छीटी	अशुद्धि	थुद्धि
३	रूर	भव्यत्मा भव्यात्मा	
8	२,३	अववोय	अववोध.
ξ	२४	सुखन	मुखने
v	१३	सगयस्चक	समयस्चक
१३	8	साभ्यता	साम्यता
१५	३	पष्ठं	पष्ट
१५	१५	निद्राधीन	निद्राधिन
१५	२१	अने	० नयी
१५	२२	तेने	तेणे '
१६	49	रुपिसभा	ऋपिसभा
१६	२२	त्वाय	त्वाच
१७	9	संसय	संश्य
१७	२१	तीर्थर्न	तीर्थनी
१७	२२	सद्गुरू	सद्गुरु
१८	१६	या।	यया
१८	१८	ताहक	ताहक्
२०	१४	भे रुं	भेगुं
२०	१८	बच्यु	, बसु
२१	७	स्यीति	स्यिति
રઇ	৩	<b>गृद्धि</b>	युद्धि
રંઠ	15	अनादिक पीर	अनादि इपीर
31	, <b>t</b> ç	कर्भ किया	कर्म किया

( 3 ) 智 कीरी मञ्जि श्चाद क्रिका 3? र्∘ क्रिया 37 १७ पुग्य पुण्य ३६ 13 **केवलक्षान** केवलज्ञान ३६ १६ नाग नाम 80 २१ याय छे थवाय छे ४२ २ आग्र आग्न वे ४२ 919 के जेगे £8 ५ जेणे १३ १४ तारण तरण ६ ४५ तत्त तत्त्व ४५ १५ सुशोभीत सुशोभित ८६ २४ शुद्धान्तः करण शुद्धान्तः करण ५४ 6 पकडी पकडी थ्य २१ पेटी: पेटी ६० 38 夏专 गुरु २४ सदबुरु ६२ सद्गुरु ६४ १६ अन्तकर्ण अन्तः कर्ण ६५ १४ धमनाप्ति थर्मनाप्ति ६९ 18 दूव्य द्रन्य ६९ 25 स-1य समय द्रव्यर्थिक ξ द्रव्यार्थिक 90 3 90 सरखा सर्खा जोरि ३ ७६ जोर ८० १५ पुरगल **बुद्ग**ल ३ 63 द्रव्ये गुणोपनार द्रव्ये पर्यायोपचार

प्रश्न की शिष्ट प्रस्ति विश्व प्रमान			_	<b>~</b> _
८३ २० पेठें पेठे  ८५ १ व्याधि  ८५ ६ स्याद्वाद्व स्याद्वाद्व  ८५ ७ रागद्वप रागद्वेप  ९४ १२ छंध्ये छंज्य  ९५ ६ सेंच सोंच  ९५ ८ दुःच दुःख प्राची  ९५ १ आतम आत्मा  ९५ १३ पांचे पांचे  ९६ ५ ते ता  ९९ १४ श्राँ श्री  २०० ११ वस चस्न  १०२ १२ जी गेना जीवोना  १०३ ५ सूर्क स्ती  १०५ ९ चिंतवनाथ चिंतवनाथी  १०५ १ ध्यान  १०५ १९ भ्रानित परिपन्नता  १०५ १९ भ्रानित भ्रांति  २०५ १९ भ्रानित भ्रांति  २०५ १९ भ्रानित भ्रांति  १०६ १२ ते तेथी  १०६ १३ एन  १०० १३ एन  १०० १३ एन	ye	कींश	<b>अशुद्धि</b>	গ্ৰুৰি
द्रिप १ व्याचि व्याचि स्याद्राद्र स्थाद्रेष कंड्य कंड्य कंड्य कंड्य कंड्य सोंच पांचे पांच	८२	१४		
८५ ६ स्याद्वाद स्याद्वाद स्याद्वाद र पण्डेष रागद्वेष रागद्वेष र र र र र र र र र र र र र र र र र र र	८३	Ro	पेठें	
८५ ६ स्याद्वाद्र स्याद्वाद् ८५ ७ रागद्वप रागद्वेप ९६ १२ छंध्ये छंष्य ९६ ६ सेंय सोंच ९५ ८ दुख दुःख ९५ ९ आत्म पांचे ९६ १४ श्रॉ श्री १०० ११ वस वस्न १०२ १२ जी गेना जीवोना १०३ ९ स्त्री खी १०४ ९ स्त्री स्वी १०४ ९ स्त्री स्वी १०४ ९ परिपक्ता परिपक्ता १०५ १९ ध्यान १०५ १९ भ्रान्ति ध्यान १०५ १९ भ्रान्ति भ्रांति १०५ १९ भ्रान्ति भ्रांति १०५ १९ भ्रान्ति भ्रांति १०५ १९ न्यान भ्रांति १०५ १९ न्यान भ्रांति १०५ १९ न्यान भ्रांति १०६ १२ ते तेथी १०० १३ एन हेत्ता हेत्स्ता	64	3	<b>ब्या</b> घि	व्याधि
८५ ७ रागद्वप साग्द्रप छंड्य छं छंड्य छंड्	८५	Ę	स्याद्वाद	
९५ ६ सेंय सोंस ९५ ८ इ.स ९५ ९ आतम आतमा ९५ १३ पांचे पांचे ९९ ५ ते ता ९९ १४ श्रॉ श्री १०० ११ वस बस्न १०२ १२ जी गोना जीवोना १०३ ५ मूर्क मृकी १०५ ९ चिंतवनाथ चिंतवनाथी १०५ ९ परिपक्ता परिपक्ता १०५ १९ भ्रान १०५ १९ भ्रानित १०५ २९ भ्रानित १०५ २१ निधान १०६ १२ ते तेथी १०० १३ एन १०० ९ हेत्ता हेत्स्ता	64	<b>v</b>		•
९५ ६ सेंय  ९५ ८ दुःख  ९५ ९ आतम  ९५ १३ पांचे  ९९ ५ ते  ९९ १४ श्राँ  १०० ११ वस  १०२ १२ जी गिना  १०३ ५ मूर्क  १०४ ९ चिंतवनाथ  १०५ ९ चिंतवनाथ  १०५ १० परिपक्ता  १०५ १० भ्रानित  १०५ १० भ्रानित  १०५ २१ निधान  १०६ १२ ते  १०० १३ ए-ा  १०० १३ ए-ा  १०० १३ ए-ा  १०० १३ ए-ा  १०० ९३ ए-ा	<b>९</b> ೪	१२	<b>छं</b> ध्ये	
९५ ९ आतम आतमा ९५ १३ पांचे पांचे ९९ ५ ते ता ९९ १४ ऑ श्री १०० ११ वस वस्र १०२ १२ जी गोना जीवोना १०३ ५ मूर्क स्ती १०४ ९ चिंतवनाथ चिंतवनाथी १०५ १ पिपकता १०५ १९ ध्रान १०५ १९ भ्रान्ति १०५ २१ निधान १०६ १२ ते तेथी १०० १३ एन ११० ९ हेत्ता				सोंच
९५ ९ आतम आतमा ९५ १३ पांचे पांचे पांचे , ९९ १५ ते ता ९९ १४ ऑ श्री १०० ११ वस	९५	6	दु ख	दुःख
९५ १३ पांचे पांचे ९९ ५ ते ता ९९ १४ ऑ श्री १०० ११ वस बस्र १०२ १२ जी गोना जीवोना १०३ ५ स्त्री स्वी १०४ ९ चिंतवनाथ चिंतवनाथी परिपक्तता १०५ १७ परिपक्ता परिपक्तता १०५ १९ ध्यान ध्यान १०५ १९ भ्रान्ति भ्रांति १०५ २१ निधान निधान १०६ १२ ते तेथी १०० १३ एन एम		९	-	
९९ ५ ते ता  ९९ १४ श्रॉ शी  १०० ११ वस वस्र  १०२ १२ जी गेना जीवोना  १०३ ५ मूर्क मूर्की स्वी  १०४ ९ स्त्री स्वी  १०५ ९ चिंतवनाथ चिंतवनाथी परिपननता  १०५ १७ परिपक्ता परिपननता  १०५ १९ श्रानि  १०५ १९ श्रानित श्रांति  १०५ २१ निधान निधान  १०६ १२ ते तेथी  १०० १३ ए-ा  ११० ९ हेत्ता हेत्स्ता		१३	पांचे	पांचे 🔑
१९ १४ ऑ श्री १०० ११ वस वस १०२ १२ जी गोना जीवोना १०३ ५ सूर्क सूकी १०४ १९ स्त्री स्त्री १०५ ९ चिंतवनाथ चिंतवनाथी १०५ १७ परिपक्ता परिपननता १०५ १९ ध्यान १०५ १९ भ्रान्ति १०५ २१ निधान १०६ १२ ते तेथी १०० १३ ए-ा ११० ९ हेर्नुता हेर्नुस्ता			ते	ता
१०२ १२ जी ोना जीवोना  १०३ ५ मूर्क मूर्की  १०४ १९ स्त्री स्त्री  १०५ ९ चिंतवनाथ चिंतवनाथी  १०५ १७ परिपक्ता परिपनन्नता  १०५ १९ ध्यान  १०५ १९ भ्रान्ति भ्रांति  १०५ २१ निधान निधान  १०६ १२ ते तेथी  १०० १३ ए-ा  ११० ९ हेत्ता हेन्स्ता		१४	4.2	श्री
१०२ १२ जी ोना जीवोना  १०३ ५ मूर्क मूर्की  १०४ १९ स्त्री स्त्री  १०५ ९ चिंतवनाथ चिंतवनाथी  १०५ १७ परिपक्ता परिपन्तता  १०५ १९ ध्यान ध्यान  १०५ १९ भ्रान्ति भ्रांति  १०५ २१ निधान निधान  १०६ १२ ते तेथी  १०० १३ ए-ा हेत्स्ता	200	11	वस	
१०३ ५ मूर्क मूर्की १०४ १९ स्त्री स्त्री १०५ ९ चिंतवनाथ चिंतवनाथी १०५ १७ परिपक्ता परिपनन्नता १०५ १९ ध्यान ध्यान १०५ १९ भ्रान्ति भ्रांति १०५ २१ निधान निधान १०६ १२ ते तेथी १०० १३ ए-ा एम	•		जी गोना	
१०५ ९ चिंतवनाथ चिंतवनाथी , १०५ १७ परिपक्ता परिपनन्नता १०५ १९ ध्यान ध्यान १०५ १९ भ्रान्ति भ्रांति १०५ २१ निधान निधान १०६ १२ ते तेथी १०९ १३ ए-ा एम ११० ९ हेत्ंता हेत्स्ता			मूर्क	मृकी
१०५ ९ चिंतवनाथ चिंतवनाथी , १०५ १७ परिपक्ता परिपनन्नता १०५ १९ ध्यान ध्यान १०५ १९ भ्रान्ति भ्रांति १०५ २१ निधान निधान १०६ १२ ते तेथी १०० १३ ए-ा एम ११० ९ हेतुंता हेतुस्ता		9,0	स्री	स्री
१०५ १७ परिपक्ता परिपन्नता  १०५ १९ ध्यान  १०५ १९ भ्रान्ति भ्रांति  १०५ २१ निधान निधान  १०६ १२ ते तेथी  १०० १३ ए-ा एम  ११० ९ हेतुंता हेतुस्ता				
१०५ १९ ध्यान ध्यान १०५ १९ भ्रान्ति भ्रांति १०५ २१ निधान निधान १०६ १२ ते तेथी १०९ १३ ए-ा एम ११० ९ हेर्नुता हेनुस्ता			_	परिषयनता
१०५ १९ भ्रान्ति भ्रांति १०५ २१ निधान निधान १०६ १२ ते तेथी १०९ १३ ए-ा एम ११० ९ हेर्नुता हेनुस्ता			ध्यान	
१०५ २१ निधान निधान १०६ १२ ते तेथी १०९ १३ ए-ा एम ११० ९ हेर्नुता हेनुस्ता			भ्रान्ति	_
१०६ १२ ते तथा १०९ १३ ए-ा एम १२० ९ हेर्नुता हेरुस्ता	704	२१	निधान	
१०९ १३ ए-ा एम १२० ९ हेर्नुता हेरुस्ता	v 08	9:	१ ते	तेथी
१२० ९ हेर्नुता इनुस्ता	300	93	ए-ा	
११७ १८ गतवन्तु गतवस्तु	\$7:	·	२ हेर्नुता	हेनुस्ता
	\$ 8,	ও গ্	८ गतवन्तु	गतवस्त्

३

4

७

१६

१७

सुद्धा

विणु

जेनु

ननी

वृत्तिमं

थुद्धा

**वृ**त्तिमां

जेनुं मन

नयी

वण

\$83

383

\$88

१४१

385

(	ų	,

<b>पृष्ठ</b>	स्रीटी	अशुद्धि	গুৰি
५८१	१७	भाक्ता	भोक्ता
१४२	२२	मुनिश्वर	मुनीश्वर
१४३	3	शरीरीनु	शरीरी <b>न्रं</b>
१४३	६	सधा	सुधा
१४४	4	मुभडो	सुभटो
१४४	९	पारो	पासे
488 ,	९	हायछे	होयछे
१४४	<b>૧</b> રૂ		तो
188			तो
१४५			अनुष्टान
१४६		×	केवलज्ञान
१०५ १५३	-		ओही
१५३ १५३		_	अंगुलना
१५५ १५५			आत्मतत्व
१५७			भ्रंद
१६०			न आर्त्तध्यान
१५० १६१	_	वा	वो
	•	•	करीने
१६१	-		तो
र्वे १६	`	. T	रंग
१ <i>६</i> ३			मुख
	•	5-	योग
१६ <b>१</b> ६	` _	, O	पि अभिकापि
	८ १९		यागुँ हैं
<i>९६</i>		n	गा विषयाणां
ζ¢	10 1	* * * * * * * * * * * * * * * * * * * *	

```
( )
        कीरी
              भशुद्धि
                                  शुद्धि
  AR
 १६९
        99
             पाद्य
                                वाह्य
 १७० १०
             विराजीग
                                विराजित
                                लोक
 १७१ १८ लॉक
 १७१
        35
                                रूप
             क [
             हे
                                छे
 $ 10 3
        १७
             कुं
१७३ १७
                                न
             कंरुं
५७४ १०
                                क्र
             न्यावि
१७४ १०
                                व्याधि
      २१
808
             याज्य
                                त्याज्य
                                छे
१७५
         ş
             रेह • कु
       + m- m-
१७५
                                न
१७६
             वा
                                वा
         ş
             छ
३७६
                                0
308 33
            श्राद
                                श्रद्धा
१८१
        9
             अत्म
                                आत्म
१८५ १२
             ध्याए
                                ध्यान
१८७ ९
             आत्म
                                आत्मा
             निष्क्रिम
                                निष्क्रिय
३८७ २०
१८७ १६
                                 "
               11
१८७ १९
            स्वरू -1
                               स्वरूप
१८७ २३ निदृष्टि
                               निश्चयदृि
१९१ १८
            त्पा
                               ल्पा
१९४ १५ दुष्पाप
                                दुष्पाप्य
१९५ २२
            त गंगर
                                तवंगर
        ξ
                               धर्मी
            धर्मा
१९८
```

(0) शुद्धि भशुद्धि ਲੀਟੀ AB सिंहलद्वीप सिहलद्वीप 20 १९८ पण १६ पण १९९ नु नुं 2,2 २०० 0 गत २०५ २५ चारित्र चारित्र ६ 005 कृत्य कृत्सुमां २०७ २० रोकाइ राकाइ २०९ राग राग 270 ş छे 0 26 230 0 २५ સુ 288 ગુ 3 0 २१२ गिहेसु गिहेसु २१३ १५ प्रमाण در प्रमा -ा २१४ सद्भाव सद्भाव १६ २१६ दर्भनोपयोग दशनापयोग 8 २१८ जाणवा नाणवो १६ २१८ व्यक्तित व्यक्ति 2 २२१ अन्यमतनो जैनदर्शनां भायश्वित छेवुं २२२ समावेश नास्तित्व नारितत्व 8 २२३ एकंकयी एकेकवी ર્લ 228 वलवत्तर वछवत्तर 9 २२९ कारण १६ का २३० देवनी १९ देननी 231 जिन जन २५ २३२ गोमिले सामिल ११ २३२

```
(0)
                 থয়ুৱি
  Zg
          छीरी
                                      शुद्धि -
                भावने
          33
 २३६
                                     भाव ते
 २३६
          १९
               डार्ण
                                     कारण
 २३८
           ?
               उत्पत्तो
                                     उत्पत्ती
 २४१
               तिक्ष
                                     तीक्ण
           8
 २५३
               वेन।
         १५
                                    वेनना
 २५९
          Ģ
                                    कवलाहार
               कवलाहर
 २६२
               द्वेषो -
         १६
                                   द्वेपने
 २६३
          Ę
               स य
                                   सत्य
               नयी
 २६३
          ७
                                   नथी
 २६३
         38
                                   आयुर्ष्य कर्म
               आयुण्य कर्म
 २६३
        २४
              तारतम्य
                                   तारतम्यता
 २६४
               माइनीय
          ?
                                   मोइनीय
२६४
         १७
               आत्मनी
                                   आत्मानी
२७६
        १०
              मधान ,
                                    प्रधान
३७६
        २५
              जोद्धाओ
                                    योद्धाओ
        33
२७७
              नमर
                                    नगर
              जीवोनो
२७७
        38
                                   जीवोने
२७८
                                    धर्म
          0
              धम.
२७८
          ઇ
              आ
                                   आ
              चतुरिन्द्रि
२७८
         6
                                   चतुरिंद्रय
२७८
        ??
              धशा
                                   द्शा
              मोहना
        58
206
                                   मोइ
206
        90
              पास
                                   पास
                                   रोवरावुं छुं
         ?
300
              रोवरबु छुं
             क् ।ी
मोहे
२७९
        १७
                                    क्तरी
२८०
                                    मोहे
         3
२८०
             र जा
         4
                                    राजा
             जीव •
                                    जीव
२८०
       34
```

( 10 ) अशुद्धि लीश पृष्ठ योगे येगे-३०५ १३ सिद्धान्त सिद्धातं-96 304 वसंतु 306 १६ वस्तु ठर्थो 9 306 स्वरूप 318 १० व्रह्मचंप ३१६ व्रह्मचये १० ३१७ १७ तत्ज्ञानं तज्ज्ञानं सुदे ३१८ Ø सु द्वे कारणके ३३५ ९ कारणक सिद्धात्मा सिद्धत्मा ३३६ १५ केवी कवी ३५४ 8 आविभीवे ३५५ ? वाविर्भाव ३६१ 36 एकान्त एकात ३६४ ₹? मूल मल स्वरूपमा स्वरूपमां ३६६ 20 निमित्त १३ निमित ३६९ ३७२ દ્ हर्य दृश्य उपनिपदो इ७४ 6 उपनिपदा सहु छे. ₹ ३७५ सहु छ ३८३ 8 त्या त्यां ş उत्शृंखल 366 उत्रांगल मूल धर्म ३९४ ? 3 ३९४ १६ त्यां त्या अना। दि ३९१ 88 अमादि चिंतता चिनतां 396 क्यां ईश्वरमां इहस्त्र छपाइ होय त्यां दीर्घ वांचवी. वीजी जे अशुद्धि छग्नस्थ दृष्टियी सुधारतां रही गइ सुधारीने वांचवी.

### योगनिष्ठ मुनि बुद्धिसागरजी कृत ग्रन्थोनी यादी.

#### अने ते मलवानां टेकाणां—

ધુસ્તકનું નામ.

મળવાનું ઠેકાછું.

૧ જૈન ધર્મ અને ખ્રીસ્તિ } ધી જૈન ફ્રેન્ડલી સાસાઇઠી-મુંભઇ. ધર્મના મુકાબલા.

ર-૩ શ્રી રવિસાગરછ } વડાદરા મામાની ધાળ શા કેશવલાલ અને શાકવિનાશક₊∫ લાલચ\*દને ત્યા₊

૬ અધ્યાત્મ શાંતિ₊–શા₊ રતનચ'દ લાધાછ કાવીઠા બારસદ પાસે∙

હ ચિ'તામણિ. ૮ કન્યાવિકય નિષેધ. ૯ પૂજા સ'થહ.

૧૦ ખુદ્ધિપ્રકાશ ગાયન સંત્રહા–શા. મબ્રિલાલ વાડીલાલ સાબુદ,

૧૧ ખુદ્ધિપ્રકાશ ગાયન સંમહે ભાગ ખીજો. રેમદાવાદ સંભવ જિનમાંડલા

૧૨ સમાધિશતક—રોક, જગાભાઇ દલપતભાઈ, મુ. અમદાવાદ.

૧૩ તત્ત્વવિચારન } જ્ઞાન પ્રસારક મ'ડલન મુ'બાઈ, ઝવેરી ખજારન

દૂપ આત્મ પ્રકાશ. } શા. વીરચ'દ કૃષ્ણાછ. મુ. માણમા. યુના-વેનાલપેંદ.

૧૬ ભજન સંગ્રહ ભાગ પહેલા. ૧૭ ભજન સંગ્રહ ભાગ બીજો. ૧૮ ભજન સંગ્રહ ભાગ ત્રીજો.

૧૯ ભજન સંત્રહ ભાગ ચાધા.

૨૦ અ<sup>દ</sup>યાત્મગાન વ્યાપ્યાનમાળ.

અમદાવાદ.

केन थाडीं य नायारीयस्त

ર૧ આત્મપ્રદીપ. ૧૨ અધ્યાતમગીતા. ૧૩ આત્મસ્વરૂપ. ૧૪ અનુભવ પચ્ચીશી. ૧૫ પરમાત્મ દર્શન. ૧૬ પરમાત્મ જ્યાતિ. ૧૭ ગુરૂખાધ.

અમદાવાદ જૈન<sup>સ્</sup>યતાંખર બાહીં ગ નાગારીશરાહ-

ર૮ પ્રાચીન ન્યાય ગ્ર'થ ઉદ્ધાર. ૄ ઝવેરી ભાેગીલાલ તારાચ'દ. સ'સ્કૃત સ્યાદ્ધાદ મુક્તાવલી ૄ અમદાવાદ ડાશીવાડાનીપાળ.

રહ તત્ત્વભિંદ ( યાને સંક્ષિપ્ત ) સિદ્ધાંત રતન,

જૈન બાેડી'ગ નાગારીશરાહ અમલાવાદ-

૨૦ ચેતનશક્તિ ગ્રન્થ-( ભજન સંગ્રહ ત્રીજા ભાગમાં )

૩૧ વર્તમાનકાલ સુધારા-( ભ. ત્રીજા ભાગમાં )

उर परमञ्ज्ञा निराध्र**श्-( अकन स. ४ शेथामां )** 

33 अध्यात्म वचनामृत ग्रन्थ ( लक्षन संभ्रह लाग येथि। )

#### નહીં છપાવેલા ગ્રંથાની યાદી.

૩૪ તત્ય પરીક્ષા વિચાર ૭૫ ધ્યાન વિચાર ૭૬ સુખસાગર ૭૭ શરૂમાહાત્મ્ય. ૩૮ શ્રીમ'ત સરકારગાયકવાઢ સયાજરાવની આગળ આપેલું ભાષણ ૩૯ पत्र सद्पदेश.